बोध-प्रद काव्य

रचयिता

मुनिभक्त मोहनलाल जैन

(बावली वाले)

श्री 1008 भगवान महावीर स्वामी

बोध-प्रद काव्य

रचयिता

मुनिभक्त मोहनलाल जैन

(बावली वाले)

प्रकाशक

श्री दि० जैन समाज

रामनगर, मंडौली रोड, शाहदरा

दिल्ली-110032

आशीर्वचन

प्रस्तुत 'बोधप्रद काव्य' की कविताएँ मैने पढी है। कुछेक रचनाकार के मधुर कठ से सुनी भी है। ये सभी रचनाएँ अहिसा, अचौर्य, सत्य आदि से अनुप्राणित धर्माचरण की ओर एक साधारण जन की भावनाओ के उद्‌बोधन मे सक्षम है। कवि की हर कविता एक भाव-दीप है जो व्यक्ति के अतर्मन के अधकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश बिखेरती है। कविता की भाषा बहुत सरल है, साधारण से साधारण पाठक भी इसका आनद ले सकता है। कवि की इन रचनाओ के छह भाग पहले ही प्रकाशित हो चुके है। उनका ही एक जिल्द मे सकलन कर इसे 'बोधप्रद काव्य' नाम से नया रूपाकार प्रदान किया गया है।

युवा कृतिकार श्री मोहनलाल जी बहुत धार्मिक और सरल स्वभावी है। भगवद्‌भक्ति, गुरु-आस्था और जैन धर्म मे इनकी बडी श्रद्धा है। यही कारण है कि इनकी रचनाओ मे बार-बार इन्ही सब भावनाओ का उद्‌बोधन है।

श्री मोहन जी को मेरा शुभाशीर्वाद है। उनकी लेखनी और सबल बने और वे निरतर इसी तरह अपनी नई-नई रचनाओ द्वारा जन-मन की धार्मिक रुचि बढाते रहे।

—कुन्थुसागर

(गणधराचार्य कुन्थुसागर जी म)

दो शब्द

आज के युग मे भौतिकवाद का विशाल साम्राज्य छाया हुआ है जिसक कारण हर मानव मे अशाति ही हो रही है। चारो तरफ त्राहि-त्राहि मची हुई है। ऐसे समय पर सरल भाषा व पद्य रूप मे कोई पुस्तक छपनी चाहिए जिससे आज का युवक भौतिकवाद से हटकर अध्यात्मवाद व नैतिकना को अपना सके और यह जान सके कि जैन धर्म क्या है? ससार का व हमारा इसके द्वारा क्या-क्या हित हो सकता है? इसके बहुमूल्य विचार कहॉ तक मानने व अमल करने योग्य है। और उन पर अमल करने से वर्तमान भीषण अशाति का नाश होकर विश्व-शाति का विशाल साम्राज्य केसे कायम हो सकना है? इन बातो से जनता प्राय अपरिचित-सी जान पडती है। मैने गन्नौर से चातुर्मास पूर्ण करके दिल्ली कैलाश नगर को विहार किया। वहॉ से गॉधीनगर भी रहा। मेरा विचार शाहदरा जाने का हुआ। तुरत वहॉ से समाचार भेजा, वहॉ स प्रथम मोहनलाल आया। उसने चार भजन बडे सुदर सुनाए, मुझे बहुत ही अच्छ लगे। फिर गॉधीनगर से शाहदरा विहार किया, वहॉ पर मोहनलाल ने मुझे कुछ दृष्टात पद्य मे व कुछ भजन लिखे हुए दिखाए। मैने उन्हे पढा, पढकर यह निश्चित किया कि ऐसे पद्य आज के युवक को बहुत ही अच्छे रहेगे और मोहनलाल की कविता बहुत ही सुदर लगी, और मोहनलाल का चरित्र भी बहुत ही अच्छा लगा, कि आज के युग मे यह ऐसा युवक है जिसने आजीवन रात्रि भोजन व गोभी तथा आलू और सात व्यसन का त्याग किया। और अब आजीवन चमडे का भी त्याग कर दिया है। उसके सदाचरण को देखकर यह अनुभव हुआ कि ऐसे चरित्रवान युवक की लिखी हुई कविता का असर समाज के बच्चो व युवको पर पड सकेगा, क्योकि जो चरित्रवान होता है वह ही दूसरो

को चरित्रवान बना सकता है। तुरत ही मैने उसको कहा कि यह पुस्तक छपवाकर समाज मे वितरित कराओ, इससे जैन व अजैन सभी लाभान्वित होगे। तब से अब तक मोहनलाल द्वारा रचित बोधप्रद काव्य के छह भाग प्रकाशित हो चुके है। उन्ही छह मागो का यह सकलन है 'बोधप्रद काव्य'।

मोहन को मेरा आशीर्वाद। वह इसी प्रकार अपनी लेखनी से अपना और सभी का कल्याण करता रहे। इति।

आचार्य धर्मभूषणजी महाराज

प्रस्तुति

कृतिकार श्री मोहनलाल जी सरल हृदय और विनयशील व्यक्ति है। जैन धर्म और जैन गुरुओ के प्रति उनकी बडी आस्था है। उनका कहना है कि जैन धर्म का पालन और मुनि दर्शन एव उनकी वैयावृत्ति से न केवल परभव सुधरता है, बल्कि इस जीवन मे आने वाली समस्याओ का समाधान भी होता है, हमारे सारे सकट दूर हो जाते है। दिगबर वीतरागी साधु-सघ के प्रति सच्ची श्रद्धा से भक्तजन के सारे बिगडे कार्य सध जाते है, दीनहीन अदीन और सुसपन्न बन जाता है। रचनाकार की सभी कविताओ का यही मुख्य विषय है।

मोहन जी की कविताओ मे कितना काव्यत्व है, है भी या नही—यह विचारणीय नही है, देखना यह है कि इनका भावबोध आम लोगो तक कितना सप्रेषणीय है और इस दिशा मे कविहृदय मोहन जी का प्रयास एक सीमा तक सफल माना जा सकता है। मोहन जी उठते-बैठते, दफ्तर मे कार्य करते हुए जो कुछ सोचते और गुनगुनाते रहते है, समय मिलते ही उनकी लेखनी उसे शब्दो मे बॉध देती है, और ये शब्द कविता का आकार पा जाते है। आपकी कविताओ के अब तक छह भाग प्रकाशित हो चुके है। उन्ही भागो से श्रेष्ठ का सकलन कर इस पुस्तक को यह रूपाकार दिया गया है।

पर्व-उत्सवो तथा अन्य धार्मिक आयोजनो मे श्री मोहन जी अपनी कविताओ का बडे ही मधुर कण्ठ से पाठ भी करते है। इस सबके बावजूद भाई मोहन जी से अपेक्षा करूँगा कि लेखन-कार्य के साथ-साथ वे जैन धर्म विषयक साहित्य का, विशेषकर कथा-साहित्य का, अध्ययन भी करते रहे। इससे ज्ञानवृद्धि तो होगी ही, कविता को नया विषय और नये आयाम भी मिलेगे। मोहन जी का रचना-कार्य परिष्कृत हो, समृद्ध हो—इसी भावना के साथ उन्हे मेरी अनेक-अनेक शुभकामनाएँ।

—डॉ गुलाबचद्र जैन
(भारतीय ज्ञानपीठ)

शुभाकांक्षा

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्री मोहन लाल जैन की सम्पूर्ण कविताओ का एक वृहद सग्रह प्रकाशित हो रहा है। मच पर पढी जानेवाली उनकी ये कविताएँ आम लोगो को भावविभोर कर देती है। इन कविताओ मे साधु-भक्ति और जिन-भक्ति को बहुत महत्त्व दिया गया है। ऐसे साहित्य से समाज मे साधु-भक्ति और धर्म-प्रभावना बढेगी, इसमे सन्देह नही।

मुनि-भक्त, सरल स्वभावी, कविहृदय श्री मोहन लालजी की इस क्षेत्र मे निरन्तर ज्ञानवृद्धि होती रहे। वे यशस्वी बने ऐसी मेरी शुभकामनाएँ।

20 मई 1999

प. धनराज जैन, ज्योतिषाचार्य
अमीनगरसराय

बीसवी सदी के प्रथम दिगम्बराचार्य आध्यात्मिक ज्योतिर्धर तपोमूर्ति समाधि साधक,
चारित्र चक्रवर्ती, परमपूज्य 108 आचार्य श्री शान्ति सागर जी महाराज

आद्य वक्तव्य

मेरा यह सौभाग्य है कि सातवे पुष्प के रूप मे अपनी यह कृति धर्म मे रुचि रखने वाले पाठको के हाथो मे समर्पित कर रहा हूँ। इसमे मेरा अपना कुछ नही है। जो कुछ भी लिखा है वह सब गुरु-चरणो की कृपा है। जेन परपरा मे मोक्षमार्ग-प्रदर्शक देव-शास्त्र-गुरु की सर्वाधिक मान्यता है। देव का अर्थ है–परमेष्ठी अर्हन्तदेव और मुक्तात्मा सिद्ध। शास्त्र से तात्पर्य है–अर्हद्वाणी, जिनवाणी, और गुरु से अभिप्राय है–आचार्य, उपाध्याय और दिगबर वेषधारी वीतराग साधु। इन सबकी पूजा, भक्ति और उपासना से हमारे भव-भव के पाप कट जाते है, हमारी आत्मा निर्मल हो जाती है और मन पवित्र हो जाता है।

सच पूछो तो मुझमे इतनी योग्यता ही कहॉ थी कि बिना स्वाध्याय और साहित्य-अभ्यास के काव्य गढ सकूँ। यह तो हमारे आचार्यो और मुनि-जनो का आशीर्वाद और प्रेरणा का फल है कि मेरा भावुक हृदय इस दिशा मे प्रवर्तित हुआ। न मै काव्य-शिल्प जानता हूँ और न ही छद-विधान। बस, आराध्य का स्मरण करता हूँ और अपने अतरग के भावो को अपनी लेखनी द्वारा कागज पर उतारना आरभ कर देता हूँ। मेरा यह अभ्यास पिछले कुछ वर्षो से बराबर चल रहा है। परिणामस्वरूप, इस तरह की कविताओ के अब तक मेरे छह काव्य-सग्रह प्रकाशित हो चुके है

कविता करने का यह चाव मुझे कब से हुआ यह कहना कठिन है, पर इतना अवश्य कहना चाहूँगा कि बचपन से ही मुझे महान सतो, दिगबर साधुओ के दर्शन और उनके प्रवचन सुनने का अवसर मिलता रहा। इससे उनके प्रति मेरी भक्ति और आस्था दृढ से दृढतर होती गई है। परमपूज्य 108 आचार्यश्री धर्मसागर जी, आचार्यश्री विमलसागर जी, आचार्यश्री

सुमतिसागर जी, आचार्यश्री शांतिसागर जी, आचार्यश्री ज्ञानभूषण जी, आचार्यश्री दर्शनसागरजी, आचार्यश्री सुधर्मसागरजी, आचार्यश्री कल्याणसागर जी, गणधराचार्यश्री कुन्थुसागर जी, आचार्यश्री भरतसागर जी आचार्यश्री धर्मभूषण जी आदि सतो के दर्शन और उनके उपदेशो का मेरे जीवन पर बडा प्रभाव पडा है। उनकी भव्य छवि के दर्शनो से और उनकी वाणी से नि सृत ज्ञान-गगा मे स्नान कर मै अपने जीवन को सफल और सार्थक मानता हूँ। पुन एक बार मै उन सभी के प्रति अपनी विनयाजलि समर्पित करता हूँ।

काव्य-रसिको से मेरा अनुरोध है, कविता पढते या सुनने समय वे मेरे शब्दो पर न जाकर उसमे निहित भावरस का पान करे, मुझे विश्वास है कि उन्हे इसमे बडा आनद आएगा और इस दृष्टि से मे भी अपने श्रम को सार्थक समझूँगा।

परमपूज्य आचार्यश्री धर्मभूषण जी महाराज को मै अपनी विनयाजलि समर्पित करता हूँ कि उन्होने इस पुस्तक के लिए अपना विशेष आशीर्वाद दिया। उनके चरणकमलो मे मेरा त्रिकालनमोऽस्तु।

आदरणीय डॉ गुलाबचद्र जैन का मै बहुत ही आभारी हूँ जिन्होने मेरी इस कृति मे यथावश्यक सशोधन-परिमार्जन कर उसे सशक्त एव पठनीय बनाया। उन सभी बधु-बान्धवो का भी मै हृदय स कृतज्ञ हूँ जिन्होने इसके मुद्रण-प्रकाशन मे मुझे खुले दिल से सहयोग प्रदान किया।

महावीर जयती, 1999

मोहनलाल जैन
(बावली वाले)

मुक्तक

1

जो वीतराग हो चुके, और जिनको भविष्य मे होना है,
जो वर्तमान मे इस पथ पर, चल रहे कर्म मल धोना है।
जो साधक है आराधक है, जिनसे अतस् हरि हारा है,
इस महत् कार्य की सिद्धि हेतु, उनको शत नमन हमारा है।

2

जो महान आत्माएँ होती है, युग परिवर्तन कर देती है,
उनकी गाथाएँ जन जन मे, नित नव जीवन भर देती है।
है वर्तमान गौरवशाली, जो ऐसे ज्ञान दिवाकर है,
प्रिय शाति मूर्ति, ज्ञान ज्योति, आचार्य शाति सागर है।
मुनि श्री का साक्षात् चरित जो सच्चे मन से तोलेगा,
मुनि श्री का साक्षात् चरित हर दिल की कुण्डी खोलेगा।
यह मोह मूर्ति मानव को वरदान बना दिखलाएगा,
सयम सजीवन बूटी दे, उनको तत्काल जगाएगा।

3

मै किसी योग्य न था स्वामी, बस नाम तुम्हारा जपता था,
लेकर मन मे बस एक उमग, प्रभु, नाम तुम्हारा भजता था।
मैने सुना था भगवान स्वय, भक्तो का कष्ट मिटाते है,
और कष्ट नही होने देते वे, अपने समान कर लेते है।

4

दोस्ती अगर करनी है, तो तू विद्वानो से कर,
भक्ति अगर करनी है, तो तू भगवान् की कर।
मौत का पैगाम तेरे, सिर पर जब मॅडराएगा,
वह भक्ति वाला भगवान ही, तुमको पार लगाएगा।

5

क्या रखा है इस दौलते जहान मे,
क्या रखा है इस मक्के मकान मे।
जहॉ पर रखा है वहॉ पर तू जाता नही,
एक बार भी चला गया तो फिर वापस आता नही।

6

जिन वाणी माता की विनय भक्ति ही सच्चा पाठ पढाती है,
अज्ञान अधकार को दूर करके ही, मोक्ष द्वार पहुँचाती है।
वीर प्रभु का दर्शन ही अनत सुख का एक पिटारा है,
जिसके सेवन करने से ही मिटे जन्म मरण का फेरा है।

7

प्रभु का दरबार ही अनत सुख का टेक है,
अनत सुख के टैक मे सम्यक् रूपी बेक है।
सम्यक् रूपी बैक मे, जो भी खाता खोलेगा,
दस धर्म रूपी ब्याज कमाकर मोक्ष का द्वार खोलेगा।

8

मित्रता करनी है तो मोक्ष रूपी मित्र से कर,
शत्रुता करनी है तो राग-द्वेष रूपी शत्रु से कर।
जब तक राग-द्वेष से शत्रुता नहि करेगा तेरा उत्थान नही होगा,
बिना मित्रता मोक्ष मित्र से तेरा कल्याण नही होगा।

9

जो सच्ची भावना होती है वह इक दिन पूरी होती है,
इक दिन पूरी होकर के फिर सबके सामने आती है।
सबके सामने आकर के फिर ज्ञान सागर को लाती है,
ज्ञान सागर को लाकर के फिर हित उपदेश कराती है

10

कमान से निकला तीर फिर वापस नही आता है,
मुँह से निकला वचन फिर लौट के नही आता है।
बीता हुआ समय फिर वापस नही आता है,
मुनि धर्म को छोडकर, कोई मोक्ष नही पाता है।

11

जिन वाणी माता की जो सच्ची विनय करेगा,
वह उसको वात्सल्य भाव से सच्चा ज्ञान सिखाएगी।
सच्चा ज्ञान सिखा करके, केवल ज्ञान कराएगी,
केवल ज्ञान दिला करके, फिर मोक्ष द्वार पहुँचाएगी।

12

सम्यक् रस की एक बूँद भी, आत्मा को तृप्त कर देती है,
मिथ्या रस की एक ओस भी, विश्वासघात कर देती है।
गधोदक की एक बूँद भी, कोढ दूर कर देती है,
वीर प्रभु की एक किरण भी, जग के दु ख हर लेती है

13

जो सताते है औरो को, सताए वो भी जाएँगे,
जो करते है दया दीनो पर, दयालु वो कहलाएँगे।
जो करते है मुनि सेवा, वो मुनि भक्त ही कहलाएँगे,
मुनि भक्त कहलाने वाले ही, इक दिन मुनि बन जाएँगे।

14

ब्रह्मचर्य ही तो इस जग मे, अनत शक्ति का समुदाय है,
अनत शक्ति का समुदाय है, और सम्यक् ज्ञान का उपाय है।
सम्यक् ज्ञान का उपाय है, और सच्चे सुख का व्यवसाय है,
सच्चे सुख का व्यवसाय है, और मुक्तिरानी से व्याह रचाय है।

15

सच्ची भक्ति ही तो हमको सच्चा भक्त बनाती है,
सच्चा भक्त बना करके फिर आशीर्वाद दिलाती है।
आशीर्वाद दिला करके, केवल ज्ञान दिलाती है,
केवल ज्ञान दिला करके, शिव मजिल पहुँचाती है।

16

समुद्र के पानी को नापा नही जाता,
आकाश के सितारो को गिना नही जाता।
सरस्वती के भडार को तोला नही जाता,
वीर दर्शन को मुझसे छोडा नही जाता।

17

रेत की दीवार, ज्यादा नही चलती,
बिना पेट्रोल के गाडी नही चलती।
पत्थर की नाव तैरती नही देखी,
पाप की कमाई ठहरती नही देखी।

18

जहर की प्याली पीयी नही जाती,
की हुई मेहनत खाली नही जाती।
इज्जत पै दाग धोया नही जाता,
मिश्री मे मिठास घोला नही जाता।

19

सभाओ के अदर विनय से काम चलता है,
रेल के अदर कोयले से काम चलता है।
लडाई के अदर साहस से काम चलता है,
प्रभु पूजन के अदर क्रिया से काम चलता है।

20

सतियो के अदर शील का ससार छिपा होता है,
आत्माओ के अदर सिद्धो का आकार छिपा होता है।
मिट्टी के अदर सोने का हार छिपा होता है,
इसानो के अदर दुखियो का प्यार छिपा होता है।

21

दीपक के अदर जोत छिपी होती है,
भोगो के अदर मौत छिपी होती है।
भक्तो के अदर भक्ति छिपी होती है,
आत्मा के अदर शक्ति छिपी होती है।

22

धर्म को छोडने से काम नही चलता,
गरीबो को सताने से नाम नही चलता।
भोजन को छोडने से जीवन नही चलता,
विनय को छोडने से ज्ञान नही चलता।

23

प्रभु-भक्ति से बडे-बडे उपसर्ग दूर हो जाते है।
प्रभु के सम्यक आराधन से, मोक्ष-द्वार खुल जाते है ॥
नही भूलना कभी प्रभु को, नहि प्रमाद तुम करना।
सकट मे भी कभी न छूटे, उसका नाम उचरना ॥

नैया पार करेगे स्वामी, हमे पूर्ण विश्वास है।
ज्ञान पगी प्रभु-भक्ति है तो, सब कुछ तेरे पास है ॥

24

पहले से ही प्रभु तुम्हारा, आराधन मै कर लेता।
छूट गए होते भव के दुःख, मोक्ष लक्ष्मी गह लेता ॥
सिद्धशिला पर एक सीट, मुझको भी बुक हो जाती।
जिनवर! तेरे चरणो मे यदि, जगह मुझे मिल पाती ॥
वेटिग मे नबर आएगा, यही बराबर आस है।
तीन लोक के नाथ सदा, तेरे दर्शन की प्यास है ॥

25

नहि चाहता हूँ धन-दौलत, ना हीरा-मोती चाहूँ।
तव चरणो मे लगा रहे मन, और नही कुछ भी चाहूँ ॥
सभी चाह अब मिटी हमारी, एक चाह बाकी है।
प्रभु आपसा बन जाऊँ मै, यही राह नापी है ॥
कब होगा उद्धार हमारा, भटक रहा भव-वन मे।
दर्शन दो प्रभु शीघ्र हमे तुम, आश करूँ यह मन मे ॥

26

सारे काम किए है जग मे, एक काम से दूर रहा।
तेरी भक्ति ना की अब तक, उसको था मै भूल रहा ॥
पुण्य उदय अब आया मेरा, तेरी महिमा जानी है।
तेरी भक्ति पार लगाती, एक बात यह मानी है ॥
चरण गहूँ मै प्रभु तुम्हारे, तुम हो मेरे स्वामी।
पार लगा दो नेया मेरी, सर्वज्ञ पूर्ण अभिरामी ॥

27

हीरो का नहि हार लुभाता, नही लुभाती मणि-माला।
नही लुभाता जग का वैभव, और न यह मधुरस प्याला ॥

7

रहूँ चरण मे सदा तुम्हारी, और सुनूँ तेरी वानी।
कभी न बिछुडे साथ तुम्हारा, यही एक मन मे ठानी ॥
तेरी भक्ति करूँ हमेशा, यह शुभ भाव हमारा है।
तीन लोक के नाथ आपको, शत-शत नमन हमारा है ॥

28

धर्मभूषण महाराज को पाकर, धरती अबर नाच उठे।
जय-जय-जय श्री धर्मभूषण की, कहकर वो सब झूम उठे ॥
धरा धन्य कहती अपने को, अबर भी धन्य कहता है।
भारत देश भी तुमको पाकर, खुद को धन्य समझता है।
करके दर्शन गुरु तुम्हारे, भाग्य सराहे हम अपना।
जिएँ हजारो साल मुनिश्री, यही एक मेरा सपना ॥

29

धर्मभूषण महाराज श्री के, चरण जहॉ भी पड जाते।
कण-कण हो जाता पवित्र, अरु आनद मगल छा जाते ॥
कविनगर मे चरण तुम्हारे, पडने से रौनक आई है।
दर्शन करने भारी जनता, दूर-दूर से आई है ॥
परम तपस्वी पूज्य गुरु जी, धर्मभूषण नाम तुम्हारा है।
हाथ जोडकर पूज्य गुरु को, सौ-सौ नमन हमारा है ॥

30

परम पूज्य गुरुदेव ऋषि तुम, ज्ञान गुणो के सागर हो।
इस उत्तर भारत के गुरुवर, तुम ही विद्यासागर हो ॥
जहॉ-जहॉ भी जाता हूँ मै, तुम्हरी चर्चा सुनता हूँ।
धर्मभूषण सा सत नहीं है, सबके मुख से सुनता हूँ ॥
धर्मभूषण महाराज तुम्हारी, महिमा जग से न्यारी है।
पूज्य गुरु के चरण कमल मे, सौ-सौ नमन हमारी है ॥

31

धर्मभूषण गुरु के चरणो से, हमे बहुत ही प्यार है।
इन जैसे सतो से ही तो, टिका हुआ ससार है ॥
सत नही होगे जब भू पर, सब कुछ ही मिट जाएगा।
सूरज चॉद नही होगे तब, अधकार छा जाएगा ॥

32

देश-विदेशो मे भी जिनकी, हरदम चर्चा होती है।
जिनकी अमृत वाणी सुनने, जनता उत्सुक रहती है ॥
नेता, मत्री ओर डॉक्टर, जिनके दर्शन को आते।
पाकर आशीर्वाद जिन्हो का, बिन मॉगे सब पा जाते ॥
इनका नाम धर्मभूषण हे, धर्म की वर्षा करते है।
हाथ जोडकर गुरु आपको, नमन सभी हम करते है ॥

33

नही चाहता हूॅ धन-दौलत, ना हीरा मोती चाहूॅ।
तव चरणो मे लगा रहे मन, और नही कुछ भी चाहूॅ ॥
सभी चाह अब मिटी हमारी, एक चाह बस बाकी है।
धर्मभूषण से बन जाऍ हम, सौ-सौ नमन हमारी है ॥

34

जब जब भी मै गुरु तुम्हारे, दर्शन करने आता हूॅ।
तव चरणो मे शीश झुकाकर, वापस घर को जाता हूॅ॥
बिन मॉगे मेरी झोली को, गुरु आप भर देते हो।
ज्ञान-रतन वैराग्य के मोती, डाल उसी मे देते हो॥
उन्ही ज्ञान-रतनो का मै तो, कविता हार बनाता हूॅ।
पहनाकर गुरुवर को अपने, धन्य धन्य हो जाता हूॅ॥

35

गुरु तुम्हारे तप की चर्चा, आज विश्व मे होती है।
इन्द्र सभा मे भी तो तेरे, ज्ञान की चर्चा होती है॥
राजाओ-सा घर वैभव सब, पाकर तुमने ठुकराया।
तीन लोक मे पूज्य मुनिपद, गुरु आपने अपनाया ॥
ऐसे ज्ञानी गुरुदेव का, हमको मिला सहारा है।
धर्म भूषण महाराज आपको, सौ सौ नमन हमारा है ॥

36

धर्म भूषण से परम तपस्वी, यदि सन्त इह नही होते।
यह भारत गारत बन जाता, यदि जैन मुनि नही होते ॥
सन्तो के तप के कारण ही धरती पर है हरियाली।
इनके चरणो की धूलि भी, सुख को देने है वाली ॥
इन महा तपस्वी सन्तो के चरणो मे अपना शीश झुकाते है।
जिये हजारो साल गुरुवर, प्रभु से आश लगाते है ॥

37

बच्चे बूढे नवयुवको को, हमने कहते देखा है।
शान्ती सागर-सा ज्ञानी हमने, नहि जीवन मे देखा है ॥
दुखियो को ये गले लगाते, राग-द्वेष नहि करते है।
निर्धन या धनवान हो कोई, एक समान समझते है ॥
अमृत इनकी वाणी मे है, शान्तीसागर जी नाम है।
ऐसे परम तपस्वी गुरु को, सौ सौ बार प्रणाम है ॥

38

गुरु ज्ञान के सागर हो तुम, सागर मे मोती होते।
तुम जैसे सन्तो के दर्शन, बिगडा भाग्य बना देते ॥
बिगडा भाग्य बनाया हमरा, हम मूरख ससारी है।
पूज्य गुरु के चरण कमल मे, सौ सौ नमन हमारी है ॥

39

गुरु तुम्हारे चरणो की धूलि से, प्रेम हमारा है।
मुझ जैसे मूरख, प्राणी का, तू ही एक सहारा है।
तुमने ज्ञान दिया गुरु मुझको, तेरा यश दुनिया गाती।
तुमरी त्याग तपस्या की, चर्चा स्वर्गो मे भी जाती ॥
परम तपस्वी पूज्य गुरुजी, धर्मभूषण नाम तुम्हारा है।
हाथ जोडकर पूज्य गुरु को, सौ सौ नमन हमारा है ॥

40

जो भी प्राणी साधु सन्त की, सेवा कर हर्षाता है।
दृढता से कहता हूँ मै यह, सदा सुखी वो रहता है ॥
नही कमी कुछ रहती घर मे, लक्ष्मी खुद चलकर आती।
करते जो सेवा सन्तो की, उनके घर शुभ पद पाती ॥
सेवा करूँ सदा सन्तो की, ये शुभ भाव हमारा है।
धर्मभूषण महाराज आपको, सौ सो नमन हमारा है ॥

41

जिनवाणी माँ तुझे भूलकर, भारी कष्ट उठाये।
चौरासी मे फिरे भटकते, नरको के दुख पाये ॥
मार बहुत खाई नरको मे, भूल गया तू भाई।
तेरे अन्दर प्रभु बसा जो, उसकी सुध बिसराई ॥
नहि भूलेगे कभी तुझे मॉ, हम तो तेरे दास है।
गुरु हमारे धर्मभूषण का, ऐसे आशीर्वाद है ॥

42

नही कवि हूँ नही मै लेखक, ना मुझको कुछ ज्ञान है।
कविता जो भी लिखता हूँ मै, गुरुवर का वरदान है ॥
गुरु हमारे धर्मभूषण है, इनका यश दुनिया गाती।
करता हूँ जब ध्यान गुरु का, कविता स्वय उभर आती ॥

आशीर्वाद गुरु का पाकर, गीत हमेशा गाता हूँ।
जिये हजारो साल गुरुवर, मनवांछित फल पाता हूँ ॥

43

धन वैभव मैने नही चाहा, प्यार गुरु पाया है।
अपने गुरु धर्मभूषण की, पदरज माथ लगाया है ॥
गुरु हमारे धर्मभूषण जी, जिस नगरी मे जाते है।
आनद मगल छा जाता है, कष्ट सभी मिट जाते है ॥
धर्मभूषण महाराज तुम्हारी, महिमा जग से न्यारी है।
हाथ जोडकर पूज्य गुरु को, सौ सौ नमन हमारी हे ॥

44

धर्मभूषण जी पूज्य गुरु का, जिनके सिर पर हाथ है।
वैरी वैर भुला देता है, ऐसा हमे विश्वास है ॥
ऋद्धि-सिद्धियॉ तव चरणो मे, आकर खेला रकती है।
प्रभु का हो आदेश हमे अब हर दम सोचा करती है ॥
जहॉ भी जाते गुरुदेव तुम, आनद मगल छा जाता।
धर्मभूषण के जयकारो से, लोकाकाश गूँज जाता ॥

45

सरल स्वभाव तुम्हारा गुरुवर, अमृतमय तुमरी वाणी।
तुमरी वाणी सुनकर गुरुवर, खुश होता है हर प्राणी ॥
करते है प्रवचन गुरु जब, हमको ऐसा लगता है।
बोल रहे साक्षात् तीर्थकर, समोसरण सा लगता है ॥
स्वस्थ रहे मुनिराज हमारे, ये शुभ भाव हमारा है।
धर्मभूषण महाराज आपको, सौ सो नमन हमारा है ॥

46

बाईस वर्ष हुए जब मैने, प्रथम गुरु दर्शन पाया।
ब्रह्मचारी थे आप गुरु जब, कर दर्शन मै हर्षाया ॥

अमीनगर सराय मे प्रथम, आशीर्वाद तव पाया था।
हुआ कृतज्ञ चरणरज पाकर, अपना भाग्य सराहा था ॥
उस दिन से अब तक गुरु तेरी, सेवा कर हर्षाया हूँ।
छह पुस्तक भी गुरु तुम्हारी, कृपा से लिख पाया हूँ ॥
परम तपस्वी पूज्य गुरु जी, तुमरा हमे सहारा है।
धर्मभूषण महाराज आपको, सौ सौ नमन हमारा है ॥

47

वचन सिद्धि है तुमको गुरुवर, कठिन तपस्या करते हो।
निर्धन या धनवान हो कोई, एक समान समझते हो ॥
तव चरणो मे आने वाला, अपना भाग्य सराहे है।
धर्मभूषण महाराज श्री के, गीत हमेशा गाये है ॥
ऐसे परम तपस्वी गुरु का, हमको मिला सहारा है।
धर्मभूषण महाराज आपको, सौ सौ नमन हमारा है ॥

48

सोलह सुख सन्तो की सेवा से प्राणी को मिलते है।
इनकी सेवा करने से ही, द्वार मोक्ष के खुलते है ॥
सेवा करो सदा सन्तो की, सन्तो से प्रेम हमारा है।
धर्मभूषण महाराज आपको, सौ सौ नमन हमारा है ॥

49

तुम चरणो की धूलि गुरुवर, जिस प्राणी को मिल जाती।
अटल विश्वास हमारा है ये, उसकी किस्मत खुल जाती ॥
किस्मत खुली हमारी गुरुवर, बिन माँगे सब कुछ पाया।
तुमरे आशीर्वाद से ही तो, जीवन मे आनद आया ॥
परम तपस्वी पूज्य गुरु को, अपना शीश झुकाते है।
जिये हजारो साल गुरुवर, हम यही प्रभु से चाहते है ॥

50

आत्म ध्यान के सिवा जिन्हो को, और नही कुछ भाता है।
सिद्ध शिला के सब सिद्धो से, गुरु तुम्हारा नाता है ॥
जिनकी कठिन तपस्या की, स्वर्गो मे चर्चा होती है।
निकल गई जो बात जिव्हा से, इकदम सच्ची होती है।
ऐसे परम तपस्वी मुनि का, हमको मिला सहारा है।
धर्मभूषण महाराज आपको, सौ सौ नमन हमारा है ॥

51

जल्दी जल्दी गुरु तुम्हारे, दर्शन करने आऊँगा।
लेकर तुमसे ज्ञान के मोती, कविता हार बनाऊँगा ॥
कविता हार बनाकर हमको, गुरुवर को पहनाना है।
करके भक्ति गुरु तुम्हारी, जीवन सफल बनाना है ॥
धन्य भाग्य इस कवि नगर के, चातुर्मास तुम्हारा है।
धर्मभूषण महाराज आपको, सौ सौ नमन हमारा है ॥

52

नगर बहुत देखे है हमने, दिल्ली शहर भी देखा।
गॉव बहुत देखे है हमने, हरिणाणा प्रान्त भी देखा ॥
कवि नगर जब देखा हमने, भाव ये मन मे आया।
धन्य धन्य ये कवि नगर जो, गुरुवर को भी भाया ॥
धर्मी जनता इस नगरी की, धर्मी सब नर नारी है।
धर्मभूषण महाराज आपको, सौ सौ नमन हमारी है ॥

53

धर्मभूषण जी पूज्य गुरु का, सारे जग मे नाम है।
परम तपस्वी गुरु हमारे, जैन धर्म की शान है ॥
सरल स्वभाव तुम्हारा गुरुवर, कैसे महिमा गाऊँ।
मिले हमेशा दर्शन तेरे, और नही कुछ चाहूँ ॥

जिये हजारो साल गुरुवर, ये शुभ भाव हमारा है।
धर्मभूषण महाराज आपको, सौ सौ नमन हमारा है ॥

54

मुझ जैसे मूरख प्राणी को, किसने आकर ज्ञान दिया।
धर्म मार्ग पर लगा मुझे यह, मगलमय वरदान दिया ॥
बिन माँगे मेरी झोली को, जिसने भैया भर डाला।
जैन धर्म का डका जिसने, जग मे आज बजा डाला ॥
धर्मभूषण है नाम इन्ही का, इनको शीश झुकाते है।
जिये हजारो साल गुरुवर, शुभ वाछा यह भाते है ॥

55

नही चाहता कोठी बँगले, ना सोना चाँदी चाहूँ।
नही चाह मोटर गाडी की, ना हीरा मोती चाहूँ ॥
चाहूँ आशीर्वाद तुम्हारा नित दर्शन तुमरे पाऊँ।
तुम चरणो मे लगा रहे मन, यही एक रट मन लाऊँ ॥
सेवा करूँ सदा मै तुमरी, सेवा का फल न्यारा है।
धर्मभूषण महाराज आपको, सौ सौ नमन हमारा है ॥

56

चलते फिरते तीरथ है ये, सन्तो मे सन्त महान है।
धर्मभूषण जी गुरु हमारे, जैन धर्म की शान है ॥
करते ही दर्शन गुरुवर के, हमको ऐसा लगता है।
तुम जैसा सुन्दर नही कोई, हमे धरा पर लगता है ॥
होने वाले सिद्धो की, सूची मे नाम तुम्हारा है।
धर्मभूषण महाराज आपको, सौ सौ नमन हमारा है ॥

57

मुनि दीक्षा धारण करना, बच्चो का है खेल नही।
पच महाव्रतो का पालन, करना कोई रेलपेल नही ॥

तलवारो की धार पे चलना, तो भैया आसान है।
नगन दिगम्बर होकर रहना, कितना मुश्किल काम है ॥
परम दिगम्बर सन्तो के, दर्शन को देव तरसते है।
किस्मत वालो को ही भैया, दर्शन इनके मिलते है ॥
सेवा करूँ सदा सन्तो की, सेवा का फल न्यारा है।
धर्मभ्रूषण महाराज आपको, सौ सौ नमन हमारा है ॥

58

हर मुश्किल आसान जिन्हो के, दर्शन से हो जाती है।
खाली झोली अपन आप ही, बिन माँगे ही भर जाती है ॥
दुनिया का धन-वैभव खुद ही, चरणो मे चलकर आता।
मुझ जैसा मूरख प्राणी भी, भजन कविता लिख पाता ॥
नाम इन्हो का धर्म भूषण हे, नमन इन्हे हम करते है।
जिये हजारो साल गुरुवर, अर्ज प्रभु से करते है ॥

59

जो हर्ष तुम्हारे आतम मे, गुरुदेव हमेशा रहता है।
वो हर्ष हमे भी दो गुरुवर, मोहन यह तुमसे कहता है ॥
उस हर्ष की महिमा का वर्णन, नहि देव इन्द्र कर सकते है।
उस हर्ष का आनद तुम जैसे, ज्ञानी ही तो ले सकते है ॥
वो हर्ष हमे भी दे दोगे, ये शुभ भाव हमारा है।
धर्मभूषण महाराज आपको, सौ सौ नमन हमारा है ॥

60

जिनकी सेवा करके मैने, बिन माँगे सब कुछ पाया।
आशीर्वाद से जिनके मुझको, कविता है, लिखना आया ॥
आजीवन चमडे का त्यागी, जिसने मुझे बनाया है।
आलू गोभी छुडवा मुझसे, निशि भोजन त्याग कराया है ॥

नाम इन्ही का धर्मभूषण है, ये कठिन तपस्या करते है।
हाथ जोडकर पूज्य गुरु को, नमन सभी हम करते है ॥

61

कवि नगर मे आकर गुरु ने, रौनक यहाँ पर कर दी।
हम लोगो मे गुरु आपने, धर्म भावना भर दी ॥
तुमरे यहाँ आने से गुरुवर, रौनक यहाँ पर आई है।
तुमरे दर्शन करने जनता, दूर दूर से आई है ॥
आशीर्वाद दो हम सबको गुरु, हम मूरख नादान है।
धर्मभूषण महाराज आपको, बारम्बार प्रणाम है ॥

62

देख के रूप तुम्हारा गुरुवर, हमको ऐसा लगता है।
तुम जैसा सुन्दर नहि कोई, हमे धरा पर लगता है॥
मोक्ष मार्ग के ताले की, चाबी तो पास तुम्हारे है।
स्वर्गो के सब इन्द्र देवता, गाते गीत तुम्हारे है ॥
तुमने ज्ञान दिया गुरु हमको, हम तो तेरे दास है।
परम तपस्वी गुरु हमारे, धर्मभूषण महाराज है ॥

63

धरती अम्बर सूरज चन्दा, सब जिनके गुण गाते है।
जेलो के खूँखार केदी भी, जिनको शीश झुकाते है ॥
सुनकर जिनकी अमृतवाणी, कैदी पश्चात्ताप करे।
जिन्हे देखकर हिसक प्राणी, वैर भाव का त्याग करे ॥
नाम उन्ही का है, धर्मभूषण वे ही गुरु हमारे है।
पूज्य गुरु के चरण हमे तो, प्राणो से भी प्यारे है ॥

64

जब से सेवा की सन्तो की, सेवा का फल पाया है।
इनकी सेवा का ही फल है, भजन बनाना आया है ॥

सन्तो की सेवा प्राणी का, भाग्य सितारा चमकाती।
इनकी सेवा ही प्राणी को, मोक्ष द्वार तक ले जाती ॥
धर्मभूषण जैसे सन्तो का, हमको मिला सहारा।
हाथ जोडकर पूज्य गुरु को, सौ सौ नमन हमारा ॥

65

धर्म मार्ग चलने वालो का, जग मे आदर होता।
एक धर्म है जो जीवो को, भव से पार लगा देता ॥
धर्म मार्ग पर चलने से ही, स्वर्ग मोक्ष सुख मिलता है।
धर्म मार्ग तज देने से ही, द्वार नकर का खुलता है ॥
धर्म मार्ग अपनाओ भैया, धर्म महा उपकारी है।
धर्मभूषण महाराज आपको, सौ सौ नमन हमारी है ॥

66

सब कुछ मिल जाता प्राणी को, नर तन मुश्किल से मिलता।
कितना सुन्दर सन्त समागम, पुण्यवान को है मिलता ॥
पूर्वजन्म मे किया पुण्य ही, आज उदय मे आया है।
इसीलिए तो धर्मभूषण का, हमने दर्शन पाया है।
धन्य भाग्य है कवि नगर के, धन्य यहॉ के नरनारी।
धर्मभूषण महाराज की महिमा, गाती है दुनिया सारी ॥

67

जिनके दर्श मात्र से भैया, पापो का क्षय हो जाता।
जिनकी अमृतवाणी सुनकर, ज्ञान बहुत ही हो जाता ॥
ऐसे गुरु धर्मभूषण को, हम सब शीश झुकाते है।
जिये हजारो साल गुरुवर, यही प्रभु से भाते है ॥

68

सन्तो की महिमा लिखने मे, हमको आनद आता है।
छूता हूँ जब चरण इन्हो के, मन प्रसन्न हो जाता है ॥

दर्शन करने से सन्तो के, बिगडी किस्मत बन जाती।
खिल जाते है फूल चमन मे, आतम सच्चा सुख पाती ॥
धर्मभूषण जी पूज्य गुरुवर, हम गीत तुम्हारे गाते है।
जिये हजारो साल मुनिवर, यही भावना भाते है।

69

हर मुश्किल आसान तुम्हारी, कृपा से हो जाती है।
प्रभु भक्ति करने से भैया, अशुभ घडी टल जाती है ॥
भक्ति करो सदा श्रीजिन की, करो प्रभु का ध्यान।
प्रभु भक्ति से ही होता है, आतम का कल्यान ॥
भक्ति करूँ सदा प्रभु तेरी, ये शुभ भाव हमारा है।
तीन लोक के नाथ आपको, सौ सौ नमन हमारा है॥

70

मोह माया के चक्कर मे ही, सारा समय बिता डाला।
भोगो मे फँस करके तूने, हीरा जन्म गवॉ डाला ॥
नही करी प्रभुजी की भक्ति, नही आत्म कल्यान किया।
नही करी सन्तो की सेवा, नहि आगे का ध्यान किया ॥
प्रभु भक्ति मे सारा जीवन, अब तो हमे बिताना है।
करके सेवा गुरु तुम्हारी, जीवन सफल बनाना है ॥
सेवा करूँ सदा सन्तो की, ये शुभ भाव हमारा है।
धर्मभूषण महाराज आपको, सो सौ नमन हमारा है ॥

71

जितना प्रेम दिया गुरु तुमने, नही किसी से पाया।
तुमरे आशीर्वाद का फल है, पुस्तक छह मै लिख पाया ॥
मेरे गुरु धर्मभूषण की, महिमा अजब निराली है।
इनकी कृपा से सूखे मे भी हो जाती हरियाली है ॥

परम तपस्वी पूज्य गुरु का, हमको मिला सहारा।
धर्मभूषण महाराज आपको, सौ सौ नमन हमारा ॥

72

जिनकी कठिन तपस्या की, स्वर्गो मे चर्चा होती है।
जिनकी अमृतवाणी सुनने, जनता उत्सुक रहती है॥
निर्धन या धनवान हो कोई, सब प्रेम जिन्हो का पाते है।
ऐसे परम तपस्वी सन्त का, हम तुमको नाम बताते है ॥
नाम इन्हो का धर्मभूषण है, ज्ञान की वर्षा करते है।
हाथ जोडकर पूज्य गुरु को, नमन सभी हम करते है ॥

73

विहार समय जो भी सन्तो के, साथ मे उनके जाते है।
श्रद्धा भक्ति कर सन्तो की, अपना भाग्य सराहते है ॥
भव्य जीव कहलाते है वो, सारा जग आदर करता।
स्वर्गो मे भी उनकी भैया, देव प्रशसा है करता ॥
ऐसे धर्मी लोगो से ही, भैया प्रेम हमारा है।
धर्मभूषण महाराज आपको, सौ सौ नमन हमारा है ॥

74

धर्मभूषण महाराज तुम्हारे, चरणो की हम धूल है।
तुमरे चरणो की धूलि मे, मिले ज्ञान के फूल हे ॥
जब से मैने तुम चरणो की, धूलि शीश लगाई है।
बिन माँगे पाया है सब कुछ, कविता लिखनी आई है ॥
तुम चरणो की धूलि हमको, प्राणो से भी प्यारी है।
धर्मभूषण महाराज आपको, सौ सौ नमन हमारी है ॥

75

तुम जैसे सन्तो की गुरुवर, महिला अजब निराली है।
तुम चरणो की धूलि गुरुवर, सुख को देने वाली है ॥

गुरुवर तुम-सा सन्त धरा पर, नही कोई दिखता है।
तुम चरणो मे आकर प्राणी, सुख का अनुभव करता है ॥
धन्य धन्य सन्तो का जीवन, धन्य ये गुरु हमारे है।
धर्मभूषण के चरणमकल मे, शत शत नमन हमारे है ॥

76

मुनि निन्दा करने वालो को, पडे सडक पर देखा है।
कव्वे खा रहे नोच नोचकर, हमने ऑखो देखा है ॥
रोटी नही मिलती खाने को, वश नही उनका चलता।
कोढ देह मे होता उनके, नरको मे जाना पडता ॥
निन्दा नहि करना मुनियो की, ये तो पूज्य हमारे है।
ऋषि मुनिया के चरण हमे तो, प्राणो से भी प्यारे है ॥

77

नभ के तारे गिन सकता हूँ, नही गुण तुमरे गिन सकता।
तुम जेसे गुरुवर को पाकर, प्राणी भव से तिर सकता ॥
महा तपस्वी गुरु हमारे, जैन धर्म की शान है।
तुम जेसे सन्तो से भारत, बन गया देश महान है ॥

78

सन्तो की सेवा करने से, द्वार मोक्ष का खुल जाता।
दर्शन करने से सन्ता के, बिगडा भाग्य बदल जाता ॥
लक्ष्मी स्वय आती हे घर मे, पाप दूर ही रहता है।
निर्धन भी इनकी कृपा से, धनी बहुत हो जाता है ॥
सेवा करो सदा सन्तो की, ये तो पूज्य हमारे है।
धर्मभूषण के चरण हमे तो, प्राणो से भी प्यारे है ॥

79

जिनके दर्शन करते ही, जीवन मे आनद आ जाता।
सुनकर जिनकी वाणी को, अज्ञान तिमिर बिला जाता ॥

बहरा भी सुनने लगता है, अन्धा पढने लगता है।
मुझ जैसा मूरख प्राणी भी, कविता लिखने लगता है ॥
परम तपस्वी पूज्य गुरुजी, धर्मभूषण नाम तुम्हारा है।
हाथ जोडकर पूज्य गुरु को, शत शत नमन हमारा है ॥

80

सन्तो के तप की शक्ति को, हर कोई नही जान सकता।
इनके आशीर्वाद से प्राणी मजिल अपनी पा सकता ॥
इनकी चरण-धूलि लेने को, स्वर्गो के देव तरसते है।
किस्मत वालो को ही भैया, दर्शन इनके मिलते है ॥
शत शत नमन हमारा इनको, इनसे हमको प्यार है।
इनकी चरण-धूलि मे हमरी, श्रद्धा अपरम्पार है ॥

81

सूरज चॉद सितारे भी तो, गीत इन्ही के गाते है।
धन्य धन्य सन्तो का जीवन, कहकर वो हर्षाते है ॥
क्या कहते हे, आपस मे वो, जीवन मे सब कुछ देखा।
सन्त बहुत देखे है हमने, धर्मभूषण सा नही पेखा ॥
ऐसे परम तपस्वी मुनि का, हमको मिला सहारा है।
धर्मभूषण महाराज आपको, शत शत नमन हमारा है ॥

दोहे

मेरा मेरा क्या करे, मेरा नही है कोय,
जो मेरा निज आत्मा, उसको भूला तोय ॥1॥
निज घर मे सुख है भरा, पर घर मॉगन जाए,
पर मे नही सुख लेश है, आत्म ध्यान लगाय ॥2॥
जाय कही भी तू चला, जब तक नही है त्याग,
सच्चा सुख है त्याग मे त्यागो मान कषाय ॥3॥
मान महा विष रूप है, मान नरक ले जाय,
करता हे जो मान जन, भारी कष्ट उठाय ॥4॥
निज कर्मो से दु ख मिले, निज मे सुख सतोष,
पाप तजो तुम धर्म कर, होय सदा निर्दोष ॥5॥
हरी धर्म की जड सदा, हरा धर्म का खेत,
दया धर्म पालो सदा, हरता हे दु ख कलश ॥6॥
धर्म नही बिसराइग, धर्म सुखो की खान,
एक धर्म है जीव को, देता पद निर्वाण ॥7॥
हम अल्पज्ञ है हे प्रभु, तुम हो गुण की खान,
पूजा जो करते तेरी, वो है पुरुष महान् ॥8॥
प्रभु तुम्हारे ज्ञान मे, झलके तीनो लोक,
श्रद्धा भक्ति से तेरी, मिटता भव का रोग ॥9॥
भव क नाशन हो तुम्ही, तुम ही पालन हार,
तेरी कृपा से प्रभु, होता बेडा पार ॥10॥
विनय गुरु की कीजिए, विनय ज्ञान का मूल,
ज्ञान स्वय आ जात है, विनय जहॉ वेतूल ॥11॥

ज्ञान गुरु की देत है गुरु बिन नाहि ज्ञान,
ज्ञान गुणो की खान है, सम्यक् ज्ञान प्रधान ॥12॥

कर्म विषय में—प्रश्न व उत्तर

प्र 1 विधवा कैसे बनती मुनिवर, सही-सही बतला दीजै,
किन पापो से होता ऐसा, उत्तर मुझको दे दीजै।

उ 1 सती कहाकर जो ऊपर से, अदर पाप कमाती है,
बचपन मे विधवा बनती है, जो शील मे दाग लगाती है।

प्र 2 इसान पुत्र नही पाता जग मे, भारी कष्ट उठाता है,
शादी चाहे जितनी कर ले, नही पुत्र वो पाता है।

उ 2 वृक्ष हरे कटवाकर जो जन, मन मे खुशी मनाता है,
अगले भव मे जाकर वह, नही पुत्र को पाता है।

प्र 3 जिह्वा क्यो नही होती मुख मे, मुनिवर हमे बता दीजे,
किन पापो से होता ऐसा, उत्तर हमको दे दीजै।

उ 3 महामुनियो को देख जो पापी, जीभ निकाला करते है,
अगले भव मे जीभ रहित हो, भारी दु खडे भरते है।

प्र 4 किन पापो के योग से, नर अधा हो जाए,
गुरु हमे बतलाय दो, शका सब मिट जाए।

उ 4 नेत्र फोडकर जो औरो के, मन मे खुशी मनाता है।
जो शहद के छत्ते के नीचे, अज्ञानी आग जलाता है।
अधे जन की दु खा आत्मा, फूला नही समाता है,
ऐसा प्राणी मरकर भैया, अधा ही हो जाता है।

प्र 5 बहरा क्यो बनता है सतगुरु, यह तो मुझे बता दीजे,
न बनूँ अगाडी मै बहरा, वो ज्ञान हमे बता दीजे।

उ 5 कान फोडकर जो औरो के, फूले नही समाते है,
धर्म कथा होती हो तो, चालाकी से सो जाते है।
देव गुरु की निदा सुनकर, जो मन मे खुशी मनाते है,
जिनवाणी को ठुकराते है, मंदिर भी नही जाते है।

प्र 6 किन कर्मो से बनता कोढी, मुनिवर हमे बता दीजै,
भारी दु खडे क्यो सहता है, उत्तर हमको दे दीजै।

उ 6 जो जन स्वार्थो के वश होकर, जगल मे आग लगाते है,
जो मोर सॉप बिच्छू आदि, जीवो को मार भगाते है।
महामुनियो को देकर पीडा, जो फूले नही समाते है,
इसका फल क्या होगा मूरख, नही समझ वो पाते है।
ऐसे प्राणी नर तन पाकर, भी कोढी हो जाते है,
भारी कष्ट उठाकर वो तो, नरक गति मे जाते है।

प्र 7 जवान पुत्र मर जाता कैसे, सही-सही बतला दीजे,
मुनिराज हो आप हमारे, उत्तर इसका दे दीजे।

उ 7 गैर अमानत रखकर जो जन, मन मे खुशी मनाते है,
दुखियो को धमकाते है, और दया नही चिन लाते है।
पश्चाताप करे नहि मन मे, खुश होकर खा जाते है,
पुत्र वियोगी बनकर ऐसे, भारी कष्ट उठाते है।

प्र 8 किन कर्मो के याग से, नर गूगा हो जाय,
शका है चिरकाल की, सद्गुरु दो बतलाय।

उ 8 ऋषि-मुनियो की निदा कर जो, मन मे खुशी मनाता है,
जिनवाणी को गप्पे कहकर, जरा नही शर्माता है।
देव शास्त्र गुरुओ की निदा, मुख से अपने करता है,
गूगा बनकर ऐसा प्राणी, विपदा भारी भरता है।

प्र 9 कामदेव सा सुदर तन ये, किन कर्मो से पाता है,
गुरुवर हमे बता दीजै, उत्सुकता सदा जगाता है।

उ 9 महामुनियो की सेवा कर जो अपना भाग्य सराहते है,
करके भक्ति गुणीजनो की, फूले नही समाते है।
काम देव सा पाकर तन वे, हरदम मोज उडाते है,
राग नही रहता है तन मे, सच्चे सुख को पाते है।

प्र 10 होते ही मर जाते बच्चे, ऐसा क्यो हो जाता है,
मुनिवर हमे बताओ उत्तर, मन मेरा अकुलाता है।

उ 10 अडो को जो खाकर भैया, मन मे खुशी मनाते है,
दया भाव नही लाते मन मे, हॅस-हॅस उन्हे चबाते है।
बच्चे नही जीते है उनके, होते ही मर जाते है,
चाहे कितना करे यत्न वो, बालक नही जी पाते है।

प्र 11 किन कर्मो के करने से नर, काना जग मे कहलाता,
दुनियॉ हॅसती देख उसे क्यो, क्यो भारी विपदा सहता।

उ 11 नजर बुरी रखता जो अपनी, दया नही चित लाता है,
अवगुण साधु मुनियो के गिन-गिन करके हर्षाता है।
पर नारी मॉ-बहनो पर जो, दृष्टि अपनी रखता है,
काना बनकर ऐसा प्राणी, भारी विपदा भरता है।

प्र 12 किन पापो के योग से, नर लगडा हो जाय,
शका है चिरकाल की, सद्गुरु दो बतलाय।

उ 12 दीन-दरिद्री जीवो को जो, लाठी मार गिराते है,
हाथ पॉव जो तोड के भैया, दया नही मन लाते है।
देख दूसरे को लगडा जो, मन मे खुशी मनाते है,
लगडे लूले बनकर वो तो, भारी कष्ट उठाते है।

प्र 13 गूॅगा कैसे बनता गुरुवर, यह भी हमे बता दीजे,
न बनूॅ अगाडी मे गूॅगा, वो ज्ञान मुझे सिखला दीजै।

उ 13 असत्य वचन बोलकर जो जन, मन मे खुशी मनाते है,
रसना इद्री के वश होकर, भक्ष्य अभक्ष्य खा जाते है।
बॉध के मुख पशुओ का जो जन, हिसा मन मे लाते है,
बनकर वे तो गूॅगे भैया, दु खडे भारी पाते है।

प्र 14 किन पापो से मानव जग मे, निर्धन नर बन जाता है,
करके मेहनत चौबीस घटे, भूखा ही रह जाता है।
क्या कारण है इसका गुरुवर, धीरे से समझा दीजे,
तृष्णा रहती पैसे की क्यो, सही-सही बतला दीजे।

उ 14 करके चोरी जा जन मन मे, फूले नही समाते है,
लूट के जबरन धन औरो का, खुश होकर के खाते है।

दानी को दान देने से, पापी मनुष्य हटाते है,
निर्धन नर बन करके जग मे, भारी कष्ट उठाते है।

प्र 15 जन्म नपुसक का हे भगवन्, किन-किन कर्मो से पाता है,
ताकि इससे दूर रहे, जो घोर कष्ट का दाता है।

उ 15 बैलो को बेरहम बनकर, जो खस्सी करवाता है,
स्वार्थ मे अधा होकर, मर्दो को नामर्द बनाता है।
ऐसा पापी यहा से मरकर, जिस भी योनि जाएगा,
हो कितना भी होशियार पर नपुसक वो कहलाएगा।

दृष्टांत

दृष्टांत–एक मानी का

महल मकान सपदा सारी, एक दिना नश जायेगी।
मान छोड दे प्राणी तू तो, हालत क्या हो जायेगी ॥

इक मानी की सुनो कहानी, मान सदा वह करता था।
बडा नही अपने से किसी को मानी सदा समझता था ॥

मोटर गाडी स्कूटर सब, अधा बन दौडाता था।
मुनि उपदेश जहा होता था, आते वो शर्माता था ॥

वेश्या, चोरी और डकैती, मन मानी वो करता था।
धन-दौलत की खातिर वो तो, पाप हमेशा करता था ॥

देव गुरु का नाम नही वह, सच्चे मन से लेता था।
नग्न अवस्था देख मुनि की, निदा करके हँसता था ॥

नग्न अवस्था देख मुनि की, जो हँसकर खुशी मनाते है।
मान सदा करते पेसे का, किस योनि मे जाते है ॥

एक दिना वो मानी देखो, बैठ कार मे जाता है।
अधा होकर कार को अपनी, बहुत तेज दौडाता है ॥

बस से टक्कर हुई एकदम, दम अपना वो तोड चला।
कोई नही उठाने वाला, मानी सब कुछ छोड चला ॥

मरकर मानी बना बँदरिया सबको नाच दिखाता है।
हँसता था जो देख मुनि को, मन अपने पछताता है ॥

एक पेट के कारण वो तो, सबको नाच दिखाता है।
हसने वाला देख मुनि को, बदर जाति पाता है ॥

सुनने वालो, मुझे बताओ, जग मे किसका मान रहा।
रावण जेसे महापुरुष का, मान छिनक मे चला गया ॥
नही मान करना है हमको, मुनियो के गुण गायेगे।
मान महा दुखदायी जग मे, इसको दूर भगायेगे ॥
श्रवण बेलगोल के अदर, राजा का था मान गला।
दृढ श्रद्धा के कारण भैया, घटिका से था न्हवन हुआ ॥
सुनने वाले, सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
मान नही करना जीवन मे, घोर कष्ट का दाता है ॥

दृष्टांत–उत्तम त्याग धर्म पर

दान नहि करने से घटता, सौ गुणा बढ जाता है।
राजा श्रेयास इसी के कारण, जग प्रसिद्ध हो जाता है ॥
सागर जल देता है हमको, खाली कभी न होता है।
सूरज किरणे देकर अपनी, अधकार को खाता है ॥
पृथ्वी सब कुछ देती हमको, नही कभी कुछ लेती है।
देने के कारण ही पृथ्वी, धरती मा कहलाती है ॥
दान चार है उत्तम जग मे मुनि हमे बतलाते है।
आहार दान सबसे उत्तम है, ऐसा वो फरमाते है ॥
देकर दान मान नहि करना, शास्त्र हमे बतलाते है।
जग मे जितने प्राणी भैया, भाग्य का अपने खाते है ॥
देकर दान मान नहि करते, दानी वो कहलाते है।
गुप्त दान दे दे करके, जो मन ही मन हरषाते है ॥
दे आहार महामुनियो को, जो मन ही मन खुशी मनाते है।
क्या से क्या हो जाते है वो, लिखकर तुम्हे सुनाते है ॥
एक गॉव मे, एक मनुष्य का, किस्सा तुम्हे सुनाता हूँ।
रक से राजा बना वो कैसे, सारा हाल सुनाता हूँ ॥

रूखी सूखी खाकर रोटी, दिन पूरा वो करता था।
साधुजनो की सेवा वो तो भक्ति-भाव से करता था ॥
एक दिना उसके दरवाजे, जैन मुनि थे आये।
देख मुनि को उसने भैया, श्रद्धा से पडगाये ॥
दे आहार महामुनियो को, मन मे खुशी मनाता है।
आहार दान के कारण भैया, देखो क्या हो जाता है ॥
करके दर्शन श्री जिनवर के, किसी काम से जाता है।
मिला खान का ठेका उसको, मन ही मन हर्षाता है ॥
लोहा जहॉ निकलना था, वहॉ, हीरा पन्ना होता है।
पाकर हीरा पन्ना वो तो, मालदार हो जाता है ॥
सुनने वाले, सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
उत्तम त्याग धर्म ही जग मे, भव से पार लगाता है ॥

दृष्टात—नपुंसक क्यों बनता है

कलम चलाऊँ उस प्राणी पर, नर है न नारी है।
जीव नपुसक वो कहलाता सहे कष्ट भारी है ॥
जिन दर्शन नहि कर सकते वो, शादी नही रचाते है।
बच्चे भी नही होते उनके, नाम नपुसक पाते है ॥
दुनिया उन्हे हिजडा कहती बच्चे देख उन्हे हँसते।
पाप कर्म के कारण प्राणी, चौरासी मे है रुलते ॥
नाच-कूदकर मुश्किल से जो, दो रोटी खा पाते है।
कभी-कभी तो वे बेचारे, भूखे ही सो जाते है ॥
कौन जानता उनके मन की, क्या-क्या कष्ट उठाते है।
दीन अवस्था देखके उनकी, पत्थर दिल थर्राते है ॥
एक हिजडा पडा सडक पे, रो-रो रुदन मचाता था।
देख अवस्था अपनी वो तो, मन ही मन पछताता था ॥

इसी बीच मे उसी मार्ग से, मुनि सघ इक आता है।
घोर तपस्या करके मुनि सघ कर्म काटता जाता है ॥
देख दशा को उसकी मुनिवर, दया भाव चित लाते है।
किन कर्मो से बना नपुसक, सही-सही बतलाते है ॥
उत्तर क्या देते है मुनिवर, नही सोच हम सकते है।
मुनियो की सेवा करके ही, सिद्ध द्वार जा सकते है ॥
सुन लो भैया, कान लगाकर, मुनिराज क्या कहते है।
किस करनी से बना नपुसक, सही-सही बतलाते है ॥
सोचा नही कभी जीवन मे, इसका फल तू पायेगा।
जिसने बोये कॉटे भैया, फूल कहॉ से लायेगा ॥
बेलो को बेरहम जानकर, तू खस्सी करवाता था।
लालच मे अधा होकर के, मर्दो को नामर्द बनाता था ॥
इसी पाप का फल ये भाई, आज नपुसक कहलाता है।
पाकर नाम हीजडा तू तो, मन मे अपने शरमाता है ॥
सुनने वाले, सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
करे सभी जीवो की रक्षा, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत—सुंदर शरीर, निर्मल बुद्धि कैसे मिलती है

सुदर शरीर निर्मल बुद्धि, नर कौन पुण्य से पाते है।
पा आशीष महामुनियो की, गाकर तुम्हे सुनाते है ॥
तेल फुलेल का नाम नही है, फिर भी खुशबू आती है।
पढने नही गया कालिज मे, फिर भी विद्या आती है ॥
कितना प्यारा रूप है इसका, कह दुनिया खुश होती है।
बिना पढे पडित बन बैठा, देख चकित वो होती है ॥
इक लडके की सुनो कहानी, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
जन्म समय मे था वो सुदर, उसकी कथा सुनाता हूँ ॥

रूपवान इतना था लडका, देख चॉद शरमाता था।
कामदेव सा पाकर तन वो, मान नही चित लाता था ॥
बिना पढे ही वो लडका तो, महा विद्वान कहाता था।
गुरुजन की सेवा करके वह, फूला नहि समाता था ॥
बडे-बडे ग्रन्थो को लडका, आसानी से पढता था।
देव गुरु की भक्ति करके, सारा समय बिताता था ॥
एक दिना दर्शन करने वो, जिन-मदिर को जाता है।
महामुनियो के दर्शन करके, फूला नही समाता है ॥
हाथ जोड बोला मुनिवर से, एक बात बतला दीजै।
दया के धारी, पर उपकारी, शका मेरी मिटा दीजै ॥
सुदर शरीर औ' निर्मल बुद्धि, किन कर्मो से पाई है।
उत्तर इसका मुझे बताओ, मन मे शका आई है ॥
दया के धारी, पर उपकारी, सोच ज्ञान मे कहते है।
किन कर्मो से होता ऐसा, सही-सही बतलाते है ॥
पूर्व जन्म मे तू तो भैया, नित मदिर मे जाता था।
जो भी शास्त्र जीर्ण हुए थे, सग्रह करता जाता था ॥
सग्रह करके शास्त्रो को, तूने ठीक कराया था।
जिनवाणी की रक्षा करके, भारी पुण्य कमाया था ॥
महामुनियो की सेवा तू तो, सच्चे मन से करता था।
छूकर चरण महामुनियो के, श्रद्धा गहरी रखता था ॥
करके सेवा महामुनियो की, भारी पुण्य कमाता था।
जिल्द बधाकर शास्त्रो की, तू फूला नहि समाया था ॥
उसका ही फल मिला आज ये, रूपवान कहलाता है।
बिना पढे ही जग मे तू तो, पडित प्रवर कहाता है ॥
सुनने वाले, सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
करे शास्त्रो की रक्षा हम, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत—धर्म को छोड़कर ही इन्सान दुख पाता है

छोड धर्म को जग मे भैया, प्राणी कष्ट उठाते है।
खुद प्राणी इस जग मे भेया, अपना भाग्य बनाते है ॥
दुखी हुए है निज कर्मो से, भूल धर्म को बैठे है।
एक भूल के कारण ही हम, लाखो कष्ट उठाते है ॥
मदिर जाना छोड दिया है, पिक्चर मे हम जाते है।
तत्वो को हम भूल गये है, निश मे भोजन खाते है ॥
सेवा नही मुनियो की करते, विनय नही जिनवाणी की।
जिन पूजा का ध्यान नही है, इच्छा गोभी खाने की ॥
दुखी आज क्यो प्राणी जग मे, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
ऋषि मुनियो की भक्ति करके, अपना भाग्य सराहता हूँ ॥
एक युवक फिरता था भैया, गलियो मे मारा-मारा।
अच्छे कुल मे पैदा होकर, हीरा धर्म बिसारा ॥
रोटी नही मिलती खाने को, दर-दर हाथ फैलाता था।
कभी-कभी वो ता बेचारा, भूखा ही सो जाता था ॥
तन पे कपडा नही था उसके, नगे पैरो फिरता था।
सर्दी के मौसम मे भैया, सदा जिडाया मरता था ॥
भीख मॉगते भी भैया वो, मन ही मन शर्माता था।
किन पापो से हुई ये हालत, सोच-सोच दुख पाता था ॥
एक दिना वो पुण्य उदय से, जिन मदिर मे जाता है।
देख वहॉ इक मुनिराज को, फूला नही समाता है ॥
रो-रो कहता मुनिराज से, एक बात बतला दीजै।
किन कर्मो से हुई ये हालत, शका मेरी मिटा दीजै ॥
मुनिराज जी सोच ज्ञान मे, उत्तर उसको देते है।
किन कर्मो से हुआ सभी ये, सही-सही बतलाते है ॥
भैया, तू तो पूर्व जन्म मे, जैनी पुत्र कहाता था।
निश मे भोजन खाकर तू तो, फूला नही समाता था ॥

मास मधु का त्याग नहीं था, गोभी खुश हो खाता था।
भक्ष्य-भक्ष्य सभी खाकर तू, भारी पाप कमाता था ॥
मदिर मे क्या रक्खा सबसे, कहकर खुशी मनाता था।
मुनियो की निदा करके तू, फूला नही समाता था ॥
इन सब पापो के करने से, ये हालत हो जाती है।
जिनवाणी ही जग मे भैया, सही राह दिखलाती है ॥
सुनने वालो, सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
श्रद्धा रखो जिन वचनो पर, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत–निज स्वरूप को भूलकर ही दुख पाता है

चितामणी रतन पाकर भी, दर-दर सदा भटकते है।
निज कर्मो से दुखी हुए हम, विष का जाम गटकते है ॥
विषय वासना की कीचड मे, हमने इसे फॅसाया है।
दो रोटी की खातिर भैया, दर-दर कर फैलाया है ॥
चितामणी रतन को भैया, बडी मुश्किल से पाया है।
बीवी बच्चो मे पड करके, इसको व्यर्थ लुटाया है ॥
तीन जौहरी है इस जग मे, परख रतन की करते है।
उनको हमने छोड दिया है, इसीलिए दुख भरते है ॥
देव-शास्त्र-गुरु तीन हमारे, जग मे पूजे जाते है।
ये ही सच्चे जौहरी बनकर, आत्म ज्ञान कराते है ॥
एक व्यक्ति की सुनो कहानी, लिखकर तुम्हे सुनाता हूॅ।
निज स्वरूप को भूल गया था, उसकी कथा सुनाता हूॅ ॥
दस बच्चे थे एक मनुष्य के, गॉव मे अपने रहता था।
पत्नी का स्वभाव गरम था, भूल स्वय को बैठा था ॥
काम नही करता था कोई, दुखडे भारी भरता था।
बीवी बच्चो मे फॅंस करके जीवन पूरा करता था ॥

कोई कहता पैसे दे दो, कोई मागे चीज।
कोई कहता सब्जी लाओ, कोई कहता फीस ॥
नारी कहती साडी लाओ, फिर घर मे तुम आना।
नही मिलेगा भोजन तुमको, बाहर ही तुम खाना ॥
कोई कहता जूते लाने, कोई कहता राशन।
मिट्टी का तेल नही है घर मे, फूट गये है बासन ॥
एक दिना वो दुखी होकर, घर से बाहर जाता है।
निज स्वरूप को भूल गया था, इसलिए दुख पाता है ॥
चलते-चलते उस व्यक्ति को, मुनि दर्शन हो जाता है।
करके दर्शन मुनिराज के, फूला नही समाता है ॥
देख दशा को उसकी मुनिवर, दया भाव चित लाये।
सच्चा सुख मिलता है जिससे, ऐसे नियम दिलाये ॥
नियम व्रत का पालन करके, मन मे खुशी मनाता है।
सच्चे सुख को पाकर वो तो, फूला नही समाता है ॥
गहरी श्रद्धा रख मुनियो पर, सम्यक् ज्ञान को पाता है।
चितामणी रतन को पाकर, जीवन सफल बनाता है ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
निज स्वरूप मे रमण करे हम, गुण मुनियो के गाता है ॥

बूचड़खाना बंद करने से सच्चा सुख पा सकते हैं

बूचडखाना बन्द करो भई, सच्चा सुख तुम पाओगे।
इसको तुमने खोल दिया तो, सिर धुन-धुन पछताओगे ॥
स्वार्थ मे फॅस कर तू भैया, भारी पाप कमाता है।
सुई जब चुभती है तुझको, भारी रुदन मचाता है ॥
टी बी कैसर कोढ सरीखे, रोग महा दुख देते है।
करके पाप कर्म को प्राणी, इनके फल को सहते है ॥

मूक पशु को सताके भैया, सम्यक् सुख नहि पायेगा।
बूचडखाना खोल दिया तो, नरक गति मे जायेगा ॥
धर्म कर्म बिसराया तूने, हिसा मन में ठानी है।
छोड के काजू किशमिश भैया, डली मास की खानी है ॥
खाकर मास पशु का भैया, जो जन खुशी मनाते है।
भूल धर्म को अपने भैया, हिसा मन मे लाते है ॥
खोल के बूचडखाना जग में, भारी पाप कमाते है।
ऐसे पापी यहॉ से मरकर, नरक गति मे जाते है ॥
बूचडखाना खोल दिया तो, सिर धुन-धुन पछताओगे।
बात नहि मुनियो की मानी, नरक द्वार को जाओगे ॥
नरक द्वार मे जाकर भैया, क्या-क्या कष्ट उठाते है।
बन्द करो भई बूचडखाना, मुनि हमे समझाते है ॥
बूचडखाना खुलने से, जो मन मे खुशी मनायेगा।
नरक गति मे जाकर देखो, कितने कष्ट उठायेगा ॥
मुनि तुझे समझाते है, पर समझ नही तू पायेगा।
खोल के बूचडखाना भैया, मास पशु का खायेगा ॥
मास पशु का खाने वाले, भारी कष्ट उठाते है।
कैसे-कैसे दुख नरको मे, मुनि हमे बतलाते है ॥
बाध वहॉ पर तुझको भैया, नीचे को मुख कर देगे।
गरम-गरम लोहे का पानी, मुख मे तेरे भर देगे ॥
पाकर गरम-गरम लोहे को, भारी रुदन मचायेगा।
करके याद पशु हिसा की, सिर धुन-धुन पछतायेगा ॥
गर्म-गर्म लोहे के टुकडे, मुख मे तेरे डालेगे।
बूचडखाना याद दिलाकर, कोडे तुझको मारेगे ॥
घोडा भैसा बनाके तुझ पर, छुरी वहाँ चलायेगे।
बना मास के टुकडे तेरे, खाकर खुशी मनायेगे ॥
सुनने वालो, सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
बूचडखाना बन्द करे हम, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत—लक्ष्मी अचानक कैसे मिल जाती है

नर को लक्ष्मी एकदम भगवन, कहिए कैसे मिल जाती।
सुन तेरी वाणी कृपालु, जनता मन मे सुख पाती ॥
खोदत-खोदत भूमि भैया, घडा अशर्फी पाता है।
बिना कमाये इस प्राणी को, माल बहुत मिल जाता है ॥
नहि स्वप्न मे जिसकी आशा, इकदम क्यो हो जाता है।
लक्ष्मीपति बनकर ये प्राणी, दान-धर्म नित करता है।
एक गॉव मे एक मनुष्य था, काम बजाजे का करता।
धर्म ध्यान का भाव था उसके, दीनो की सेवा करता ॥
नित मन्दिर मे जाता था, प्रभु पूजन नित करता था।
वीर प्रभु की पूजन करके, कर्मो का क्षय करता था ॥
एक दिना वो घर से भैया, किसी काम से जाता है।
पढा अचानक पेपर उसने, पुरस्कार वह पाता है ॥
पाकर वीस लाख की राशि, फूला नही समाता है।
दे आहार महामुनियो को, मन अपने हर्षाता है ॥
हाथ जोड बोला मुनिवर से, एक बात बतला दीजै।
किन कर्मो से आया पैसा, मुझको आप बता दीजै ॥
मुनिराज जी सोच ज्ञान मे, उत्तर उसको देते है।
किन कर्मो से आई लक्ष्मी, उसको ही कह देते है ॥
भैया, तू तो पूर्व जन्म मे, भारी सेठ कहाता था।
गुप्त दान दे देकर, तू फूला नही समाता था ॥
तीर्थ क्षेत्रो पर जाकर तू, जीर्णोद्धार कराता था।
पैसा बहुत लगाकर भी तू, नाम नही खुदवाता था ॥
उसका ही फल मिला आज ये, करोडपति कहलाता है।
मिली अचानक लक्ष्मी तुझको, हरदम मौज उडाता है ॥
गुप्त दान दे-दे करके जो, दानी दिल हर्षाते है।
हे गौतम ऐसे धर्मवीर, अकस्मात लक्ष्मी पाते है ॥

सुनने वालो सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
गुप्त दान दे शुद्ध भावो से, गुण मुनियो के गाता है ॥

पुत्र क्यों बिछुड़ जाते हैं, लक्ष्मी क्यों चली जाती है

पुत्र बिछुड जाते है भैया, लक्ष्मी पास नही रहती।
किन कर्मो से होता ऐसा, जिनवाणी ही बतलाती ॥
देव-शास्त्र-गुरु पूज्य हमारे, जग मे पूजे जाते है।
इनके दर्शन करने से ही, पाप सभी कट जाते है ॥
सदा-सदा हो दर्शन मुझको, ऐसी आशा लगाता हूँ।
पैसा नही चाहिए मुझको, वीरा के गुण गाता हूँ ॥
अनत काल तक पैसा पाकर, इन तीनो को भूला था।
देव-शास्त्र-गुरु भूल के भैया, चौरासी मे झूला था ॥
नरक पशु दोनो गतियो मे, डडे खाकर आया हूँ।
इनकी कृपा से ही मै तो, मनुष्य गति मे आया हूँ ॥
धर्म सदा बिसराया मैने, श्रद्धा नहि मन ठानी थी।
छोड धर्म को दु ख बहु पाये, बतलाती जिनवाणी जी ॥
मुनि वचनो की निदा करके, जो मन खुशी मनाते है।
क्या हालत हो जाती उनकी, गाकर तुम्हे सुनाते है ॥
एक सेठ था एक गॉव मे, धन वेभव सब भारी था।
तीन पुत्र थे उसके भैया, पैसा आना जारी था ॥
एक दिना सेठानी घर से, जिन मन्दिर मे जाती है।
लेकर नियम व्रत मुनियो से, वापस घर को आती है ॥
दिया व्रत जो महामुनियो ने, उस पर नही श्रद्धान किया।
निदा सबने करी थी उसकी, बीच मे उसको छोड दिया ॥
थोडे दिन के बाद सेठ का, धन वैभव सब खत्म हुआ।
बिछुड गये थे बेटे सारे, रोटी का भी फिकर हुआ ॥

शुभ कर्मो से उनको भैया, मुनि एक मिल जाते है।
करके दर्शन सेठ सेठानी, फूले नही समाते है ॥
क्यो बिछुडे है पुत्र हमारे, भूखे हम क्यो मरते है।
रात दिना हम रोते दोनो, भारी दुखडे भरते है ॥
किन कर्मो से हुआ सभी ये, आप हमे बतलाओ।
मुनिराज हो आप हमारे, दया भाव चित लाओ ॥
दया के धारी, पर उपकारी, सोच ज्ञान मे कहते है।
किन कर्मो से हुआ सभी ये, भव के दुख क्यो सहते है ॥
नियम व्रत ले महामुनियो से, नही उस पर श्रद्धान किया।
निदा सबने करी थी भैया, नियम को लेके छोड दिया ॥
उसका ही फल मिला आज ये, दोनो भूखे मरते हो।
पुत्र वियोगी होकर के तुम, दुखडे भारी भरते हो ॥
सुनने वालो, सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
लेकर नियम नही ठुकराये, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत—एक शेर का

इक जगल मे एक शेर था, मास सदा वो खाता था।
करके हिसा जीवो की वो, भारी पाप कमाता था ॥
एक दिना वो किसी मनुष्य को, मार कही से लाया।
डाल जमी पे उसको भैया, खाने को मन चाहा ॥
इतने मे आ मुनिराज ने, उसको आ समझाया।
मत खाना तू मास को इसके, कहकर के छुडवाया ॥
बोला शेर विनय भावो से, एक बात बतला दीजै।
क्यो छुडवाया उस व्यक्ति को, धीरे से समझा दीजै ॥
करके सावधान उस सिह को, धीरे से समझाते है।
क्यो छुडवाया इसको भैया, सही-सही बतलाते है ॥

परम पूज्य तपोनिधि निग्रन्थ दि जैनाचार्य 108 श्री सूर्य सागरजी महाराज

भैया ये तो गया नरक मे, भारी पाप कमाता था।
देव गुरु का नाम नही ये, मुख पर अपने लाता था ॥
कितना घृणित मास है इसका, इसको कभी नहीं खाना।
कितने पाप किये थे इसने, कान लगा सुन जाना ॥
पैरो से सिर तक की सारी, बात मुनि समझाते है।
एक-एक कर सारी बाते, धीरे से बतलाते है ॥
पैर नही खाने थे इसके, मंदिर नही ये जाता था।
कहकर बुरा देव मंदिर को, भारी पाप कमाता था ॥
हाथ नही थे पावन इसके, दान नही यह देता था।
करके चोरी इन हाथो से, मन मे खुशी मनाता था ॥
ऑख भी खाने योग्य नही थी, नजर बुरी ये रखता था।
देख ऑख से पर नारी को, भाव बुरे ये करता था ॥
बैठा-बैठा सिह ध्यान से, सारी बाते सुनता है।
आगे भी समझाओ मुनिवर, शीश झुकाकर कहता है ॥
कान महा बुरे थे इसके, मुनि निदा ये सुनता था।
धर्म ध्यान को भूल के भैया, मिथ्या बाते सुनता था ॥
पेट महाघिनकारी इसका, चोरी का धन खाता था।
अडे मछली खाकर ये तो, भारी पाप कमाता था ॥
मुख से कभी नही प्रभुवर का, नाम नही ये लेता था।
गाली देकर हर प्राणी को, फूला नही समाता था ॥
अत मे सुन ले सिर को भैया, कभी नही इसको खाना।
झुका नही जो प्रभु चरणो मे, उस पर तू मत ललचाना ॥
इसी तरह से सारी बाते, मुनि उसे समझाते है।
कितना बुरा मास मनुष्य का, सही-सही बतलाते है ॥
सुनकर बात मुनि की सिह ने, रो-रो नीर बहाया है।
नही खाऊँगा मास कभी मै, कहकर शीश झुकाया है ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
मास नही खाना जीवन मे, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत—वाणी में मिठास कैसे आती है

किसी-किसी के वचन, मिश्री से भी ज्यादा मीठे क्यो लगते है।
कृपा करना करुणा सागर, चरणो पर मस्तक धरते है ॥
छना हुआ जल पीकर भैया, जो मन मे खुशी मनाते है।
भजन प्रभु का गाकर मुख से, मन अपने हरषाते है ॥
भक्ष्य-अभक्ष्य भेद रखते है, नित मंदिर मे जाते है।
निदा नही करे मुनियो की, महिमा मुख से गाते है ॥
ऐसे प्राणी जग मे भैया, आनद खूब मनाते है।
मीठी वाणी पाकर वो तो, जग मे नाम कमाते है ॥
इक लडका था एक गॉव मे, सुदर बडा प्यारा।
माता-पिता ने शादी करके, कर दिया उसको न्यारा ॥
नित्य मदिर मे जाता लडका, वीरा के गुण गाता।
महिमा गाकर वीर प्रभु की, फूला नही समाता ॥
जब भी बाते करता लडका, प्यारा सबको लगता था।
मीठे वचन बोल के लडका, सबके मन को हरता था ॥
एक दिना वो जाकर मदिर, फूला नही समाता है।
दर्शन करके मुनिराज के, मन अपने हर्षाता है ॥
शीश नवा बोला मुनिवर से, एक बात बतला दीजै।
मीठी वाणी कैस मिलती, उत्तर हमको दे दीजै ॥
दया के धारी, पर उपकारी, सोच ज्ञान मे कहते है।
जो भी शका थी लडके की, दूर उसे कर देते है ॥
भैया तू तो पूर्व जन्म मे, छना हुआ जल पीता था।
वीर प्रभु की महिमा गाकर, फूला नही समाता था ॥
भक्ष्य-अभक्ष्य सोच रखता था, आदर सबका करता था।
महामुनियो की सेवा करके, जीवन पूरा करता था ॥

इन सब बातों के पालन से, मीठी वाणी पाते है।
छना हुआ जल पीते है जो, हिसा से बच जाते है ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
पानी सदा छान कर पीओ, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत—सब सुख कैसे मिलते हैं .

एक सेठानी जिन मदिर मे, नित दर्शन को जाती थी।
करके दर्शन वीर प्रभु के फूली नहीं समाती थी ॥
धन-दौलत की नही कमी थी, धर्म ध्यान वो करती थी।
बिन पूछे ही सेठ साब से, दान बहुत वो करती थी ॥
करके दान हाथ से अपने, अपना भाग्य सराहती थी।
दे आहार महामुनियो को, आनन्द खूब मनाती थी ॥
मोटर-कार बहुत थी उसके, धन वैभव सब भारी था।
बेटा-बेटी सभी सुखी थे, आनन्द मन मे भारी था ॥
औषध दान कराकर वो तो, भारी पुण्य कमाती थी।
सारी प्रजा बने निरोगी, ऐसी आस लगाती थी ॥
कोठी बगले पाकर वो तो, मान नही चित लाती थी।
करा प्रकाशित जिनवाणी को, सभी जगह बॅटवाती थी ॥
पशु-पक्षियो की रक्षा मे, पैसा खूब बहाती थी।
कष्ट नही जीवो को होवे, ऐसे भाव बनाती थी ॥
दूर-दूर तक महामुनियो के, दर्शन करने जाती थी।
करके दर्शन महामुनियो के, फूली नही समाती थी ॥
तीर्थ क्षेत्रो पर जाकर वो, जीर्णोद्धार कराती थी।
करके पैसा बहुत खर्च वो, भारी पुण्य कमाती थी ॥
एक दिना वो जाकर मन्दिर, फूली नहीं समाती है।
करके दर्शन मुनिराज के, शका अपनी रखती है ॥

किन कर्मो से सब सुख पाया, दया भाव चित लाओ।
भाव जो मेरे मन मे आया, उसको प्रभु सुनाओ ॥
दया के धारी, पर उपकारी, सोच ज्ञान मे कहते है।
किन कर्मो से सब सुख मिलता, सबको ही कह देते है ॥
पूर्व भव मे तू तो बहना, दया भाव चित लाती थी।
कर आहार महामुनियो का, मन मे खुशी मनाती थी ॥
धर्म ध्यान नहि छूटे मेरा, ऐसे भाव बनाती थी।
महामुनियो की सेवा करने, दूर-दूर तक जाती थी ॥
उसका ही फल मिला आज ये, सेठानी कहलाती है।
आहार दान के कारण तू तो, सम्यक् सुख को पाती है ॥
आहार दान ही जग मे भैया, बीज मोक्ष का बोता है।
एक धर्म है जो जीवो के, साथ अत मे होता है ॥
सुनने वाले, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
आहार दान दे शुद्ध भावो से, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत–पुत्र क्यों नहीं होता है

भगवान, कहो किस करनी के करने से पुत्र नही पाता है।
कई-कई ब्याह रचाता, पर बिन बालक के मर जाता है ॥
कुल की शोभा बालक से है, वश उसी से चलता है।
बिन बालक के गोदी सूनी, गोद मे बच्चा पलता है ॥
पुत्र नही क्यो होता घर मे, मुनि हमे बतलाते है।
ले आशीश महामुनियो की, गाकर तुम्हे सुनाते है ॥
एक मनुष्य था एक गॉव मे, जिन पूजा नित करता था।
महामुनियो के चरणो मे वो, श्रद्धा गहरी रखता था ॥
दान सदा करता था वो तो, वीरा के गुण गाता था।
भारी पुण्य कमाकर वो तो, फूला नही समाता था ॥

तीर्थ क्षेत्रो पर जाकर वो, जीर्णोद्धार कराता था।
महामुनियो की करके सेवा, अपना भाग्य सराहता था ॥
जिनवाणी को करा प्रकाशित, सभी जगह बटवाया।
शादी तीन कराने पर भी, पुत्र नहीं कोई पाया ॥
पूजन करने एक दिना वो, जिन मंदिर मे जाता है।
शुभ कर्मो से उसको भैया, मुनि दर्शन हो जाता है ॥
करके दर्शन मुनिराज के, फूला नही समाता है।
किन कर्मो से नही पुत्र है, शका ऐसी रखता है ॥
मुनिराज जी सोच ज्ञान मे, उत्तर उसको देते है।
किन कर्मो से नही पुत्र है, उसको ही कह देते है ॥
भैया, तूने पूर्व जन्म मे, मत्री का पद पाया था।
बनकर मत्री तूने भैया, धर्म कर्म बिसराया था ॥
हरे-भरे वृक्षों को तूने, खुश होकर कटवाया था।
जितने वृक्ष लगे सडको पर, सबको साफ कराया था ॥
हमको जैसे प्राण प्यारे, इनको भी तो होते है।
इनमे भी तो जीव बेचारे, हम जैसे ही होते है ॥
पैसे के लालच मे आकर, भारी पाप कमाया था।
पुत्र नही होता है घर मे, ऐसा पाप बँधाया था ॥
उसका ही फल मिला आज ये, पुत्रहीन कहलाता है।
करके भारी पाप कर्म तू, भारी कष्ट उठाता है ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
वृक्ष नही काटे जीवन मे, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत—एक बूढ़े-बुढ़िया का

पूर्ण बुढापा आया जिन पर, फिर भी मन्दिर नही आते।
धर्म कर्म को भूल गये है, भोगो मे चित ललचाते ॥

बाबा दादी सम लगते है, लिखते शर्म मुझे आती।
क्या समझाये उनको भैया, विषयो मे ही रुचि जाती ॥
बैठे-बैठे खटिया पर जो, चाट मँगाकर खाते है।
गोभी का नही त्याग जिन्हो को, आलू खुश हो खाते है ॥
बुढिया माँ से करके बाते, मन को खुश कर लेते है।
धर्म-कर्म को भूल गये है, भोगो मे चित लाते है ॥
पानी नही छानकर पीते, जिनवाणी का ध्यान नही।
पच अणुव्रत किसको कहते, बाबा जी को ज्ञान नही ॥
पिछले शुभ कर्मो के कारण, धन वैभव सब पाया है।
खुश होकर कहता है सबसे, मैने इसे कमाया है ॥
करके बद तिजोरी अदर, फूला नही समाता है।
शाम को सब्जी क्या बननी है, कहकर खुशी मनाता है ॥
आखे अदर चली गई है, खासी का है रोग लगा।
भाव नही मदिर जाने के, मोह माया मे फॅसा हुआ ॥
सडा हुआ अचार खाकर, मन मे खुशी मनाते है।
शहद नही खाने की वस्तु, उसको भी खा जाते है ॥
ज्यादा नही लिखकर के इसको, खत्म यही पर करता हूँ।
सद्‌बुद्धि आ जाये इनको, भजन प्रभु का करता हूँ ॥
मदिर बीच चलो तुम बाबा, मुनिवर आज पधारे है।
दादी को भी सग ले लो, जागे भाग्य तुम्हारे है ॥
आलू गोभी क्यो नही खानी, धीरे से समझायेगे।
कितनी हिसा शहद मे होती, वो भी तुम्हे बतायेगे ॥
अचार नहीं खाना जीवन मे, अचार त्याग करवायेगे।
देकर ब्रह्मचर्य व्रत तुमको, सग अपने ले जायेगे ॥
सुनी बात जब बाबाजी ने, मन मे तब यह फिक्र हुई।
आज फायदा नही हुआ कुछ, कुछ भी आमद नही हुई ॥

छोड़ तिजोरी कैसे जाये, दादी जी क्या कहती है।
बात मान लो पोते जी की, ऐसा उनसे कहती है ॥
करके बद तिजोरी दोनो, मुनि चरणो मे आते है।
शुभ कर्मो के कारण वो तो, ब्रह्मचर्य व्रत लेते है ॥
लेकर ब्रह्मचर्य दोनो ने, आत्मा का कल्याण किया।
पैसा लगा धर्म मे सारा, जग मे उत्तम काम किया ॥
लेकर दीक्षा उन दोनो ने, जीवन सफल बनाया।
सयम ही सुख का साधन है, सबको सबक सिखाया ॥
सुनने वाले, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
बिन सयम के प्राणी जग मे, भारी कष्ट उठाता है ॥

दृष्टांत—विद्या क्यों नहीं आती है

कठिन परिश्रम करने पर भी विद्या नही आती है।
चौबीस घटे पढते पर भी जीरो क्यो आ जाती है ॥
जो भी विद्या पढी मदरसे, भूल उसे ही जाते है।
किन पापो से होता ऐसा, मुनि हमे बतलाते है ॥
उत्तम कुल मे पैदा होकर, भूल धर्म को जाते है।
सेवा नही मुनियो की करते, मदिर भी नही जाते है ॥
गुरुओ का जो करे अनादर, गाली उन्हे सुनाते है।
जिनवाणी को ठुकराकर जो, नित पिक्चर मे जाते है ॥
इक लडके की सुनो कहानी, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
पढ-लिखकर भी फेल हुआ जो, उसकी कथा सुनाता हूँ ॥
एक लडका था एक गॉव मे, रोज मदरसे जाता था।
जो भी विद्या पढी मदरसे, भूल उसे वो जाता था ॥
चौबीस घटे मेहनत करके, भी विद्या नही आती थी।
रात-दिना ट्यूशन पढके भी, जीरो उसको आती थी ॥

बहुत परिश्रम किया था उसने, पैसा बहुत लगाया था।
किसी तरह से आये विद्या, सभी उपाय कराया था ॥
विद्या नही आई थी फिर भी, रो-रो रुदन मचाता।
सात बार जब फेल हुआ वो, देखो अब क्या होता ॥
दुखी होकर कहता मन मे, दूर कही मै जाऊँगा।
जहाँ मिलेगा कुआँ मुझको, डूब वही पर जाऊँगा ॥
ऐसे भाव बना हृदय मे, घर से अपने जाता है।
शुभ कर्मो से उसको भैया, मुनि दर्शन हो जाता है ॥
करके दर्शन मुनिराज के, फूला नही समाता है।
किन कर्मो से फेल हुआ मै, कहकर शीश झुकाता है ॥
ज्ञान के धारी, पर उपकारी, सोच ज्ञान मे कहते है।
किन कर्मो से हुआ सभी ये, उसको ही कह देते है ॥
भैया, तू तो पूर्व जन्म मे, भारी सेठ कहाता था।
शास्त्र दान का पैसा खाकर, मन मे खुशी मनाता था ॥
आदर किया नही गुरुओ का, नित पिक्चर मे जाता था।
ठुकराकर जिनवाणी को तू, भूल धर्म को जाता था ॥
इन सब पापो के करने से, ज्ञान दूर भग जाता है।
चाहे कितना करे परिश्रम, नही विद्या वो पाता है ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
जिनवाणी की विनय करे हम, गुण मुनियो के गाता है ॥

शुद्ध भावों से ही आत्मा का कल्याण हो सकता है

पैसा नही चाहिए मुझको, रोटी भी ना मै चाहूँ।
लगन लगी है मुनि चरणो मे, तेरा ही दर्शन पाऊँ ॥
दर्शन करके तेरे मुनिवर, फूला नही समाता हूँ।
सदा-सदा हो दर्शन तेरे, ऐसी आस लगाता हूँ ॥

हाय-हाय धिक्कार तुम्हारे, भावो को रे भैया।
विषय भोग मे फॅसा दिया है, जीवन रूपी पहिया ॥
कहता है औरत से अपनी, सुदर हार घडाऊँगा।
सुदर साडी पहना तुझको, दुल्हन नई बनाऊँगा ॥
चाहे चोरी करके लाऊँ, सब कुछ तुझे मॅगाऊँगा।
नही कमी रखूँगा दुल्हन, मोती हार जड़ाऊँगा ॥
सुदर सुदर साडी लाकर, औरत को ये देता है।
पचेद्रियो का दास बना ये, भोगो मे खुश होता है ॥
फॅसकर विषय भोग मे मूरख, हीरा जन्म गॅवाता है।
धर्म ध्यान की बात नही ये, मूरख मन मे लाता है ॥
नही कभी सोचा जीवन मे, वेदी नई घडाऊँगा।
तीन लोक के नाथ को उसमे, भावो से पधराऊँगा ॥
करके पूजन श्री जिन की, मै फूला नही समाऊँगा।
करके तेरी श्रद्धा भक्ति, तुझ जैसा बन जाऊँगा ॥
एक बार भी शुद्ध भावो से, अगर सोच तू लेता।
जन्म-मरण का नाम मिटाकर, अजर अमर बीज बो लेता ॥
देव गुरु की श्रद्धा भक्ति, शुद्ध भावो से करता।
सम्यक् सुख को पाकर तू तो, शिव रमणी को वरता ॥
भूल गया तू उन दु खो को, नरक बीच मे भोगे थे।
रोटी नही मिली खाने को, प्राण वहाँ से छोडे थे ॥
मकडी मच्छर बनकर तूने, भारी कष्ट उठाया।
मानव योनि को पाकर भी, दया नहीं मन लाया ॥
अब भी समय समझ ले मूरख, गया समय नही आयेगा।
एक धर्म ही सच्चा साथी, साथ मे तेरे जायेगा ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
भाव सदा रखे हम उत्तम, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत–श्रद्धा भक्ति से ही सम्यक् सुख मिलता है

लाखो रुपया खर्च करके भी, जिसे नही हम पाते है।
तेरे चरणो की धूलि से, बिन पैसे पा जाते है ॥
श्रद्धारूपी हार को लेकर, सब कुछ हमको देते हो।
धन-दौलत की बात छोड दो, सम्यक् सुख को देते हो ॥
सब कुछ पाया इस प्राणी ने, सम्यक् ही नही पाया था।
सम्यक् के ही न आने से, भारी कष्ट उठाया था ॥
राजा मत्री बना सभी ये, पद चक्री का पाया था।
बिच्छू, कीडा और मकोडा, बनकर दु ख उठाया था ॥
हाथी घोडा और कगारू, योनि सारी पाई।
बिन सम्यक् के इस प्राणी ने, भारी विपदा ठाई ॥
मार बहुत खाकर ये प्राणी, नरक गति से आया।
कितने कष्ट सहे है इसने, मुख से नहीं बताया ॥
टुकडे-टुकडे करके इसके, चील वहॉ थे खाते।
मरघट का नही नाम वहॉ पर, जिदा को खा जाते ॥
पानी नही मिला पीने को, खाने को नही दाना।
कितने कष्ट सहे है इसने, श्री जिनवर ने जाना ॥
बडे भाग्य से मिला मनुस भव, उत्तम कुल को पाया।
उत्तम कुल को पाकर तूने, इसको व्यर्थ गॅवाया ॥
मुनि यहॉ आये है फिर भी, विषयो मे चित लाता।
छोड के इनके चरण कमल को, दौलत मे सुख पाता ॥
दौलत मे गर सुख होता तो, तीर्थकर क्यो त्यागे।
हीरा पन्ना छोड के मोती, जगल मे क्यो जाते ॥
ले लो इनसे शिक्षा कुछ तो, मुनिराज जी आये है।
सम्यक् रतनो की कुजी दे, मिथ्या तिमिर नसाये है ॥

अब भी समय समझ ले 'मोहन', गया समय नही आयेगा।
बात नहीं मुनियो की मानी, भारी कष्ट उठायेगा ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
श्रद्धा भक्ति से ही प्राणी, सम्यक् सुख को पाता है ॥

दृष्टांत–चार गधों का

चार गधे जाते थे भैया, भारी बोझा लादे।
घास नही मिलने के कारण, भारी कष्ट उठाते ॥
बैठ नही सकते थे चारो, पराधीन बेचारे थे।
मार पडी थी इतनी तन पर, पौरुष उनके हारे थे ॥
ज्यादा उम्र थी उनमे जिसकी, भारी बोझ उठाया था।
भारी बोझा क्यो लादा है, नही समझ वो पाया था ॥
चलते-चलते वो बेचारे, चक्कर खा गिर जाते है।
भारी बोझे मे दब करके, हाहाकार मचाते है ॥
बडी मुश्किल से निकल वहॉ से, भागे भागे जाते है।
शुभ कर्मो के कारण उनको मुनि एक मिल जाते है ॥
करके गर्दन नीची अपनी, विनय भाव दिखलाते है।
गधे बने हम किन कर्मो से, शका ऐसी रखते है ॥
सोच ज्ञान मे मुनिराज जी, उत्तर उनको देते है।
किन कर्मो से गधे बने तुम, वो बाते बतलाते है ॥
भैया, तुम तो पूर्व जन्म मे राजपुत्र कहलाते थे।
धन-वैभव की नही कमी थी, हरदम मौज उडाते थे ॥
एक दिना राजा ने तुमको, जिन मदिर मे भेजा था।
करना न्हवन प्रभु का जाकर, पूजन करने भेजा था ॥
चलते समय कहा था तुमसे, पानी तुम खुद लाना।
करके न्हवन श्री जिनवर का, मन अपने हर्षाना ॥

सुनकर बात पिता की अपने, चारो घर से आये थे।
पानी ढोना पडेगा तुमको, मन अपने पछताये थे ॥

पूजन नही करी तुमने थी, बात पिता की ठुकराई थी।
झूठ बोलकर पिता से अपने, मन मे बात छुपाई थी ॥

उसी पाप से बने गधे तुम, भारी बोझ उठाते हो।
घास नही मिलती खाने को, मार बहुत तुम खाते हो ॥

उत्तम कुल को पाकर जो जन, भूल धर्म को जाते है।
पूजन की तो बात छोड दो, मंदिर भी नही जाते है ॥

ऐसे पापी यहाँ से मरकर, नरक पशु गति पाते है।
खच्चर घोडे बनकर वो तो, भारी कष्ट उठाते है ॥

सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
धर्म नही बिसराना भैया, धर्म ही पार लगाता है ॥

दृष्टांत—आहार-दान की महिमा

आहार दान की महिमा को मै, गाकर तुम्हे सुनाता हूँ।
पा आशीष महामुनियो की, लिख करके मै लाता हूँ ॥

आहार दान है सबसे उत्तम, इसकी कथा सुनाता हूँ।
शुद्ध भावो से देना इसको, महिमा इसकी गाता हूँ ॥

सेठ सेठानी एक नगर मे, सुख से दोनो रहते थे।
करते दान बहुत थे दोनो, प्रभु पूजा नित करते थे ॥

एक बार की बात सेठ का, धन वैभव सब खत्म हुआ।
दान किया सारा धन उसने, देकर उसको हर्ष हुआ ॥

राजा जो भी था नगरी का, पुण्य खरीदा करता था।
लेकर पुण्य के बदले मे, वो मोहर अशर्फी देता था ॥

एक दिना सेठानी जी ने, पडगा मुनियो को गाये।
दे आहार महामुनियो को, मन ही मन वह हरषाये ॥

सेठानी से बोले सेठजी, पुण्य जो आज कमाया है।
थोडा-सा दे दो तुम मुझको, कह करके हर्षाया है ॥
बोली सेठानी इसमे से, थोडा तुमको देती हूँ।
अंतिम ग्रास दिया जो मैंने, उसका पुण्य मै देती हूँ ॥
लेकर पुण्य को सेठ साब जी, राजद्वार मे जाते है।
धर काँटे मे उस पुण्य को, पीछे को हट जाते है ॥
जितना माल खजाने मे था, सबका सब रख देते है।
फिर भी पलडा पुण्य का भारी, देख चकित सब होते है ॥
सारा राज धरा पलडे मे, फिर भी पलडा भारी था।
एक ग्रास आहार पुण्य था, अचरज सबको भारी था ॥
पूरा राज धरा पलडे मे, राजा खुद भी बैठ गया।
झुका नही था पलडा फिर भी, राजा सब कुछ भैट गया ॥
इससे बडा दान नही जग मे, इसकी महिमा न्यारी है।
आहार दान जो करते जग मे, उन्हे प्रणाम हमारी है ॥
लेकर नियम उसी दिन से वो, आहार मुनि को देता है।
करके भारी पुण्य का सचय, शिव रमणी वर लेता है ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
आहार दान है सबसे उत्तम, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत—बच्चे पैदा होते ही क्यों मरते हैं

किसी किसी के बच्चे क्यो स्वामिन्, पैदा होते ही मर जाते है।
मिलते है कष्ट अनेको और, आगे नरको मे जाते है ॥
सब कुछ पाकर भी जीवन मे, एक कमी दुख देती है।
पुत्र नही क्यो होता घर मे, जिनवाणी बतलाती है ॥
बच्चे पैदा होकर मरते, नही जीने वो पाते है।
पाप कर्म कुछ किये है हमने, जिनका फल हम पाते है ॥

ऐसा क्यो होता जीवन मे, नही कभी हमने सोचा।
अपने हाथो ही ये प्राणी, बीज पाप का है बोता ॥
बीज पाप का बोकर भैया, पुण्य कहॉ से काटेगे।
जन्म होते ही मरते बच्चे, इसका कारण जानेगे ॥
एक गॉव मे एक मनुष्य था, साहूकार कहाता था।
कोठी बगले पास बहुत थे, पाकर खुशी मनाता था ॥
धन-दौलत की नही कमी थी, भर-भर मोटर आती थी।
पत्नी उसकी मदिर जाकर, अपना भाग्य सराहती थी ॥
चिता उनके एक थी मन मे, बच्चे क्यो नही जीते है।
जितने बच्चे पैदा होते, होते ही मर जाते है ॥
सारे मत्र जत्र करके, पैसा बहु बरबाद किया।
किसी तरह जी आये बच्चे, ऐसा बहुत उपाय किया ॥
जो भी कर्म किये है हमने, उनका फल हम पायेगे।
बच्चे क्यो नही जीते अपने, इसका पता लगायेगे ॥
ऐसा सोच समझकर दोनो, मुनि चरणो मे जाते है।
बच्चे क्यो नही जीते हमरे, ऐसा प्रश्न उठाते है ॥
सोच ज्ञान मे मुनिराज जी, उत्तर उनको देते है।
जिन कर्मो से बच्चे मरते, उनको ही कह देते है ॥
भैया, तूने पूर्व जन्म मे, मुर्गी फार्म खोला था।
कितनी हिसा हुई वहॉ पर, नही मुख से कुछ बोला था ॥
असख्यात अडो को तूने, अपने मुख से खाया था।
चबा-चबाकर उन अडो को, आनद बहुत मनाया था ॥
कभी नही सोचा जीवन मे, बच्चे इनमे होते है।
हम जैसे ही बच्चे इनमे, किसी और के होते है ॥
पैसे के लालच मे आकर, धर्म कर्म बिसराया था।
मुर्गी के बच्चो को तूने, खुश हो करके खाया था ॥

उसी पाप से भैया तेरे, पुत्र नही जीने पाते।
जो भी जैसी करनी करते, उनका फल वे ही पाते ॥

सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
करे जीव की रक्षा हम सब, गुण मुनियो के गाता है ॥

वहेलना वाले भगवान पारसनाथ की महिमा

लिखूँ महिमा पारस की मै, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
बिन मागे सब कुछ देते है, उनकी महिमा गाता हूँ ॥

कितनी प्यारी छवि तुम्हारी, कहने मे नहि आती है।
दर्शन करने जनता तेरे, दूर-दूर से आती है ॥

क्या खूबी है तेरे अदर, सबको आज बताऊँगा।
इच्छा पूरी करते कैसे, गाकर तुम्हे सुनाऊँगा ॥

एक गरीब की सुनो कहानी, गाकर तुम्हे सुनाता हूँ।
रक से राजा बना वो कैसे, सारा हाल सुनाता हूँ ॥

एक गरीब बेचारा दिन भर, भूखा प्यासा मरता था।
पाप कर्म कुछ किये थे ऐसे, जिनका फल वो भरता था ॥

बडी मुश्किल से माग के रोटी, अपना काम चलाता था।
देव गुरु की नही कभी वो, श्रद्धा मन मे लाता था ॥

रोते-रोते दिन बीते थे, बैठे-बैठे राते।
शुभ कर्मो से उसको भैया, मुनि एक मिल जाते ॥

शीश नवा बोला मुनिवर से, शका मेरी मिटा दीजै।
कैसे छूटे पाप हमारे, कोई उपाय बता दीजै ॥

ज्ञान के धारी, पर उपकारी, दया भाव चित लाते है।
पार्श्व प्रभु की बता के महिमा, भेज वहेलना देते है ॥

शुद्ध भावो से चला वहाँ से, ग्राम वहेलना आता है।
पार्श्व प्रभु के दर्शन करके, पूजन पाठ रचाता है ॥

नही कुछ मॉगा मुख से अपने, वापस घर को जाता है।
रस्ते मे उसको भैया इक, जमीदार मिल जाता है ॥
बोला उससे मै तो भैया, जमीन बेचने वाला हूँ।
लडकी स्यानी हुई है मेरी, शादी करने वाला हूँ ॥
ले जमीन की करी खुदाई, हीरा पन्ना पाता है।
सोने की तो कमी नहीं थी, देख चकित वो होता है ॥
देख महिमा पार्श्व प्रभु की, फूला नही समाता है।
बनकर सेठ जगत मे भारी, पारस के गुण गाता है ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
पार्श्व प्रभु की महिमा लिखकर, फूला नहीं समाता है ॥

दृष्टांत–हिंसा करने वालों को पैसा नहीं देना

हिसा जो जीवो की करते, पैसा नही उन्हे देना।
ब्याज का लालच भी देवे तो, नही ब्याज उनसे लेना ॥
जीवो की जो हत्या करते, भारी पाप कमाते है।
मानव योनि को पाकर भी, भारी कष्ट उठाते है ॥
करते-करते हत्या भी वे, भूखे ही मर जाते है।
मिलते है कई कष्ट और, आगे नरको मे जाते है ॥
एक सेठ का किस्सा लिखकर तुमको आज सुनाता हूँ।
मछियारे को दिया था पैसा, उसकी कथा सुनाता हूँ ॥
एक सेठ था एक गॉव मे, सुख से भैया रहता था।
धर्म ध्यान का पालन करके, मन मे खुशी मनाता था।
बिना कमाये पास बहुत था, पैसा उसके भाई।
जीवो की नही हिसा करता, सम्यक् भाव उपाई ॥
सेठ साहब के पास एक दिन, एक व्यक्ति था आया।
लेकर उनसे बीस रुपैया, सुदर जाल बनाया ॥

सागर-तट पर जाकर उसने, अपना जाल फैलाया।
भरकर मच्छी जाल मे वो तो, वापस घर को आया ॥
हिसा करने लगा रोज वो, मन मे खुशी मनाकर।
पडने लगे विघ्न नित भैया, सेठ के घर मे आकर ॥
कभी मरा है पोता उसका, कभी पडा है घाटा।
कभी बीमार पड़ा है कोई, रहने लगी उदासा ॥
लक्ष्मी गई सेठ के घर से, पास नहीं कुछ रहता।
किन कर्मो से हुआ सभी ये, सोच-सोच दुख पाता ॥
शुभ कर्मो से उसको भैया, मुनि दर्शन हो जाता है।
किन कर्मो से हुआ सभी ये, कहकर शीश झुकाता है ॥
मुनिराज जी सोच ज्ञान मे, उत्तर उसको देते है।
किन कर्मो से हुआ सभी ये, उसको ही कह देते है ॥
भैया, तू तो मछियारे को, पैसा दे हर्षाया था।
ब्याज के लालच मे फॅस करके, हिसा पाप कमाया था ॥
जाल बना मछियारा उससे, हिसा भारी करता है।
नहि कटेगा पाप तुम्हारा, जब तक हिसा करता है ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
हिसा नही करे जीवो की, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत—गर्भ क्यों गिर जाते हैं

गर्भ अधूरे महिलाओ के, यो ही क्यो गिर जाते है।
किस पाप का परिणाम प्रभु, यह क्यो नही आप बताते है ॥
गर्भ बीच मे क्यो गिर जाते, कारण तुम्हे बताता हूँ।
मुनियो की सेवा करके ही, लिख करके मै लाता हूँ ॥
गर्भ बीच मे जब गिरता है, क्या हालत हो जाती है।
जिनवाणी ही भैया, हमको, सही सही बतलाती है ॥

नारी की तुम हिम्मत देखो, कितने कष्टो को सहती।
सब कुछ पीडा सहने पर भी, नही किसी से कुछ कहती ॥
गर्भ बीच मे ही गिर जाते, पूरे नही हो पाते हैं।
कितनी पीडा होती भैया, नही हम कुछ लिख पाते है ॥
एक नारी की सुनो कथा मै, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
किन कर्मो से हुआ था ऐसा, आज तुम्हे बतलाता हूँ ॥
एक औरत थी एक गॉव मे, पूजा-पाठ किया करती।
मंदिर भी नित जाती भैया, दान खूब वो करती ॥
सात बार वो हुई गर्भ से, नही टिकने कोई पाया।
कितनी पीडा सही है उसने, आक नही 'मोहन' पाया ॥
जीव गर्भ में जो आये थे, वे तो सातो लडके थे।
एक-एक कर मरे सभी वो, पाप कर्म के पुतले थे ॥
रात दिना वो औरत घर मे, रो-रो रुदन मचाती थी।
किन कर्मो से हुआ सभी ये, सोच-सोच दुख पाती थी ॥
एक दिना उस औरत के घर, मुनियो ने आहार किया।
दे आहार महामुनियो को, किस्सा सब बतलाय दिया ॥
किन पापो से गर्भ हमारे, पूरे नही हो पाते है।
किया कौन-सा पाप मुनिवर, शका आप मिटाते है ॥
सात बार गर्भ को धारा, नहीं टिकने कोई पाया।
किन पापों से ऐसा मुनिवर, महाकष्ट मैने पाया ॥
दया के धारी, पर उपकारी, सोच ज्ञान मे कहते है।
किन कर्मो से होता ऐसा, सही-सही बतलाते है ॥
बहना, तू तो पूर्व जन्म मे, नर्स का पेशा करती थी।
गर्भवती हिरणी, बकरी, अरु जीव को मारकर खाती थी ॥
दे-देकर गर्म दवाये तू, गर्भो को दुष्ट गलाती थी।
गर्भो को दुष्ट गला करके तू, पैसा खूब कमाती थी ॥

कभी नहीं सोचा जीवन मे, इसका फल तू पायेगी।
कॉटे बोकर चली वहाँ से, फूल कहाँ से पायेगी ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
दया भाव रखे हम सब पर, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत—गधा क्यों बनता है

पैसे की जो करते इज्जत, छोड धर्म को देते है।
क्या हालत हो जाती उनकी, लिखकर तुम्हे सुनाते है ॥
जिनवाणी को ठुकराकर जो, विषयो मे चित लाते है।
मुनियो की नहीं सेवा करते, पाप रात-दिन करते है ॥
मंदिर मे क्या रक्खा सबसे, कहकर खुशी मनाते हैं।
घोडे खच्चर क्यो बनते है, नहीं सोच हम पाते हैं ॥
एक गधे की सुनो कहानी, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
मरकर गधा बना था कैसे, उसकी कथा सुनाता हूँ ॥
एक कुम्हार गधे पर अपने, बोझ लादकर जाता था।
डडे उसको बहुत लगाता, दया नही चित लाता था ॥
कभी मरोड पूछ को उसकी, हाहाकार मचाता था।
छिका मुख पर बाध दिया था, भारी मार लगाता था ॥
चलते-चलते कुम्भकार को, इक व्यक्ति मिल जाता है।
दो बोरी तुम रख लो मेरी, कहकर खुशी मनाता है ॥
पैसे के लालच मे आकर, लाद गधे पर लेता है।
क्या होगा इस बेचारे का, नहीं सोच वो पाता है ॥
घास नहीं खाने के कारण, गधा वहीं गिर जाता है।
छिका मुख पर बधा हुआ था, भारी कष्ट उठाता है ॥
किन पापो से बना गधा मै, सोच सोच दुख पाता था।
पराधीन क्यो रहता हूँ मैं, भाव ये मन में लाता था ॥

बोझा ढोते-ढोते भी मै, घास नही खा पाता हूँ।
सहकर भारी मार सदा मै, नाम गधा क्यो पाता हूँ ॥
ऐसे भाव धरे जब उसने, बुद्धि पलटा खाती है।
पूर्व भव की याद उसे, इक दम अपने आ जाती है ॥
सोच-सोच पछताता है वो, मन मे अपने कहता है।
गधा बना हूँ निज करनी से, बात याद कर रोता है ॥
पूर्व भव मे मनुष्य था मै भी, मदिर नही मै जाता था।
मुनिराज आये मदिर मे, दर्श नही मै पाता था ॥
मुनिवरो की वाणी को मैने, मूरख बन ठुकराया था।
मानव योनि पाकर मैने, हीरा जन्म गवाया था ॥
मुनि उपदेश सुना नही मैने, विषयो मे चित लाया था।
भोगो मे सुख माना मैने, धर्म नही कर पाया था ॥
मानव योनि पाकर मैने, धर्म ध्यान बिसराया है।
इसीलिए बोझा ढोता हूँ, नाम गधे का पाया है ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
धर्म नही बिसराये भैया, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत–परस्त्री सेवन का फल

पर-नारी की तरफ देख जो, फूला नही समाता है।
इसका फल क्या होगा मूरख, शास्त्र हमे बतलाता है ॥
पर-नारी भी तो मा बहने, किसी और की होती है।
इज्जत उनके भी तो भैया, तेरे जितनी होती है ॥
विषय भोग मे फॅसकर तू तो, रस्ता अपना भूल गया।
मिथ्या रस को पीकर भैया, चौरासी मे झूल गया ॥
विषय भोगकर पर-नारी से, मन को खुश कर लेते है।
इसका फल क्या होगा मूरख, शास्त्र हमे बतलाते है ॥

एक चोर था एक गाँव मे, चोरी वो नित करता था।
लूट के इज्जत मा-बहनो की, दिन वो पूरा करता था ॥
करते-करते पाप कभी तो, घडा पाप का भरता है।
पाप कर्म के कारण प्राणी, चौरासी मे रुलता है ॥
चलते-चलते एक दिना वो, लडकी से टकरा जाता।
विषय भोग भोगूँ मै इससे, मन मे आस लगाता ॥
इसी बीच मे पकड पुलिस ने, डडो से दी इतनी मार।
निकला सास चोर का भैया, जाके पडा नरक के द्वार ॥
नरक द्वार मे जाकर भैया, कितने कष्टो को सहता।
पर-नारी से विषय भोग कर, कितना बुरा फल मिलता ॥
एक ऑख मे देकर तकुआ, मिर्च दूसरी मे डाली।
बना लोह की सुदर औरत, अग्नि बीच तपा डाली ॥
करके लाल लोह की औरत, खडी वहॉ कर देते है।
विषय भोग करने को भैया, अब तो उससे कहते है ॥
जबरन पकड नरक मे भैया, औरत से भिडवाते है।
मार-मारकर कोडे वो तो, बात याद दिलवाते है ॥
छूता पापी जब औरत को, हाय-हाय चिल्लाता है।
जो भी कर्म किये थे उसने, उनका फल वो पाता है ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
पर नारी बहन समान जान, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत—भावों से ही कर्म बंधते हैं

रक्खे कैसे भाव सदा हम, मुनिजन हमे बतलाते है।
शुद्ध भावो से मरकर मेढक, देव गति मे जाते है ॥
जैसे होगे भाव हमारे, वैसा ही फल पायेगे।
शुभ आशीष तुम्हारी पाकर, तुम जैसे बन जायेगे ॥

शुभ आशीष तुम्हारी पाकर, कैसे भाव बनाते है।
उन भावो को 'मोहन' भैया, गाकर तुम्हे सुनाते है ॥
मुश्किल से है मिला मनुष्य भव, इसको नही गवायेगे।
देव गुरु की करेगे भक्ति, जिनवाणी मन लायेगे ॥
जीर्णोद्धार करा मंदिर के, अपना भाग्य सराहेगे।
दे आहार महामुनियो को, फूले नही समायेगे ॥
धर्म नहीं छोडेगे अपना, मुनियो के गुण गायेगे।
चातुर्मास करा मुनियो के, फूले नही समायेगे ॥
चाहे कितनी पडे मुसीबत, नियम को अपने पालेगे।
भूखे ही मर जायेगे पर, निशि भोजन नही खायेगे ॥
धर्म सहाई है इस जग मे, इसे नही बिसरायेगे।
दीक्षा लेकर एक दिना हम, तुम जैसे बन जायेगे ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
सम्यक् भाव सदा रखे हम, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत—उत्तम क्षमा धर्म पर

क्षमा धर्म ही जग मे भैया, मुक्ति मार्ग दिखाता है।
इसका धारी महामुनि हो, सिद्ध शिला को जाता है ॥
क्षमा धर्म को धार मुनिवर, चर्या सारी करते है।
एक क्षमा के कारण वो तो शिव रमणी को वरते है ॥
क्षमा धर्म को धार दयालु, उपकारी बन जाते है।
कर उपकार सदा दुनिया के, पुण्य बध कर पाते है ॥
क्षमा भाव से मरकर प्राणी, देव गति मे जाते है।
सिह सरीखे इसके कारण, पदवी ऊँची पाते है ॥
एक सिह की सुनो कथा मे, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
क्षमा के कारण गया स्वर्ग मे, उसकी कथा सुनाता हूँ ॥

एक जगल मे एक शेर था, वनराज कहलाता था।
पता नहीं कितने जीवो का, रोज मास खा जाता था ॥

करते-करते हत्या उसको, बहुत दिना थे बीते।
रात दिना जगल के प्राणी, हत्या करके जीते ॥

जगल मे जो भी जाता था, उसको वो जा खाता था।
इसका फल क्या होगा मूरख, नही समझ वो पाता था ॥

एक दिना उस जगल अदर, मुनिराज इक आये।
क्षमा धर्म के धारी थे वे, दया भाव चित लाये ॥

देख सिह को मुनिराज ने अणुव्रत का उपदेश दिया।
क्षमा भाव से मरा सिह वो, स्वर्गो मे जा देव हुआ ॥

उसी शेर का जीव एक दिन, महावीर बन जाता है।
उत्तम क्षमा धर्म के कारण, तीर्थंकर पद पाता है ॥

सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
क्षमा धर्म का धारी जग मे, पदवी ऊँची पाता है ॥

दृष्टांत—एक ठग का

झूठ कपट छल चोरी करके, सच्चा सुख नही पायेगा।
ठगता है जो औरो को, वह ठगा एक दिन जायेगा ॥

पाकर पैसा चोरी का हम, बडे नही बन सकते है।
बिन सयम को धारे प्राणी, मुक्ति नही पा सकते है ॥

बनकर ठग जो इस दुनिया मे, ठगकर खुशी मनाते है।
वे ठग इक दिन नरक मे जाकर भारी कष्ट उठाते है ॥

सुनो कथा तुम कान लगाकर, तुमको आज सुनाता हूँ।
ठग अपने को कहता था जो, उसकी कथा सुनाता हूँ ॥

भेष बनाया बाबा जी का, माल गले मे डाली है।
लेकर चिमटा साथ मे अपने, रूप बनाया जाली है ॥

लेकर बच्चे को सग अपने, विद्या सब सिखलाता है।
कैसे ठगना दुनिया को तुम, हुनर सभी बतलाता है ॥
चलते-चलते उन दोनो ने, बगिया मे विश्राम किया।
एक लडके ने देख दूर से, उनको आ प्रणाम किया ॥
चेन अँगूठी ले लडके से, कपडा उसे सुँघाया है।
लेकर माल पहुँचे घर को, पुत्र मरा वहाँ पाया है ॥
ठगने चले थे गैरो को वे, ठगे स्वय ही जाते है।
माल बेचने गये शहर मे, पीतल भाव बिकाते है ॥
चेन अँगूठी दोनो मिलकर, पॉच रुपये मे जाती है।
लडके की हो गई मृत्यु, भारी विपदा आती है ॥
उस दिन से उस ठग ने भैया, पाप कर्म सब छोड दिये।
नही ठगूँगा किसी जीव को, मन मे अपने नियम लिये ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
झूठ कपट छल छोड के मानव, सच्चे को सुख को पाता है ॥

दृष्टांत—रथोत्सव से लाभ

रथ उत्सव क्यो होता भैया, मुनि हमे बतलाते है।
करके सेवा महामुनियो की, लिखकर तुम्हे सुनाते है ॥
रथ जब चलता वीर प्रभु का, चहु दिशि आनद छाता है।
नाममात्र को दु ख नही रहना, पाप कर्म नश जाता है ॥
सम्यक् दृष्टि दर्शन करके, फूले नही समाते है।
करके दर्शन वीर प्रभु के, सिद्ध शिला को जाते है ॥
मानी मान गलाकर अपना, दर्शन तेरे करते है।
दर्शन तेरे करके प्रभुवर, शिव रमणी को वरते है ॥
शुद्ध भावो से एक बार जो, दर्शन तेरे करता है।
जन्म मरण का नाम मिटाकर, शिव रमणी को वरता है ॥

मिथ्यादृष्टि दर्शन करके, समदृष्टि हो जाता है।
दूर कही भी रहता हो वो, तेरे ही गुण गाता है ॥
कुत्ते बिल्ली भी दर्शन कर, अपना भाग्य सराहे है।
मरकर जाते देव गति मे जाकर, पदवी ऊँची पाते है ॥
पशु पक्षी भी दर्शन तेरे, करके खुशी मनाते है।
बैठे-बैठे पेडो पर वे, तुझको शीश झुकाते है ॥
मन-ही-मन कहते बेचारे, कब दिन ऐसा पायेगे।
तीन लोक के नाथ को हम भी, सुदर चॅवर दुरायेगे ॥
पशु पक्षी की योनि पाकर, मन मे वो पछताते है।
मनुष्य गति मिल जाये हमको, ऐसी आस लगाते है ॥
अब भी समय समझ ले भैया, गया समय नही आयेगा।
रथ उत्सव मे नही आया तो, पशु पक्षी बन जायेगा ॥
पिक्चर मे हम जाते भैया, नही यहॉ पर आते है।
चितामणि रतन पाकर भी, यू ही व्यर्थ लुटाते है ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
रथ उत्सव हो नित प्रति दिन, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत—छने जल का महत्त्व

छान के जल क्यो पीना अच्छा, मुनिवर हमे बताते है।
हिसा नही करना जीवो की, सद उपदेश सुनाते है ॥
बिना छना जल पीने वाले, हिसा पाप कमाते है।
बुद्धि मद पड जाती उनकी, भारी कष्ट उठाते है ॥
रोग नये पैदा हो जाते, भाव अशुभ बन जाते है।
धर्म मार्ग मे नही लगता मन, विषयो मे चित्त लाते है ॥
एक व्यक्ति की सुनो कहानी लिखकर तुम्हे सुनाता हूॅ।
मरते-मरते बचा था कैसे, उसकी कथा सुनाता हूॅ ॥

एक व्यक्ति था एक गॉव मे, प्रभु पूजा नित करता था।
करते-करते काम घरेलू, ध्यान प्रभु का रखता था ॥
महामुनियो की सेवा करके, अपना भाग्य सराहता था।
जैन धर्म है उत्तम जग मे, कहकर खुशी मनाता था ॥
नियम लिया मुनिवर से उसने, छान के जल को पीऊॅगा।
निशि भोजन नही करू कभी मै, दया भाव चित्त लाऊॅगा ॥
एक दिना वो किसी काम से, दूर कही पर जाता है।
पानी नहि मिलने के कारण, व्याकुल वो हो जाता है ॥
बडी मुश्किल से दूर कही पर, कुआ एक नजर आया।
दोडा-दौडा गया वही पर, डोल खीच बाहर लाया ॥
पानी पीने को ललचाया, बात याद आ जाती है।
छान के जल पीना है मुझको, बुद्धि पलटा खाती है ॥
छनना लेकर छाना जल तो, देख चकित वो होता है।
जहरीला इक सॉप का बच्चा, छलने ऊपर होता है ॥
नियम लिया था महामुनियो से, गुण मुनियो के गाता है।
छने हुए जल के कारण ही, मृत्यु से बच जाता है ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
पानी सदा छानकर पीये, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टात—पत्थरी का रोग क्यों होता है

किन्ही मनुष्य के पेटो मे ये, पत्थरी कैसे हो जाती है।
सुन आपकी वाणी कृपालु, जनता मन मे सुख पाती है ॥
पत्थरी का है रोग भयानक, मुनि हमे बतलाते है।
अच्छे काम करो तुम जग मे, ऐसा शकुन सुनाते है ॥
जैसे कर्म करेगा प्राणी, वैसा ही फल पायेगा।
कॉंटे बोने वाला भैया, फूल कहॉ से लायेगा ॥

क्यो होता है रोग भयानक, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
पत्थरी के रोगी का किस्सा, गाकर तुम्हे सुनाता हूँ ॥
एक व्यक्ति था एक गाँव मे, भारी कष्ट उठाता था।
पत्थरी का था रोग भयानक, हाहाकार मचाता था ॥
ना सोता था, ना खाता था, वो रो-रो रुदन मचाता था।
करके याद पाप कर्मो को, मन-ही-मन पछताता था ॥
दुनिया भर की करी दवाई, नही ठीक वो हो पाया।
पाप कर्म कुछ किये थे, जिनका फल उसने पाया ॥
दूर-दूर देशो मे जाकर, पैसा बहु बरबाद किया।
ठीक नही हो पाया भैया, देखो कैसा पाप किया ॥
शुभ कर्मो से उसको भैया, मुनि दर्शन हो जाता है।
करके दर्शन मुनिराज के, अपना शीश झुकाता है ॥
किन कर्मो से बना हूँ रोगी, मुनिवर मुझे बता दीजै।
दया के धारी, पर उपकारी, शका मेरी मिटा दीजै ॥
पत्थरी जैसा रोग भयानक, किन कर्मो से होता है।
ताकि इससे दूर रहे ये, घोर कष्ट का दाता है ॥
सोच ज्ञान मे मुनिराज जी, उत्तर उसको देते है।
किन कर्मो से हुआ सभी ये, सही-सही बतलाते है ॥
भैया तूने पूर्व जन्म मे, भारी पाप कमाये थे।
पर नारी और मा बहनो से, छिप-छिप पाप कमाये थे ॥
उसका ही फल मिला आज ये, रोगी तू कहलाता है।
पत्थरी का रोगी बन करके, भारी कष्ट उठाता है ॥
पाप छिपे नहीं रहते भैया, उदय एक दिन आते है।
पाप पुण्य के कारण प्राणी, दुख-सुख सहते रहते है ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
पर नारी बहन समान जान, वो गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत—मदिरा-पान का निषेध क्यों

मदिरा क्यो नही पीते भैया, मुनिवर हमे बताते है।
कितनी हानि होती इससे, धीरे से समझाते है ॥
मदिरा नही पीना जीवन मे, मदिरा बहु दुख देती है।
इससे दूर रहो तुम भाई, जिनवाणी बतलाती है ॥
मदिरा पीने से बुद्धि का, सर्वनाश हो जाता है।
धर्म कर्म नही रहता भैया, भारी कष्ट उठाता है ॥
आदर नही होता है उसका, बात याद नही रहती है।
कुल की और धर्म की दोनो, मर्यादा मिट जाती है ॥
पत्नी भी नही आदर करती, धिक धिक उसको कहती है।
परिणाम बिगड जाते है उसके, बुद्धि भी नही रहती है ॥
एक व्यक्ति की सुनो कहानी, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
मदिरा पीना बडा पाप है, गाकर तुम्हे बताता हूँ ॥
मदिरा पीकर एक व्यक्ति ने, आनन्द बहुत मनाया था।
अच्छा इसको कहता था वो, पीकर के हर्षाया था ॥
बोतल पी करके मदिरा की, शहर एक दिन जाता है।
छाया नशा इतना उस पर था, नही सभल वो पाता है ॥
मदहोशी मे फिरा भटकता, विषयो मे मन ललचाया।
विषय वासना के चक्कर मे, भूल स्वय दुर्गत पाया ॥
नशा बहुत छाया था उस पर, पुलिस पकड ले जाती है।
डडे बहुत बरसाये उस पर, शर्म नही वो खाती है ॥
चेन अगूठी लेकर उसकी, भारी मार लगाती है।
छीन के पैसा सारा उससे, हथकडियाँ पहनाती है ॥
जेल डालकर उसको भैया, फासी हुक्म सुनाती है।
पत्नी नही पास म आती, दूर बहुत हो जाती है ॥

अशुभ भाव से मरकर वो तो, नरक बीच मे जाता है।
मदिरा पीने के कारण वो, भारी कष्ट उठाता है ॥

सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
मदिरा नही पीना जीवन मे, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत—गिद्ध-उल्लू की योनि किन पापों से मिलती है

गिद्ध उल्लू की योनि भैया, किन पापो से पाते है।
श्रावक सोपान ग्रन्थ मे लिखकर, मुनिवर हमे बताते है ॥

गिद्ध उल्लू की योनि पाकर, जीव महा दुख पाते है।
रोटी नही मिलती खाने को, मास सदा ये खाते है ॥

सडा गला ये मास खाकर, अपनी भूख मिटाते है।
कभी-कभी तो ये बेचारे, भूखे ही सो जाते है ॥

सर्दी-गर्मी वर्षा के ये, कष्ट अनेको सहते है।
करके याद पाप कर्मो को, मन ही मन पछताते है ॥

गिद्ध उल्लू की एक कथा मै, लिखकर तुम्हे सुनाता हूॅ।
गिद्ध उल्लू वो बने थे कैसे, गाकर तुम्हे सुनाता हूॅ ॥

इक जगल मे एक वृक्ष था, वृक्ष बड़ा ही भारी था।
उल्लू गिद्ध रहते थे उस पर, प्रेम उन्हो मे भारी था ॥

शुभ कर्मो से उन दोनो के, मुनि वहॉ इक आते है।
बैठ वृक्ष के नीचे मुनिवर, अपना ध्यान लगाते है ॥

देख मुनिवर को वे दोनों, नीचे ही आ जाते है।
करके दर्शन मुनिराज के, अपना शीश झुकाते है ॥

विनय भाव से बोले दोनो, शका आप मिटा दीजै।
उल्लू गिद्ध क्यो बने यहॉ हम, मुनिवर हमे बता दीजै ॥

मुनिराज जी सोच ज्ञान मे, उत्तर उनको देते है।
गिद्ध उल्लू वो बने थे कैसे, उसको ही कह देते है ॥

भैया, तुम तो पूर्व जन्म मे, जैनी पुत्र कहाते थे।
सगे भाई थे दोनो तुम तो, मदिर भी नही जाते थे ॥
दस लक्षण के पर्व मे भी तुम, निश मे भोजन करते थे।
ब्रह्मचर्य की बात छोड दो, बिना छना जल पीते थे ॥
इन पापो के करने से तुम, गिद्ध उल्लू बन बैठे हो।
हीरा धर्म बिसारा तुमने, इसलिए दुख पाते हो ॥
जैनी पुत्र कहाकर भी जो, निश मे भोजन खाते है।
दस लक्षण के पर्व मे भी जो, मदिर मे नही आते है ॥
ऐसे पापी यहॉ से मरकर, गिद्ध उल्लू बन जाते है।
भारी कष्ट उठाकर भैया, वो नरको को जाते है ॥
हाथ जोड कहता है 'मोहन', निश भोजन मत खाना।
देव गुरु है पूज्य हमारे, जिनवाणी मन लाना ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
देव गुरु का करके सुमरण, कविता नई बनाता है ॥

दृष्टांत—एक भैंसे का

भैसा एक बोगी मे जुतकर, धीरे-धीरे जाता था।
सौ मन से भी ज्यादा बोझा, लेकर भैसा जाता था ॥
बीसो मील चला वो भैसा, थकके चकनाचूर हुआ।
पानी नहि मिलने के कारण, उसका बुरा हाल हुआ ॥
घास नही मिलती खाने को, डडे खाता जाता है।
गर्मी मे चक्कर खाकर वो, धरती पर गिर जाता है ॥
धरती पर गिरते ही भैया, नीचे वो दब जाता है।
कितनी पीडा सही थी उसने, मुख से नही कह पाता है ॥
जेसे तैसे निकल वहॉ से, दौडा-दौडा जाता है।
शुभ कर्मो के कारण उसको, मुनि दर्शन हो जाता है ॥

देख मुनि को उस भैसे ने, अपना शीश झुकाया है।
बैठ चरण मे मुनिराज के, ऐसा शकुन सुनाया है ॥
किन कर्मो से बना हूँ भैसा, मुनिवर आप बता दीजै।
दया के धारी, पर उपकारी, शका मेरी मिटा दीजै ॥
मुनिराज जी सोच ज्ञान मे, उत्तर उसको देते है।
किन कर्मो से बना है भैसा, उसको ही कह देते है ॥
पूर्व भव मे तू तो भैया, जैनी पुत्र कहाता था।
धन-वैभव को पाकर तू तो, फूला नही समाता था ॥
जिन मदिर था पास मे तेरे, कभी नही तू जाता था।
दस लक्षण के पर्व मे भी तू, निशि मे भोजन खाता था ॥
चातुर्मास था नगर मे तेरे, मुनि सघ इक आया था।
दर्शन नही किया मुनियो का, विषयो मे चित लाया था ॥
सेवा नही की सघ की तूने, हीरा जन्म गॅवाया था।
चितामणि रतन को पाकर, यू ही व्यर्थ लुटाया था ॥
उसका ही फल मिला आज ये, भैसा तू कहलाता है।
सौ मन से भी ज्यादा बोझा, ऊपर लेकर जाता है ॥
अब भी समय समझ ले भैया, गया समय नही आयेगा।
निशि भोजन नही छोडा तूने, भैसा तू बन जायेगा ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
निशि भोजन नही करे कभी हम, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत–महापुरुष कौन है

नहि सता तू उन लोगो को, जो भूखे ही सो जाते है।
बात नही कर सकते मन की, ऑसू सदा बहाते है ॥
क्या खाते क्या पीते है वो, कौन तुम्हे बतलाये।
दिल की बाते दिल मे रखकर, अपना समय बिताये ॥

दूध नही पीने को घर मे, खाने को नही दाना।
कैसे वो रहते बेचारे, श्री जिनवर ने जाना ॥
वस्त्र नहीं ओढने को है, खटिया नही बिछाने को।
मुर्दा घर मे पडा है उनके, लकडी नही जलाने को ॥
बच्चे नही पढा सकते वो, नही किराया देने को।
ब्याह योग्य हो गई है लडकी, नही है पैसा देने को ॥
ऐसे लोगो का इस जग मे, तू ही एक सहारा है।
तेरे सिवा नही इस जग मे, लाज बचावन हारा है ॥
करके चोरी कमाके पैसा, बडा नही कहलाता है।
ऐसा पापी यहॉ से मरकर, नरक गति को जाता है ॥
बडा वही है इस दुनिया मे, पर की खातिर मरता है।
दीन दु खी की सेवा मे जो, सब कुछ अर्पण करता है ॥
अस्पताल खुलवाकर जो जन, रोग ठीक करवाते है।
विधवा बहनो की सेवा मे, पैसा खूब बहाते है ॥
जिन मदिरो की करा प्रतिष्ठा, अपना भाग्य सराहते है।
महामुनियो की करके सेवा, फूले नही समाते है ॥
ऐसे प्राणी इस दुनिया मे, महापुरुष कहलाते है।
इस भव और पर भव मे वो तो, ऊँचे पद को पाते है ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
नही सताना किसी जीव को, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत–विद्या क्यों आती है

बिना पढे भी इस प्राणी को, ज्ञान बहुत हो जाता है।
क्या कारण है इसका मुनिवर, नही समझ मे आता है ॥
कभी-कभी कालिज जाता है, फिर भी फेल नही होता।
प्रथम ही आता है नबर, मुनिवर ऐसा क्यो होता ॥

श्री 108 आचार्य धर्म सागर जी महाराज लेखक को आशीर्वाद देते हुए।

एक लड़के की सुनो कहानी, लिखकर तुम्हें सुनाता हूँ।
बिना पढे विद्वान बना जो, उसकी कथा सुनाता हूँ ॥
एक लडका था एक गॉव मे, प्रभु पूजा नित करता था।
करते-करते काम घरेलू, ध्यान प्रभु का रखता था ॥
माता-पिता के चरणो को छू, अपना भाग्य सराहता था।
महामुनियो की सेवा करके, फूला नहीं समाता था ॥
पिता समान बुजुर्गो का वो, मन से आदर करता था।
देव गुरु है पूज्य जगत् मे, श्रद्धा गहरी रखता था ॥
कभी-कभी कालिज जाता था, आदर सबका करता था।
गुरुओ के चरणो को छूकर, विद्या मन मे धरता था ॥
बडे-बडे ग्रथो को लडका, आसानी से पढता था।
सस्कृत का हिदी मे मतलब, लडका खुद कर लेता था ॥
लिखकर महिमा देव गुरु की, मन ही मन हरषाता था।
बाबा दादी की इज्जत का, ध्यान हमेशा रखता था ॥
एक दिना उस गॉव मे भैया, मुनिराज इक आते है।
धर्म ध्यान की सच्ची बाते, जीवो को सिखलाते है ॥
हाथ जोड बोला मुनिवर से, एक बात बतला दीजै।
बिना पढे प्रथम क्यो आता, शका आप मिटा दीजै ॥
ज्ञान के धारी, पर उपकारी, सोच ज्ञान मे कहते है।
किन कर्मो से होता ऐसा, उसको ही कह देते है ॥
भैया, तूने पूर्व जन्म मे, भारी पुण्य कमाया था।
जो भी शास्त्र जीर्ण हुए थे, उनको ठीक कराया था ॥
जिनवाणी को करा प्रकाशित, फूला नहीं समाता था।
शास्त्र दान मे देकर पैसा, मन-ही-मन हर्षाता था ॥
शास्त्र सभा मे जाकर तू तो, मन मे खुशी मनाता था।
विनय भाव से जिनवाणी को, सुनकर तू हर्षाता था ॥

उसका ही फल मिला आज ये, बुद्धिमान कहाता है।
थोडा-सा भी पढने पर तू, प्रथम नबर आता है ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
जिनवाणी की विनय करे हम, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत—उत्तम संयम धर्म पर

सयम से ही जग मे प्राणी, सच्चे सुख को पाता है।
धार के सयम मनुष्य गति मे, मुक्ति पद को पाता है॥
सयम जो धारण करते है, जग मे पूजे जाते है।
दिखा मार्ग मुक्ति का हमको, सिद्ध शिला को जाते है ॥
सयम बिना मनुष्य की देखो, क्या हालत हो जाती है।
जिनवाणी ही भैया हमको, सन्मार्ग दिखलाती है ॥
एक मनुष्य की सुनो कथा मै, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
कैसे सयम पाला उसने सारा हाल बताता हूँ ॥
एक गरीब मछेरा दिन भर मच्छी पकडा करता था।
मच्छी पकड-पकड दिन भर वो, पापबन्ध नित करता था ॥
इतना पाप बन्ध करता था, दिन भर भूखा मरता था।
नही रहने को जगह थी उसके, सदा फिकर मे रहता था ॥
तन ढकने को नही था कपडा, वेसे ही सो जाता था।
सर्दी गर्मी वर्षा मे वो, भारी दुखडे सहता था ॥
एक दिन उस बेचारे का, जाल भी चोरी जाता है।
पहले से ही बहुत दुखी था, अब तो रुदन मचाता है ॥
रोते रोते उसका भैया, बहुत समय व्यतीत हुआ।
इतने मे देखो भैया तुम, शुभ कर्मो का उदय हुआ ॥
शुभ कर्मो के कारण उसको, मुनि दर्शन हो जाते है।
सयम ही सुख का कारण है, ऐसा वो फरमाते है ॥

हाथ जोड बोला मुनिवर से, सयम क्या समझा दीजै।
सुख का कारण कैसे है वो, मुझको भी बतला दीजै ॥
दया के धारी पर उपकारी, धीरे से समझाते है।
बिन सयम के प्राणी जग मे, भारी कष्ट उठाते है ॥
सयम नही पास था तेरे, इसीलिए बरबाद हुआ।
मुनि चरणो के कारण देखो, कैसे था उद्धार हुआ ॥
लेकर नियम मुनि से वो तो, सयम पालन करता है।
उत्तम सयम के कारण ही, शिव रमणी को वरता है ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
सयम धर्म का धारी जग मे, सच्चे सुख को पाता है ॥

दृष्टांत—उत्तम तप धर्म पर

तप की आग जलाकर भैया, अपने कर्म जलाओ।
कर्म महा दुखदायी जग मे, इनको दूर भगाओ ॥
इन कर्मो के कारण प्राणी, दर दर ठोकर खाते।
इनके ही तो कारण भैया, नरक गति को जाते ॥
ये ही कर्म जेल ले जाते, डण्डो से मरवाते।
अन्धा लूला बनाके हमको, दर दर ये भटकाते ॥
इन कर्मो ने ही सीता को, रावण के घर पहुँचाया था।
इनके कारण श्रीपाल ने, कुष्ठ रोग को पाया था ॥
पार्श्व प्रभु पर इन कर्मो ने, पत्थर थे बरसाये।
इन कर्मो के कारण प्राणी, जीव महा दुख पाये ॥
इतने सकट पडने पर भी, नही समझ हम पाते।
अच्छा बुरा क्या है जग मे, मुनि हमे बतलाते ॥
एक पेट के कारण प्राणी, पाप हमेशा करते है।
मुनि हमे समझाते है हम, फिर भी नही समझते है ॥

तप की आग जलाकर भैया, पाप कर्म का अन्त करो।
श्रद्धाभाव सदा मन रखकर, उत्तम तप का वरण करो ॥
तप की आग जलाकर हम सब, सारे कर्म खपायेगे।
अष्ट कर्म का करके नाश हम, सब शिवपुर को जायेगे ॥
तप का पालन करने से ही, कर्म नाश हो पाते है।
करके नाश कर्म का मुनिवर, सिद्ध शिला को जाते है ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
तप धर्म ही जीव को भैया, भव से पार लगाता है ॥

दृष्टांत–उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म पर

ब्रह्मचर्य जो पालन करते, वे ही मुक्ति पाते है।
बिन पाले ब्रह्मचर्य व्रत को, जीव महा दुख पाते है ॥
ब्रह्मचर्य के बिना जीव ये, सच्चा सुख नही गहते है।
ब्रह्मचर्य व्रत लेकर प्राणी, शिव रमणी को वरते है ॥
ब्रह्मचर्य पालन करने से, रोग दूर हो जाते है।
निर्मल बुद्धि पाकर भैया, सच्चे सुख को पाते है ॥
एक धीवर की सुनो कथा मै, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
कैसे पाई मुक्ति उसने, सारा हाल सुनाता हूँ ॥
एक धीवर था एक गॉव मे, राब पकाया करता था।
राला खाड अलग करके वो, दिन पूरा कर जाता था ॥
कितनी हिसा करता दिन भर, मुख से ना कह सकते है।
पाप कर्म के कारण प्राणी, नरक गति मे जाते है ॥
शुभ कर्मो से उस धीवर को, मुनि दर्शन हो जाते है।
धर्म कर्म की सच्ची बाते, जीवो को सिखलाते है ॥
करके दर्शन मुनिराज के, फूला नही समाता है।
सद उपदेश सुनाओ मुनिवर, कहकर खुशी मनाता है ॥

ज्ञान के धारी, पर उपकारी, सद उपदेश सुनाते है।
ब्रह्मचर्य ही सार जगत मे, ऐसा उसे बताते है ॥
शुभ कर्मो से उस धीवर को, मुनि बात भा जाती है।
ब्रह्मचर्य दे दो हमको भी, लौ ऐसी लग जाती है ॥
लेकर ब्रह्मचर्य धीवर ने, आतम का कल्यान किया।
हिसा छोड के उसने भैया, महा पुन्य का काम किया ॥
ब्रह्मचर्य व्रत को लेने से, सच्चे सुख को पाता है।
अष्ट कर्म का करके नाश वो, सिद्ध द्वार पा जाता है ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
ब्रह्मचर्य ही सार जगत मे, गुण मुनियो के गाता है ॥

दुष्टांत—सच्चे रतन कैसे पा सकते हैं

तरह तरह के रतन जडाऊँ, बिन पैसे पा सकते है।
श्रद्धा रूपी हार पहनकर, सिद्ध द्वार जा सकते है ॥
श्रद्धा नही होने से प्राणी, भारी कष्ट उठाते है।
चौरासी मे चक्कर खाकर, भूल स्वय को जाते है ॥
पत्थर के टुकडो मे भैया, आनन्द सदा मनाता है।
जिस योनि मे पैदा होता, उस ही मे रम जाता है ॥
सच्चा सुख नही मिला कही भी, नाना कष्ट उठाये है।
तेरे शुभ कर्मो के कारण, मुनिराज यहॉ आये है ॥
सच्चे रतनो की थैली ये, सजा साथ मे लाये है।
दस धर्मो का पहन के चोला, हित उपदेश सुनाये है ॥
दर्शन ज्ञान यहॉ मिलता है, सयम रूपी सौदा।
तप रूपी किरणे मिलती है, अकिचन सा पौधा ॥
जो भी इनसे सौदा लेता, सस्ता सौदा देते है।
श्रद्धा रूपी रतन को लेकर, रतन त्रय ये देते है ॥

निशि भोजन का त्याग कराकर, मुक्ति टिकट देते है।
आलू गोभी छुडवाकर ये, हिसा दूर भगाते है ॥
क्या क्या माल पास मुनिवर के, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
दाम एक है सबका भैया, गाकर तुम्हे सुनाता हूँ ॥
श्रद्धा रूपी रतन को देकर, माल तुम्हे मिल सकता है।
भक्ति रूपी मोती से ही, काम सुगम बन सकता है ॥
सम्यक दर्शन ज्ञान रतन का, ढेर इन्हो पे भारी है।
चारित्र रूपी हीरे इन पर, तप रूपी पिचकारी है ॥
.या धर्म की माल बनाकर, मोती उसमे डाले है।
दस मोती है सुन्दर उसमे, नाम सभी गुणवाले है ॥
श्रद्धा रूपी रतन को देकर, 'मोहन' ने माल खरीदा है।
सम्यक रूपी सौदा लेकर, भजन बनाना सीखा है ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
श्रद्धा रूपी रतन बडा है, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत—एक लंगड़े का

कलम चलाता हूँ मै उस पर, देख दया जिसको आती।
किन कर्मो से बनता लॅगडा, जिनवाणी मा बतलाती ॥
एक लॅगडा था एक गॉव मे, चल फिर वो नही सकता था।
लोग अपाहिज कहते उसको, दिन भर भूखा मरता था ॥
पैर मरे थे उसके भैया, लॅगडा वो कहलाता था।
धर्म-कर्म किसको कहते है, कभी नही मन लाता था ॥
रोते रोते दिन बीते था, सोच सोच दुख पाता।
पाप कर्म के कारण प्राणी, भारी कष्ट उठाता ॥
उसके शुभ कर्मो के कारण, मुनि दर्शन हो जाते है।
दया के धारी, पर उपकारी, हित उपदेश सुनाते है ॥

हाथ जोड बोला मुनिवर से, शका मेरी मिटा दीजै।
किन कर्मो से बना हूँ लँगडा, मुनिवर, मुझे बता दीजै ॥

मुनिराज जी सोच ज्ञान मे, उत्तर उसको देते है।
किन कर्मो से बना था लँगडा, सही सही बतलाते है ॥

पूर्व जन्म मे तूने भैया, मुनियो पर पैर उठाया था।
धर्म कर्म सब बिसरा तूने, उनका मान घटाया था ॥

उसी पाप से मरकर तूने, दोनो पैर गँवाये।
जो भी जैसी करनी करता, वैसा ही फल पाये ॥

ज्ञान के धारी, पर उपकारी, दया भाव चित लाते है।
महामन्त्र देते है उसको, पैर ठीक हो जाते है ॥

छूकर चरण मुनि के अब तो, अपना भाग्य सराहा है।
गलती जो भी की थी उसने, माफी उसकी चाहा है ॥

महामन्त्र की पाकर शक्ति, मुनियो पर श्रद्धान किया।
जिन दर्शन करके लगडे ने, आतम का कल्याण किया ॥

सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
मुनि चरणो की सेवा करके, भजन बनाकर लाता है ॥

दृष्टांत—मन्दिर का पैसा खाने वाले का

कलम चलाता हूँ मै उस पर, देख दया जिसको आती।
चौबीस घन्टे मेहनत करके, भी नही रोटी मिल पाती ॥

धन के पीछे भागा फिरता, फूटी कौडी ना पाता।
किसी तरह से आए पैसा, ऐसी आस लगाता ॥

मन्त्र जन्त्र पूछे फिरता है, रो रो रुदन मचाता है।
देख देख हालत को अपनी, मन ही मन शर्माता है ॥

तृष्णा है पैसे की उसको, कहाँ से रोटी खाऊँगा।
रोटी नही मिली खाने को, भूखा ही मर जाऊँगा ॥

किन कर्मो से होता ऐसा, मुनि हमे बतलाते है।
एक व्यक्ति का किस्सा लिखकर, 'मोहन' तुम्हे सुनाते है ॥

एक गॉव मे एक मनुष्य था, दिन भर भूखा मरता था।
मेहनत करके रात-दिवस, गुजर नही कर पाता था ॥

बच्चे तीन थे उसके भैया, तीनो भूखे रहते थे।
तन पर कपडा नही थे उनके, हर दम रोते रहते थे ॥

देख दशा अपने बच्चो की, माता रुदन मचाती थी।
किन पापो से हुआ सभी ये, सोच सोच दुख पाती थी ॥

शुभ कर्मो से उसी गॉव मे, मुनि एक थे आये।
धर्म कर्म की सच्ची बाते, जीवो को सिखलाये ॥

निर्धन नर नारी भी भैया, मुनि दर्शन को आये।
करके दर्शन मुनिराज के, फूले नही समाये ॥

किन कर्मो से हुई ये हालत, नाथ हमे बतला दीजै।
बच्चे भूखे बैठे घर मे, शका सभी मिटा दीजै ॥

सोच ज्ञान मे मुनिवर उनको, सही सही बतलाते है।
किन कर्मो से हुई ये हालत, धीरे से समझाते है ॥

भैया, तू तो पूर्व जन्म मे, महा चोर कहलाता था।
जो भी दान करे मन्दिर मे, उसको चट कर जाता था ॥

मन्दिर का पैसा खाकर तू, आनन्द खूब मनाता था।
करके चोरी सभी जगह पर, फूला नही समाता था ॥

माल देखकर चोरी का, ये औरत खुशी मनाती थी।
जल्दी जल्दी लाओ पैसा, कह करके हर्षाती थी ॥

तीनो बच्चे साथ मे तेरे, चोरी करके लाते थे।
कोई ऊपर कोई बाहर, सभी खडे हो जाते थे ॥

चूल्हा तवा परात सभी ये, चोरी करने जाते थे।
रोटी पोने के साधन भी, उठा कही से लाते थे ॥

बोये बीज नीम के भैया, आम कहाँ से खायेगा।
मन्दिर का पैसा खाकर तू, नरक द्वार को जायेगा ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
चोरी करना महा पाप है, गुण मुनियो के गाता है ॥

णमोकार महा मन्त्र की महिमा

णमोकार मत्र ऐसा है जग मे, पैसे से नही पाते है।
इसको जपने वाले भैया, भव सागर तर जाते है ॥
कोढ सरीखे महा भयकर, रोग ठीक हो जाते है।
कगाली भी बनकर राजा, हर दम मौज उडाते है ॥
भव के रोगी बन के योगी, सिद्ध शिला को जाते है।
बैल सरीखे करके सेवन स्वर्ग सुखो को पाते है ॥
श्रद्धा रूपी मोती देकर, मुनियो से मिल जाता है।
एक सौ आठ बार जपने से, सम्यक् सुख को पाता है ॥
सुबह शाम जो जपता इसको, श्रद्धा इस पर रखता है।
इच्छित वस्तु पाता भैया, शिव रमणी को वरता है ॥
श्रद्धा इस पर न होने से, चौरासी मे घूम चुका।
दुखडे सहकर चार गति मे, महिमा अभी न जान सका ॥
बडे-बडे ऋषियो मुनियो ने, इसकी महिमा गाई है।
इसकी महिमा इतनी भैया, कहने मे नही आई है ॥
अरहत सिद्ध आचार्य हमारे, जो जग मे पूजे जाते है।
उपाध्याय व सर्व साधु भी, इसी मन्त्र मे आते है ॥
सबको शीश झुकाता हूँ मै, श्रद्धा इन पर रखता हूँ।
महामन्त्र की महिमा गाकर, सुखमय जीवन जीता हूँ ॥
इसकी महिमा इतनी भैया, मुख से नही कहा जाता।
बना समन्दर पूरी स्याही, फिर भी नही लिखा जाता ॥

इसी मन्त्र पर श्रद्धा रखकर, जो जन काम पे जाते है।
दिन भर आनद करते है वो, मनवाछित फल पाते है ॥
इसी मन्त्र पर श्रद्धा रखकर, 'मोहन' भजन बनाता है।
महामन्त्र की महिमा लिखकर, अपना भाग्य सराहता है ॥

बच्चों के लिए शिक्षा

सुनलो बच्चो, ध्यान लगाकर, बाते तीन बताऊँगा।
विद्या खुद चलके आयेगी, सही उपाय बताऊँगा ॥
फर्स्ट सदा आआगे बच्चो, बात मेरी तुम मानोगे।
श्रद्धा से यदि करोगे पालन, हर दम मौज मनाओगे ॥
उठकर मात पिता को भैया, पहले प्रणाम तुम करना।
करके चारो दिशा मे वदना, महा मन्त्र चित लाना ॥
करके दर्शन वीर प्रभु के, मन अपने हर्षाना।
जिनवाणी को नमस्कार कर, फूले नही समाना ॥
विनय भाव लेकर मन मे तुम, विद्या पढने जाना।
गुरु जहॉ भी मिले तुम्हारे, अपना शीश झुकाना ॥
छूकर चरण गुरु के अपने, अपना भाग्य बनाना।
श्रद्धा रूपी रतन पहनकर, विद्या पढते जाना ॥
जो भी विद्या पढोगे भैया, मन मे धरते जाना।
चोरी नही करे जीवन मे, गुण मुनियो के गाना ॥
इन सब बातो के पालन से, बच्चो, विद्या पाते है।
निर्मल बुद्धि पाकर 'मोहन', भजन बनाकर लाते है ॥

दृष्टांत–धर्म करते-करते हानि भी हो जाये तो धर्म नहीं छोड़ना

करते करते धर्म यदि कुछ, हानि भी आ जाये।
नही छोडना, धर्म को भैया, मुनि हमे बतलाये ॥

धर्म छोडकर प्राणी जग मे, भारी कष्ट उठाते है।
भारी कष्ट उठाकर भैया, नरक गति मे जाते है ॥
एक लडके की सुनो कहानी, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
धर्म नही बिसराया जिसने, उसकी कथा सुनाता हूँ ॥
एक लडका था एक गॉव मे, धर्म ध्यान नित करता था।
देव गुरु के चरणो मे वो, श्रद्धा गहरी रखता था ॥
प्रभु पूजा नित करके उसने अपना भाग्य सराहा था।
महा मुनियो की सेवा करके, फूला नही समाया था ॥
एक दिना की सुनो कहानी, गाकर तुम्हे सुनाता हूँ।
रथ उत्सव मे गया वो लडका, उसकी कथा सुनाता हूँ ॥
जाकर उत्सव मे लडके ने, प्रभु का ध्यान लगाया।
बोली लेकर इन्द्र बना वो, अपना भाग्य सराहा ॥
नारी बच्चे भी लडके के, उत्सव मे आ जाते है।
देख प्रभु को रथ मे भैया, फूले नही समाते है ॥
बना इन्द्र वो लडका भैया, चॅवर दुराता जाता है।
करके दर्शन वीर प्रभु के, मन मे खुशी मनाता है ॥
इधर धर्म करता है लडका, घर देखो क्या होता है।
चोर घुसे है घर मे उसके, पास नही कुछ रहता है ॥
आकर लडके ने घर देखा, माल सफाया सारा है।
कैसे चोरी हुई ये घर मे, रो रो लडका हारा है ॥
धीरज रखकर मन मे अपने, प्रभु पूजन नित करता है।
नहीं रहा है घर मे कुछ भी, फिर भी पूजन करता है ॥
करते करते पूजन इक दिन, चमत्कार क्या होता है।
ऑख झपी लड़के की भैया, कोई उससे कहता है ॥
छोड़ गॉव को जाओ बाहर, वीरा के गुण गाना।
अशुभ समय टल गया तुम्हारा, धर्म नहीं बिसराना ॥

छोड गॉव को वो लडका तो, एक शहर मे जाता है।
जितना माल गया था चोरी, दस गुणा वो पाता है ॥
धर्म नही छोडा था उसने, इसलिए सुख पाया है।
करके पूजा वीर प्रभु की, मन अपने हर्षाया है ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
धर्म नही बिसराना भैया, धर्म ही पार लगाता है ॥

चाँदनपुर महावीर भगवान की महिमा

करके दर्शन वीर प्रभु के, फूला नही समाता हूँ।
वीर प्रभु की महिमा लिखकर, गाकर तुम्हे सुनाता हूँ ॥
वीर प्रभु जी तेरी महिमा, सारे जग से न्यारी है।
तेरी महिमा सेवक तेरा, गाता बार हजारी है ॥
कितनी प्यारी छवि तुम्हारी, कहने मे नही आती है।
दर्शन करने जनता तेरे, दूर दूर से आती है ॥
जो भी दर पर आता तेरे, खाली नही वो जाता है।
जो भी इच्छा करता मन मे, पूरी उसको पाता है ॥
बिन माँगे सब कुछ देते है, लिखकर तुम्हे सुनाऊँगा।
भूल चूक यदि हुई कही पर, माफी उसकी चाहूँगा ॥
एक गॉव मे एक आदमी, दुखी बहुत वो रहता था।
देव गुरु का दर्शन करने, नही कभी वो जाता था ॥
धर्म कर्म किसको कहते है, नही कभी मन लाता था।
सच्चा सुख कैसे मिलता है, नही समझ वो पाता था ॥
शुभ कर्मो से उसको भैया, मुनि दर्शन हो जाते है।
चॉदनपुर के वीर प्रभु की, महिमा उसे बताते है ॥
सुनकर महिमा वीर प्रभु की, फूला नही समाता है।
जाकर वीरा चरणो मे वो, अपना ध्यान लगाता है ॥

करके दर्शन चला वीर के, नहि मुख से कुछ माँगा था।
चलते समय प्रभु चरणो मे, निश का भोजन त्यागा था ॥

करके दर्शन वीर प्रभु के, वापस घर को जाता है।
रस्ते मे उसको भैया, इक, ठेकेदार मिल जाता है ॥

ठेका लेकर करी खुदाई, चमत्कार क्या होता है।
ताम्बा जहाँ निकलना था, वहाँ हीरा पन्ना होता है ॥

बिन माँगे सब कुछ देते हो, महिमा तेरी न्यारी है।
तेरे चरण-कमल मे प्रभुवर, शत-शत नमन हमारी है ॥

सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
करके भक्ति वीर प्रभु की, भजन बनाकर लाता है ॥

दृष्टांत—अच्छे बच्चे किन कर्मों से मिलते हैं

अच्छे बेटे अच्छी बेटी, किन कर्मो से पाते है।
मुनिवर, आप बता दो हमको, गुण तेरे हम गाते है ॥

एक सेठ की सुनो कहानी, गाकर तुम्हे सुनाता हूँ।
बच्चे सब अच्छे थे जिसके, उसकी कथा सुनाता हूँ ॥

दो लडके दो लडकी उसके, हरदम सुख से रहते थे।
धर्म ध्यान को धारण करके, दिन पूरा वो करते थे ॥

देव गुरु की श्रद्धा भक्ति, शुद्ध भावो से करते थे।
लडना नही जानते थे वे, विनय गुरु की करते थे ॥

नित मन्दिर मे जाते चारो, भजन प्रभु का करते थे।
धर्म सहाई है इस जग मे, भाव ये मन मे धरते थे ॥

शुद्ध भावो से दर्शन करके, अपना भाग्य सराहे थे।
सच्चा सुख मिलता है जिससे, ऐसे भाव बनाये थे ॥

मात पिता के चरण को छूकर, मन ही मन हरषाते थे।
कष्ट नही हो मात पिता को, ऐसी आस लगाते थे ॥

लडकी दोनो मात की सेवा, सच्चे मन से करती थी।
दुखी नही हो मात हमारी, भाव हृदय मे धरती थी ॥

ऐसे बच्चो को पा करके, मात पिता खुश होते थे।
कितने अच्छे बच्चे हमरे, कह कर प्रसन्न होते थे ॥

एक दिना उस गॉव मे भैया, मुनिराज इक आये।
धर्म कर्म की सच्ची बाते, जीवो को सिखलाये ॥

हाथ जोड बोले मुनिवर से, एक बात बतला दीजै।
अच्छे बच्चे मिले हमे क्यो, इसका उत्तर दे दीजै ॥

मुनिराज जी सोच ज्ञान मे, उत्तर उसको देते है।
अच्छे बच्चे कैसे होते, उनको ही कह देते है ॥

भैया, तूने पूर्व जन्म मे, शिक्षण शिविर चलाया था।
अच्छी शिक्षा दे बच्चो को, विनय भाव सिखलाया था ॥

लडके लडकी सब आते थे, विद्या पढते जाते थे।
विद्या पढकर मात पिता का, आदर मन से करते थे ॥

उसका ही फल मिला आज ये सु सताने पाई है।
कष्ट नही है किसी बात का, धर्म से प्रीति लगाई है ॥

सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
शिक्षण शिविर चलाये हम सब, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टात—सम्यक् श्रद्धालु का

तेरी पावन कृपा से ही, फूल बगीचो मे खिलते।
इस धरती पर जो भी प्राणी, तेरी नजरो मे रहते ॥

ऋषि मुनि गुणगान हमेशा, शुद्ध भावो से करते है।
चद्र सूर्य तारे सब तेरी, परिक्रमा नित करते है ॥

तेरे दर्शन करके नित हम, अपना भाग्य सराहते है।
बच्चे जो भी प्रथम आते, तेरे ही गुण गाते है ॥

अच्छी बुद्धि देकर तूने, सही मार्ग दिखलाया।
सम्यक् ही सुख का कारण है, सबको यह बतलाया ॥
कृपा तेरी पाकर मैने, लिखी एक कहानी।
नही करो पैसे का लालच, लक्ष्मी आनी जानी ॥
एक लडके की सुनो कहानी, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
पढ लिखकर वो बना मिनिस्टर, महिमा तेरी गाता हूँ ॥
कैसे बना मिनिस्टर लडका, सही-सही बतलाऊँगा।
देव शास्त्र गुरु पूज्य हमारे, महिमा इनकी गाऊँगा ॥
एक लडका था एक गॉव मे, नित मन्दिर वो जाता था।
करके दर्शन श्री जिनवर के, फूला नही समाता था ॥
लेकर रोटी रूखी सूखी, रोज मदरसे जाता था।
जो भी विद्या पढता लडका, मन मे धरता जाता था ॥
गुरुओ की करता था सेवा, चरण बडो के छूता था।
मात पिता की सेवा करके, अपना भाग्य सराहता था ॥
महामन्त्र की जाप हमेशा, सच्चे मन से करता था।
जब भी अडचन आती उसको, तभी मन्त्र पढ लेता था ॥
महामन्त्र पर रखकर श्रद्धा, सद्बुद्धि को पाया।
इसी मन्त्र के कारण वो तो, सदा फर्स्ट था आया ॥
ऋषि मुनियो की करके सेवा, पढ-लिखकर विद्वान बना।
महामन्त्र के कारण उसने, सात तत्त्व का ज्ञान किया ॥
पढ-लिखकर वो बना मिनिस्टर, आनद खूब मनाता है।
जिन दर्शन के कारण वो तो, पदवी ऊँची पाता है ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
जिन दर्शन नही छोडो भैया, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत–धर्म ही साथ जाता है

बुरा समय जब आयेगा, काम न कोई आयेगा।
मुनि तुझे समझाते है, पर समझ नही तू पायेगा ॥
एक सेठ की सुनो कथा मै, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
जैसा सन्तो ने बतलाया, वैसा तुम्हे बताता हूँ ॥
वैभव पाकर एक सेठ ने, धर्म कर्म बिसराया था।
भोग विषय मे लिप्त हुआ वो, हीरा जनम गँवाया था ॥
मुनि उसे समझाते थे, पर समझ नही वो पाता था।
रिश्ते नाते ही सब कुछ है, कहकर खुशी मनाता था ॥
बेटा बेटी मौसा मौसी, सारे मुझको प्यारे है।
सास ससुर की बात न पूछो, जीजा जग से न्यारे है ॥
काम सदा आते है मेरे, बिना बुलाये आते है।
खासी नजले की सुनकर भी, सारे ही आ जाते है ॥
ऐसी बाते करता था वो, भूल धर्म को जाने से।
वैभव सारा खत्म हुआ अब, पाप कर्म के आने से ॥
पिछला पुन्य वो भोग रहा था, आगे अब क्या भोगेगा।
पाप कर्म की आई बारी, सिर धुन धुन अब रोयेगा ॥
रोटी नही मिलती खाने को, पीने को नही पानी।
कितनी विपदा सही है उसने, जाने केवलज्ञानी ॥
जीजा साले बात न करते, काम नही कोई आता।
सास-ससुर की बात छोड दो, पुत्र पास मे नही आता ॥
पाप कर्म के कारण उसका, धन वैभव सब जाता है।
धर्म ध्यान को भूल गया था, इसीलिए दु ख पाता है ॥
रोटी नही मिलने के कारण, रो-रो रुदन मचाता है।
करके बात याद मुनिवर की, सिर धुन-धुन पछताता है ॥

बात नही मुनियो की मानी, इसीलिए दुख पाता है।
चिन्तामणी रतन पाकर भी, यूही व्यर्थ लुटाता है ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
नाते रिश्ते यही रहेगे, साथ धर्म ही जाता है ॥

दृष्टांत—दान की महिमा

आहार दान है जग मे उत्तम, मुनि हमे बतलाते है।
आहार दान की महिमा भारी, गाकर तुम्हे सुनाते है ॥
जाट जाटनी एक गाँव मे, सुख से दोनो रहते थे।
भावो मे था अन्तर उनके, वैसे सग मे रहते थे ॥
पाच किलो ज्वार को लेकर, जाट खेत पर जाता है।
इसे आज बोना है हमको, कहके घर से जाता है ॥
चलने लगा जाट जब घर से, जाटनी शोर मचाती है।
एक बात सुन लो तुम मेरी, कहकर खुशी मनाती है ॥
बीज नही दान मे देना, बार-बार मै कहती हूँ।
बात नही ठुकराना मेरी, इतना तुमसे कहती हूँ ॥
लेकर जाट ज्वार को भैया, खेत पे अपने जाता है।
इतने मे उस खेत मे भैया, साधु सत इक आता है ॥
बोला, भैया, दान दो हमको, भूखा पेट हमारा है।
ज्वार दान हम तुमसे लेगे, देना फर्ज तुम्हारा है ॥
शुद्ध भावो से जाट ने भैया, दान ज्वार का उनको दिया।
देकर उसने खुशी मनाई, भारी पुण्य का काम किया ॥
कंकर, पत्थर करे इकट्ठे, जाट सभी बो देता है।
ऊपर से मिट्टी ढक करके, मन अपने खुश होता है ॥
मिट्टी ढककर गया वो घर को, भजन प्रभु का करता है।
इज्जत तुम्ही बचाते सबकी, अर्ज प्रभु से करता है ॥

आहार दान सबसे उत्तम है, ऐसे भाव बनाता है।
इन भावो को लेकर ही वो, पहुँच खेत पे जाता है ॥
देखा उसने खेत मे जाकर, ज्वार बहुत उग आई है।
समय नही पकने का आया, पहले ही पक आई है ॥
महामन्त्र का कर उच्चारण, ज्वार काट घर लाता है।
तीन लाख की बिकी ज्वारी, भजन प्रभु का गाता है ॥
आहार दान की देख महिमा, फूला नही समाता है।
आहार दान है जग मे उत्तम, सबको सबक सिखाता है ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
आहार दान दे शुद्ध भावो से, गुण मुनियो के गाता है ॥

वीर प्रभु की महिमा

अहसान तेरे का बदला स्वामी, नही कभी दे सकते है।
जो उपकार किये है हम पर, भूल नही हम सकते है ॥
आकर दुनिया मे प्रभु, तूने, हिसा पाप मिटाया था।
तेरे बिना यहाँ पर स्वामी, घोर अँधेरा छाया था ॥
पशुओ की बलियाँ दी जाती, मानव बेचा जाता था।
दास बनाकर उनको भैया, पशुओ-सा पीटा जाता था ॥
जिन्दा औरत को मुर्दे के, सग मे डाला जाता था।
जलाके दोनो को एक सग मे, धर्म वही कहलाता था ॥
सच्चा धर्म नही था जग म, पाप की नदियाँ बहती थी।
जिन्दे लडको की अग्नि मे, बलियाँ दे दी जाती थी ॥
धम ध्यान करने वाला का, जिदा मारा जाता था।
छुरा चलाके उनके ऊपर, धर्म मनाया जाता था ॥
धर्म प्रचार नही कर सकता, मन्दिर भी नही जा सकता।
अत्याचार बढे थे इतन, नही यहाँ पर लिख सकता ॥

इतने सकट बढे थे हम पर, जन्म वीर ने पाया था।
लेकर जन्म वीर ने भैया, मिथ्या तिमिर भगाया था ॥
अहिसा का उपदेश दिया था, सन्मार्ग बतलाया था।
जीओ और जीने दो सबको, सच्चा पाठ पढाया था ॥
धर्म महा उपकारी जग मे, धर्म ही पार लगाता है।
छोड धर्म को प्राणी जग मे, नरक गति मे जाता है ॥
हिसा पाप मिटाकर तूने, गगा ज्ञान बहाई थी।
डूबी हुई पाप मे दुनिया, तूने आन बचाई थी ॥
जिदा लडको की बलियो को, तूने आन मिटाया था।
घोर अँधेरा छाया जग मे, उसको दूर भगाया था ॥
देश-देश और गॉव-गॉव मे, सद् उपदेश सुनाया था।
भारी पाप मिटाकर तुमने, जैन धर्म चमकाया था ॥
बहु अहसान किये है हम पर, नही भुला हम पायेगे।
इन उपकारो के बदले मे, नही कुछ हम दे पायेगे ॥
तेरी छत्र छॉव मे रहकर, जीवन अपना सार्थक करते।
हाथ जोडकर हम सब तेरे, चरणो मे मस्तक धरते ॥
सद् बुद्धि दो हमको भगवन्, तेरा ध्यान लगायेगे।
करके दर्शन नित हम तेरे, जीवन सफल बनायेगे ॥
तुझको नही भुलायेगे हम, तेरे ही गुण गायेगे।
वीर जयन्ती मना भाव से, धर्म ध्वजा फहरायेगे ॥
अन्त मे कहता 'मोहन' तुमसे, तुम्हे नही बिसरायेगे।
प्राण भले ही जाये अपने, तुमको नही भुलायेगे ॥

दृष्टांत—हकला व गूँगे क्यों बनते हैं

गूँगा हकला घेघला, किस करनी से होय।
इसका उत्तर मुनिवर, बतला दीजै मोय ॥

क्यो बनता यह गूँगा हकला, मुनि हमे बतलाते है।
दया के धारी, पर उपकारी, धीरे से समझाते है ॥
सुन्दर तन अच्छा कुल पाया, लेकिन वाणी नहि पायी।
बोल नही सकता है भैया, होवे जगत हँसायी ॥
हकला कर यदि बोले कुछ तो, देख चकित सब होते है।
क्यो होता है ऐसा भैया, मुनिवर हमे बताते है ॥
एक गॉव मे था इक लडका, सुन्दर वो कहलाता था।
पैसा पास बहुत था उसके, मन ही मन दुख पाता था ॥
हकलापन था उसके अन्दर, भारी कष्ट उठाता था।
बोल नही सकता था लडका, सोच-सोच शरमाता था ॥
हकला कर जब बोले लडका, दुनिया देख उसे हँसती।
क्या कहता है तू रे हकले, कहकर मन व्यग कटु कसती ॥
शुभ कर्मो से उस हकले को, मुनि दर्शन हो जाता है।
करके दर्शन मुनिराज के, फूला नही समाता है ॥
हकलाकर बोला मुनिवर से, एक बात बतला दीजै।
किन कर्मो से बना हूँ हकला, शका आज मिटा दीजै ॥
दया के धारी, पर उपकारी, सोच ज्ञान मे कहते है।
किन कर्मो से बना है हकला, उसको ही कह देते है ॥
भैया, तूने पूर्व जन्म मे, भारी पाप कमाया था।
हँसी उडाकर जैन धर्म की, फूला नही समाया था ॥
गप्पे कहकर शास्त्रो को, मन मे खुशी मनाता था।
मुनिजन की निंदा करके तू, भूल स्वय को जाता था ॥
उसी पाप के कारण तूने, हकलापन है पाया।
हँसी उडाते है सब तेरी, पापो का फल पाया ॥
जो भी जेसा कर्म करेगा, वैसा ही फल पायेगा।
कॉटे बोने वाला भैया, फूल कहॉ से लायेगा ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
देव शास्त्र गुरु पूज्य हमारे, कहकर खुशी मनाता है ॥

भगवान् के दर्शन का फल

दर्शन क्यो करते जिनवर के, मुनि हमे बतलाते है।
निकाचित कर्म उदय मे आकर, बिन फल के गल जाते है ॥
जिन दर्शन करने से भैया, पाप सभी कट जाते है।
बुद्धि निर्मल हो जाती है, कष्ट दूर हो जाते है ॥
जिन दर्शन के फल की महिमा, गाकर तुम्हे सुनाता हूॅ।
दो बेटे थे एक बाप के, उनकी कथा सुनाता हूँ ॥
एक बाप के थे दो बेटे, दोनो सग मे रहते थे।
भावो मे था अन्तर उनके, वैसे सग मे रहते थे ॥
छोटा बेटा कर जिन दर्शन, फूला नही समाता था।
जिन दर्शन है जग मे उत्तम, ऐसे भाव बनाता था ॥
बडा नही मन्दिर जाता था, निशि मे भोजन खाता था।
मन्दिर मे क्या रखा, सबसे कहकर खुशी मनाता था॥
जैसे भाव मनुष्य के होते, वैसा ही फल पाते है।
उन दोनो के भावो को हम, लिखकर तुम्हे सुनाते है ॥
उठकर एक दिना वे दोनो, घर से अपने जाते है।
छोटे मन्दिर मे जा करके, पूजा मे लग जाते है ॥
बडा नही मन्दिर जाता है, काम पे अपने जाता है।
कठिनाई से कमा शाम को, डेढ़ रुपल्ली लाता है ॥
छोटा बेटा करके पूजन, अपना भाग्य सराहता है।
बिगडे काम बनाती पूजन, भाव ये मन मे लाता है ॥
करके पूजन श्री जिनवर की, शुद्ध भावो से जाता है।
सेठ मिला उसको रस्ते मे, रोक वही पे लेता है ॥
बोला उससे भैया, मै भी, पूजन करके आता हूॅ।
बैठ दुकान सॅभालो तुम तो, दर्शन करके आता हूॅ ॥
जो भी नफा कमाओगे तुम, आधा तुमको दे दूँगा।
जिन दर्शन करके मै भैया, अपना भाग्य सराहूॅगा ॥

सेठ गये जिन मन्दिर भैया, पूजन मे लग जाते है।
भरी दुकान ग्राहक से भैया, देख चकित सब होते है ॥
घन्टे भर के अन्दर लडका, पैसा बहुत कमाता है।
नफा हुआ चार सौ उसमे, दो सौ लेकर आता है ॥
ले दो सौ रुपयो को लडका, फूला नही समाता है।
जिन दर्शन है जग मे उत्तम, कहकर खुशी मनाता है ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
दर्शन सदा करो जिनवर के, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत--मधु सेवन करने वाले का

क्यो नही सेवन करते मधु, मुनि हमे बतलाते है।
इसका सेवन करने वाले, नरक गति मे जाते है ॥
नही खाना इसको जीवन मे, भारी कष्टो को देता।
इसका खाने वाला भैया, भारी विपदाये सहता ॥
एक मनुष्य की सुना कहानी, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
मधु सदा खुश हो खाता था, उसकी कथा सुनाता हूँ ॥
एक अन्धा था एक गॉव मे, भारी कष्ट उठाता था।
रोटी नही मिलती खाने को, हाय हाय चिल्लाता था ॥
नही कमाने का साधन था, चल-फिर भी नही सकता था।
भूखा मरता रात दिना वो, करनी का फल भरता था ॥
छोटी सी लठिया थी उस पर, वो ही एक सहारा था।
उसको लेकर ही वो चलता, उसका उसे सहारा था ॥
एक दिना वो लेकर लठिया, धीरे धीरे जाता है।
टक्कर हुई कार से उसकी, भारी कष्ट उठाता है ॥
नही उठाने वाला कोई, लठिया भी खो जाती है।
रोटी नही मिलती खाने को, क्या हालत हो जाती है ॥

रात दिना वो रोकर भैया, भारी दुखडे भरता है।
किन पापो से हुई ये हालत, सोच सोच दुख भरता है ॥
शुभ कर्मो के कारण उसको, मुनि दर्शन हो जाते है।
धर्म ध्यान की सच्ची बाते, जीवो को सिखलाते है ॥
हाथ जोड बोला मुनिवर से, एक बात बतला दीजे।
किन कर्मो से हुई ये हालत, शका आज मिटा दीजै ॥
दया के धारी, पर उपकारी, सोच ज्ञान मे कहते है।
किन कर्मो से हुआ सभी ये, उसको ही कह देते है ॥
भैया, तू तो पूर्व जन्म मे, छत्ते तोड गिराता था।
मास मधु का सेवन करके, फूला नही समाता था ॥
आग लगाके तूने भैया, छत्ते बहुत जलाये थे।
एक पेट के कारण तूने, जीवो के गढ ढाये थे ॥
भारी पाप किये थे तूने, दया नही मन लाया था।
लालच मे आ करके तूने, धर्म ध्यान बिसराया था ॥
उसका ही फल मिला आज ये, अन्धा तू कहलाता है।
रोटी नही खाने को मिलती, भारी कष्ट उठाता है ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
मास मधु का करे त्याग हम, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत—बांझ क्यों बनती हैं

स्त्री बाझ रहे जीवन भर, किन कर्मो से होती है।
धन यौवन से पूर्ण मगर, सन्तति से वंचित रहती है ॥
किन कर्मो से होता ऐसा, मुनि हमे बतलाते है।
एक नारी का किस्सा लिखकर, 'मोहन' तुम्हे सुनाते है ॥
एक गॉव मे इक नारी थी, सुन्दर वो कहलाती थी।
धन वैभव की नहीं कमी थी, भर भर मोटर आती थी।

सुन्दर रूप बहुत था उसका, यौवन उस पर छाया था।
भोगे भोग निरन्तर लेकिन, बच्चा नहीं हो पाया था ॥
बच्चा नहीं घर मे था कोई, इसलिए दुख पाती थी।
किन कर्मो से हुआ है ऐसा, सोच सोच दुख पाती थी ॥
कोठी बगले सुन्दर मेरे, सुन्दर काया पाई है।
बाझ बनी किन कर्मो से मै, भाव ये मन मे लाई है ॥
एक दिना मन्दिर जाकर वो, फूली नही समाती है।
मुनिराज आये मन्दिर मे, दर्शन कर हरषाती है ॥
हाथ जोड बोली मुनिवर से, एक बात बतला दीजै।
मुनिराज हो आप हमारे, शका मेरी मिटा दीजै ॥
किन कर्मो से बनी बाझ मै, सही सही बतला दीजै।
दया के धारी, पर उपकारी, उत्तर मुझको दे दीजै ॥
मुनिराज जी सोच ज्ञान मे, उत्तर उसको देते है।
किन कर्मो से बनी बाझ है, धीरे से समझाते है ॥
बहना, तूने पूर्व जन्म मे, भारी पाप कमाये थे।
वेश्या बनकर तूने बहना, भोले जीव फँसाये थे ॥
गर्भो को तू गिरवा करके, मन मे खुशी मनाती थी।
इसका फल क्या होगा बहना, नही सोच तू पाती थी ॥
उसका ही फल मिला आज ये, बझा तू कहलाती है।
बच्चा नही है घर मे तेरे, भारी कष्ट उठाती है ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
अच्छे काम करे जग मे हम, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत—क्षुधा कभी संतुष्ट क्यों नहीं होती है

दाह लगे भस्मक रोगी के, खून पीकर भी तृप्त न हो।
गुरु, बतादे कौन दोष से, क्षुधा कभी सतुष्ट न हो ॥

क्षुधा रोग क्यो होता भैया, मुनि हमे बतलाते है।
दया के धारी, पर उपकारी, सच्ची बात बताते है ॥
भस्मक रोगी का किस्सा मै, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
देव शास्त्र गुरु पूज्य हमारे, उनको शीश झुकाता हूँ ॥
एक गॉव मे एक मनुष्य था, भारी दुखडे सहता था।
बीसो रोटी खाता था वो, फिर भी भूखा रहता था ॥
जो भी खाता था वो भैया, वही हज्म हो जाता था।
भस्मक रोगी कहलाता वो, भारी कष्ट उठाता था ॥
दस दस लोटे पानी पीता, फिर भी प्यासा मरता था।
किन कर्मो से हुआ सभी यह, सोच-सोच दुख पाता था ॥
खून की बोतल भी पी जाये, फिर भी तृप्त नही होता।
चाहे जितनी खा ले रोटी, फिर भी भूखा क्यो रहता ॥
एक दिन वो बैठ सडक पर, रो-रो रुदन मचाता है।
रोटी नही मिलने के कारण, हाय हाय चिल्लाता है ॥
शुभ कर्मो के कारण उसको, मुनि दर्शन हो जाता है।
शुद्ध भाव से मुनिवर को वो, अपना शीश झुकाता है ॥
हाथ जोड बोला मुनिवर से, एक बात बतला दीजै।
किन कर्मो से हुआ रोग ये, शका मेरी मिटा दीजै ॥
दया के धारी, पर उपकारी, सोच ज्ञान मे कहते है।
किन कर्मो से हुआ रोग ये, उसको ही कह देते है ॥
भैया, तूने पूर्व जन्म मे, भारी पाप कमाये थे।
तेरे घर के पास मे भैया, महा मुनि इक आये थे ॥
एक दिना मुनिवर ने भैया, चौके मे प्रवेश किया।
लेने लगे आहार मुनिवर, तूने जाके रोक दिया ॥
दया के धारी, उपकारी, दया भाव चित लाये थे।
अन्तराय कर्म का उदय मानकर, चौके से बाहर आये थे ॥

उसी पाप से तूने भैया, भारी कष्ट उठाया।
भस्मक रोगी कहलाता तू, क्षुधा रोग को पाया ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
देव शास्त्र गुरु पूज्य हमारे, इनको शीश झुकाता है ॥

दृष्टात–परस्त्री पर कुदृष्टि का फल

पर नारी बहू बेटियो पर जो, अपनी ऑख उठायेगा।
नर्को मे जाकर वो प्राणी, भारी कष्ट उठायेगा ॥
जिन पर ऑख उठाता मूरख, उनसे तेरा नाता है।
क्या नाता है उनसे तेरा, मोहन तुम्हे सुनाता है ॥
जन्म मरण करता ये प्राणी, भारी कष्ट उठाता है।
जिस योनि मे जाता है ये, उस ही मे रम जाता है ॥
इन पर ऑख उठाने वाले, मन मे अपने शरमाना।
ऑख उठाने से पहले तू, मन मे थोडा भय खाना ॥
जिन पर ऑख उठाता है तू, इनसे तेरा नाता है।
पूर्व भव का नाता है ये, शास्त्र हमे बतलाता है ॥
किस्सा एक सुनाऊँ तुमको, ध्यान लगाकर सुन लेना।
भरी जवानी थी लडके पर, किस्सा उसका सुन लेना ॥
एक लडका था एक गॉव मे, मस्ती मे वो रहता था।
पर नारी बहू बेटियो पर, कुदृष्टि अपनी रखता था ॥
कभी नही सोचा जीवन मे, इज्जत इनके भी होती।
परनारी भी तो मॉ बहने, किसी और की होती ॥
नजर बुरी रखकर वो अपनी, दूर कही पर जाता था।
विषय भोग की इच्छा लेकर, मन ही मन मुसकाता था ॥
थोडी दूर चला जगल मे, शेर एक आ जाता है।
बुरे भाव थे उस लडके के, शेर उसे खा जाता है ॥

मरकर गया नरक मे लडका, हाय हाय चिल्लाता है।
नजर बुरी रखता था लडका, भारी कष्ट उठाता है ॥
लोहे के तकुए लेकर वो, गरम लाल कर देते है।
देकर लडके की ऑखो मे, बात याद दिलवाते है ॥
इन पर आँख उठाने वाले, मन मे अपने शरमाना।
ऑख उठाने से पहले तू, थोडा मन मे भय खाना ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
पर-नारी बहन समान जान, वो गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत—लकड़ी बेचनेवाले पर णमोकार मन्त्र का प्रभाव

एक शहर मे एक पुरुष था, लकडी बेचा करता था।
बडी मुश्किल से कमाके पैसा, गुजर वो अपनी करता था ॥
एक दिना जगल मे जाकर, फूला नही समाता है।
शुभ कर्मो के कारण उसको, मुनि दर्शन हो जाता है ॥
हाथ जोड बोला मुनिवर से, एक बात बतला दीजै।
मुनिराज हो आप हमारे, शका एक मिटा दीजै ॥
बडी मुसीबत भरते है हम, लकडी काटा करते है।
करते करते कठिन परिश्रम, फिर भी भूखे मरते है ॥
कोई उपाय बताओ हमको, समय बुरा टल जायेगा।
नही मुसीबत भरे कभी हम, सही समय आ जायेगा ॥
ज्ञान के धारी, पर उपकारी, दया भाव चित लाते है।
कष्ट दूर हो जाते सारे, ऐसा मन्त्र बताते है ॥
ॐ नम सिद्धेभ्य मन्त्र को, मुनिवर उसको देते है।
श्रद्धा से तुम जपना इसको, ऐसा उससे कहते है ॥
श्रद्धा से जो इसको जपता, कष्ट दूर हो जाता है।
शुद्ध भावो से जपे जो इसको, आनन्द खूब मनाता है ॥

करके श्रद्धा चला मन्त्र पर, मन्त्र को जपता जाता है।
लकडी भी नहीं काटी उसने, खाली घर को जाता है ॥
देखके खाली उसको औरत, गुस्से मे भर जाती है।
लेकर लकडी चूल्हे मे से, जलती हुई बगाती है ॥
लकडी मे से कोयले झडकर, धरती पर गिर जाते है।
गिरते ही सब बन गए मोती, मालामाल हो जाते है ॥
औरत गिर पैरो मे पति के, लज्जा भाव दिखाती है।
माफ करो मुझको स्वामी तुम, ऐसा कह पछताती है ॥
श्रद्धा से जो मन्त्र को जपकर, मन मे खुशी मनायेगा।
स्वर्ग सुखो को पाकर भैया, सिद्ध शिला को जायेगा ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
श्रद्धा से तुम जपो मन्त्र को, बिगडे काम बनाता है ॥

दृष्टांत—सोमा सती का

सोमा एक सेठ क़ी लडकी, धर्म ध्यान नित करती थी।
धर्म ध्यान ही सुख का कारण, भाव ये मन मे धरती थी ॥
एक दिना जिन मन्दिर जाकर, नियम मुनि से लेती है।
निश का भोजन छोडा उसने, महा मन्त्र नित जपती है ॥
शादी करके पिता ने उसको, सासू के घर भेज दिया।
नियम धर्म पर चलना बेटी, उसको सद उपदेश दिया ॥
सास ससुर के घर जा सोमा, धर्म ध्यान नित करती है।
जैन धर्म को छोड दे बेटी, सासू उसकी कहती है ॥
धर्म नही छोडूँगी अपना, निश भोजन नही खाऊँगी।
प्राण भले ही जाये मेरे, महामन्त्र चित लाऊँगी ॥
ऐसा कहकर सोमाजी ने, महामन्त्र का ध्यान किया।
पतिवर गया सर्प को लेने, मारन का इन्तजाम किया ॥

पति गया जगल मे उसका, सर्प वहॉ से लाता है।
घडे मे उसको रखकर भैया, असली बात छिपाता है ॥
पैर दबाती सोमा उसके, सोमा से वो कहता है।
लाया हार वास्ते तेरे, कोई नही विकलता है ॥
महामन्त्र को जपकर सोमा, हाथ घडे मे देती है।
नाग का हार बना वो भैया, लेकर के खुश होती है ॥
उसी हार को सोमा जी ने, गले पति के डाला है।
गिरते ही बन गया सर्प वो, पति वर को डस डाला है ॥
डसते ही मर गया पतिवर, हाहाकार मची भारी।
कैसे मरा पति सोमा का, दुनिया कहती थी सारी ॥
महामन्त्र का करके सुमरण, सोमा ध्यान लगाती है।
मरे हुए पतिवर को सोमा, जिन्दा कर बैठाती है ॥
छोड के उस घर को सोमा ने, महामन्त्र का ध्यान किया।
दीक्षा लेकर बनी अर्जिका, आत्म का कल्याण किया ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
श्रद्धा रक्खो महामन्त्र पर, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत—बहरा क्यों बनता है।

बहरा क्यो बनता है, भैया, मुनि हमे बतलाते है।
ज्ञान के धारी, पर उपकारी, दया भाव चित लाते है ॥
सुन सकता नही बात किसी की, भारी कष्ट उठाता है।
ढोल मजीरा बजे पास मे, ध्वनि नही गह पाता है ॥
किन कर्मो से होता ऐसा, मुनि हमे बतलाते है।
एक बहरे की सुनो कथा तुम, लिखकर तुम्हे सुनाते है ॥
एक गॉव मे इक बहरा था, भारी कष्ट उठाता था।
बात नही सुन सकता था वो, सोच सोच दुख पाता था ॥

तन पर कपडा नही था उसके, सदा जिडाया मरता था।
धर्म कर्म की बात नही वो, मन मे अपने धरता था ॥
चलते-चलते एक दिना वो, इक जगल मे जाता है।
शुभ कर्मो के कारण उसको, मुनि दर्शन हो जाता है ॥
शीश नवा बोला मुनिवर से, एक बात बतला दीजै।
किन कर्मो से बना हूँ बहरा, शका मेरी मिटा दीजै ॥
दया के धारी, पर उपकारी, सोच ज्ञान मे कहते है।
किन कर्मो से बना है बहरा, उसको ही कह देते है ॥
भैया, तू तो पूर्व जन्म मे, भारी पाप कमाता था।
ऋषि मुनियो की निंदा सुनकर, फूला नही समाता था ॥
शास्त्र सभा मे जाता था तू, जा करके सो जाता था।
भेद दूसरे का लेने को, बहरा तू बन जाता था ॥
उसी पाप से बना तू बहरा, भारी कष्ट उठाता है।
काटे बोने वाला भैया, फूल को कैसे पाता है ॥
ऋषिमुनियो की निंदा सुनकर, जो जन खुशी मनाते है।
धर्म कथा होती हो तो, चालाकी से सो जाते है ॥
पर का भेद जान लेने को, झूठे बहरे बनते है।
ऐसे प्राणी बहरे बनकर, दुखडे भारी सहते है ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
देव गुरु है पूज्य हमारे, जिनवाणी मन लाता है ॥

दृष्टात—जैसी नियत वैसी बरकत

थोडे व्यय मे ज्यादा बरकत, क्यो होती है बतलाऊँ।
दे आहार महा मुनियो को, मन मे अति हरषाऊँ ॥
सेवा मे मिलती है मेवा, मुनिजन हमे बताते है।
करके श्रद्धा जिन वचनो पर, श्रीपाल मोक्ष मे जाते है ॥

जैसे भाव मनुष्य के होते, वैसे निमित्त मिल जाते है।
जैसे होते भाव हमारे, वैसा ही फल पाते है ॥
ऊँच-नीच भावो के कारण, स्वर्ग नरक गति मे जाते।
परम पुनीत भाव के कारण, मुक्ति पद को है पाते ॥
एक नगर मे सेठ सिठानी, बडे प्रेम से रहते थे।
दान बहुत करते थे दोनो, जिन मत मे मन गहते थे ॥
भूखो को देते थे भोजन, प्रभु पूजा नित करते थे।
करते-करते काम घरेलू, प्रभु नाम चित धरते थे ॥
तीर्थक्षेत्र पर जाकर दोनो, पूजा पाठ रचाते थे।
श्रद्धा से पूजन कर दोनो, आनद खूब मनाते थे ॥
आता था जब पर्व अठाई, सिद्ध पाठ कराते थे।
करके नृत्य प्रभु के आगे, अपना भाग्य सराहते थे ॥
सेठ साब ने बीच नगर के, मन्दिर इक बनवाया।
बनवा करके मन्दिर सुन्दर, पडित एक बुलाया ॥
पुन्य उदय से उस नगरी मे, मुनि एक थे आये।
धर्म-कर्म की सच्ची बाते, जीवो की सिखलाये ॥
शुभ महूरत देख सेठ ने, माल बहुत बनवाया।
उधर सिठानी के मन मे भई, ख्याल एक था आया ॥
नियत सेठानी की ऐसी थी, सारा नगर जिमाऊँगी।
जिन प्रतिमा के करके दर्शन, सच्चे सुख को पाऊँगी ॥
लेकर श्वेत वस्त्र को उसने, महामन्त्र का जाप किया।
लड्डू जिसमे भरे थे भैया, वस्त्र उसी पर ढाप दिया ॥
सेठ सेठानी महामन्त्र की, महिमा गाते जाते है।
लड्डू इतने बाटे सबको, कहने मे नही आते है ॥
अन्त मे कोई बचा नही जब, सेठ साब यो कहते है।
देखो कितने लड्डू इसमे, अब भी बाकी रहते है ॥

सेठ सेठानी मिलकर दोनो, कपडा आन हटाते है।
लड्डू पूरे देख के उसमे, आनन्द खूब मनाते है ॥
महामन्त्र पर रखकर श्रद्धा, प्रभु पूजन नित करते है।
सही नियत मे बरकत होती, ऐसा हमे दिखाते है ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
महामन्त्र का धारी जग मे, सच्चे सुख को पाता है ॥

दृष्टांत–घर में हमेशा शोक क्यों छाया रहता है

शोकाकुल रहता ये प्राणी, किन पापो से होता है।
मुनिवर, हमे बताओ उत्तर, ऐसा क्यो हो जाता है ॥
धर्म कर्म मे लगता नही मन, मदिर भी नही जाता है।
दुखी हमेशा रहता प्राणी, भारी दुखडे सहता है ॥
पूजन पाठ नही करता है, दया धर्म का नाम नहीं।
शोक सदा रहता है घर मे, सात तत्त्व का ज्ञान नहीं ॥
ऐसा क्यो होता है भैया, मुनिवर हमे बताते है।
एक मनुष्य की सुनो कहानी, लिखकर तुम्हे सुनाते है ॥
एक गॉव मे एक मनुष्य था, दुखी सदा वो रहता था।
धर्म ध्यान मे नही लगता मन, शोकाकुल वो रहता था ॥
सोकर उठता आठ बजे वो, उठकर फिर सो जाता था।
मुख भी नही धोता था अपना, मदिर भी नही जाता था ॥
करते-करते कठिन परिश्रम, फिर भी भूखा मरता था।
किन पापो से हुआ शोक ये, सोच-सोच दुख भरता था ॥
एक दिना उस गॉव मे भैया, मुनिराज इक आते है।
धर्म-कर्म की सच्ची बाते, जीवो को सिखलाते है ॥
शुभ कर्मो के कारण वो भी, जिन मदिर मे जाता है।
करके दर्शन मुनिराज के, फूला नही समाता है ॥

श्री 108 आचार्य विमल सागर जी महाराज लेखक को आशीर्वाद देते हुए।

हाथ जोड बोला मुनिवर से, एक बात बतला दीजै।
शोकाकुल क्यो रहता हूँ मै, उत्तर मुझको दे दीजै ॥
मुनिराज जी सोच ज्ञान मे, उत्तर उसको देते है।
किन कर्मो से हुआ शोक ये, उसको ही कह देते है ॥
पूर्व जन्म मे तूने भैया, भारी पाप कमाये थे।
धर्म काज मे जाकर तूने, रोडे बहु अटकाये थे ॥
करके दुखी सदा जीवो को, मन मे खुशी मनाता था।
इसका फल क्या होगा मूरख, नही समझ तू पाता था ॥
उसका ही फल मिला आज ये, शोकाकुल तू रहता है।
रोटी नही मिलती खाने को, भारी कष्ट उठाता है ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
नहि सताये किसी जीव को, गुण मुनियो के गाता है ॥

आत्मा की आत्मा से बात

सच बतला दे आतम तूने, कहॉ-कहॉ की सैर करी।
क्या-क्या रग रचाये तूने, कितनी हितमित बात करी ॥
बडे ध्यान से सुन लो भैया, आतम क्या-क्या कहती है।
पाप कर्म से डरकर वो तो, सारी बाते करती है ॥
रो-रोकर वो करती बाते, कहते भी शरमाती है।
कैसे-कैसे दु ख सहे है, धीरे से बतलाती है ॥
नरक द्वार मे रही बहुत दिन, भूखी प्यासी पडी रही।
पानी पीने को जब मागा, डण्डो की भी मार पडी ॥
दाना नही मिला खाने को, पीने को नही पानी।
कितनी कितनी मुसीबत सही, जाने केवलज्ञानी ॥
रक्त राध की बहती नदियो मे, मैने स्नान किया।
कितनी बूदबू मे रहती थी, मैने सब कुछ जान लिया ॥

औरत बना गर्म लोहे की, मुझको फिर ओदश दिया।
पाप कर्म को भोगो अपने, करनी का फल मुझे दिया ॥
कोडे इतने खाये मैने, मुख से नही कह सकती हूँ।
बना समन्दर पूरी स्याही, फिर भी नही लिख सकती हूँ ॥
मीलो ऊपर उठाके मुझको, नीचे पटका जाता था।
बरछी भाले गडे थे नीचे, उनपे मारा जाता था ॥
कोई जगह नही खाली जो, घूम न्रही मै आयी हूँ।
सच्चा सुख नही मिला कही भी, इसीलिए यहॉ आयी हूँ ॥
यहॉ आकर के मिली शान्ति, सच्चे सुख का भान हुआ।
मुनि चरणो की सेवा करके, सम्यक् रस का पान किया ॥
कहता है मुनिवर से 'मोहन', चरण तेरे न छोडेगे।
सम्यक् रस को पीकर हम तो, भव बन्धन तो तोडेगे ॥

कृतज्ञता-ज्ञापन

सत सत वन्दन करता हूँ मै, मुनि अभिनन्दन करता हूँ।
मुनि अभिनदन करके ही, आशीश इन्ही से गहता हूँ ॥
बहुत दिनो से रोती आत्मा, चुप कर दी मुनिवर तूने।
पिलाके घुट्टी सम्यक रस की, ज्ञान पिपासा दी तूने ॥
तूने ही तो विनय सिखाई, मुझ पापी को आकर।
तेरी शरण मे रहकर 'मोहन' लिखता है कुछ गाकर ॥
लिखना मुक्तक और कविता, नृत्य मुझे बतलाया।
भजन बनाना और कथानक गीत सभी सिखलाया ॥
लिखना मुझको लेख सिखाया, आदर सबका करना।
पूजन तुमने मुझे सिखाई, सदा धर्म पर डटना ॥
शान्ति सागर छवि तुम्हारी, सारे जग से न्यारी है।
तेरी महिमा सेवक तेरा, गाता बार हजारी है ॥

मुनिराज जी, तुमने ही तो, इतना ज्ञान सिखलाया है।
भटके हुए पथिक को तुमने, सही मार्ग दिखलाया है ॥

तेरी छत्रछाया मे रहकर, लिखना इसको आया है।
गुण को तेरे गा गाकर ही, आत्म ज्ञान जगाया है ॥

तेरे गुणो को मुनि जी 'मोहन', मुख से ना कह सकता है।
किये हुए उपकार को तेरे, भूल कभी ना सकता है ॥

मुनि जी तुमरी सेवा मोहन, कुछ भी न कर पाया है।
प्रेम भरे कुछ शब्द ही तेरी, सेवा मे लिख पाया है ॥

ऋद्धि सिद्धि भरी हुई है, मुनिराज के अन्दर।
जिस पर इनकी मेहर होती, पाता ज्ञान समुन्दर ॥

पावन दिन है आज हमारा, मुनि चातुर्मास समाप्त हुआ।
रहकर इनकी शरण मे हमने, सम्यक् दर्शन प्राप्त किया ॥

यही विनय करता यह 'मोहन', चरण तेरे न छोडेगा।
चाहे कितना दूर रहे ये, तुम्हे कभी ना भूलेगा ॥

दृष्टांत—अकलंक-निकलंक

अकलक निकलक एक बाप के, दोनो प्यारे बेटे थे।
परम मित्रता थी आपस मे, नित मन्दिर को जाते थे ॥

जैन धर्म की श्रद्धा उनके, मन के बीच समाई थी।
उन दोनो ने वीर प्रभु की, महिमा मन से गाई थी ॥

ऐसी अटल श्रद्धा थी मन मे, जैन धर्म ना छोडेगे।
चाहे कितनी पडे मुसीबत, मुख ना अपना मोडेगे ॥

ऐसे भाव थे उनके मन मे, नित मन्दिर हम जायेगे।
जब तक दर्शन नही करेगे, भोजन नही हम पायेगे ॥

शास्त्र सभा मे जाकर दोनो, आनन्द खूब मनाते थे।
जो भी शका होती उनको, जाके वहॉ मिटाते थे ॥

उन दोनो ने मुनिराज का, दर्श सदा था पाया।
करके श्रद्धा मुनि वचनो पर, जैन धर्म अपनाया ॥
विनय भाव से दोनो भाई, जिनवाणी को ध्याते थे।
छूकर दोनो चरण बडो के, विद्या पढते जाते थे ॥
एक समय आया था ऐसा, बौद्ध धर्म प्रचार बढा।
नही सुनता था कोई किसी की, ऐसा अत्याचार बढा ॥
नही अधिक लिखकर इसको मै, छोटी यहाँ बनाता हूँ।
जो भी जैसी लिखी शास्त्र मे, वैसी तुम्हे सुनाता हूँ ॥
पडी मुसीबत बहुत उन्हो पर, जैन धर्म नही छोडा था।
देव गुरु और जिनवाणी से, मुख नही अपना मोडा था ॥
एक धर्म के कारण निकलक, प्राणो को तज देते है।
देकर प्राण धर्म पर अपने, शिक्षा सबको देते है ॥
इस दुनिया मे धर्म जीव के, साथ अन्त मे जाता है।
मरता है जो धर्म पे अपने 'मोहन' मुक्ति पाता है ॥

तिजारे वाले बाबा की महिमा

तिजारे वाले बाबा जी को, अपना शीश झुकाता हूँ।
करके भक्ति बाबा तेरी, अपना भाग्य सराहता हूँ ॥
उस बाबा की महिमा 'मोहन' लिखकर तुम्हे सुनाता है।
करके दर्शन बाबा जी के फूला नही समाता है ॥
जो भी दर्शन मन से करता, इच्छा पूरी पाता है।
एक बार जो आता दर पर, कभी न खाली जाता है ॥
कैसा भी अन्धा हो तेरे, दर पर जो भी आता।
एक बार दर्शन करते ही, आखे दोनो है पाता ॥
बहरा जो भी मन मे श्रद्धा, लेकर दर पर आता है।
दर्शन करते ही बाबा के, आनन्द मन मे पाता है ॥

भूत प्रेत के रोगी तेरे, दर पर नित है आते।
आकर तेरे श्री चरणो मे, अपना शीश झुकाते ॥
दर्शन तेरे करते ही वो, भूत प्रेत नही पाते है।
जन्म-जन्म के भूत प्रेत वे, भाग छिनक मे जाते है ॥
ऐसे रोगी बनके निरोगी, दर से तेरे जाते है।
लेकर तेरा नाम सदा वे, आनद खूब मनाते है ॥
भूखा जो भी दर पर आता, भर-भर झोली जाता है।
देख तेरी महिमा को 'मोहन', फूला नही समाता है ॥
अन्त मे कहता 'मोहन' तेरे दर्शन नित मै पाऊँ।
चाहे कितनी दूर रहूँ मे, सदा यहॉ पर आऊँ ॥

दृष्टांत—एक सेठ का

एक गॉव मे एक सेठ था, बहुत दिनो से महा दुखी।
कभी नही अपने को पाया, सेठ साहब ने बडा सुखी ॥
धन दोलत की नही कमी थी, उसके पास मे भैया।
भर-भर मोटर आती रहती, नही रुके था पहिया ॥
कोठी बगले सेठ साहब के, नाम बहुत था भाई।
धर्म ध्यान मे उसने अपनी, सारी उम्र बिताई ॥
सेठ साहब ने बडे प्रेम से, मन्दिर एक बनाया।
बडे ठाठ से कलश चढाकर, आनन्द खूब मनाया ॥
जगह-जगह पर सेठ साहब ने, दान बहुत-सा दीना।
करके दान बहुत-सा उसने, पुण्य बध था कीना ॥
एक कमी थी उसके घर मे, नही पुत्र था कोई।
जिसके कारण सेठ सेठानी, रात दिना थे रोई ॥
कभी नहि सोचा था उसने, पुत्र नही क्यो घर मे।
किसको सौपे सारी सम्पति, यही फिकर थी मन मे ॥

इसी तरह से सेठ साहब को, बहुत दिना थे बीते।
कैसे करे उपाय पुत्र का, मन ही मन थे रीते ॥
सेठ सेठानी मिलकर दोनो, तीर्थ क्षेत्र पर जाते है।
करके दर्शन वीर प्रभु के, मन ही मन हरषाते है ॥
करके दर्शन उन दोनो को, मुनि एक मिल जाते है।
धर्म ध्यान की सच्ची बाते, जीवो को सिखलाते है ॥
प्रश्न एक था सेठ के मन मे, अर्ज मुनि से करता है।
किन कर्मो से नही पुत्र है, शका ऐसी रखता है ॥
मुनिराज जी सोच ज्ञान मे, उत्तर उसको देते है।
किन कर्मो से नही पुत्र है, उसको ही कह देते है ॥
अरे सेठ, तू पूर्व जन्म मे, करोड़पति कहलाता था।
एक गॉव का मालिक बनकर आनन्द खूब मनाता था ॥
पाकर तूने बहुत सपदा, धर्म कर्म बिसराया।
देव गुरु का नाम नही कभी, मन मे तेरे आया ॥
रखकर जो भी गया अमानत, दया हीन बन खाया।
जो भी लेने आया दर पर, तभी उसे धमकाया ॥
पश्चात्ताप किया नही मन मे, बहुत अधिक इतराया।
इसका फल क्या होगा आखिर, नही कभी मन लाया ॥
उसी पाप के कारण भैया, पुत्र नही है पाया।
पाप कर्म कुछ किये थे ऐसे, फल उनका ही पाया ॥
एक उपाय पुत्र मिलने का, मुनि उसे बतलाते है।
वापस करो अमानत सबकी, ऐसा शकुन सुनाते है ॥
ऐसा करने से उन सबका, आत्म खुश हो जायेगा।
थोडे दिन के बाद सेठ जी, पुत्र रत्न को पायेगा ॥
मान मुनि के वचन सेठ जी, घर को अपने जाते है।
रखी थी जो गैर अमानत, वापस वो लौटाते है ॥

थोडे दिन के बाद सेठानी, पुत्र रत्न है पाती।
जिस सुख से वचित थी अब तक, आज उसे पा जाती ॥
पाकर सेठ पुत्र को अपने, मन ही मन हरषाते है।
देव गुरु की करू विनय मे, नियम मुनि से लेते है ॥
गैर अमानत महा बुरी है, मुनि हमे बतलाते है।
देव गुरु का करके सुमरण, 'मोहन' भजन बनाते है ॥

दृष्टात–मिट्टी से सोना कैसे बनता है

मिट्टी से सोना बनता कैसे, आज तुम्हे बतलाऊँगा।
किन कर्मो से ये सब सुख मिलता, गाकर तुम्हे सुनाऊँगा ॥
अच्छी सतति अच्छी नारी, किन कर्मो से पाते है।
इच्छित वस्तु कैसे मिलती, मुनि हमे बतलाते है ॥
बिन इच्छा के लक्ष्मी आती, आकर खुशी मनाती है।
छोडो यदि तुम उसको भैया, नही वो वापस जाती है ॥
किन कर्मो से होता ऐसा, मुनि हमे बतलाते है।
मुनियो के करके दर्शन हम, फूले नही समाते है ॥
एक गॉव मे एक सेठ था, पूजा नित वो करता था।
ऋषि मुनियो के चरणो मे वो, श्रद्धा गहरी रखता था ॥
महा मन्त्र की जाप हमेशा, सच्चे मन से करता था।
दे आहार महामुनियो को, आनन्द खूब मनाता था ॥
छपा के पुस्तक धर्म की वो तो, सभी जगह बॅटवाता था।
करके औषध दान हमेशा, मन ही मन हर्षाता था ॥
सन्तजनो की सेवा करने, दूर दूर वो जाता था।
चातुर्मास करा मुनियो के, फूला नही समाता था ॥
धर्म के ऊपर सेठ साहब की, गहरी श्रद्धा छाई थी।
धर्म ही पार लगाता मन मे, ऐसी बात समाई थी ॥

सेठ सेठानी एक दिना, आहार मुनि को देते है।
दे आहार महामुनियो को, ऊँचे आसन बिठलाते है ॥
हाथ जोड बोले मुनिवर से, एक बात बतला दीजै।
मुनिराज हो आप हमारे, शका मेरी मिटा दीजै ॥
बिन मॉगे लक्ष्मी आती है, इच्छा नही हम करते है।
जो भी काम करे मुनिवर हम, नफा उसी मे भरते है ॥
ज्ञान के धारी, पर उपकारी, सोच ज्ञान मे कहते है।
किन कर्मो से हुआ सभी ये, उसको ही कह देते है ॥
एक गॉव मे इक मन्दिर था, मन्दिर मे इक बेदी थी।
वर्षा के पानी ने टपटप, कई जगह से छेदी थी ॥
शुद्ध भावो से तूने भैया, बेदी नई बनवाई थी।
पच कल्याणक कराके तूने, मन मे खुशी मनाई थी ॥
उसका ही फल मिला आज ये, नगर-सेठ कहलाता है।
मिट्टी को हाथ लगाता है तू, वो सोना बन जाता है ॥
एक धर्म है जो जीवो को, भव से पार लगाता है।
निकाचितकर्म उदय मे आकर, बिन फल के गल जाता है ॥
सुनने वालो, सुन लो, सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
धर्म नहि बिसरायेगे हम, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत—एक अंधी बुढ़िया का

एक बुढिया थी एक गॉव मे, नाम बसती बाई था।
अधी थी दोनो आखो से, पुत्र एक इकलौता था॥
कठिन परिश्रम करके बुढिया, भोजन माग के लाती थी।
खिलाके भोजन बेटे जी को, आनद खूब मनाती थी॥
कुछ वर्षो मे उस बुढिया का, पुत्र बडा हो जाता है।
करके सुमरण वीर प्रभु का, पूजन करने जाता है॥

चलते-चलते उस बेटे को, मुनि एक मिल जाते है।
धर्म कर्म की सच्ची बाते, जीवो को सिखलाते है॥

करके नमस्कार वह बेटा, मुनि चरणो मे पडता है।
प्रश्न एक था उसके मन मे, अर्ज मुनि से करता है॥

बोला बेटा महामुनि से, एक बात बतला दीजै।
मुनिराज हो आप हमारे, शका मेरी मिटा दीजे॥

किन पापो से मेरी मॉ की, अधी दोनो ऑखे है।
कैसे छूटे पाप मात का, कौन दवाई इसकी है॥

सुनकर बात पुत्र की मुनिवर, उत्तर उसको देते है।
सुन ले बेटा कान लगाकर, कर्मो का फल कहते है॥

पूर्व जन्म मे इस बुढिया ने, छत्ते बहुत जलाये थे।
एक पेट के कारण इसने, जीवो के गढ ढाये थे॥

उसी पाप से इस बुढिया ने, अधी ऑखे पाई।
जो भी जैसा कर्म करेगा, फल मिलता है भाई॥

एक मार्ग है इसका बेटा, मुनि हमे बतलाते है।
करके श्रद्धा जिन वचनो पर, श्रीपाल मोक्ष मे जाते है॥

इतनी बात सुनी बेटे ने, मन मे अपने हर्षाया।
करके नमस्कार मुनिवर को वापिस अपने घर आया॥

बोला मात से बेटा आकर, मात मेरी तुम बात सुनो।
जिनवाणी की करो विनय तुम, वीर प्रभु का ध्यान धरो॥

नही खाना खाऊँगा तब तक, मंदिर तुम नही जाओगी।
नही करोगी वीरा दर्शन, आख नही तुम पाओगी॥

चलते-चलते मा बेटा, आ पहुचे उस तीर्थ पर।
दर्शन किये प्रभु के पहले, शीश झुकाया फिर मिलकर॥

श्रद्धा लेकर मन मे दोनो, अपने अपने बैठ गए।
नहीं उठेगे जब तक दोनो, नही मिलेगे नैन गए॥

चौबीस घटे तक दोनो ने, ध्यान प्रभु का नही तोडा।
हिलने लगा आसन देवो का, मन उसने अपना मोडा॥

इसी बीच मे मॉ बुढिया को, आखे दोनो मिल जाती।
उसी समय तो स्वर्ग लोग से भी ध्वनि यह आती॥

जो भी विनय करेगा भैया, मुक्ति फल वो पायेगा।
पूजन पाठ करेगा जो भी, आनद खूब मनायेगा॥

अधे बहरे नही बराबर, कुष्ठ शात हो जाते है।
गाकर बुद्धि मोटी 'मोहन' भजन बनाकर लाते है॥

नही लिखना आता था मुझको, श्रद्धा ने सिखलाया है।
सच्ची श्रद्धा के कारण ही, प्यार आपका पाया है॥

लिखने मे कुछ गलती हो तो, मोहन माफी चाहेगा।
पा आशीश महामुनियो की, सच्चे सुख को पायेगा॥

दृष्टांत—वेश्या क्यो बनती हैं

इक लडकी थी एक गॉव मे, सुदर रूपवती भारी।
मात पिता ने पालन करके, करी व्याह की तैयारी॥

उस लडकी का बडे ठाठ से, सुदर ब्याह रचाया।
धन दौलत की कमी नही थी, सुदर वर था पाया॥

बडे ठाठ से सास ससुर के, लडकी घर को जाती है।
सास ससुर के रहकर घर मे, आनद खूब मनाती है॥

लडका दूर देश मे जाकर, अपना काम था करता।
कई वर्ष तक नही आता था, हर दम आनद करता॥

इधर सुनो उस लडकी का मन, रात दिना क्या कहता है।
विषय भोग मै करूँ किसी से, मनवा उसका कहता है॥

इसी बात को लेकर लडकी, रात दिना चितित रहती।
सास ससुर की शर्म के कारण, नही किसी से कुछ कहती॥

विषय भोग की बात हमेशा, मन मे उसके रहती थी।
धर्म कर्म की बात नही, उसको कभी सुहाती थी॥
एक दिना की सुनो बात वह, विषयभोग मन धरती है।
उसी समय पर आयु बीती, श्वास नली रुक जाती है॥
विषयभोग का भाव था मन मे, योनि वेश्या पाती है।
रात दिना वो विषयभोग मे, अपनी प्यास बुझाती है॥
बहुत दिना बीते थे उसको, वेश्या योनि पाये।
एक प्रश्न था उसके मन मे, सोच सोच शरमाये॥
उस नगरी के अदर भैया, जैन मुनि थे आये।
धर्म कर्म की सच्ची बाते, जीवो को सिखलाये॥
बोले उससे किसी जन्म मे, सुदर तू पटरानी थी।
विषयभोग की इच्छा तेरे, हरदम मन मे आती थी॥
उसी पाप के कारण तूने, वेश्या योनि पाई।
जो भी जैसा कर्म करेगा, फल मिलता है भाई॥
एक उपाय है बेटी इसका, मुनि उसे बतलाते है।
नियम व्रत से प्राणी जग मे, आनद खूब मनाते है॥
नियम मुनि से लेकर वेश्या, धर्म ध्यान मन लाती है।
पाप कर्म जो किये थे उसने, देख देख पछताती है॥
शुभ भावो से मरकर वेश्या, स्वर्ग सुखो को पाती है।
देव गुरु की महिमा गाकर, आनद खूब मनाती है॥
विषय भोग का भाव जगत मे, नरक द्वार को देता है।
बचके रहना 'मोहन' इससे, घोर कष्ट ये देता है॥

जिनदर्शन का फल

एक गरीब बेचारा दिनभर, मेहनत खूब किया करता।
करके मजदूरी वो दिनभर, बच्चो का पालन करता॥

मजदूरी करके सारे दिन, फिर भी पेट नही भरता।
इसी तरह से सोच सोच कर, सारा दिन पूरा करता॥

एक दिना की सुनो बात वो, मन मे कुछ परेशान हुआ।
सोचत सोचत खुद को खुद मे, थोडा सा कुछ ज्ञान हुआ॥

सोचा उसने मन मे अपने, धर्म कर्म तू भूल गया।
नाम नही प्रभु का लेता, आचार तेरा सब बिगड गया॥

निश मे भोजन तू करता है, दया धर्म का भाव नही।
भक्ष अभक्ष सभी खाता है, भले बुरे का ज्ञान नही॥

करके पाप याद वो अपने, रोता-रोता जाता है।
पश्चाताप करे था मन मे, देखो क्या हो जाता है॥

शुभ कर्मो के कारण उसको, मुनि एक मिल जाते है।
धर्म कर्म की सच्ची बाते वे, जीवो को सिखलाते है॥

जो भी पाप करे था दिन भर, सारे उसने छोड दिये।
छूकर चरण मुनि के उसने, देखो अब क्या नियम लिये॥

दर्शन करके जिन प्रतिमा के, काम पे अपने जाऊँगा।
रुखी सूखी खाकर मै तो, अपनी भूख मिटाऊँगा॥

निश मे भोजन नही करूगा, नही अभक्ष मै खाऊँगा।
दे आहार महामुनियो को, आनद खूब मनाऊँगा॥

ले आशीश महामुनियो की, काम पे अपने जाता है।
जिन प्रतिमा के करके दर्शन, फूला नही समाता है॥

एक दिना करके दर्शन वो, काम पे अपने जाता है।
खोदत खोदत भूमि वो तो, घडा अशर्फी पाता है॥

जिन दर्शन से जग मे भैया, माल खूब-मिल जाता है।
लाखो का स्वामी बन करके, विभव सम्पदा पाता है॥

सुनने वालो सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
श्री जिनवर के दर्शन करके, अपना भाग्य सराहता है॥

दृष्टांत—दान देकर पछतानेवाले का

एक मनुष्य की सुनो कहानी, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
जैसा सतो ने बतलाया, वैसा तुम्हे बताता हूँ॥

पैसा पाकर एक मनुष्य ने, कोठी नई बनाई।
खिचा दीवारे सुदर उसने, मोटर कार मगाई॥

ले जायदाद बहुत सी उसने, मील कई लगवाए।
कितने ही बैको मे उसने, लाकर थे खुलवाये॥

जिन मदिर भी उसने भैया, जीर्णोद्धार कराये।
रोग जल्द ठीक हो जाए, अस्पताल बनवाए॥

टेलीविजन मँगाकर सुदर, फूला नही समाया।
पीकर पानी फ्रिज का उसने, आनद खूब मनाया॥

टेपरिकार्ड बजाकर वो तो, मन अपना बहलाता था।
करने फोन मिलो मे अपने, दूर कही पर जाता था॥

जाते जाते कार मे अपनी, आशा के महल बनाता है।
बन जाऊँ मै अरबपति वो, ऐसी आस लगाता है॥

चलते चलते भैया मेरे, क्या से क्या हो जाता है।
टक्कर हुई ट्रक से उसकी, रोगी वो हो जाता है॥

देख रोग को उसके भैया, डाक्टर ने एलान किया।
तुरई का पानी मिलेगा तुमको, बाकी सब कुछ बद किया॥

पडा रहे दिन रात खाट पर, नीद नही उसको आती।
मुनियो की वाणी ही जग मे, हित उपदेश सुना पाती॥

पुण्य कर्म से उसको भैया, मुनि दर्शन हो जाते है।
धर्म कर्म की सच्ची बाते, जीवो को सिखलाते है॥

हाथ जोड बोला मुनिवर से, एक बात बतला दीजे।
प्रश्न जो मेरे मन मे है, उत्तर उसका दे दीजे॥

मिला सभी कुछ मुझको भगवन, भोग नही मै सकता हूँ।
टेलीविजन कार मोटर का, नही आनद ले सकता हूँ॥

फ्रिज का पानी नही पी सकता, बर्फ नही खा सकता हूँ।
चल फिर भी मे नही सकता हूँ, रोगी मे कहलाता हूँ॥

सभी तरह की चीजे घर मे पर ले नही कुछ सकता हूँ।
ना खाता हूँ ना पीता हूँ बस रोग मे पडा तडपता हूँ॥

कृपा निधान ऐसी हालत, इस जीव की क्यो हो जाती है।
जब हो घर मे सब सामग्री, फिर काम क्यो नही आती है॥

प्रश्न उसका सुनकर मुनिवर, धीरे से समझाते है।
किन कर्मो से हुआ सभी ये, सही सही बतलाते है॥

साधु मुनियो की सेवा मे, कोई प्राणी जाता हे।
वस्त्र आदि से मुनियो की, कुछ सेवा भी कर पाता है॥

कितु देकर दान वह ऐसा, पीछे से पछताता हे।
अगले जन्म मे धन तो मिलता, पर नही भोगने पाता हे॥

सुनने वालो सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
करके दान नही पछताये, गुण मुनियो के गाता है॥

दृष्टांत—एक कोढ़ी का

कोढी कैसे बनता भैया, आज तुम्हे मै बतलाऊँ।
भूल चूक यदि हुई कही पर, माफी मै उसकी चाहूँ॥

एक गॉव मे इक कोढी था, चल फिर भी नही सकता था।
वदबू आती उससे भैया, दिन भर भूखा रहता था॥

जो भी जाता पास उसी के, धिक धिक उसको कहता था।
दख रोग को भैया उसके, दूर बहुत हो जाता था॥

रो रो करके सारा दिन वो, अपना पूरा करता था।
पूर्व पाप किये मैने कुछ, भाव यही मन रखता था॥

दूर दूर तक सब गॉवो मे, नर नारी क्या कहते थे।
कुष्ट रोग नही होय किसी को, मन मे ऐसा कहते थे॥
रोटी नहीं मिलने के कारण, मरण समय नजदीक हुआ।
इतने मे देखो भैया तुम, शुभ कर्मो का उदय हुआ॥
जिस रस्ते मे पडा था कोढी, उधर मुनि इक आते है।
देख कोढ को उसके मुनिवर, दया भाव चित लाते है॥
हाथ जोडकर बैठा कोढी, मुनि चरणो चित धरता है।
किन कर्मो से बना हूँ कोढी, शका ऐसी रखता है॥
सोच ज्ञान मे मुनिवर उसको, उत्तर क्या दे देते है।
किन कर्मो से बना था कोढी, उसको ही कह देते है॥
पूर्व जन्म मे तू तो भैया, एक बाग का स्वामी था।
धन दौलत की कमी नही थी, पूरे गॉव मे नामी था॥
पेसे के लालच मे आकर, पूरा बाग जलाया था।
करके हिसा बहुत स्वय पर, भारी पाप कमाया था॥
असख्यात जीवो को भैया, अपने हाथ जलाया था।
इसका फल क्या होगा, मूरख नही जान तू पाया था॥
कितने साप बघेरे बिच्छू उस जगल मे रहते थे।
रुखा सूखा खाकर सारे, आनद से वो रहते थे॥
उन बेचारो के घर को, पैसा ले बरबाद किया।
आग लगाकर उसमे तूने, कोढी का बध बॉध लिया॥
उसी पाप के कारण भैया, कोढी तू कहलाता है।
दिया मत्र मुनिवर ने उसको आगे अब क्या होता है॥
लेकर कोढी महामत्र को, मुनि को शीश झुकाता है।
णमोकार मत्र के कारण, कोढ ठीक हो जाता है॥
सुनने वालो सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
श्रद्धा रखो महामत्र पर, शिव मजिल पहुचाता है॥

दृष्टांत—कपट कषाय का

कपट कषाय का करो त्याग तुम, कपट महा दु ख देता है।
कपट भाव ही जग मे भैया, बीज नरक का बोता है॥
कपट कषाय के कारण देखो, प्राणी क्या क्या करते है।
एक कपट के कारण वो तो, मरकर बिल्ली बनते है॥
बिल्ली की पर्याय बुरी है, मुनि हमे बतलाते है।
लिखकर किस्सा इक नारी का, मोहन तुम्हे सुनाते है॥
एक औरत थी एक गॉव मे, किस्सा तुम्हे सुनाता हूॅ।
मरकर बिल्ली बनी वो कैसे, उसकी कथा सुनाता हूॅ॥
एक ओरत थी एक गॉव मे, भले बुरे का ज्ञान नही था।
धर्म कर्म किसको कहते है, मुनियो पर श्रद्धान नही था॥
पूजन पाठ नही करती थी, मदिर भी नही जाती थी।
नियम धर्म किसको कहते है, नही समझ वो पाती थी॥
घरवालो के साथ सदा वो, बात बात पर लडती थी।
छोटी छोटी बातो मे भी, काम कपट का करती थी॥
करते करते कपट कभी तो, घडा पाप का भरता हे।
एक कपट के कारण प्राणी, चोरासी मे रुलता हे॥
एक दिना की सुनो कहानी, मुनिराज इक आते है।
धर्म कर्म की सच्ची बाते, जीवो को सिखलाते हे॥
जेठ जेठानी उस औरत के, चौका एक लगाते है।
मुनिराज आहार निमित्त से, शुद्ध दूध वो लाते है॥
लोटा को रखकर जेठानी, मुनियो के गुण गाती है।
लगा चौका मुनिराज का, मन अपने हर्षाती है॥
जल का लोटा लेकर कपटी, चोके मे घुस जाती है।
मिला दूध मे पानी वो तो, आनद खूब मनाती है॥
भरकर लोटा दूध का उसने, आनद खूब मनाया है।
जी भरके पीऊॅगी अब तो, ऐसा ध्यान लगाया है॥

कपट भाव के कारण देखो, हालत क्या हो जाती है।
आयु पूर्ण हुई है उसकी, रो रो रुदन मचाती है॥
कपट भाव से मरी वो औरत, बिल्ली की योनि पाई।
सच्चे सुख को पाना है तो, कपट कषाय तजो भाई॥
सुनने वालो सुन लो सबको 'मोहन' यही सुनाता है।
कपट कषाय का करे त्याग हम, गुण मुनियो के गाता है॥

दृष्टांत—एक लोभी का

लोभ नही करना आतम तू, लोभ नरक ले जाता है।
दान सदा दे दो हाथो से, साथ यही ही जाता है॥
लोभी का नही आदर होता, दान नही वह करता है।
रोटी भी गिन गिन के खाता, जोड जोड धन रखता है॥
रात दिना डर रहता उसको, पैसा खर्च न हो जाये।
मदिर भी नही जाता है वो, पीछे कोई ले जावे॥
इक लोभी की सुनो कथा मै, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
मरकर साप बना वो कैसे, गाकर तुम्हे सुनाता हूँ॥
एक सेठ था एक गॉव मे, लोभी वो कहलाता था।
ब्याज का धधा करके वो तो, पैसा खूब कमाता था॥
माल चोरी का लेकर वो तो, मन मे खुशी मनाता था।
पैसा घर मे आना चाहिए, ऐसी आस लगाता था॥
पैसे के लालच मे आकर, धर्म कर्म बिसराया था।
जिन पूजा क्या होती भैया, नही समझ वो पाया था॥
एक दिना उस गाँव मे भैया, मुनिराज इक आये थे।
धर्म कर्म की सच्ची बाते, जीवो को सिखलाये थे॥
मुनि दर्शन करके सेठानी, मन मे खुशी मनाती है।
दू आहार मुनि को मै तो, ऐसे भाव बनाती है॥

गई सेठ के पास सेठानी, धीरे से समझाती है।
चौका आज लगाऊँगी मै, ऐसा शकुन मनाती है॥
सुनकर बात सेठ जी बोले, ऐसा मत तुम काम करो।
बडी मुश्किल से आया पैसा, व्यर्थ ना इसे तमाम करो॥
इसी बीच मे सेठ साहब की, हृदय गति रुक जाती है।
वैद्य वहॉ आ पाया तब तक श्वास बन्द हो जाती है॥
अशुभ भाव से मरकर वो तो, सर्प वही बन जाता है।
बैट तिजोरी ऊपर भैया, धन की रक्षा करता है॥
सुनने वालो सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
लोभ छोडकर दान करे हम, गुण ऋषियो के गाता है॥

दृष्टांत—हाथी की योनी क्यों मिलती है

सूड सदा नीचे क्यो रहती, गाकर तुम्हे सुनाता हूँ।
हाथी की योनि क्यो मिलती, लिखकर तुम्हे बताता हूँ॥
मै ही राजा मै ही प्रजा, मै ही करता धरता हूँ।
सब कुछ मेरा है इस जग मे, मै ही पालन करता हूँ॥
मै ही ईश्वर मै परमेश्वर, मै ही सृष्टि का करता।
बडा नही जग मे मेरे से, भाव सदा ऐसे रखता॥
मुनियो की नही सेवा करता, मदिर कभी नही जाता।
गर्दन ऊपर करके चलता, मन मे अपने इतराता॥
जीवो की नही रक्षा करता, विनय नही जिनवाणी की।
किस योनि मे जाते है वो, बतलाती जिनवाणी जी॥
एक सेठ था एक गॉव मे, किस्सा तुम्हे सुनाता हूँ।
मरकर हाथी बना वो कैसे, सही सही बतलाता हूँ॥
कोठी बगले सेठ साब के, पास बहुत थे भाई।
पाप कर्म मे उसने भैया, सारी उम्र बिताई॥

जो भी पास मे आता उसके, आदर नही उसका करता।
करके गर्दन ऊँची वो तो, मुनियो की निंदा करता॥
धर्म कर्म किसको कहते है, नही कभी वो मन लाया।
अहकार था मन मे उसके, पाप कर्म का फल पाया॥
एक समय उस गॉव मे भैया, मुनिराज इक आते है।
धर्म कर्म की सच्ची बाते, जीवो को बतलाते है॥
मुनिराज के दर्शन करने, नर नारी सब आते है।
करके दर्शन मुनिराज के, फूले नही समाते है॥
इसी बीच मे सेठ साहब भी, उसी जगह पर आते है।
नग्न अवस्था देख मुनि की, क्रोधित वे हो जाते है॥
नमस्कार नही की मुनियो को, अह भाव मन लाता है।
इसी बीच मे उसी सेठ का, प्राण अत हो जाता है॥
मरकर सेठ बना वो हाथी, सूड सदा नीची रखता।
नमस्कार नही की मुनियो को, करनी का फल वो भरता॥
सुनने वालो सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
अहकार का करे त्याग हम, गुण मुनियो के गाता है॥

दृष्टांत–शरीर में कीड़े क्यों पड़ जाते हैं

मनुष्य के शरीर मे भगवन, कीडे क्यो कर पड जाते है।
किन कर्मो से होता ऐसा, मुनि हमे बतलाते है॥
जो स्वाद मे आकर पचेद्रिय, जीवो को भी खा जाते है।
परलोक मे उन दुष्टो के, फिर यह कर्म अगाडी आते है॥
छोटी छोटी बातो पर जो, नियम धर्म कर जाते है।
पैसे के लालच मे आकर, जो भूल कर्म को जाते है॥
आगम के अनुसार चले नही, शका उसमे करते हैं।
भर भर प्याले मदिरा के, जो खुश होकर के पीते है॥

एक व्यक्ति की सुनो कहानी, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
कीडे पडकर मरा वो कैसे, गाकर तुम्हे सुनाता हूँ॥
एक व्यक्ति था एक गॉव मे, चल फिर वो नही सकता था।
धर्म कर्म किसको कहते है, नही सोच वो सकता था॥
पैर मरे थे उसके भैया, रोगी वो कहलाता था।
एक रोग था उसके भैया, जिस करवट वो सोता था॥
कीड़े लबे लबे चलते, नहि ठीक वो होता था।
घरवालो ने करी दवाई, नहीं ठीक वो हो पाया॥
पाप कर्म कुछ किये थे ऐसे, जिनका फल उसने पाया।
न खाता था न पीता था, वो रो रो रुदन मचाता था॥
पाप कर्म कुछ किये हैं मैने, सोच सोच दुख पाता था।
शुभ कर्मो से उसी गॉव मे, मुनि एक थे आये॥
धर्म कर्म की सच्ची बाते, जीवो को सिखलाए।
उसके घर से सभी कुटुम्बी, मुनि चरणो मे जाते है॥
किन कर्मो से होता ऐसा, सही सही बतलाते है।
भैया ये तो पूर्व जन्म मे, साहूकार कहाता था॥
पैसे के लालच मे आकर, नियम तोड इठलाता था।
जो बाते आगम मे लिखी, झूठ उन्हे ये कहता था॥
पीकर बोतल मदिरा की ये, आनद खूब मनाता था।
मासाहारी बनकर ये तो, दया नही मन लाता था॥
पैसे के लालच मे आकर, झूठ गवाही देता था।
नकली ये परनोट बनाकर, पैसे पूरे लेता था॥
इन सब पापो के करने से, ये हालत हो जाती है।
जिनवाणी ही जग मे भैया, सही राह दिखलाती है॥
सुनने वालो सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
मास मधु का करे त्याग हम, गुण मुनियो के गाता है॥

दृष्टांत–धर्म व भाग्य में कौन बड़ा है

कैसे बनता भाग्य मनुष्य का, गाकर तुम्हे सुनाता हूँ।
धर्म भाग्य मे क्या है अतर, लिखकर आज बताता हूँ॥
एक बाप के थे दो बेटे, दोनो मे था प्रेम बडा।
एक कहता था भाग्य बडा है, दूजा कहता धर्म बडा॥
छोटा बेटा धर्म ध्यान मे, सबसे आगे रहता था।
बैठ बडा कुर्सी पर अपनी, बडा भाग्य को कहता था॥
माल बहुत था घर मे भैया, सुख से दोनो रहते थे।
भावो मे था अतर उनके, वैसे सग मे रहते थे॥
छोटा बेटा पूजन करके, फूला नही समाता था।
धर्म सहाई है इस जग मे, ऐसे भाव बनाता था॥
इच्छित वस्तु मिले धर्म से, धर्म ही पार लगाता है।
छोड धर्म को प्राणी जग मे, नरक गति को जाता है॥
धर्म ही भाग्य बनाता जग मे, बिगडे काम बनाता है।
नही भाग्य मे कोई वस्तु, धर्म से वो भी पाता है॥
बैठ भरोसे बडा भाग्य के, बडा भाग्य को कहता है।
छोटे का भी हिस्सा लेकर, बाहर उसे कर देता है॥
सुनो ध्यान से कान लगाकर, आगे अब क्या होता है।
धर्म भाग्य मे कौन बडा है, लिख मोहन खुश होता है॥
एक दिना बच्चो को लेकर, बडे सिनेमा जाते है।
घर मे घुस के चोर बडे के, माल सभी ले जाते है॥
देखा घर मे आकर उसने, माल सफाया सारा है।
रहा भाग्य के सदा भरोसे, हीरा धर्म बिसारा है॥
निकल के छोटा बेटा घर से, मुनि चरणो मे जाता है।
धर्म ध्यान के कारण उसको, एक सेठ मिल जाता है॥
बातो ही बातो मे उसको, घर अपने ले जाता है।
पुत्र नही था कोई उसके, सब कुछ उसको देता है॥

बनकर सेठ बडा अब तो वो, फूला नही समाता है।
धर्म ध्यान के कारण वो तो, हर दम मौज उडाता है॥
सुनने वालो सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
धर्म भाग्य मे धर्म बडा है, गुण मुनियो के गाता है॥

दृष्टांत–एक चुगलखोर का

चुगली नही खाना जीवन मे, चुगलखोर दु:ख पाता है।
खोदे गड्ढा जो औरो को, खुद उसमे गिर जाता है ॥
भला किसी का कर न सको तो, बुरा किसी का मत करना।
अमृत नही पिला सकते हो, जहर पिलाते भी डरना ॥
बुरा जो करते है औरो का, उनका बुरा होता है।
भीख नही मागे से मिलती, दर दर अपयश पाता है ॥
क्षण भर को खुश होता मन मे, चुगली निंदा करने से।
मरकर जाता नरक गति मे, बुरा किसी का करने से ॥
पढकर कविता को भैया तुम, शिक्षा इससे ले लेना।
चुगली करना महापाप है, मन मे अपने धर लेना ॥
देव शास्त्र गुरु पूज्य जगत् मे, इनको नही भुलाना है।
करके इनकी श्रद्धा भक्ति, मन अपने हर्षाना है ॥
जिसकी श्रद्धा इन तीनो पर, कभी नही दु:ख पायेगा।
भारी पुण्य कमाकर वो तो, मुक्ति का पद पायेगा ॥
एक समय की सुनो कहानी, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
चुगली करता था जो भैया, उसकी कथा सुनाता हूँ ॥
एक व्यक्ति था एक शहर मे, चुगली निश दिन खाता था।
करके चुगली मालिक से वो, मन मे खुशी मनाता था ॥
स्वारथ के वश मे होकर वो, धर्म नही मन लाता था।
करते थे जो धर्म ध्यान नित, देख उन्हे वो जलता था ॥

एक दिना धर्मी की चुगली, खाकर खुशी मनाता है।
'मेरी चलती बात यहाँ पर', कह करके हर्षाता है ॥
धर्मी को विश्वास धर्म पर, गहरा था रे भैया।
धर्म ही करता जीव की रक्षा, पार लगाये नैया ॥
चुगलखोर जा रहा एक दिन, अपने घर को भैया।
हुई ट्रक से टक्कर उसकी, रुक गया जीवन का पहिया ॥
नही उठानेवाला कोई, कितना बदतर हाल हुआ।
करता था जो बुरा और का, उसका बुरा यह हाल हुआ ॥
कव्वे खा रहे नोच-नोच कर, घर पर जिसकी खबर नही।
ऐसा भी हो सकता है रे, घरवालो को खबर नही ॥
पुलिस उठा ले गई लाश को, कफन नही ऊपर डाला।
रख मशीन पर उसको भैया, बिजली बटन दबा डाला ॥
दो क्षण के अदर ही भैया, सारा काम तमाम हुआ।
मरकर गया नरक मे वो तो, नरक दु खो का भान हुआ ॥
हाय-हाय चिल्लाता है अब, नही कोई सुननेवाला।
जैसा कर्म करे ये प्राणी, वैसा फल मिलनेवाला ॥
सुनने वालो, सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
चुगली निदा नही करे हम, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत—जिस नगर में ऋषि मुनियों के चातुर्मास होते हैं वह नगर पावन हो जाता है

चातुर्मास जिस नगर मे भैया, ऋषि-मुनियो के होते है।
चर्चा करते देव वहाँ की, अतिशय नित ही होते है ॥
पावन हो जाती वो नगरी, भूत प्रेत नही रहते है।
जन्म-जन्म के पाप छिनक मे, दूर स्वय हो जाते है ॥

वाणी खिरती जब मुनियो की, अज्ञान तिमिर हट जाता है।
मिलता सच्चा ज्ञान जगत् को, पुण्य उदय हो जाता है ॥
चर्चा करते देव वहाँ की, करके वो हर्षाते है।
मनुष्य गति मिल जाये हमको, ऐसा भाव बनाते है ॥
जाकर हम भी मनुष्य गति मे, मुनियो का आचरण करे।
पहन के सयम रूपी चोला, जीवन का उद्धार करे ॥
सयम ही सुख का कारण है, सयम मुक्ति देता है।
बिन सयम के जीवन सूना, सयम दु ख हर लेता है ॥
स्वर्गो मे नही सयम भैया, भोगो की वह खान है।
भोगो मे नही सुख है किचित, कहते मुनि महान् है ॥
नरक पशु के दु ख सहकर भी, भोगो मे चित लाते है।
भोग महा दु खदाई जग मे, मुनि हमे बतलाते है ॥
चार्तुमास जिस नगर मे होता, लक्ष्मी स्वय आ जाती है।
रहकर के उस नगर मे लक्ष्मी, अपना भाग्य सराहती है ॥
देते जो आहार मुनि को, दे करके हर्षाते है।
ऋषि-मुनियो के चरण की धूलि, अपने शीश लगाते है ॥
वो व्यक्ति ही जग मे भैया, पदवी ऊँची पाते है।
इस भव औ परभव मे वो तो, सच्चे सुख को पाते है ॥
श्रद्धा भक्ति कर मुनियो की, भारी पुण्य कमा ले।
पहन के सयम रूपी चोला, जीवन सफल बना ले ॥
चातुर्मास जिस नगर मे होते, मोहन वहाँ पर जाता है।
सच्ची श्रद्धा रख मुनियो से, ज्ञान के मोती लाता है ॥
मोतिन का वो हार बनाकर, पहन बहुत हर्षाता है।
दीर्घ जीवी हो मुनि हमारे, भाव यही मन लाता है ॥
सुनने वालो, सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
श्रद्धा भक्ति कर मुनियो की, अपना भाग्य सराहता है ॥

जैसे मात-पिता होंगे, वैसी संतान होगी

जैसे होगे मात-पिता, वैसी हो सतान।
लिखने मे यदि गलती हो तो, क्षमा करे विद्वान ॥
विद्वानो की सगति करके, विद्या मैने पाई।
ऋषि-मुनियो के चरणो को छू, निर्मल बुद्धि पाई ॥
मात-पिता कहलानेवालो, ध्यान लगाकर सुन लेना।
बडी मुश्किल से मिला मनुज भव, इसे नहीं यू खो देना ॥
उत्तम कुल पाया है भैया, जग मे उत्तम काम करो।
वीर राम-से जन्मे घर मे, ऐसे सुदर भाव धरो ॥
मैना-सोमा-सी लडकी हो, त्रिशला-वामा-सी माता।
सुकुमाल मुनि-से पुत्र हो घर मे, सिद्धार्थ-से हो राजा ॥
ऐसा कैसे हो सकता है, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
वीर राम से होगे कैसे, गुण मुनियो के गाता हूँ ॥
श्रद्धा रखो सदा धर्म पर, धर्म ही पार लगाता है।
छोड धर्म को प्राणी जग मे, नरक गति मे जाता है ॥
जीव गर्भ मे जो भी आये, ऐसे सुदर भाव धरो।
बने प्रभुजी, ये भी तुम-सा, मन मे यही विचार करो ॥
तीन लोक के स्वामी हो तुम, तुमको शीश झुकाते है।
बिन मागे सब कुछ देते हो, महिमा तेरी गाते है ॥
धन वैभव नही प्यारा मुझको, धर्म ही मुझको प्यारा है।
इच्छा पूरी करते हो तुम, तुमरा हमे सहारा है ॥
जो भी बच्चे जन्मे घर मे, सबको धर्म से प्यार हो।
ऋषि-मुनियो की सच्ची श्रद्धा, उनके गले का हार हो ॥
पहले दर्शन करे प्रभु का, बाद मे खाना खायेगे।
श्री जिनवर के दर्शन कर हम, भारी पुण्य कमायेगे ॥
धर्मी हो सतान हमारी, इच्छा पूरी कर देना।
भूल-चूक यदि हुई कही पर, माफ उसे तुम कर देना ॥

तीन लोक स्वामी हो तुम, तुमको शीश झुकाते है।
एक सहरा तेरा हमको, तेरे गुण हम गाते है ॥
सुनने वालो, सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
भाव हमेशा रक्खे उत्तम, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत—एक बाग के माली का

एक मनुष्य था इक जगल मे, दिन भर दु खडे सहता था।
बडी मुश्किल से कमाके पैसा, दो रोटी खा पाता था ॥
टूटी-सी खटिया थी घर मे, घर भी टूटा-फूटा था।
ज्ञान नही था उस व्यक्ति को, बिना ज्ञान वो सूना था ॥
राजा मत्री मिलकर दोनो, एक दिना जगल जाते।
लगी प्यास थी ज्यादा नृप को, पानी नही कही पाते ॥
बिन पानी के प्यासे राजा, मन ही मन परेशान हुए।
पानी नही मिला पीने को, मत्री बहुत हैरान हुए ॥
चलते-चलते उन दोनो को, एक व्यक्ति मिल जाता है।
जगल का वो धनी था व्यक्ति, नृप की प्यास बुझाता है ॥
खुश होकर राजा ने उसको, बाग नाम कर दीना है।
बाग था वो चदन का भैया, खुशबू सबको दीना है ॥
बनकर स्वामी बाग का वो अब, वृक्ष काटता जाता है।
बनाके कोयले वृक्षो के वो, बेच गुजारा करता है ॥
बहुत दिना बीते थे उसको, चदन वृक्ष जलाते।
उधर नृप के मन मे भैया, सुनो विचार क्या आते ॥
देखे चलकर उस व्यक्ति को, भारी सेठ बना होगा।
मोटर गाडी चलती होगी, लाखो का बिजनिस होगा ॥
चलते-चलते नृप व मत्री, जगल मे आ जाते है।
देख बाग के स्वामी को वे, अचरज मे पड जाते है ॥

टूटी हुई खाट पर बैठा, वृक्ष जलाये जाता है।
कोयले बना-बना वृक्षो के, उन्हे बुझाये जाता है ॥
देख नृपवर उसकी बुद्धि, बहुत-बहुत हैरान हुए।
सारा बाग बनाया कोयले, मन मे बहुत परेशान हुए ॥
थोडे वृक्ष बचे जगल मे, देख उसे समझाया।
काट वृक्ष की छोटी टहनी, देकर उसे बताया ॥
पसारी को देकर टहनी, बदले मे पैसे लेना।
जितने पैसे मिले तुम्हे वह, आ करके बतला देना ॥
छोटी टहनी के बदले मे, पाच रुपल्ली लाता है।
पाकर पाच रुपल्ली मन मे, फूला नही समाता है ॥
पश्चाताप किया मन ही मन, तूने बाग जला डाला।
कितनी कीमत थी इसकी, यो इसको व्यर्थ जला डाला ॥
बाकी जो भी वृक्ष बचे थे, उनकी कीमत पाई है।
करोडपति बन गया वो भैया, राह हमे दिखलाई है ॥
भाव यही है इसका मोहन, आयु बीती जाती।
भोगो मे तुम नही गवाओ, गई घडी फिर नही आती ॥
बीत गई जो बीत गई अब, आगे की सुध तुम लेना।
धर्मध्यान मे लगा इसे तुम, सच्चा सुख पा लेना ॥
देव गुरु की करना भक्ति, जिनवाणी मन लाना।
लेकर दीक्षा महामुनि बन, मोहन मुक्ति पाना ॥

धर्म के बढ़ने पर धन स्वयं बढ़ जाता है

धर्म बढ़ाले मेरे भैया, धन खुद ही बढ जायेगा।
एक धर्म ही सच्चा साथी, साथ मे तेरे जायेगा ॥
धर्मी का जग आदर करता, धर्मी पार उतरता है।
चाहे कितनी पड़े मुसीबत, धर्म सभी को हरता है ॥

धर्मी के घर आकर लक्ष्मी, वापिस कभी नही जाती।
चाहे जितना खर्च करे वो, ज्यादा ही बढ जाती ॥
आकर लक्ष्मी धर्मी के घर, अपना भाग्य सराहे।
रहकर लक्ष्मी धर्मी के घर, दिन-दिन बढती जाये॥
धर्मी दे आहार मुनि को, भारी पुण्य कमाता है।
करके औषध दान हमेशा, अपना भाग्य सराहता है ॥
करा प्रकाशित जिनवाणी को, सभी जगह बटवाता है।
अभय दान देकर जीवो को, गुण वीरा के गाता है ॥
चारो दान जहा पर होते, लक्ष्मी उनके घर आती।
एक बार आ करके लक्ष्मी, वापिस कभी नही जाती ॥
सच्चे मन से करो धर्म तुम, मुनियो के गुण गाओ।
भूलो नही धर्म को अपने, महामत्र चित लाओ ॥
घडी-घडी पल-पल व निश दिन, वीरा के गुण गाओ।
सुखी रहे सब जीव जगत् के, ऐसे भाव बनाओ ॥
ऐसे भाव धरेगा जब तू, सच्चे सुख को पायेगा।
धर्म ध्यान के कारण तेरा, धन खुद ही बढ जायेगा ॥
सुनने वालो, सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
भूलो नहि धर्म को भैया, धर्म साथ मे जाता है ॥

दृष्टांत—धर्म कार्यो में विघ्न डालनेवाले का

इक टीचर थी एक गॉव मे, धर्म पढाया करती थी।
शिक्षा अच्छी दे बच्चो को, ज्ञान सिखाया करती थी ॥
लडके-लडकी शिक्षा पाकर, धर्म ध्यान नित करते थे।
मंदिर मे जाकर नित बच्चे, दर्शन प्रभु का करते थे ॥
महामत्र की जाप हमेशा, बच्चे करके सोते थे।
सुदर-सुदर भजन सुनाकर, मन ही मन खुश होते थे ॥

दस लक्षण के पर्व मे बच्चे, पूजन पाठ रचाते थे।
धर्म सहाई है इस जग मे, ऐसे भाव बनाते थे ॥
धर्म ध्यान के कारण भैया, बच्चे प्रथम आते थे।
नगर निवासी खुश थे सारे, भारी पुण्य कमाते थे ॥
एक दिना की सुनो कहानी, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
विघ्न डालनेवाले का, मै किस्सा तुम्हे सुनाता हूँ ॥
धर्म जहा पर पलता भैया, हानि कभी नहीं आती।
धर्मी के यहॉ आकर लक्ष्मी, वापिस कभी नही जाती ॥
एक टीचर के कारण भैया, धर्म सभी का पलता था।
अच्छी शिक्षा मिलती सबको, सच्चा आनद मिलता था ॥
उस नगरी के एक व्यक्ति ने, रोडा जा अटकाया।
लगाके लाछन झूठा भैया, टीचर को हटवाया ॥
टीचर हट गई भैया अब तो, धर्म कर्म सब भग हुआ।
चलती गाडी रुक गई भैया, अशुभ कर्म का उदय हुआ ॥
धर्म कर्म की बात नही अब, बच्चा कोई करता था।
शिक्षा अच्छी भूल गये वो, मत्र नही कोई जपता था ॥
एक दिना वो व्यक्ति भैया, किसी काम से जाता था।
फालिज पड गया उसको भैया, नजर नहीं कुछ आता था ॥
अधी हो गई दोनो आखे, हाथ पैर बेकार हुए।
जिस करवट सोता वो व्यक्ति, कीडे वहॉ हजार हुए ॥
दुर्गध इतनी आती उससे, पास नही कोई आता।
मर जाये जल्दी ये पापी, हर कोई कहकर जाता ॥
रोडा डाला धर्म मे इसने, भारी पाप कमाया है।
पाप कर्म का फल ये भैया, सबको सबक सिखाया है ॥
मरा अचानक निश मे इक दिन, पास नही कोई आया।
कितनी पीडा सही है उसने, आक नही मोहन पाया ॥

मरकर गया नरक मे वो तो, भारी कष्ट उठाता है।
धर्म कार्य मे विघ्न डालना, भारी पाप कहाता है ॥
सुनने वालो, सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
एक धर्म है जो जीवो को, भव से पार लगाता है ॥

दृष्टांत–धन-वैभव पाकर तू स्वयं को भी भूल गया

कोठी बगले पाकर सब तू, निज को भैया भूल गया।
मोह माया के चक्कर मे पड, पिछली बाते भूल गया ॥
पिछली बाते तुमको भैया, लिखकर आज सुनाऊँगा।
सच्चा सुख मिलता है जिससे, गाकर तुम्हे सुनाऊँगा ॥
चौरासी मे फिरा भटकता, कही नही सुख पाया है।
निज स्वरूप को भूल गया था, इसीलिए दु ख पाया हे ॥
नरक गति के दु ख सह आये, फिर भी मदिर नही आते।
श्रद्धा भक्ति नही रही है, भोगो मे मन ललचाते ॥
श्रद्धा भक्ति नही होने से, जीव महा दु ख पाता है।
देव गुरु को भूल गया जो, भारी कष्ट उठाता है ॥
देव गुरु की महिमा भारी, इनको नमन हमारी है।
जिनवाणी माता की भैया, महिमा जग से न्यारी है ॥
इन तीनो पर श्रद्धा रखो, सच्चे सुख को पाओगे।
मुक्ति रूपी मेवा पाकर, दु खो से बच जाओगे ॥
इन तीनो की श्रद्धा भक्ति, भव से पार लगायेगी।
चाहे कितनी पडे मुसीबत, दूर स्वय हो जायेगी ॥
जिसके घर मे इन तीनो की, सच्ची श्रद्धा होती है।
आनद मगल रहता है वहॉ, लक्ष्मी स्वय आ जाती है ॥
आनद मगल होवे जीवन, ऐसे सुदर काम करो।
देव शास्त्र गुरु पूज्य जगत् मे, इनका हरदम ध्यान करो ॥

इन तीनो पर श्रद्धा रखकर, मोहन भजन बनाता है।
लिखकर इनकी महिमा वो तो, अपना भाग्य सराहता है ॥
जिस पर इनकी मेहर होती, सकट सब टल जाता है।
मद बुद्धि भी पाकर मोहन, कविता लिखकर लाता है ॥
भूले नहि धर्म को अपने, धर्म ही पार लगायेगा।
सच्ची श्रद्धा रखनेवाला, मुक्ति का पद पायेगा ॥
सुनने वालो, सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
देव शास्त्र गुरु पूज्य जगत् मे, महिमा इनकी गाता है ॥

दृष्टांत—एक लड़के का

अशुभ कर्म का उदय होय जब, बुद्धि पलटा खाती है।
समझाये उसको कितना ही, नही समझ मे आती है ॥
अच्छी बाते बुरी लगती, अशुभ कर्म के आने से।
पाप सभी कट जाते भैया, मुनियो के गुण गाने से ॥
मुनियो के गुण गाकर मैने, बुद्धि निर्मल पाई है।
छूकर चरण महामुनियो के, कविता सभी बनाई है ॥
एक लडके की सुनो कहानी, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
मात-पिता को ठुकराता था, उसकी कथा सुनाता हूँ ॥
मात-पिता को ठुकराकर जो, मन मे खुशी मनाते है।
देव गुरु को भूल गये औ, विषयो मे चित लाते है ॥
गाली देकर मात-पिता को, जरा नही शर्माते है।
खाना पसद नही आया तो, थाली दूर बगाते है ॥
नही पता है उनको भैया, पापो का फल पाते है।
ठुकराते जो मात-पिता को, स्वय ठुकराये जाते है ॥
रोटी नहि समय पर मिलती, भारी कष्ट उठाते है।
कलह सदा रहती है घर मे, आदर नही वो पाते हैं ॥

एक लडका था एक गाँव मे, भूल धर्म को बैठा था।
बुरी सगति मे पड करके, मन मे अपने ऐठा था ॥
जिन मदिर नहि जाता था वो, अशुभ कर्म के आने से।
मात-पिता को मार लगाता, भूल धर्म को जाने से ॥
पैसे रोज चुराकर लडका, पिक्चर मे नित जाता था।
खाना पसद नही आया तो, थाली दूर बगाता था ॥
घरवालो को गाली देकर, मन ही मन खुश होता था।
बुरी सगति मे पड करके, बीज पाप का बोता था ॥
करते-करते पाप कभी तो, घडा पाप का भरता है।
जैसा कर्म करे ये प्राणी, वैसा ही फल भरता है ॥
आई जवानी उस लडके पर, शादी भी हो जाती है।
राक्षस रूप मिली घरवाली, लडके को घेरे रहती है ॥
बच्चे पैदा हो गये इतने, गिनने मे नही आते है।
रोटी नही मिलने के कारण, भारी रुदन मचाते है ॥
काम नही करता है लडका, पैसा कहा से आयेगा।
भूल धर्म को जानेवाला, भारी कष्ट उठायेगा ॥
घरवाली कहती है उससे, पहले साडी लाना।
रोटी नही बनाऊँगी मै, बाहर ही तुम खाना ॥
बच्चे मागे दिन भर पैसे, लडका अब परेशान है।
बच्ची हो गई स्यानी घर मे, देख उसे हैरान है ॥
आगे नही लिख करके इसको, पूर्ण यही पर करता हूँ।
लेना शिक्षा पढकर इससे, अर्ज सभी से करता हूँ ॥
ठुकराते जो मात-पिता को, ऐसे ही दुख पायेगे।
भूल धर्म को जो जाते है, नरक द्वार मे जायेगे ॥
सुनने वालो, सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
आज्ञा माने मात-पिता की, गुण मुनियो के गाता है ॥
सुनने वालो, सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
देव गुरु है पूज्य जगत् मे, जिनवाणी मन लाता है ॥

श्री 108 गणधराचार्य कुन्थ सागर जी महाराज लेखक को आशीर्वाद देते हुए।

दृष्टांत—मन और आत्मा का

मन राजा और आत्मा जी का, किस्सा आज सुनाता हूँ।
ले आशीष महामुनियो की, भजन बनाकर लाता हूँ ॥
मुनिराज है गुरु हमारे, इनकी महिमा भारी है।
मिले सदा दर्शन गुरुवर के, वीतराग छवि प्यारी है ॥
एक दिना उठकर आत्माजी, जिन मंदिर मे जाती है।
करूगी दर्शन देव गुरु के, ऐसे भाव बनाती है ॥
मन राजा बोले आत्मा से, बहन यही आराम करो।
विषय भोग भोगो तुम बहना, हलवा पूरी ग्रहण करो ॥
सर्दी का है मौसम बहना, कैसे तू वहाँ जायेगी।
हलवा पूरी छोड बहन तू, मंदिर मे क्या खायेगी ॥
सुन लो भैया कान लगाकर, आत्मा जी क्या कहती है।
सच्चा सुख नही विषयो मे मन, ऐसा उससे कहती है ॥
बाते मानी तेरी अब तक, आगे नही मै मानूगी।
देव गुरु की करूगी भक्ति, जिनवाणी मन लाऊँगी ॥
तेरे चक्कर मे आ मैने, भारी कष्ट उठाये है।
खाकर हलवा पूरी मैने, सच्चे गुरु भुलाये है ॥
बडी मुश्किल से मिले गुरु ये, ये ही सच्चे साथी है।
नही छोडूगी साथ इन्हीं का, इनमे श्रद्धा जागी है ॥
इनमे सच्ची श्रद्धा रखके, मै अपना कल्याण करू।
मुनिराज के चरणो मे रह, निज स्वरूप का ध्यान करू ॥
निज स्वरूप मे रमकर मै तो, मुनियो सी हो जाऊँगी।
हलवा पूरी तुम ही खाना, मै शिवपुर को जाऊँगी ॥
सुनकर ऐसी बाते मनुआ, मन ही मन परेशान हुए।
दास बना हूँ मै भी तेरा आत्मा जी से वचन कहे ॥
मैं भी सदा करूँगा भक्ति, वीरा के गुण गाऊँगा।
मुनियो की मे सुनूगा वाणी, अपना हित पहचानूगा ॥

जैसा कहती है ये आत्मा, वैसा मन अब करता है।
मुनिराज की शरण मे आकर, नाश कर्म का करता है ॥
सुनने वालो, सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
कर लो मन को वश मे भैया, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत—उत्तम त्याग धर्म पर

करो त्याग तुम मेरे भैया, त्याग महा सुखकारी है।
त्याग बिना यह जीवन सूना, महिमा इसकी भारी है ॥
त्याग किया बादल ने जल का, ऊँचा बादल बन पाया।
सागर नीचा रहा जगत मे, दान नही वह कर पाया ॥
ऋषि-मुनि घर-बार त्याग कर, मुक्ति पद को पाते है।
करे भव्य जन दान जगत् मे, करके पुण्य कमाते है ॥
पाकर धन-वैभव भी जो जन, दान नही कर पाते है।
मरकर जाते नरक गति मे, भारी कष्ट उठाते है ॥
एक सेठ की सुनो कथा मै, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
दान नही कर पाया था जो, उसका हाल सुनाता हूँ ॥
एक सेठ था एक गॉव मे, धन-वैभव सब भारी था।
बेटा-बेटी बहुत थे उसके, विषयो मे मन जारी था ॥
धर्म-कर्म की बात नही वो सेठ साहब जी करते थे।
पानी-दूध मिलाकर दोनो, ही वो बेचा करते थे ॥
करके पाप कमाई भैया, पैसा बहुत कमाय लिया।
धन-वैभव मे ही सब सुख है, ऐसा उसने मान लिया ॥
करते-करते पाप कभी तो, घडा पाप का भरता है।
पाप कर्म के कारण प्राणी, चौरासी मे रुलता है ॥
कोठी-बगले बना सेठ ने, भारी नाम कमाया था।
मोटर फ्रिज खरीदे सारे, उनमे ही सुख पाया था ॥

एक दिना वो सेठ साहब जी, दीपक जलाके सोते है।
क्या होता है इकदम भैया, देख चकित सब होते है ॥
चूहा एक चढा दीपक पर, दीपक नीचे गिरता है।
रुई का ढेर पडा था नीचे, उस पर आ गिर जाता है ॥
गिरते ही दीपक के भैया, आग वहॉ लग जाती है।
जलकर राख हुए वो सारे, मिट्टी सब बन जाती है ॥
जिस रस्ते आया था पैसा, उस रस्ते ही चला गया।
चलते-चलते वो पैसा तो, राह हमे दिखलाय गया ॥
करना दान सदा जीवन मे, दान महा उपकारी है।
त्याग नही करता जो भैया, पाये सकट भारी है ॥
सुनने वालो, सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
उत्तम त्याग करे जीवन मे गुण मुनियो के गाता है ॥
सुनने वालो, सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
दान करे हम शुद्ध भाव से, दान महा सुख दाता है ॥

दृष्टांत—एक सज्जन व एक दुर्जन का

एक सज्जन एक दुर्जन का मै, किस्सा तुम्हे सुनाता हूँ।
देव शास्त्र गुरु पूज्य हमारे, उनको शीश झुकाता हूँ ॥
सज्जन की सगति करना तुम, दुर्जन पास नही जाना।
दुर्जन का स्वभाव दुष्टता, उससे दूर सदा रहना ॥
दुर्जन तो दुर्जन होता है, दुखडे भारी भरता है।
मरकर जाता नरक गति मे, तीव्र वेदना सहता है ॥
अच्छा काम नही करता वो, चुगली-निदा करता है।
चुगली-निदा करने मे ही, सुख का अनुभव करता है ॥
सच्चा सुख नही चुगली मे, निदा कभी नही करना।
जितनी ज्यादा हो सकती हो, सेवा मुनियो की करना ॥

ऋषि-मुनियो की सेवा हमको, सच्चा सबक सिखायेगी।
सज्जन नाम धराकर भैया, जग मे यश फैलायेगी ॥

एक गॉव मे एक सेठ था, दो नौकर वो रखता था।
स्वभाव नरम था सेठ साहब का, द्वेष नही वो करता था ॥

एक नौकर सज्जन था उसका, दूजा दुर्जन कहलाता।
दुर्जन करके चुगली दिन-भर, मन मे अपने हर्षाता ॥

सज्जन नित मंदिर मे जाकर, पूजन निश-दिन करता था।
ऋषियो-मुनियो के चरणो मे वो श्रद्धा गहरी रखता था ॥

दया भाव था मन मे उसके, भजन प्रभु का करता था।
निदा करना महापाप है, सज्जन सदा समझता था ॥

पाप-पुण्य का फल ये प्राणी, जग मे भैया पाते है।
अच्छे काम करे जो जग मे, पदवी ऊँची पाते है ॥

दुर्जन स्वार्थ के वश होकर, सज्जन की चुगली करता।
करके चुगली सेठ साहब से, स्वार्थ पूरा वो करता ॥

सेठ साहब भी क्रोधित होकर, सज्जन को धमकाते है।
सज्जन चुप रहकर के भैया, बात सभी सुन लेते है ॥

उस सज्जन के मन मे भैया, ऐसा भाव समाया था।
पाप-पुण्य का फल मिलता है, मुनियो ने बतलाया था ॥

दुर्जन कैसे दु ख भरता है, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
सज्जन का हो गया प्रमोशन, गुण मुनियो के गाता हूँ ॥

एक दिना दुर्जन सज्जन से, देखो क्या कह जाता है।
जाता हूँ मै घर पर अपने, सज्जन से कह जाता है ॥

लगा हाजरी दुर्जन अपनी, अपने घर पर पहुच गया।
इसी बीच मे सेठ साहब भी, काम पे भैया पहुच गया ॥

सज्जन ड्यूटी पर थे अपनी, ध्यान प्रभु का करते थे।
करते-करते ध्यान प्रभु का, ड्यूटी पूरी करते थे ॥

सेठ साहब ने देख हाजरी, दुर्जन की छुट्टी कर दी।
करके प्रमोशन सज्जन का, तनख्वाह भी दूनी कर दी ॥
करता था जो चुगली दिन भर, अब तो धक्के खाता है।
चुगली करना महापाप है, सबको सबक सिखाता है ॥
सुनने वालो, सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
चुगली-निदा नही करे हम, गुण मुनियो के गाता है ॥
सुनने वालो, सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
ऋषि-मुनियो की सेवा करके, अपना भाग्य सराहता है ॥

दृष्टांत—भक्त के भाव भगवान् के चरणों में

आकर दर पर प्रभु जी तेरे, अपना शीश झुकाता हूँ।
करके दर्शन स्वामी तेरा, फूला नही समाता हूँ ॥
बडी मुश्किल से मिले है दर्शन, दर्शन कर हर्षाया हूँ।
रहूँ सदा चरणो मे तुमरे, भाव ये मन मे लाया हूँ ॥
छोड तुम्हारे चरण कमल को, भारी कष्ट उठाया है।
चौरासी मे फिरा भटकता, सच्चा सुख नही पाया है ॥
सच्चा सुख नही मिला कही भी, इसलिए यहॉ आया हूँ।
बडे पुण्य से प्रभु जी तेरा, दर्शन कर हर्षाया हूँ ॥
स्वार्थ के वश होकर मै तो, भूल धर्म को बैठा था।
मोह माया के चक्कर मे पड, जिन दर्शन भी छोडा था ॥
जब तक रहा मै दूर धर्म से, भारी कष्ट उठाये है।
भूल के तुझको वीरा मैने, भव भव मे दुःख पाये है ॥
बडे पुण्य से स्वामी तेरे, मैने दर्शन पाये है।
किये है दर्शन जब से मैनें, भाव ये मन मे आये है ॥
जब तक प्राण रहेगे तन मे, गुण तेरा मै गाऊँगा।
नित मंदिर मे आकर स्वामी, तेरे दर्शन पाऊँगा ॥

तीर्थ क्षेत्रो की वदना कर, अपना भाग्य सराहूँगा।
करा प्रकाशित जिनवाणी को, मिथ्या तिमिर भगाऊँगा ॥
ऋषि-मुनियो के चरणो को छू, अपना भाग्य सराहूँगा।
अष्ट कर्म का करके नाश मै, तुम जैसा बन जाऊँगा ॥
धन-दौलत की नही है इच्छा, नही सिनेमा जाने की।
इच्छा स्वामी एक है मन मे, दर्शन तेरा पाने की ॥
नित दर्शन मै करू तुम्हारा, तुमरा ध्यान लगाऊँगा।
सच्ची श्रद्धा रहे धर्म मे, गुण मुनियो के गाऊँगा ॥
सुनने वालो, सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
भूलो नहि धर्म को अपने, धर्म ही पार लगाता है ॥

दृष्टात–सोलह प्रकार का सुख कैसे मिलता है

नर और नारी जिस घर मे से, नित मदिर मे जाते है।
करके दर्शन श्री जिनवर के, अपना भाग्य सराहते है ॥
शुद्ध भाव से श्री जिनवर का, पूजन कर हर्षाते है।
जिनवाणी माता को जो जन, अपना शीश झुकाते है ॥
ऐसे प्राणी जग मे भैया, भारी पुण्य कमाते है।
सोलह सुख मिलते है उनको, पाकर खुशी मनाते है ॥
एक गॉव मे इक नर नारी, भारी दु खडे सहते थे।
रोटी नही समय पर मिलती, भूखे ही सो जाते थे ॥
जिन मदिर था गॉव मे उनके, नही कभी वे जाते थे।
घर मे रहकर चौबीस घटे, सारा समय बिताते थे ॥
देव गुरु की महिमा न्यारी, उनको ऐसा ज्ञान नही था।
सोलह सुख मिलते है कैसे, जिनवाणी का ध्यान नहीं था ॥
बहुत दिना बीते थे उनको, भारी दुखडे सहते।
जिन दर्शन से वंचित थे वो, बिना ज्ञान दु ख पाते ॥

ज्ञान गुरु देते है भैया, इनकी महिमा न्यारी है।
इनके चरण कमल मे भैया, सौ-सौ नमन हमारी है ॥
बच्चे नही थे घर मे उनके, बिन बच्चे दुख पाते थे।
किसी तरह से हो जा बच्चा, ऐसी आश लगाते थे ॥
पाप किये जो पूर्व जन्म मे, उदय एक दिन होते है।
जैस कर्म करे ये प्राणी, वैसा ही फल पाते है ॥
शुभ कर्मो से उनके भैया, मुनि वहाँ इक आते है।
जिन दर्शन नित करना दोनो, नियम मुनि दे जाते है ॥
रखकर श्रद्धा मन मे दोनो, नित मदिर मे जाते है।
सच्चे मन से श्री जिनवर की, पूजन कर हर्षाते है ॥
कट गये सारे पाप छिनक मे, शुभ कर्मो का उदय हुआ।
थोडे दिन के बाद उन्ही के, इक बच्चे का जन्म हुआ ॥
गहरी श्रद्धा हो गई उनको, नित मदिर मे जाने से।
शुभ कर्मो का उदय हुआ अब, दर्शन प्रभु का पाने से ॥
जिन दर्शन का नियम लिया था, लेकर उसे निभाया।
धन-दौलत का लगा ढेर है, सुदर महल बनाया ॥
जिन दर्शन है उत्तम जग मे, जिन दर्शन नित पाना।
महामुनियो के चरण कमल मे, अपना शीश झुकाना ॥
सुनने वालो, सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
जैन धर्म रहे अटल हम, वीरा के गुण गाता है ॥

ऋषि-मुनियों के आशीर्वाद का महत्त्व

मूरख भी बन जाता पडित, निर्धन बनता राजा।
गूगा भी बोले खुश होकर, पगु गिरि चढ जाता ॥
मिलता आशीर्वाद जिसे वो, कष्टो से बच जाता है।
रखकर श्रद्धा देव-गुरु मे, मनवाछित फल पाता है ॥

मिलता आशीर्वाद जिसे वो, बुद्धि निर्मल पाता है।
लक्ष्मी खुद घर आती उसके, अशुभ समय टल जाता है ॥
ऋषि-मुनियो के आशीर्वाद का, तुमको महत्त्व बताता हूँ।
लेना शुभ आशीष इन्ही से, गुण मुनियो के गाता हूँ ॥
छूना चरण सदा मुनियो के, अपना शीश झुकाना।
सुखी रहे सब जीव जगत के, उत्तम भाव बनाना ॥
एक लडके की सुनो कहानी, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
आशीर्वाद मिला मुनियो का, उसकी कथा सुनाता हूँ ॥
एक लडका था एक गॉव मे, सुख से लडका रहता था।
देव-गुरु मे लडका अपनी, श्रद्धा गहरी रखता था ॥
मेहनत चौबीस घटे करता, फिर भी फेल हो जाता था।
पढते-पढते रात दिना वो, नही समझ कुछ पाता था ॥
ट्यूशन बहुत लगाये उसने, नही पास वो हो पाया।
अशुभ कर्म के कारण वो तो, सीख नही विद्या पाया ॥
एक दिना उस गॉव मे भैया, मुनिराज इक आये।
देख मुनि को उस लडके ने, अपना शीश झुकाये ॥
छूने लगा चरण वो लडका, उसको आशीर्वाद मिला।
अशुभ समय टल गया रे उसका, शुभ कर्मो का उदय हुआ ॥
बुद्धि निर्मल हो गई उसकी, पढने मे मन लगता है।
बिना पढे ट्यूशन वो लडका, प्रथम नबर आता है ॥
बडे-बडे ग्रथो को लडका, आसानी से पढता है।
सस्कृत का हिदी मे मतलब, लडका खुद कर लेता है ॥
बुद्धि निर्मल हो गई इतनी, नही फेल वो हो पाया।
मुनियो की आशीष के कारण, जग मे नाम कमा पाया ॥
सुनने वालो, सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
पा आशीष महामुनियो की, कविता नई बनाता है ॥
सुनने वालो, सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
भूले नही धर्म को अपने, धर्म ही पार लगाता है ॥

दृष्टांत—परिग्रह का परिमाण करे बिना आत्मा को शांति नहीं मिल सकती

परिग्रह का परिमाण करे बिन, सच्चा सुख नही पायेगा।
जितना ज्यादा होगा परिग्रह, उतना ही दुख पायेगा ॥
सच्चा सुख नही परिग्रह मे है, मुनि हमे बतलाते है।
छोड परिग्रह सारा मुनिवर, सिद्ध शिला को जाते है ॥
परिग्रह एकत्र करने मे तू, हीरा जन्म गवाता है।
धन-दौलत के चक्कर मे पड, भूल धर्म को जाता है ॥
आत्म का कल्याण किया नही, विषयो मे सुख मान रहा।
पापी पेट के कारण भैया, भारी पाप कमाय रहा ॥
पाप कर्म ही डाल नरक मे, भारी मार लगाता है।
ज्यादा परिग्रह करता सग्रह, वही नरक मे जाता है ॥
परिग्रह कम करके तू भैया, देव-गुरु को ध्याले।
सच्चा सुख मिलता है जिससे, उस पथ को अपना ले ॥
परिग्रह कम करने से भैया, सच्चे सुख को पाते है।
ऋषि-मुनि तो छोड परिग्रह, सिद्ध शिला को जाते है ॥
नही लगोटी का डर उनको, नही दुपट्टा धोने का।
नही साबुन की उन्हे जरूरत, पैसा नही कमाने का ॥
आशा-तृष्णा ही इस जग मे, महा दुखो की खान है।
आशा तृष्णा नही है जिनको, वो ही पुरुष महान है ॥
दास बने नही तृष्णा के हम, अपना दास बनावे।
देव-गुरु के चरणो मे हम, अपना ध्यान लगावे ॥
साथ नही जाता है कुछ भी, साथ धर्म ही जाता है।
एक धर्म है जो जीवो को, भव से पार लगाता है ॥
परिग्रह को कम करके भैया, जीवन सफल बनाओ।
कर परिमाण परिग्रह का तुम, सच्चे सुख को पाओ ॥

सुनने वालो, सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
परिग्रह का परिमाण करे हम, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत–एक बूढ़े का जिसने कभी जिनदर्शन नहीं किया

क्यो रोता अब देख बुढापा, चितामणि रतन लुटाने से।
देव-शास्त्र-गुरु भूल गया था, युवा अवस्था पाने से ॥

युवा अवस्था पाकर जो जन, जिन मदिर नही जाते है।
देव-शास्त्र-गुरु भूल के भैया, विषयो मे चित लाते है ॥

इज्जत नही बडो की करते, विनय नही जिनवाणी की।
आत्म का कल्याण हो कैसे, सच्चे सुख को पाने की ॥

तीर्थ क्षेत्र है कहा-कहा पर, अतिशय क्षेत्र है कहा-कहा।
नही तमन्ना मन मे ऐसी, कर लू मै भी दर्श अहा ॥

बीवी बच्चो मे फस करके, धर्म-कर्म सब भूल चला।
धर्म-कर्म मे नही लगता मन, चौरासी मे झूल चला ॥

चौरासी की रेल कहा पर, मनुष्य गति मे रुकती है।
सीटी दे दे कहती सबको, शुभ सदेश सुनाती है ॥

मनुष्य गति है जक्शन भैया, सब रेल यहॉ से जाती है।
चाहे जाओ सिद्ध शिला को, नरक यहॉ से जाती है ॥

बार-बार वो करे इशारा, फिर भी समझ नही पाते।
भव्य जीव तो बैठ के उसमे, सिद्ध शिला को है जाते ॥

जिनको जाना है नरको मे, सुन लो वो क्या कहते है।
बद करो तुम सीटी अपनी, विषयो मे चित लाते है ॥

एक बूढे से कहा रेल ने, बाबा तुम आकर बैठो।
हो जाये कल्याण तुम्हारा, धर्म ध्यान मे चित पागो ॥

शिवपुर तुम्हे पुचाऊँगी मै, मुनि धर्म स्वीकार करो।
तजकर वस्त्र सारे अपने, श्री जिनवर का ध्यान करो ॥

सुनकर बाते बूढा उसकी, गुस्से मे भर जाता है।
गुस्से मे भर करके बूढा, शब्द सुनो क्या कहता है ॥
जाओ रेल यहाँ से जाओ, हम खुद ही आ जायेगे।
थोडे दिन बुढिया के सग हम, हलवा पूरी खायेगे ॥
मौज नही ली अब तक पूरी, मौज हमे ले लेने दो।
जिन मंदिर की बात छोड दो, विषयो मे सुख पाने दो ॥
सुनकर बात बूढे की भैया, रेल वहाँ से चली गई।
इसी बीच मे बुढिया मा की, सास भी चलना बद हुई ॥
बुढिया मा को देख मरी अब, बूढा रुदन मचाता है।
कहा गई हो छोड हमे तुम, कह करके पछताता है ॥
अशुभ भाव से मर गया बूढा, हाय-हाय चिल्लाने से।
मरकर पहुचा नरक गति मे, जिन मदिर नही जाने से ॥
अब भी समय समझ ले भैया, देव गुरु को ध्याले।
जिनवाणी को सुनकर अपना, जीवन सफल बना ले ॥
सुनने वालो, सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
देव शास्त्र गुरु पूज्य जगत मे, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत–गरीबों को सताना पाप है

नही सताना निर्बल को रे, निर्बल स्वय कमजोर है।
दु ख देता है जो निर्बल को, पाये कष्ट वो घोर है ॥
निर्बल का भी इस दुनिया मे, एक सहारा होता है।
तीन लोक का स्वामी है जो, सबका रक्षक होता है ॥
सबकी रक्षा करते स्वामी, सच्चे सुख को देते है।
लेता है जो शरण इन्ही की, मुक्ति टिकट दे देते है ॥
नहि सताना किसी जीव को, सता उन्हे मत हर्षाना।
दु ख देते है जो निर्बल को, पडे उन्हे नरको जाना ॥

नरक गति मे कितने दु ख है, जिनवाणी बतलाती है।
अच्छे काम करो तुम जग मे, वो ही हमे बताती है ॥
जिनवाणी की रक्षा करना, प्रथम काम हमारा है।
देव शास्त्र गुरु पूज्य जगत मे, उनको नमन हमारा है ॥
जिनवाणी की रक्षा करके, जो मन मे हर्षायेगा।
पाकर सच्चा ज्ञान जगत मे, मुक्ति का पद पायेगा ॥
श्रद्धा रखो देव-गुरु मे, जिनवाणी मन लाओ।
देव शास्त्र गुरु पूज्य जगत मे, इनको नही भुलाओ ॥
इन तीनो की सेवा भक्ति, भव से पार उतारेगी।
पाप कर्म का करके नाश वो, मुक्ति हमे दिलायेगी ॥
चौबीस घटे सुबह-सबेरे, इनका ध्यान लगााया कर।
सुखी रहे सब जीव जगत् के, ऐसे भाव बनाया कर ॥
उत्तम भाव जगत् मे भैया, उत्तम ही पद देते है।
दु ख देकर सुख न पाओगे, शास्त्र हमे बतलाते है ॥
सुनने वालो, सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
रक्षा करो सभी जीवो की, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत–ऋषि-मुनियों को देखकर हंसी उड़ानेवाले का

ऋषि-मुनि ही जग मे भैया, सच्चा मार्ग बताते है।
सहते है वे परिषह भारी, नग्न दिगबर रहते है ॥
महाव्रतो का पालन करके, घोर तपस्या करते है।
राग-द्वेष का नाम मिटाकर, शिव रमणी को वरते है ॥
मुनियो के दर्शन से भैया, पाप सभी कट जाते है।
छूते है जो चरण इन्हो के, कष्ट नही वो पाते है ॥
पावन हो जाती वो धरती, मुनि चरण जहा पडते है।
करनेवाले सेवा इनकी, भव से पार उतरते है ॥

ऋषि-मुनियो को देख नग्न, जो इनकी हसी उडाते है।
क्या हालत होती है उनकी, लिखकर तुम्हे बताते है ॥
एक गॉव मे एक व्यक्ति था, पागल वो कहलाता था।
ऋषि-मुनियो को देख के पागल, उनकी हसी उडाता था ॥
निंदित वचन सुनाकर वो तो, मन मे खुशी मनाता था।
इसका फल क्या होगा मूरख, नहीं समझ वो पाता था ॥
एक दिना उस गॉव मे भैया, महामुनि इक आये।
सच्चा सुख मिलता है कैसे, हित उपदेश सुनाये ॥
देख के पागल मुनि मुद्रा को, उनकी हसी उडाता है।
करके निदा महामुनि की, भारी पाप कमाता है ॥
करके निदा महामुनि की, इक जगल मे जाता है।
चोर मिले उसको रस्ते मे, देखो अब क्या होता है ॥
कपडे सब उतारकर उसके, नगा उसको करते है।
घडी अगूठी लेकर उसकी, खूब पिटाई करते है ॥
करी पिटाई इतनी उसकी, हाथ पैर सब टूट गये।
रोता और बिलखता उसको, चोर अकेला छोड गए ॥
देख उसे हसते है सब अब, नगा-नगा कहते है।
निदित वचन सुनाकर उसको, धिक्-धिक् सब ही कहते है ॥
अशुभ भाव से मरकर वो तो, नरक गति मे जाता है।
महामुनियो की निदा की थी, इसीलिए दुख पाता है ॥
सुनने वालो, सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
श्रद्धा भक्ति कर मुनियो की, अपना भाग्य सराहता है ॥
सुनने वालो, सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
ऋषि-मुनियो के करके दर्शन, फूला नहीं समाता है ॥

दृष्टांत--धर्म की झूठी कसम खानेवाले का

कसम धर्म की क्यो खाता पगले, धर्म सुखो की खान है।
ठुकराते जो धर्म को भैया, वो पापी इसान है ॥
ठुकराकर तू धर्म को भैया, सच्चा सुख नही पायेगा।
खानेवाला कसम धर्म की, नरक द्वार मे जायेगा ॥
धर्म महाउपकारी जग मे, धर्म ही पार लगाता है।
अत समय मे जीव के भैया, साथ धर्म ही जाता है ॥
पैसे के स्वार्थ मे आकर, कसम धर्म की जो खाते है।
अच्छा-बुरा क्या है जग मे, नही सोच जो पाते है ॥
ऐसे लोगो का किस्सा मै, तुमको आज सुनाता हूँ।
भूल धर्म को जो जाते है, उनका हाल सुनाता हूँ ॥
चाहे कितनी पडे मुसीबत, कसम धर्म की मत खाना।
धर्म सहाई है इस जग मे, श्रद्धा ऐसी मन लाना ॥
सच्ची श्रद्धा होगी गर तो, भव से तू तिर जायेगा।
धर्म ध्यान के कारण ही तू, कष्टो से बच जायेगा ॥
दो भाई थे एक गॉव मे, सुख से दोनो रहते थे।
भावो मे था अतर उनके, वैसे सग मे रहते थे ॥
छोटा भैया धर्म ध्यान मे, सबसे आगे रहता था।
धर्म सहाई है इस जग मे, भाव ये मन मे लाता था ॥
इच्छित वस्तु मिले धर्म से, साथ धर्म ही जाता है।
लेते है जो शरण धर्म की, धर्म ही पार लगाता है ॥
जमीदारी का काम था उनका, करके खुशी मनाते थे।
एक-दूसरे के सुख-दु ख मे, काम वे दोनो आते थे ॥
घर मे किसी बात के ऊपर, झगडा उनमे होता है।
झगडा बढ गया इतना भैया, नहीं निपटने पाता है ॥
रिश्तेदार बुलाकर सारे, उनको झगडा सौप दिया।
करो फैसला हम दोनो का, उनको यह आदेश दिया ॥

पचो ने जो किया फैसला, बडे भाई ने नही माना।
कसम धर्म खा करके झूठी, सोचा सारा हक पाना ॥
छोटे का भी हिस्सा लेकर, उसको घर से अलग किया।
लेकर सारा माल खजाना, मन मे उसके हर्ष हुआ ॥
कुछ वर्षो के बाद गॉव मे, सूखे का था काल पडा।
गाय भैस मर गये सभी रे, रोटी का मोहताज हुआ ॥
भारी रुदन मचाता है अब, पाप कर्म के आने से।
रोटी भी नही मिलती उसको, कसम धर्म की खाने से ॥
कसम धर्म की खाने से अब, उसका बुरा हाल हुआ।
झूठी कसम खाई थी उसने, उसका है अजाम मिला ॥
रो-रो कहता है सबसे, कसम धर्म की तुम मत खाना।
चाहे कितनी पडे मुसीबत, भूल धर्म को मत जाना ॥
सुनने वालो, सुन लो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
कसम धर्म की कभी न खाना, धर्म ही पार लगाता है ॥

दृष्टांत–धर्म की व धर्मात्माओं की निंदा करनेवाले का

नही निदा करना जीवन मे, धर्म और धर्मात्मा की।
निदा से सहनी पडती है, घोर विपत्ति नरकन की ॥
धर्म की निदा करनेवाले, नरक द्वार मे जाते है।
रोटी नही मिलती खाने को, भारी कष्ट उठाते है ॥
जितनी ज्यादा हो सकती हो, श्रद्धा धर्म मे लाना।
धर्म मार्ग मे लगे हुओ की, सेवा कर हर्षाना ॥
सद गुरुओ की सेवा भैया, बीज धर्म का बोती है।
भाव धर्म का जिस घर मे है, नही कमी कुछ रहती है ॥
एक लडके की कथा सुनो तुम, लिखकर तुम्हे सुनाता हूॅ।
निदा करता धर्म की जो था, उसकी कथा सुनाता हूॅ ॥

एक व्यक्ति था एक गॉव मे, साहूकार कहाता था।
महल मकान बहुत थे उसके, पाकर खुशी मनाता था ॥
ऋषि-मुनियो की निदा वो तो, खुश हो करके करता था।
नही अपने से बडा किसी को, वो नादान समझता था ॥
धर्म मार्ग मे लगे हुओ का, सदा अनादर करता था।
वचन बुरे वो कहकर उनको, मन अपने हर्षाता था ॥
ढोग धर्म को कह करके वो, खुश मन मे हो जाता था।
धर्म की निदा का फल क्या है, नही समझ वो पाता था ॥
करते-करते पाप कभी तो, घडा पाप का भरता है।
पाप कर्म के कारण प्राणी, चौरासी मे रुलता है ॥
पाप उदय अब आया उसका, देखो अब क्या होता है।
धर्म की निदा करने से तुम, सुनो हाल क्या होता है ॥
एक दिना वो बेठ कार मे, किसी काम से जाता है।
हुई ट्रक से टक्कर उसकी, एक हाथ नही रहता है ॥
पैर भी दोनो कट गए उसके, हाय हाय चिल्लाता है।
नही उठानेवाला कोई, निदा का फल भरता है ॥
महल मकान काम नही आए, नही नाती कोई आया।
तडफ-तडफ वो मर गया भैया, नही कफन मिलने पाया ॥
ऐसी हालत हो जाती है, धर्म को ढोग बताने से।
नरको के दु ख सहने पडते, निदा धर्म की करने से ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
श्रद्धा रखो धर्म मे अपने, धर्म ही पार लगाता है ॥

दृष्टांत—इस जीव का सच्चा साथी कौन है!

सच्चा साथी कौन जीव का, आज तुम्हे बतलाता हूँ।
देव शास्त्र गुरु पूज्य जगत मे, महिमा इनकी गाता है ॥

दु ख मे काम जो आता भैया, वो साथी कहलाता है।
सच्चा साथी धर्म जीव का, दु ख नही होने देता है ॥
धर्म मित्र से करो मित्रता, धर्म महा उपकारी है।
सच्चा मित्र धर्म है भैया, महिमा इसकी भारी है ॥
पाप सभी कट जाते भैया, धर्म मार्ग अपनाने से।
कष्ट नही रहता है कोई, देव गुरु को ध्याने से ॥
धर्म को मित्र बनानेवाला, ही धर्मी कहलाता है।
धर्मी जहॉ पे जाता भैया, वहीं पे आदर पाता है ॥
धर्मी का जग आदर करता, धर्मी पार उतरता है।
धर्म ध्यान के कारण, प्राणी, शिव रमणी को वरता है ॥
धर्म मित्र से यश मिलता है, धर्म सुखो का दाता है।
करो मित्रता धर्म से भैया, धर्म ही पार लगाता है ॥
साथ नहीं देता जब कोई, धर्म मित्र तब देता है।
निर्जन वन मे भी प्राणी के, साथ धर्म ही रहता है ॥
जग के नाती साथी झूठे, धर्म मित्र एक सच्चा है।
धर्म मित्र की महिमा भैया, जाने बच्चा बच्चा है ॥
सच्ची मित्रता करो धर्म से, साथ धर्म ही जाएगा।
पाप कर्म से बचा जीव को, सिद्ध द्वार ले जाएगा ॥
सिद्ध द्वार मे जा सकता है, धर्म को मित्र बनाने से।
कष्टो से बच सकता भैया, धर्म मार्ग अपनाने से ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
धर्म मित्र से करो मित्रता, धर्म ही पार लगाता है ॥

दृष्टांत—एक जेठानी एक दुरानी का!

एक जेठानी, एक दुरानी, एक गाँव मे रहती थी।
भावो मे था अतर उनके, वैसे सग मे रहती थी ॥

देख जेठानी जलती थी, सदा दुरानी को अपनी।
नही कभी मदिर जाती थी, नही कभी माला जपती ॥
नही बरकत थी घर मे उसके, नही धर्म को जाना था।
खाने पीने मौज उडाने मे, सुख उसने माना था ॥
नही आहार किया मुनियो का, नही दान वो करती थी।
किसी तरह से आए पैसा, भाव ये मन मे रखती थी ॥
हुक्म चलाती मर्द पे अपने, घर का काम कराती थी।
साथ पडौसी के अपने वो, दिन भर लडती रहती थी ॥
बच्चे ज्यादा हो गए घर मे, नही खाने को दाना था।
कभी नही उसने जीवन मे, धर्म को भैया माना था ॥
धर्म नही जिस घर मे होता, वो शमशान कहाता है।
भूत प्रेत रहते उस घर मे, सुख नही वहॉ पर रहता है। ॥
लक्ष्मी नही वहॉ पे रहती, कलह हमेशा रहती है।
धर्म नही जिस घर मे होता, बरकत नही वहॉ रहती है ॥
सुनो दुरानी का भी किस्सा, तुमको आज सुनाता हूॅ।
कथा सुनाने से पहले मै, प्रभु को शीश झुकाता हूॅ ॥
धर्म ध्यान की मूरत थी वो, धर्म को उसने जाना था।
ऋषि-मुनियो को उसने भैया, पूज्य हमेशा माना था ॥
ऋषि-मुनि जो गॉव मे जाते, आहार उन्ही को देती थी।
दे आहार ऋषि-मुनियो को, बीज धर्म का बोती थी ॥
सुबह सवेरे उठकर नित वो, जिन मदिर मे जाती थी।
करके पूजा पाठ प्रभु की, अपना भाग्य सराहती थी ॥
नही कलह थी घर मे उसके, नही पैसे की इच्छा थी।
नही भाव थे बुरे उसके, नही कमी कुछ घर मे थी ॥
छूकर चरण पति के अपने, अपना भाग्य सराहती थी।
पति बिना होना घर सूना, पति की सेवा करती थी ॥

वास था लक्ष्मी का घर उसके, स्वर्ग बना था घर उसका।
सभी पडौसी खुश थे उससे, नरम बहुत स्वभाव था उसका ॥
सार कविता का समझो तुम, समझो भाव कविता का।
सुख से रहना चाहते गर तुम, करो भजन नित प्रभु जी का ॥
सुनकर बहनो कविता को तुम, नही किसी से लडना।
रहो प्रेम से घर मे अपने, ध्यान प्रभु को रखना ॥
चाहे औरत बनाना घर को, स्वर्ग बना वो सकती है।
चाहे नरक बनाना घर को, बना नरक वो सकती है ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
धर्मी औरत जिस घर होती, आबाद हमेशा रहता है ॥

दृष्टांत–जिनके लिए हम आज पाप कर रहे हैं वही कल हमें धोखा देंगे!

बचके रहना पाप से भैया, पाप नरक ले जाता है।
पाप उदय जब आता भैया, काम न कोई आता है ॥
पाप उदय जब आता भैया, साथी दुश्मन हो जाते।
बात नही करते घरवाले, अपने पीछे हट जाते ॥
घृणा करने लगते है सब, पाप उदय मे आने से।
पाप उदय आ जाता भैया, भूल धर्म को जाने से ॥
भूल धर्म को जाते है जो, उनका हाल सुनाता हूँ।
धर्म महा उपकारी भैया, गुण मुनियो के गाता हूँ ॥
एक गॉव मे एक व्यक्ति था, साहूकार कहाता था।
पैसे के लालच मे आकर, भूल धर्म को जाता था ॥
रिश्ते नातो मे फस करके, सारा समय बिताता था।
जिन दर्शन भी भूल गया था, विषयो मे सुख पाता था ॥
कहता था खुश होकर सबसे, नाते रिश्ते मेरे है।
बीवी बच्चे है सब मेरे, सभी पडौसी मेरे है ॥

मेरे सुदर कोठी बगले, मेरी सुदर गाडी है।
मेरी औरत पे रे भैया, सबसे सुदर साडी है ॥

ऐसी बाते करता था वो, भूल धर्म को जाने से।
क्या हालत हो जाती भैया, पाप उदय मे आने से ॥

पाप उदय अब आया उसका, देखो कैसा हाल हुआ।
नही बचा है घर मे कुछ भी, रोटी का मोहताज हुआ ॥

सौ टन रुई ले ली उसने, लेकर के गोदाम भरा।
पैसा लेकर गिरवी उसने, रुई का व्यापार करा ॥

एक दिना वो किसी काम से भैया बाहर जाता है।
लगी अचानक आग रुई मे, नही वहॉ कुछ बचता है ॥

वापिस आया जब वो व्यक्ति, चक्कर खा गिर जाता है।
पाप उदय के कारण भैया, पास न कुछ भी रहता है ॥

कोठी बगले बिक गए सारे, फिर भी कर्जा नही उतरा।
गाडी मोटर नही रही अब, वो नगे पैरो फिरता ॥

रोटी नही मिलती खाने को, रो-रो रुदन मचाता है।
भूल धर्म को जाने से वो, भारी कष्ट उठाता है ॥

घरवाली भी नही पास मे, उसके अब वो आती है।
सकल सूरत भी उसकी अब तो, बुरी सबको लगती है ॥

शिक्षा लेकर कविता से तुम, धर्म मार्ग को अपनाना।
चाहे कितनी पडे मुसीबत, भूल धर्म को मत जाना ॥

सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
धर्म मार्ग पर चलनेवाला, कष्टो से बच जाता है ॥

दृष्टात—दो भाइयों का (आपस में कभी मत लड़ो)

नही लडना आपस मे भैया, लडने से दुख होता है।
धर्म मार्ग पर चलकर प्राणी, भव सागर तर जाता है ॥

लडने से आपस मे भैया, कलह हमेशा रहती है।
कलह जहा पर रहती भैया, नही लक्ष्मी वहाँ रहती है ॥
धर्म जहा पर होता भैया, लक्ष्मी स्वय आ जाती है।
धर्मी के घर रहकर लक्ष्मी, अपना भाग्य सराहती है ॥
दो भाइयो की सुनो कथा तुम, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
कलह से हाल हुआ क्या उनका, उनकी कथा सुनाता हूँ ॥
दो भाई थे एक गाँव मे, दोनो मिलकर रहते थे।
नही धर्म करते थे दोनो, नही जिन मंदिर जाते थे ॥
खाना पीना मौज उडाना, उन दोनो ने जाना था।
पैसे को ही बडा जगत मे, उन दोनो ने माना था ॥
उन दोनो के पिताजी भैया, मालदार कहलाते थे।
मरते समय पिता ने अपने, दोनो पुत्र बुलाए थे ॥
जितना माल पास था उसके, उन दोनो मे बाट दिया।
करके सुमरन प्रभु का उसने, निज प्राणो का त्याग किया ॥
धर्म भाव थे नही दोनो मे, दोनो क्या मन लाते है।
एक दूसरे का पैसा वो, दोनो लेना चाहते है ॥
बडा प्लान बनाता है क्या, ध्यान लगाकर सुन लेना।
छोटे के भी मन की बाते, मेरे भैया सुन लेना ॥
कहता बडा मार छोटे को, मै मालिक बन जाऊँगा।
लेकर हिस्सा छोटे का भी, हरदम मौज मनाऊँगा ॥
कहता छोटा मन मे अपने, जहर बडे को देऊँगा।
जहर मिलाकर खाने मै, हिस्सा इसका लेऊँगा ॥
दोनो के मन की बाते अब, भैया बाहर आएगी।
कलह पिशाचन इन दोनो की, जाने ले हरषाएगी ॥
छोटा भैया बनाके खाना, उसमे जहर मिलाता है।
बडे भाई को बुलाके छोटा, खाने को अब कहता है ॥

लेकर छुरा चला जेब मे, बडा वहॉ पर आता है।
पैसे मे अधा होकर वो, मार छोटे को देता है ॥
मर गया छोटेवाला भैया, छुरा उसका खाने से।
खाना खाने लगा बडा अब, भूख पेट मे होने से ॥
खाना खाते ही वो भैया, दम को अपने तोड चला।
जहर मिला था उस खाने मे, अपना भी हक छोड चला ॥
ऐसी हालत होती भैया, धर्म ध्यान बिसराने से।
अपना भी नही रहता भैया, हक गैरो का लेने से ॥
सुनकर कविता को भैया तुम, नही आपस मे लडना।
धर्म मार्ग पर चलकर भैया, आत्म का हित करना ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
नही परस्पर लडे कभी हम, धर्म सुखो का दाता है ॥

दृष्टांत—बढ़िया माल के पैसे लेकर घटिया माल देनेवाले की गति!

बढिया माल दिखाकर भैया, नही कभी घटिया देना।
पैसे के लालच मे आकर, नही धर्म को तज देना ॥
धर्म को तजनेवाले भैया, नरक गति मे जाते है।
धर्म मार्ग पर चलनेवाले, आत्म हित कर पाते है ॥
लेकर बढिया माल के पैसे, जो घटिया दे देते है।
क्या हालत होती है उनकी, लिखकर तुम्हे सुनाते है ॥
भारी विपदा पडती उन पर, जेलो मे वो जाते है।
अशुभ कर्म के कारण मरकर, नरको के दु ख पाते है ॥
एक गॉव मे एक व्यक्ति था, दूर धर्म से रहता था।
अशुभ कर्म के कारण उसका, मन पापो मे रहता था ॥
बडा समझता था अपने को, बेइमानी करने से।
पैस बढ गया घर मे उसके, पाप रात दिन करने से ॥

करते करते पाप कभी तो, घडा पाप का भरता है।
पाप कर्म के कारण प्राणी, चौरासी मे रुलता है ॥

पाप कर्म करता जो प्राणी, पापो का फल पाएगा।
खाएगे सब कुनबेवाले, नरक मे इकला जाएगा ॥

नरक गति मे जाकर प्राणी, इकला कष्ट उठाता है।
साथ नही जाते घरवाले, जिनकी खातिर मरता है ॥

देखो उस व्यक्ति का पैसा, किस रस्ते से जाता है।
पैसा तो जाता ही है पर, स्वय नरक मे जाता है ॥

पसारा परचून बेचकर, समय बिताता जाता था।
बढिया माल के पैसे लेकर, घटिया वो दे देता था ॥

एक दिना राजा के मत्री, उसी गॉव मे जाते है।
घोडा लेकर सग मे अपने, किसी काम से जाते है ॥

काम नही पूरा हो पाया, अधकार हो जाता है।
ठहरेगे हम आज यही पर, मत्री मन मे कहता है ॥

घोडे खातिर दाना लेने, मत्री स्वय ही जाते है।
चलते चलते मत्री जी तो, पहुच दुकान पर जाते है ॥

खरीद लिया दाना मत्री ने, लेकर वापस आते है।
रखकर पास घोडे के दाना, मत्री जी हट जाते है ॥

घोडे ने नही खाया दाना, दुर्गध उससे आती थी।
कीडे मच्छर भरे हुए थे, देख के उल्टी आती थी ॥

लेकर दाने को मत्री जी, वापस वही पे आते है।
दिखा के दाना उस व्यक्ति को, सग अपने ले जाते है ॥

ठूस दिया जेलो के अदर, करी पिटाई भारी।
श्वास बद हो गया रे उसका, रह गई इकली नारी ॥

आगे नही बढाकर इसको, पूर्ण यही पर करता हूँ।
पाप कर्म से डरना भैया, ध्यान प्रभु का करता हूँ ॥

पाप कर्म से डरे सभी हम, नित मदिर मे जाए।
जिनवाणी को सुनकर भैया, सच्चे सुख को पाए ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
पाप कर्म से डरे सभी हम, पाप नरक ले जाता है ॥

दृष्टांत—जो भी सज्जन सुबह उठकर भगवान के दर्शन करते हैं उनके सभी कार्य स्वयं सिद्ध हो जाते हैं।

रामू श्यामू दो भाई थे, दोनो की तुम कथा सुनो।
आत्म का हित चाहते हो तो, ऋषि-मुनियो की बात सुनो ॥
ऋषि-मुनियो की सगत से ही, सच्चा सुख मिल सकता है।
धर्म मार्ग पर चलकर प्राणी, मुक्ति पद पा सकता है ॥
धर्म महा उपकारी जग मे, धर्म ही पार लगाता है।
लेता है जो शरण धर्म की, भव से वो तर जाता है ॥
छोड धर्म को जो भी प्राणी, विषयो मे सुख पाते है।
मरकर जाते नरक गति मे, भारी कष्ट उठाते है ॥
रामू श्यामू दो भाई की, तुमको कथा सुनाता हूँ।
शिक्षा लेना सुनकर इनसे, गुण मुनियो के गाता हूँ ॥
रामू श्यामू दो भाई थे, दोनो हिल मिल रहते थे।
भावो मे था अतर उनके, वैसे सग मे रहते थे ॥
रामू नही मदिर जाता था, नही दान वो करता था।
धर्म ध्यान किसको कहते है, रामू नही समझता था ॥
आदर नही किया गुरुओ का, विनय नही जिनवाणी की।
जिन पूजन का ध्यान नही था, इच्छा चोरी करने की ॥
किसी तरह से आए पैसा, हरदम आस लगाता था।
बडा भाई था रामू फिर भी, धर्म नही मन लाता था ॥
एक दिना रामू जी भैया, चोरी करने जाते है।
घर मे घुसकर एक सेठ के, तिजोरी पर हाथ लगाते है ॥

करट लगा था उसमे भैया, पकड तिजोरी लेती है।
मर गए रामू उसी जगह पर, श्वास नली रुक जाती है ॥
मरकर पहुचे नरक द्वार मे, छोड धर्म को देने से।
कितनी विपदा सहता रामू, चोरी का धन लेने से ॥
श्यामू का भी सुनो हाल तुम, तुमको आज सुनाता हूँ।
श्यामू से हो बच्चे घर मे, अर्ज प्रभु से करता हूँ ॥
गहरी श्रद्धा थी श्यामू मे, नित मंदिर मे जाता था।
करके पूजन श्री जिनवर की, अपना भाग्य सराहता था ॥
ऋषि-मुनियो के चरणो मे वो, श्रद्धा गहरी रखता था।
सुनकर उनकी अमृत वाणी, धर्म का पालन करता था ॥
चार्तुमास जहा पर भैया, ऋषि-मुनियो के होते थे।
जाकर श्यामू वहॉ पे भैया, दर्शन कर खुश होते थे ॥
ऋषि-मुनियो के चरण कमल ही, बीज धर्म का बोते है।
करते है जो भक्ति उनकी, भव से वो तिर जाते है ॥
ज्यादा नही लिख करके इसको, पूर्ण यही पर करता हूँ।
लेना शिक्षा पढकर इससे, ध्यान प्रभु का करता हूँ ॥
एक दिना एक नगर मे भैया, मुनियो का सघ आया था।
श्यामू जी भी गए वहॉ पर, दर्शन कर हर्षाया था ॥
दर्शन करके बैठे श्यामू, श्वास बद हो जाता है।
शुभ कर्मो के कारण श्यामू, स्वर्ग सुखो को पाता है ॥
मन वांछित फल मिलता भैया, धर्म ध्यान मन लाने से।
पाप सभी कट जाते भैया, जिन दर्शन नित करने से ॥
श्यामू जी से बने सभी हम, श्रद्धा भाव जगाए।
ऋषि-मुनियो की करके भक्ति, सच्चे सुख को पाए ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
धर्म उपकारी जग मे, धर्म साथ मे जाता है ॥

दृष्टांत–आत्मा को जाने बिना सब व्यर्थ है!

आत्मा को नही जाना तूने, सब कुछ तूने जान लिया।
बिन आत्म को जाने तूने, जीवन व्यर्थ गवाए दिया ॥
इंद्रियो का करता है पोषण, धर्म नही मन लाने से।
आत्म को तू भूल गया है, विषयो मे सुख पाने से ॥
विषयो मे गर सुख होता तो, तीर्थंकर क्यो तजते।
छोड के सारे धन वैभव को, आत्म को क्यो भजते ॥
आत्म राम को भजकर ही वे, तीर्थंकर कहलाए।
पाया केवल ज्ञान उन्होने, जग मे पूज्य कहाए ॥
आत्म ही परमात्म बनता, आत्म सुख का सागर है।
सच्चा सुख है इसके अदर, ज्ञान गुणो की गागर है ॥
जिसने निज को जाना भैया, उसने सच्चा सुख पाया।
पर मे नही निशानी सुख की, मुनियो ने यह बतलाया ॥
पर मे सुख को मान रहा तू, इसीलिए दु ख पाता है।
पर तो स्वय ही महा दु खी है, सुख कैसे दे सकता है ॥
सुख वो ही दे सकता भैया, जिसने निज को जाना है।
पर वस्तु से राग हटाकर, आत्म को पहचाना है ॥
पर वस्तु से राग हटाकर, आत्म ध्यान लगा ले।
सच्चा सुख मिलता हे जिससे, उसको तू अपना ले ॥
सच्चे सुख की अगर है इच्छा, देव गुरु को ध्याले।
जिनवाणी को सुनकर भैया, जीवन सफल बना ले ॥
इद्रियो का नही कर पोषण तू, नही विषयो की चाह।
राग द्वेष का नाम मिटाकर, अजर अमर पद पाय ॥
नाते नाती पोता पोती, मतलब का ससार है।
इनमे रुचि रखने से ही, मिले नरक का द्वार है ॥
इनमे रुचि रख ले चाहे, इनसे प्रीति हटा ले।
जैसा चाहे मेरे भैया, अपना भाग्य बना ले ॥

करुणा करके ऋषि-मुनियो ने, सही मार्ग बतलाया है।
त्याग तपस्या के द्वारा ही, सच्चे सुख को पाया है ॥
त्याग तपस्या करे सभी हम, आत्म ध्यान लगाए।
पर वस्तु से राग हटाकर, सच्चे सुख को पाए ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
निज आत्म का ध्यान करे हम, करके ही सुख पाता है ॥

दृष्टांत—दो बहनों का जीव जैसा कर्म करता है वैसा ही फल पाता है।

अच्छे कर्म करो रे भैया, अच्छा ही फल पाओगे।
अच्छे कर्मो के करने से, कष्टो से बच जाओगे ॥
करता है जो कर्म बुरे वो, फल बुरा ही पाता है।
काटे बोनेवाला भैया, आम नही पा सकता है ॥
जिन्हे भिखारी कहते है हम, उनकी हालत भी देखो।
सेठ जिन्हे हम कहते भैया, उन सेठो को भी देखो ॥
हे दोनो ही पुरुष वो भैया, अतर दोनो मे कितना।
करता है एक दान प्रतिदिन, एक हाथ पसारे है फिरता ॥
करता है एक प्रभु का पूजन, एक चोरी नित करता हे।
जैसा कर्म करे ये प्राणी, वैसा ही फल भरता है ॥
कर्म विषय मे एक कहानी, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
दो बहनो की कथा तुम्हे मै, गाकर आज सुनाता हूँ ॥
सुनकर इस कविता को भैया, धर्म ध्यान मे चित लाना।
धर्म महाउपकारी जग मे, भूल नही उसको जाना ॥
एक बाप की थी दो बेटी, दोनो हिल मिल रहती थी।
भावो मे था अतर उनके, वैसे सग मे रहती थी ॥
छोटी बेटी धर्म ध्यान मे, सबसे आगे रहती थी।
करके निदा बडी धर्म की, मन अपने खुश होती थी ॥

शादी योग्य हुई जब दोनों, विवाह उन्हो का होता है।
उन दोनो की किस्मत का अब, देखो फैसला होता है ॥
एक ही मात पिता दोनो के, एक ही घर मे बडी हुई।
एक ही जगह पढी वे दोनो, लेकिन किस्मत जुदी-जुदी ॥
सास के घर मे छोटी बेटी, सबसे आदर पाती है।
बडी बेटी तो सास के घर मे, सबसे गाली खाती है ॥
जेठा पुत्र हुआ छोटी के, घर मे आनद छाता है।
बडेवाली का मेरे भैया, पति देव मर जाता है ॥
पुत्र हुआ जो छोटी के वो, धर्म मे रुचि रखता है।
बडेवाली का नाम रे भैया, अब तो विधवा पडता है ॥
निदा करते है सब उसकी, वचन बुरे सब कहते है।
आदर करके छोटी जी का, मन मे सब खुश होते है ॥
ज्यादा नही बढाकर इसको, पूर्ण यही पर करता हूँ।
सुनो ध्यान से कान लगाकर, अर्ज सभी से करता हूँ ॥
किया धर्म था छोटी जी ने, धर्म का फल उसने पाया।
आदर पाया सभी जनो से, पुत्र रत्न उसने पाया ॥
धर्म की निदा करी बडी ने, करके मन मे हर्षाई।
पति वियोगन हो करके वो, जग मे विधवा कहलाई ॥
मन वाछित फल मिलता भैया, धर्म मार्ग अपनाने से।
नरको के दुख मिलते भैया, धर्म की निदा करने से ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
धर्म मार्ग पर चलकर प्राणी, भव से पार हो जाता है ॥

दृष्टांत–धर्म मित्र ही सबसे बड़ा मित्र है

करो मित्रता धर्म से भैया, मित्र धर्म ही प्यारा है।
मित्र बनाता हे जो इसको, मिलता उसे सहारा है ॥

धर्म मित्र को छोड के भैया, सच्चा सुख नही पाओगे।
नही मित्रता करी धर्म से, सिर धुन-धुन पछताओगे ॥
विपत्ति समय मे जीव के भैया, काम धर्म ही आता है।
यही धर्म तो इस प्राणी को, भव से पार लगाता है ॥
अत समय मे इस प्राणी के, साथ धर्म ही जाता है।
धन दौलत को छोड के प्राणी, इकला जग से जाता है ॥
छोड धर्म को प्राणी जग मे, भारी कष्ट उठाते है।
नही समझते धर्म की महिमा, इसीलिए दु ख पाते है ॥
धर्म जहा पर होता भैया, धन स्वय ही आ जाता है।
नही कदर धर्म की भैया, शमशान नजर वहॉ आता है ॥
लक्ष्मी घर रहकर धर्मी के, अपना भाग्य सराहती है।
जितना खर्चे धर्मी उसको, उतनी बढती जाती है ॥
विपत्ति समय मे धर्मी जन की, धर्म ही रक्षा करता है।
जिसकी श्रद्धा धर्म मे भैया, सुखी हमेशा रहता है ॥
विपत्ति समय मे कैसे रक्षा, धर्म जीव की करता है।
इसी विषय मे एक कहानी, मोहन तुम्हे सुनाता है ॥
एक गॉव म एक लडका था, धर्मध्यान नित करता था।
देव गुरु के चरणो मे वो, श्रद्धा गहरी रखता था ॥
निश मे भोजन नही करता था, नही मदिरा वो पीता था।
सोते उठते सुबह सवेरे, ध्यान प्रभु का करता था ॥
तीर्थ क्षेत्रो की वदना को, समय-समय पर जाता था।
दे आहार ऋषि-मुनियो को, अपना भाग्य सराहता था ॥
अशुभ कर्म के कारण उसके, एक समय क्या होता है।
उस लडके के घर मे भैया, पैसा खत्म हो जाता है ॥
नही रहा खाने को दाना, धन वैभव सब खत्म हुआ।
करते-करते धर्म भी भैया, अशुभ कर्म का उदय हुआ ॥

अशुभ कर्म का नाश रे भैया, एक धर्म ही करता है।
शुभ कर्मो का उदय धर्म ही, मेरे भैया करता है ॥

एक दिना वो लडका भैया, किसी शहर मे जाता है।
काम मिले कुछ मुझको अच्छा, लेकर आसा जाता है ॥

धर्म मित्र भी देखो भैया, कैसे साथ निभाता है।
मालामाल बनाकर उसको, जग मे नाम कराता है ॥

उस लडके के धर्म के कारण, एक सेठ मिल जाता है।
बातो ही बातो मे उसको, घर अपने ले जाता है ॥

उत्तराधिकारी बना उसे वो, आदर उसका करता है।
जो भी बात कहे वो लडका, सेठ मान वो लेता है ॥

धर्म ध्यान के कारण लडका, अब तो सेठ कहाता है।
चला गया था जो धन उसका, उससे ज्यादा पाता है ॥

सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
धर्म मार्ग पर चलनेवाला, सुखी हमेशा रहता है ॥

सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता हे।
एक धर्म है जो जीवो को, भव से पार लगाता है ॥

दृष्टांत–जिस घर के अंदर धर्म के प्रति श्रद्धा नहीं रहती वह घर पतन को प्राप्त हो जाता है।

जिस घर मे श्रद्धा नही धर्म की, वह घर नही कब्रिस्तान है।
कब्रिस्तान तो मरो का घर है, वह जिंदा मरे समान है ॥

हरी धर्म की जड होती है, हरे धर्म के होते खेत।
धर्म मार्ग पर चलना भैया, निज आत्म के हेत ॥

निज आत्म की खबर नही है, भूल धर्म को जाने से।
पर मे सुख अनुभव करता है, नही ज्ञान के होने से ॥

बिना ज्ञान के प्राणी भैया, भारी कष्ट उठाता है।
चौरासी मे फिर भटकता, जरा नही सुख पाता है ॥

जितनी तृष्णा बढी हमारी, उतने हम परेशान हुए।
धर्म मार्ग को तजनेवाले, नरको के मेहमान हुए॥
चौबीस घटे बैठ सके हम, साग तमासे गाने मे।
तीस मिनट भी नही दे सकते, जिनवाणी के सुनने मे ॥
खता नहीं कुछ तेरी भैया, लील कर्म की न्यारी है।
अभी भटकना है नरको मे, विपदा सहनी भारी है ॥
विपदा से नही बचना चाहता, अशुभ कर्म के आने से।
जिनवाणी मे नही लगता मन, भूल धर्म को जाने से ॥
नही लग्न है तेरे मन मे, विपदा से बच जाऊँ।
कैसे आत्म को अपनी मै, मुक्ति योग्य बनाऊँ ॥
कैसे कटे कर्म शृखलाए, कैसे ज्ञान उपाऊँ।
कब वो शुभ दिन आए स्वामी, केवल ज्ञान को पाऊँ ॥
नही भावना ऐसी भाते, न ही निज का ध्यान।
ख्याति पैसे के चक्कर मे, भूले हम भगवान ॥
भूल गए भगवान को भैया, इसीलिए दुख पाते है।
जिनवाणी को नही सुनने से, नरक गति मे जाते है ॥
नरनारी जिस घर के अदर, धर्म मार्ग पर चलते है।
बच्चे भी उन जेसे होकर, धर्म का पालन करते है ॥
धर्म की गगा है जिस घर मे, उसका पतन नही होता।
रहता है आबाद हमेशा, कष्ट नही कोई होता ॥
घर को स्वर्ग बनाना है तो, धर्म मार्ग को अपनाओ।
जिनवाणी को सुनकर भैया, आत्म का हित कर पाओ ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
धर्म मार्ग पर चले सभी हम, धर्म सुखो का दाता है ॥

दृष्टांत—आज जैसे हम कर्म करते हैं वे ही कल हमारे उदय में आते हैं।

रात दिना हम देखते, अधे लगडे लोग।
भरे हुए है शरीर मे, महा भयकर रोग ॥
कोढी लूले जो बने, सब कर्मो का खेल।
घूम रही है चहु दिशा, चौरासी की रेल ॥
दीन भिखारी जो बने, सब कर्मो का योग।
अशुभ कर्म से है बने, बहरे काने लोग ॥
राजा मत्री पद मिला, मिला सभी सामान।
शुभ कर्मो के योग से, कहलाता गुणवान ॥
नही कर्म अच्छे करते हम, चाहे सुख से रहना।
नही कदापि हो सकता ये, जिनवाणी का कहना ॥
छिपकर पाप आज जो करते, वही उदय कल आते है।
कर्म विषय मे लिखकर तुमको, मोहन कथा सुनाते है ॥
पर नारी को तकनेवाला, मरकर काना कहलाता।
मै नही कहता अपनी तरफ से, शास्त्र हमे यह बतलाता ॥
सयम पालन करनेवाले, मुक्ति रानी वरते है।
चोरी जो खुश होकर करते, वो जेलो मे पडते है ॥
लेकर आड धर्म की जो जन, पैसा सग्रह करते है।
कपट भाव से मरनेवाले, मरकर बिल्ली बनते है ॥
छिपकर पाप कमाते है जो, नही जरा शरमाते है।
पथरी जैसे रोग भयकर, ही पापो से पाते है ॥
पर नारी और मा बहनो पर, जो कुदृष्टि रखते है।
नरको मे जाकर वो प्राणी, भारी दु खडे भरते है ॥
कुदृष्टि रखनेवाले का, किस्सा तुम्हे सुनाता हूँ।
सुनकर खडे रोगटे होगे, ऐसी कथा सुनाता हूँ ॥

श्री 108 आचार्य शान्ति सागर जी महाराज लेखक को आशीर्वाद देते हुए।

एक लडका था एक गॉव मे, कुदृष्टि वो रखता था।
लूट के इज्जत मा-बहनो की, समय वो पूरा करता था ॥
इज्जत लूट रहा था इक दिन, आयु पूर्ण हो जाती है।
चलती-चलती श्वास नली, उसकी बद हो जाती है ॥
मरकर पहुचा नरक द्वार मे, देखो अब क्या होता है।
उस लडके का कैसा स्वागत, नरक द्वार मे होता-है ॥
लबी-चौडी एक कढाई, तेल से भर दी जाती है।
मिर्च डालकर तेल के अदर, खूब पकाई जाती है ॥
सुदर औरत एक लोहे की, गरम लाल कर देते है।
खूब सजाकर उस औरत को, खडी उसमे कर देते है ॥
कहते है उस लडके से अब, इस नारी को अपनाओ।
अपनाकर सुदर नारी को, भैया अब तुम हर्षाओ ॥
सुनकर लडका बाते उनकी, औरत को अपनाता है।
हाथ लगाते ही औरत को, हाय-हाय चिल्लाता है ॥
गिरा कढाई मे वो लडका, नही दु ख वर्णन कर सकता।
कितनी पीडा हुई लडके को, कवि यहॉ नही लिख सकता ॥
लेकर शिक्षा उस लडके से, धर्म मार्ग अपनाओ।
जिनवाणी को सुनकर भैया, आत्म का हित कर पाओ ॥
कुदृष्टि ना रखना भैया, पर नारी मा-बहनो पर।
आत्म का हित चाहते हो तो, चलो धर्म के रस्ते पर ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
पाप मार्ग को तजे सभी हम, पाप नरक ले जाता है ॥

दृष्टांत—संगति का प्रभाव अवश्य पड़ता है

सगत से ही बने वेश्या, सगति से भगवान है।
करते जो सगति मुनियो की, वो ही पुरुष महान है ॥

सगति का प्रभाव रे भैया, पडे बिना नही रहता है।
लोहा पारस की सगति कर, पारस ही हो जाता है ॥
मीठा जल सागर मे मिलकर, जैसे खारा हो जाता है।
लकडी का टुकडा चदन मे, मिलकर चदन कहलाता ॥
इसी तरह से सगति अपना, निज प्रभाव दिखाती है।
ऋषि-मुनियो की सगति से, आत्म कुदन बन जाती है ॥
ऋषि-मुनियो की करना सगति, सगति कर हर्षाना।
कुसगति का करे त्याग हम, मुनियो के गुण गाना ॥
बुद्धू भी मुनियो की सगति से, पडित बन जाता है।
कुसगति मे पडकर ज्ञानी भी, बुद्धू बन जाता है ॥
सगति के प्रभाव की तुमको, लिखकर कथा सुनाता हूँ।
करना सगति ऋषि-मुनियो की, महिमा इनकी गाता हूँ ॥
एक लडका था एक गॉव मे, मद बुद्धि कहलाता था।
चौबीस घटे मेहनत करके, भी नही विद्या पाता था ॥
एक दिना उस गॉव के अदर, मुनिराज इक आते है।
दया के धारी, पर उपकारी, हित उपदेश सुनाते है ॥
मद बुद्धि भी जाकर भैया, मुनि को शीश झुकाता है।
विनय भाव से करके दर्शन, अपना भाग्य सराहता है ॥
शुभ कर्मो का हुआ उदय अब, विनय भाव मन लाने से।
निर्मल बुद्धि हो गई उसकी, मुनियो के गुण गाने से ॥
करके दर्शन ऋषि-मुनियो के, अपना भाग्य सराहता है।
निर्मल बुद्धि पाकर उसको, लिखना भी आ जाता है ॥
ऋषि-मुनियो की सगति करके, लडका लिखता जाता है।
मद बुद्धि कहलानेवाला, अब पडित कहलाता है ॥
बुद्धू भी बन जाता पडित, सगति अच्छी पाने से।
पडित भी हो जाता बुद्धू, कुसगति मे आने से ॥

कुसगति का करे त्याग हम, जिनवाणी मन लाए।
अमृत वाणी सुन मुनियो की, ज्ञान की ज्योति जलाए ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
ऋषि-मुनियो की सगति करके, भजन बनाकर लाता है ॥

दृष्टांत—धर्म मार्ग पर चलने से आत्मा का कल्याण होता है

धर्म मार्ग पर चलनेवाला, जग मे धर्मी कहलाता।
सयम का पालन कर प्राणी, सिद्ध शिला को है जाता ॥
सयम ही सुख का साधन है, सयम मुक्ति देता है।
सयम धर्म ही इस प्राणी को, पदवी ऊँची देता है ॥
सयम नही पालते जो जन, सच्चा सुख नही पाते है।
मरकर जाते नरक गति मे, भारी कष्ट उठाते है ॥
पशु पक्षी जो देख रहे हम, इनकी कथा निराली है।
जिनवाणी माता को भैया, सौ-सौ नमन हमारी है ॥
जिनवाणी की महिमा को हम, वर्णन नही कर सकते है।
विनय भक्ति से जिनवाणी की, भवसागर तर सकते है ॥
सुनते पढते है ज्यादा हम, नही थोडा भी गुनते है।
गुननेवाले जिनवाणी को, आत्म का हित करते है ॥
चेतन पुदगल अलग-अलग है, नही समझ हम पाते है।
जिसने समझ लिया है इनको, वो ही मुक्ति पाते है ॥
सुलोचना जयकुमार तो भैया, पूर्व भवो मे पक्षी थे।
तिर्यच योनि मे भी दोनो, भाव धर्म के रखते थे। ॥
धर्म मार्ग पर चलने से वे, मनुष्य गति मे आए थे।
शास्त्रो मे वर्णन उनका, नियम धर्म मन लाए थे ॥
निदा जो करते मुनियो की, नरक पशु गति पाते है।
भूखे प्यासे रह करके वो, तीव्र वेदना सहते है ॥

धर्म मार्ग से हटनेवाले, ध्यान लगाकर सुन लेना।
आत्म का हित चाहते हो तो, गुरुओ की वाणी सुनना ॥
जिनवाणी को नही सुना तो, नरक पशु गति पाओगे।
भारी मार पडेगी जब तुम, रो-रो रुदन मचाओगे ॥
पशु गति मे खाल खीचकर, भूस अदर भर देते है।
कितने दु ख है पशु गति मे, आक नही हम सकते है ॥
मनुष्य गति को पाकर भी तो, धर्म नही मन लाते है।
जिनवाणी को ठुकराकर जो, भूल धर्म को जाते है ॥
ऐसे प्राणी मरकर भैया, नरक पशु गति पाते है।
करके बात याद गुरुओ की, सिर धुन-धुन पछताते है ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
नियम धर्म ही इस प्राणी को, भव से पार लगाता है ॥

दृष्टांत—जिनेंद्र देव के दर्शन की महिमा

दर्शन करने से प्रभु जी के, पापो का क्षय होता है।
निकाचित कर्म उदय मे आकर, बिन फल के गल जाता है ॥
जो भी सज्जन नित प्रतिदिन, जिन मदिर मे जाते है।
करके दर्शन श्री जिनवर के, अपना भाग्य सराहते हे ॥
मन वाछित फल पाते हे वो, हरदम मौज उडाते है।
सच्चा सुख मिलता है उनको, नही कष्ट वो पाते है ॥
विपदा भी यदि आए कोई, वो भी स्वय टल जाती है।
दर्शन करने से प्रभु जी के, दूर विपत्ति भग जाती है ॥
आनद मगल होता जीवन, नित मदिर मे जाने से।
मुक्ति टिकट मिलता भैया, दर्श प्रभु का करने से ॥
दर्श प्रभु का करने से, कैसे विपदा टलती है।
लिखकर तुम्हे सुनाता हूॅ मै, कैसे दौलत मिलती है ॥

सुनकर इस कविता को भैया, नित मदिर मे जाना।
करके दर्शन श्री जिनवर के, अपना भाग्य सराहना ॥
एक लडका था एक गाँव मे, नही वो मदिर जाता था।
दूर धर्म से रहता था वो, मदिरा नित वो पीता था ॥
धर्म ध्यान की बातो से वो, लडका नफरत करता था।
अशुभ कर्म के कारण लडका, कुमार्ग पर चलता था ॥
एक दिना उस गॉव मे भैया, जैन मुनि इक आते है।
धर्म कर्म की सच्ची बाते, जीवो को सिखलाते है ॥
वो लडका भी मेरे भैया, पास मुनि के जाता है।
करके दर्शन मुनिराज के, अपना शीश झुकाता है ॥
करुणा के धारी, पर उपकारी, नियम उसे इक देते है।
नित दर्शन करना श्री जिन के, नियम उसे यह देते है ॥
लेकर नियम मुनि से लडका, जिन मदिर मे जाता है।
काटा चुभ गया उस लडके को, लडका रोता आता है ॥
आकर लडका पास मुनि के, मुनिराज से कहता है।
अच्छा नियम दिया है तुमने, रोकर लडका कहता है ॥
मुनिराज थे अवधि ज्ञानी, सारी बाते जान गए।
करुणा करके उस लडके पर, मुनिराज ने वचन कहे ॥
बोले मुनिवर उस लडके से, सर्प तुम्हे डस लेता आज।
प्रभु दर्शन से केवल तुमको, चुभा पैर मे काटा आज ॥
जहा चुभा था काटा उसको, मुनिराज वहॉ पर जाते है।
शिला वहॉ पर पडी एक थी, उसको मुनि उठाते है ॥
शिला के नीचे सर्प पडा था, महा भयकर विषधारी।
खोदी जमीन शिला के नीचे, अशरफी थाल मिला भारी ॥
समझाया मुनिराज ने उसको, जिन दर्शन की महिमा न्यारी है।
जिन दर्शन के कारण भैया, बच गई जान तुम्हारी है ॥

बच गई जान तुम्हारी भैया, और अशरफी थाल मिला।
प्रभु दर्शन के ही कारण तू, आज तो मालामाल हुआ ॥
सुनकर बात मुनि की लडका, देखो अब क्या कहता है।
जिन मंदिर मे नित जाऊँगा, प्रभु दर्शन नित करता है ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
करके दर्शन श्री जिनवर के, अपना भाग्य सराहता है ॥

दृष्टांत—निर्धन से धनवान बनने का उपाय

निर्धन की नही पूछ जगत मे, पूछ है पैसेवाले की।
नही साथी निर्धन का कोई, दुनिया पैसेवाले की ॥
पैसा पास नही होने से, मित्र भी शत्रु हो जाते।
जिनको रिश्तेदार कहे हम, दूर सभी वे हो जाते ॥
बिन पैसे नही इस दुनिया मे, कोई इज्जत करता है।
पैसेवाले की हर कोई, जग मे इज्जत करता है ॥
पास नही है जिनके पैसा, पैसा पाना चाहते है।
इज्जत होवे इस दुनिया मे, माल खजाना चाहते है ॥
माल खजाना चाहनेवाले, माल तुम्हे मिल जाएगा।
जितना धन चाहते हो भैया, उतना धन मिल जाएगा ॥
बात अगर मानोगे मेरी, और श्रद्धा उस पर लावोगे।
सच कहता हूँ मेरे भैया, धन वैभव सब पाओगे ॥
सुनो ध्यान से मेरे भैया, बात तुम्हे समझाता हूँ।
ऋषि-मुनियो की करके भक्ति, कविता लिखता जाता हूँ ॥
सच्चा मित्र धर्म है जग मे, भूल नही इसको जाना।
चाहे कितनी पडे मुसीबत, धर्म पे अपने डट जाना ॥
नित मंदिर मे जाकर भैया, अपना भाग्य सराहना।
करके दर्शन श्री जिनवर के, मन मे खुशी मनाना ॥

देव शास्त्र गुरु पूज्य जगत मे, इनका ध्यान लगाया कर।
इन तीनो की भक्ति करके, अपना समय बिताया कर ॥

तीर्थ क्षेत्रो की वदना कर, भारी पुण्य कमाया कर।
दे आहार ऋषि-मुनियो को, अपना भाग्य सराहा कर ॥

निश मे नही भोजन करना रे, सदा छना जल पीना।
हिसा पाप मिटाकर भैया, राह धर्म की चलना ॥

इन बातो पर चलकर भैया, कष्टो से बच जाएगा।
गारटी से कहता हूँ मै, धन-वैभव सब पाएगा ॥

धन-वैभव तू पाकर भैया, हरदम खुशी मनाएगा।
धर्म मार्ग पर चलनेवाला, स्वर्ग मोक्ष सुख पाएगा ॥

सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
धर्म मार्ग पर चलनेवाला, सुखी हमेशा रहता है ॥

दृष्टांत—जो दूसरों का सुख चैन छीनते हैं वे हमेशा दुःखी रहते हैं!

नही सताना किसी जीव को, जीव सभी सुख चाहते है।
प्राण सभी को अपने प्यारे, वीर प्रभु बतलाते है ॥

दु ख से डरते सभी जीव है, नही दु ख कोई चाहता है।
सुख से रहना चाहते है सब, शास्त्र हमे बतलाता है ॥

रक्षा करता जो जीवो की, सुखी जगत मे रहता है।
भाव दया का जिसके दिल मे, नही दु खी वो होता है ॥

दया भाव देखो मुनियो का, कोमल पीछी रखते है।
छोटे से छोटे जीवो की, मुनिवर रक्षा करते है ॥

प्राणी मात्र उन मुनि जनो को, अपना शीश झुकाता है।
करके दर्शन मुनिवर के वो, अपना भाग्य सराहता है ॥

एक व्यक्ति की सुनो कहानी, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
जिसने सुख छीना जीवो का, उसकी कथा सुनाता हूँ ॥

एक मछेरा एक गॉव मे, मच्छी पकडा करता था।
मूक जीवो को सता मछेरा, सुख का अनुभव करता था ॥
नही दया मन मे थी उसके, नही धर्म कुछ सीखा था।
पकड के मच्छी उन्हे बेचना, ही जीवन मे सीखा था ॥
मूक पशु को सताके जो जन, मन मे खुशी मनाते है।
क्या हालत होती है उनकी, लिखकर तुम्हे सुनाते है ॥
एक दिना वो मछियारा तो, नदी किनारे जाता है।
लेकर सग मे जाल को अपने, पकडने मच्छी जाता है ॥
जाल फैलाकर नदी मे अपना, मछियारा हर्षाता है।
लटकाकर अपने पैरो को, बैठ नदी पर जाता है ॥
बहुत देर तक बैठे-बैठे, नही मछली कोई आई।
इसी बीच मे उस पर भैया, भारी विपदा है आई ॥
नदी के अदर एक मगरमच्छ, खीच उसे ले जाता है।
जैसे खाता था वो मछली, वैसे उसको खाता है ॥
पाच मिनट के अदर उसका, पता नही कुछ पाता है।
जैसा कर्म किया था उसने, फल उसका वो पाता है ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
नही सताए किसी जीव को, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत—एक जेठानी व एक दुरानी का
(आपस में लड़ने से घर का नाश हो जाता है)

नही लडो आपस मे भैया, रहे परस्पर प्रेम से।
प्रेमी आदर पाता जग मे, मिलता है सुख प्रेम से ॥
प्रेम नही जिस घर मे होता, पतन उसी का होता है।
कलह वहाँ पर रहती भैया, उदय पाप का होता है ॥
प्रेम नही रहने से भैया, बहुत घर है बरबाद हुए।
इसी कलह के कारण वो तो, रोटी के मोहताज हुए ॥

प्रेम नही जिस घर मे होता, उसकी कथा सुनाता हूँ।
रहो परस्पर प्रेम से भैया, गुण मुनियो के गाता हूँ ॥
एक दुरानी एक जेठानी, एक गॉव मे रहती थी।
प्रेम नही होने से दोनो, दु खी हमेशा रहती थी ॥
बात-बात पर उन दोनो मे, भैया झगडा होता था।
झगडा हो जाता था इतना, नही निपटने पाता था ॥
धर्म ध्यान की वे दोनो तो, नही कदर कभी करती थी।
लडने मरने और सिखाने मे, सुख अनुभव करती थी ॥
छोटी-छोटी बातो पर वो, आपस मे लड पडती थी।
पास मे था जिन मदिर उनके, नही कभी वो जाती थी ॥
बात सिखाकर घरवालो को, आपस मे लडवाती थी।
नरक बना था घर दोनो का, दु खी वे दोनो रहती थी ॥
एक बार दोनो मे भैया, झगडा इतना बढता है।
नही घटाए घटता झगडा, ज्यादा-ज्यादा बढता है ॥
एक दिना जेठानी भैया, देखो क्या कर जाती है।
मरती-मरती भी वो भैया, देखो क्या कर जाती है ॥
लिखकर चिट्ठी उसने रख दी, मुझे दुरानी ने मारा।
नही खुश थी ये मुझे देखकर, तेल छिडक कर है मारा ॥
पता लगा जब पुलिस को भैया, पुलिस वो चिट्ठी पढती हे।
चिट्ठी पढते पुलिस वो भैया, देखो अब क्या करती है ॥
देवर और दुरानी दोनो, जेलो मे अदर बद किए।
भारी मार लगाई उनको, और अनेको कष्ट दिए ॥
बिगड गए दोनो घर भैया, इज्जत भी सब चली गई।
प्रेम नही रहने के कारण, देखो कैसी गति हुई ॥
भाव यही लिखने का मेरा, रहो परस्पर प्रेम से।
नही लडे आपस मे भैया, मिलता है सुख प्रेम से ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
प्रेमी आदर पाता जग मे, प्रेम सुखो का दाता है ॥

दृष्टांत—मां अपने बेटे को जैसा चाहे बना सकती है

धन्य भाग्य है उनके भैया, जिनको धर्मी मा मिलती।
धर्मी मा ही जग मे भैया, वीर प्रभु से पुत्र जनती ॥
त्रिशला वामा धर्मी मा थी, धर्म ध्यान नित करती थी।
ऋषि-मुनियो को समय-समय पर, आहार दिया वो करती थी ॥
सिद्ध क्षेत्रो की वदना वो, समय-समय पर करती थी।
धर्म कार्यो मे वो भैया, सबसे आगे रहती थी ॥
जिन मदिर मे जाकर वो तो, अपना भाग्य सराहती थी।
सुखी रहे सब जीव जगत के, अच्छे भाव बनाती थी ॥
अच्छे भावो का फल देखो, फल देखो जिन दर्शन का।
वीर प्रभु सा पुत्र है जन्मा, धन्य धन्य है त्रिशला मा ॥
अच्छे भावो का फल देखो, फल देखो मुनि दर्शन का।
पारस प्रभु-सा पुत्र है जन्मा, धन्य-धन्य है वामा मा ॥
पारस प्रभु और वीरा स्वामी, तुम तीन लोक के स्वामी हो।
तुमरी महिमा है प्रभु न्यारी, तुम्ही अतर्यामी हो ॥
धर्मी माताओ ने भैया, ऋषि-मुनियो को जन्म दिया।
देकर जन्म उन्होने अपना, जीवन सफल बनाय लिया ॥
धन्य भाग्य है मेरे भैया, जो मुझको धर्मी मात मिली।
उस धर्मी मा के कारण ही, मुझे धर्म की राह मिली ॥
सोकर उठता था जब मै वो, धर्म के गीत सुनाती थी।
ऋषि-मुनियो की कर वो भक्ति, अपना भाग्य सराहती थी ॥
तीर्थ क्षेत्रो की वदना वो, करके खुशी मनाती थी।
धर्म कार्यो मे वो मुझको, सदा साथ ले जाती थी ॥
वो मा तो अब नही रही है, छोड हमे वो चली गई।
जाते-जाते माता हमको, बाते कुछ समझाय गई ॥
जाती हूँ मै तुम्हे छोडकर, नही धर्म को तुम तजना।
चाहे कितनी पडे मुसीबत, सदा धर्म पर तुम डटना ॥

धर्म ही सच्चा साथी जग मे, साथ धर्म ही जाता है।
धर्म मार्ग पर चलनेवाला, भव सागर तर जाता है ॥
मुझे भूल जाना चाहे तुम, नही धर्म को बिसराना।
करके भक्ति ऋषि-मुनियो की, करके मन मे हर्षाना ॥
चलकर मा की बातो पर मै, अपना भाग्य सराहता हूँ।
ऋषि-मुनियो के चरणो मे मै, अपना शीश झुकाता हूँ ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
धर्मी माता मिले सभी को, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत—नर तन चोला पाकर भी जो धर्म मार्ग नहीं अपनाते हैं उनकी दशा

नर तन चोला पाकर भी जो, भूल धर्म को जाते है।
जिन मदिर मे नही जाते, और निश मे भोजन खाते है ॥
नही भक्ति मुनियो की करते, नही सुनते जिनवाणी को।
नही सुहाती बात धर्म की, तकते है पर नारी को ॥
किस योनि मे जाते है वो, कोशिश की बतलाने की।
धर्म मार्ग पर चले सभी जन, कोशिश की है लाने की ॥
धर्म मार्ग अपनाओ भैया, धर्म ही पार लगाता है।
धर्म ही रक्षा करे जीव की, धर्म सुखो का दाता है ॥
धर्म ही इस प्राणी को भैया, कष्टो से बचवाता है।
देकर सच्चा ज्ञान धर्म ही, शिव रमणी से ब्याहता है ॥
नर तन चोला पाकर भी जो, मार्ग धर्म का भूल गए।
वो ही प्राणी मेरे भैया, मरकर उल्लू चील बने ॥
भूल गए जो मार्ग धर्म का, उनकी कथा सुनाता हूँ ॥
एक नर नारी का मै तुमको, किस्सा आज सुनाता हूँ।
एक नर नारी एक गॉव मे, मिलकर दोनो रहते थे ॥

विषय भोग मे ही वो अपना, सारा समय बिताते थे।
नही जिन मदिर जाते थे वो, नही तीर्थ पर जाते थे।
वे दोनो तो मिलकर भैया, निश मे भोजन खाते थे ॥
धर्म ध्यान की बातो से वो, दूर हमेशा रहते थे।
देव गुरु की नही विनय वो, सच्चे मन से करते थे ॥
अपने जीवन मे दोनो ने, धर्म मार्ग बिसराया था।
इसीलिए तो उन दोनो ने, भारी कष्ट उठाया था ॥
नर नारी मे से नर इक दिन, पास वैश्या के जाता है।
विषय भोग की लेकर इच्छा, पास मे उसके जाता है ॥
विषय नही सेवन कर पाया, श्वास बद हो जाता है।
मरकर वो तो बन गया उल्लू, नीचे को लटका रहता है ॥
नही दिखाई देता दिन मे, नही कुछ खाने को मिलता है।
भूल धर्म को जाने से ही, जीव चौरासी मे रुलता है ॥
रह गई इकली नारी घर मे, रो-रो रुदन मचाती है।
रोते-रोते उस नारी की, आयु पूर्ण हो जाती है ॥
अशुभ भाव से मरकर वो तो, मेरे भैया चील बनी।
मिलता मास उसे खाने का, सहनी विपदा पडे घनी ॥
बनकर चील सुनो क्या कहती, ध्यान लगाकर सुन लेना।
मेरे जैसा नही बनना तुम, मार्ग धर्म अपना लेना ॥
धर्म मार्ग बिसराकर मैने, भारी कष्ट उठाया है।
उत्तम कुल को पाकर मैने, जीवन व्यर्थ गवाया है ॥
धर्म मार्ग पर चलती तो मै, नही चील बनना पडता।
मेवा किसमिस छोड के मुझको, नही मास खाना पडता ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
भूल धर्म को जाने से ही, प्राणी कष्ट उठाता है ॥

दृष्टांत—एक अंधे व्यक्ति का

नही कहो अधे को अधा, कहने से है लगता पाप।
देव गुरु को भजो रात दिन, णमोकार की करना जाप ॥
णमोकार की जाप रे भैया, नाश पाप का करती है।
चाहे कितनी पडे मुसीबत, दूर उसे वो करती है ॥
देव गुरु की भक्ति भैया, सच्चे सुख को देती है।
श्रद्धा से जो करता भक्ति, भव से पार लगाती है ॥
बुरा किसी का नही करना तुम, भला हमेशा ही करना।
बुरा करता है जो भैया, होता खुद बुरा उसका ॥
बुरे भाव बनाने से ही, बध नरक का होता है।
महा भयकर दु ख नरको मे, शास्त्र हमे बतलाता है ॥
सुनकर भी जिनवाणी को हम, पीछे हटते जाते है।
जन्मे थे आत्म हित करने, भूल उसे अब बैठे है ॥
नर तन चोला पाकर भी यदि, आत्म का हित नही किया।
समझो हमने रत्न को पाकर, समझ के पत्थर फेक दिया ॥
बुरा करने से औरो का, कैसे बुरा होता है।
सुनो ध्यान से कान लगाकर, मोहन तुम्हे सुनाता है ॥
एक गॉव मे था इक अधा, दु खडे भारी भरता था।
रोटी नही मिलने के कारण, रो-रो रुदन मचाता था ॥
नही सहारा था अधे को, घरवालो का भाई।
समझ के अधा घरवालो ने, घर से करी जुदाई ॥
तन पे कपडे नही थे उसके, नगे पैरो फिरता था।
बिन नैनो के वो तो भैया, कष्ट बहुत ही सहता था ॥
एक बार उस अधे जी को, बुखार तेज हो जाता है।
पैसा पास नही होने से, भारी कष्ट उठाता है ॥
एक दिना वो रोता-रोता, किसी नगर मे जाता है।
मुनिराज थे उस नगरी मे, पास मुनि के जाता है ॥

हाथ जोड बोला मुनिवर से, एक बात बतला दीजै।
किन कर्मो से बना हूँ अधा, उत्तर मुझको दे दीजे ॥
दया के धारी पर उपकारी, सोच ज्ञान मे कहते है।
किन कर्मो से बना था अधा, उसको ही कह देते है ॥
पूर्व जन्म मे तू तो भैया, अधे को अधा कहता था।
अधे जन की दुखा आत्मा, मन अपने हर्षाता था ॥
एक बार इक अधे की तू, लठिया लेकर भागा था।
उसे तडफता छोड अकेला, मन अपने तू फूला था ॥
नही दया आई थी तुझको, नही मन मे कुछ सोचा था।
अधा बनता प्राणी जिससे, वो बीज स्वय ही बोया था ॥
कभी नही सोचा जीवन मे, पापो का फल पाते है।
अधा कहते जो औरो को, अधे वो बन जाते है ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
नही करे बुरा पर का हम, गुण मुनियो के गाता है ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
अच्छे भाव बनाकर प्राणी, स्वर्ग मोक्ष सुख पाता है ॥

दृष्टांत—ऋषि-मुनियों की सेवा करने से भयंकर रोग भी शांत हो जाते हैं।

ऋषि-मुनियो की सेवा करना, सेवा मेवा देती है।
ऋषि-मुनियो की सेवा भैया, दुख सारे हर लेती है ॥
करते जो सेवा मुनियो की, नही कष्ट वो पाते है।
मुनियो के दर्शन से भैया, पाप सभी कट जाते है ॥
चरण जहा पडते मुनियो के, वो धरती पावन हो जाती।
नही कमी रहती धरती पर, हरी भरी वो हो जाती ॥
जिस घर मे आहार मुनि का, एक बार हो जाता है।
वो घर तो आबाद हमेशा, मेरे भैया रहता है ॥

नही कमी कुछ रहती घर मे, हरदम आनद छाता है।
मुनियो के आहार के कारण, अतिशय वहाँ पर होता है ॥
मुनियो की सेवा से भैया, कैसे मेवा मिलती है।
बतलाता हूँ लिखकर तुमको, कैसे विपदा टलती है ॥
एक लडका था एक गॉव मे, सुख से लडका रहता था।
ऋषि मुनियो के चरणो मे वो, श्रद्धा गहरी रखता था ॥
छूकर चरण महामुनियो के, अपना भाग्य सराहता था।
दूर-दूर तक ऋषि-मुनियो के, सग मे पैदल जाता था ॥
करता था भक्ति मुनियो की, करके खुशी मनाता था।
देकर वो आहार मुनि को, फूला नही समाता था ॥
कहता था खुश होकर लडका, सेवा पार लगाती है।
मुनियो की सेवा ही भैया, सिद्ध द्वार पहुचाती है ॥
अशुभ कर्म के कारण लडका, एक बार बीमार हुआ।
बहुत इलाज किये लडके के, नही वो लडका ठीक हुआ ॥
एलान किया डाक्टर ने भैया, नही ठीक ये होएगा।
कैसर का रोगी है लडका, नही लडका बच पाएगा ॥
मुनियो की सेवा मेरे भैया, कभी न खाली जाती है।
देखो कैसे उस लडके की, विपदा स्वय टल जाती है ॥
घरवालो से कहता लडका, मुनि दर्शन मुझे करा दीजै।
पूज्य मुनि के श्री चरणो मे, मुझको तुम पहुचा दीजै ॥
मुनि के दर्शन करके लडका, चरण उन्हो के छूता है।
इस बीच मे उस लडके को, आशीर्वाद उन्हो का मिलता है ॥
टल गया रोग छिनक मे उसका, शुभ कर्मो का उदय हुआ।
मुनियो की आशीष के कारण, लडका वो तो ठीक हुआ ॥
कहता है खुश होकर लडका, मुनि चरण नही छोडूगा।
मुनि चरणो की सेवा करके, भव से पार हो जाऊँगा ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
सेवा भक्ति कर मुनियो की, अपना भाग्य सराहता है ॥

दृष्टांत—सुख का खजाना तो तेरे ही अंदर है

सुख का भरा खजाना तुझमे, सुख का रे तू सागर है।
सच्चा सुख है तेरे अदर, ज्ञान गुणो की गागर है ॥
मोह माया के चक्कर मे पड, निज को भैया भूल गया।
निज आत्म की खबर नही है, विषयो का तू दास बना ॥
सारा समय बिताता है तू, दौलत खूब कमाने मे।
दौलत को ही बडा मानता, भूल धर्म को जाने से ॥
बिसराकर तू धर्म को भैया, सच्चा सुख नही पाएगा।
भूल गया जो धर्म को भैया, नरको के दु ख पाएगा ॥
मोही प्राणी समझ ले तुमको, पूज्य मुनि समझाते है।
करुणा करके मुनि हमारे, सद उपदेश सुनाते है ॥
धन वैभव नही साथ चलेगा, साथ धर्म ही जाएगा।
धर्म मार्ग पर चलनेवाला, स्वर्ग मोक्ष सुख पायेगा ॥
धर्म मार्ग पर चलनेवाला, जग मे आदर पाता है।
धर्म जहा पर होता भैया, वही पुण्य आ जाता है ॥
पुण्य जहा पर होता भेया, लक्ष्मी स्वय आ जाती है।
चाहे कितना खर्च करो तुम, दिन-दिन बढती जाती है ॥
पर से प्रीति हटाकर भैया, निज आत्म से प्रीति करो।
देव शास्त्र गुरु पूज्य जगत मे, इनकी भैया विनय करो ॥
देव शास्त्र गुरुओ की भक्ति, आत्म का कल्याण करे।
इनकी चरणो की कृपा से, प्राणी मुक्ति प्राप्त करे ॥
जिसकी श्रद्धा देव गुरु मे, वो ही मुक्ति पाता है।
जिनवाणी पर चलनेवाला, सच्चे सुख को पाता है ॥
भव्य जीव है वे ही भैया, जिनको धर्म से प्यार है।
देव शास्त्र गुरुओ की भक्ति, जिनके गले का हार है ॥
ऐसे प्राणी धर्म ध्यान कर, भव सागर तर जाते है।
सयम धारण करनेवाले, जग मे पूजे जाते है ॥

सुनकर कविता को तुम भैया, धर्म मार्ग को अपनाना।
बीत गई सो बीत गई अब, आगे की सुध ले लेना ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
देव शास्त्र गुरुओ की भक्ति, करके भाग्य सराहता है ॥

दृष्टांत—ऋषि-मुनियों की तपस्या के प्रभाव से ही इस पृथ्वी पर धर्म कायम है

ऋषि-मुनियो की श्रद्धा भक्ति, नाश पाप का करती है।
धूलि उनके चरण की भैया, बुद्धि निर्मल करती है ॥
करते जो सेवा मुनियो की, कष्ट नही वो पाते है।
सच्चा सुख मिलता है उनको, मन वाछित फल पाते है ॥
ऋषि-मुनियो की श्रद्धा भक्ति, भव से पार लगाती है।
चरण जहा पर पडे मुनि के, वो धरती पावन होती है ॥
इनके चरणो की धूलि की, महिमा भैया न्यारी है।
ऋषि-मुनियो के चरण कमल मे, सौ-सौ नमन हमारी है ॥
महापुण्य का उदय होय जब, दर्शन इनके मिलते है।
मुनियो के दर्शन से भैया, ज्ञान के चक्षु खुलते है ॥
ज्ञान के चक्षु बद थे मेरे, नही खुलने मे आते थे।
बहुत प्रयास किऐ थे मैने, नही वो पलटा खाते थे ॥
जो भी काम करू था भैया, वो उल्टा हो जाता था।
नफा जहा पर होना था, वहॉ पर घाटा हो जाता था ॥
इसी उथल-पुथल मे भैया, कई वर्ष व्यतीत हुए।
कैसे जागा भाग्य हमारा, कैसे चक्षु ज्ञान खिले ॥
जिस नगरी मे रहता था मै, मुनिराज वहॉ इक आए थे।
चातुर्मास किया मुनिवर ने, नगरी मे आनद छाए थे ॥
उन परम तपस्वी मुनिवर का मै, निश दिन दर्शन करता था।
सुनकर उनकी अमृत वाणी, सुख का अनुभव करता था ॥

करता था सेवा मुनिवर की, छूता था मुनि चरणो को।
आशीर्वाद मिला मुनिवर का, छोडा निश के भोजन को ॥
उनके चरणो की कृपा से, अशुभ कर्म का नाश हुआ।
ज्ञान के चक्षु खुल गए भैया, लिखने का अभ्यास हुआ ॥
उनके चरणो की कृपा से, बुद्धि निर्मल हो पाई।
बिगडे काम बने है सारे, दर्शन उनके सुखदाई ॥
भाव यही है इस कविता का, दर्शन मुनियो के करना।
श्रद्धा रखकर ऋषि-मुनियो मे, आत्म हित हमको करना ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
दर्शन करने से मुनियो के, जीवन सुखमय होता है ॥

दृष्टांत–जो जवानी में धर्म से दूर रहते हैं उन्हों का बुढ़ापे में क्या हाल होता है

भरी जवानी मे जो भैया, दूर धर्म से रहते है।
आदर नही गुरुओ का करते, नही जिन मदिर जाते है ॥
नही देते आहार मुनि को, नही सुनते जिनवाणी को।
जिन पूजन का ध्यान नही है, तकते है परनारी को ॥
णमोकार नही याद है भैया, भोगो मे चित्त लाते है।
क्या हालत हो जाती उनकी, लिखकर तुम्हे सुनाते हे ॥
एक लडका था एक गॉव मे, दूर धर्म से रहता था।
आदर नही बडो का करता, सदा अकड मे रहता था ॥
परनारी को तककर लडका, मन मे खुशी मनाता था।
मदिरा पी करके वो लडका, सदा नशे मे रहता था ॥
नही सोचा जीवन मे उसने, तुझे बुढापा आएगा।
अपने किए कर्म का इक दिन, तू ही तो फल पाएगा ॥
बुरे कर्मो से प्राणी की, क्या हालत हो जाती है।
जिनवाणी ही भैया हमको, सही मार्ग बतलाती है ॥

करते-करते बदी वो लड़का, वृद्ध अवस्था मे आया।
पर नारी को तकता इक दिन, नजर पुलिस को वो आया ॥
आ गया समय बुरा अब उसका, देखो अब क्या होता है।
वृद्धपने मे उस लडके का, हाल बुरा हो जाता है ॥
बद किया जेलो के अदर, भारी मार लगाई है।
भूल धर्म को जाने से ही, विपदा उस पर आई है ॥
नही दिया पानी पीने को, नही दिया उसको खाना।
तडफ रहा वो जेल के अदर, पडा कष्ट भारी सहना ॥
पानी नही मिलने के कारण, तडफ-तडफ मर जाता है।
मरता-मरता भी वो बूढा, क्या कह करके जाता है ॥
नही तकना परनारी को तुम, नही धर्म को तुम तजना।
सदा धर्म पर डटकर अपने, वीर प्रभु को तुम भजना ॥
धर्म ध्यान पर चले यदि तुम, कष्टो से बच जाओगे।
नही हालत होगी मुझ जैसी, हरदम मौज उडाओगे ॥
इतनी बाते कह करके वो, प्राणो को तज देता है।
धर्म मार्ग पर चलना भैया, हमको सबक सिखाता है ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
धर्म मार्ग पर चलकर प्राणी, कष्टो से बच जाता है ॥

दृष्टांत—धर्म के प्रभव से धन स्वयं आ जाता है

पैसे के नाते दुनिया के, पैसे का ससार है।
बिन पैसे कोई बात न करता, झूठा जग का प्यार है ॥
पैसे से होती है इज्जत, अकलमद पैसेवाला।
बिन पैसे नही मिलती रोटी, दान करे पैसेवाला ॥
नही सोचा है हमने भैया, पैसा कैसे आता है।
इन बातो को मोहन भैया, लिखकर तुम्हे सुनाता है ॥

धर्म जहा पर होता भैया, धन स्वय ही आ जाता है।
घट जाता जब धर्म मनुष्य का, धन स्वय ही घट जाता है ॥
धन और धर्म घटे जब दोनो, मन भी स्वय घट जाता है।
घट जाते है जब ये तीनो, पतन जीव का होता है ॥
धन की इच्छा करते है हम, और दूर धर्म से रहते है।
भूल गए है धर्म को अपने, निश मे भोजन खाते है ॥
नही समय मंदिर जाने का, नही तीर्थो पर जाते।
चातुर्मास कहा मुनियो के, नही खबर रखना चाहते ॥
नही आदर करते गुरुओ का, नहीं सुनते जिनवाणी को।
सब सुख मिले धर्म से भैया, भूले वीरा स्वामी को ॥
धर्म छोडकर दु ख मिलता है, धर्म पालकर मिलता सुख।
सदा धर्म पर चलना भैया, एक धर्म ही है प्रमुख ॥
धर्म पालकर सुख मिलता है, ऐसी कथा सुनाता हूँ।
चलना सदा धर्म पे भैया, गुण मुनियो के गाता हूँ ॥
एक लडका था एक गॉव मे, दूर धर्म से रहता था।
वो लडका तो दर्शन करने, नही जिन मदिर जाता था ॥
पिक्चर मे रुचि रखता था, धर्म की निदा करता था।
किसी तरह से आए पैसा, भाव ये मन मे रखता था ॥
निश मे भोजन खाता था वो, नित मदिरा वो पीता था।
चोरी करने मौज उडाने मे, सुख अनुभव करता था ॥
एक दिना वो लडका भैया, जहरीली मदिरा पीता है।
नही रहा कुछ होश उसे वो, मरने को हो जाता है ॥
पैसा पास नही रहा उसके, भूल धर्म को जाने से।
ऐसी हालत हो जाती है, धर्म की निदा करने से ॥
ऐसी हालत थी जब उसकी, देखो अब क्या होता है।
उस लडके को इसी बीच मे, मुनि दर्शन हो जाता है ॥

छूकर चरण मुनि के बोला, तुम्ही भाग्य विधाता हो।
मुझे बचाओ तुम सकट से, तुम्ही ज्ञान के दाता हो ॥
दया के धारी, पर उपकारी, दया भाव चित लाते है।
महत्त्व बताकर धर्म का उसको, व्यसन सभी छुडवाते है ॥
व्यसन छोडकर वो लडका अब, जिनदर्शन नित करता है।
जिन दर्शन के कारण देखो, चमत्कार क्या होता है ॥
दर्शन करके चला एक दिन, थाल अशरफी पाता है।
प्रभु दर्शन के कारण लडका, मालामाल हो जाता है ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
धर्म मार्ग पर चलकर प्राणी, मनवाछित फल पाता है ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
धर्म जहा पर होता भैया, धन स्वय ही आ जाता है ॥

दृष्टांत—धनवान बनने के लिए धर्म आवश्यक है

चाह यदि धन की है भैया, धर्म तुम्हे करना होगा।
धर्म जहा पर होगा भैया, धन-वैभव निश्चय होगा ॥
भूल गए हम धर्म को भैया, नही कदर इसकी जानी।
देव गुरु को भूल गए हम, नही जिनवाणी पहचानी ॥
जिनवाणी को भूल गए हम, इसीलिए दुख पाते है।
धन-वैभव की कमी हुई है, भारी कष्ट उठाते है ॥
धन की कमी हुई है भैया, निज कर्मो के कारण।
जिससे धन आता है भैया, छोड दिए वो साधन ॥
दान नही करते हम भैया, धन-वैभव हम चाहते है।
बिना दान के नही मिलता धन, मुनि हमे समझाते है ॥
दान जहा पर होता भैया, वही पुण्य आ जाता है।
पुण्य जहा पर होता भैया, धन स्वय ही आ जाता है ॥

धन की इच्छा करते है हम, नही पुण्य हम करते है।
कैसे आएगी धन-दौलत, मोहन भैया लिखते है ॥
नीव नही जिस महल की होती, महल वो तो गिर जाता है।
दान नही जिस घर मे होता, पतन उसी का होता है ॥
पूर्व जमाने मे मेरे भैया, धन क्यो ज्यादा होता था।
बिना कमाए धन था ज्यादा, किस कारण से होता था ॥
एक कमाता था घर मे, और सब घरवाले खाते थे।
फिर भी भैया कमी नही थी, सुखी पूर्वज रहते थे ॥
आज कमाते है सब मिलकर, लगी कमाने नारी भी।
फिर भी भूखे मरते है हम, छायी हुई बीमारी सी ॥
समय नही मदिर जाने का, पिक्चर के हम दास हुए।
निश मे भोजन करते है हम, भोगो के है दास हुए ॥
नही जपते हम प्रभु की माला, नही धर्म हम करते है।
सच पूछो तो मेरे भैया, इसलिए दुखी हम रहते हे ॥
चरण नही छूते मुनियो के, नही आदर करते उनका।
इज्जत नही बडो की करते, नही ज्ञान निज का पर का ॥
चाहते गर यदि सुखी जीवन तो, दया धर्म को ग्रहण करो।
त्याग करो बुरी सगति का, जिनवाणी का मनन करो ॥
भाव दया के रखो मन मे, जिन मदिर मे नित जाना।।
तीन लोक के स्वामी का तुम, करके दर्शन हर्षाना ॥
छूना चरण सदा मुनियो के, करके सेवा हर्षाना।
पाना शुभ आशीष उन्ही की, पाकर मन मे हर्षाना ॥
ऐसे कार्य करोगे जब तुम, धन-वैभव सब पाओगे।
मुनियो की आशीष के कारण, इक दिन मुनि बन जाओगे ॥
मुनियो की आशीष के कारण, धन-वैभव स्वय आता है।
नही कमी कुछ रहती घर मे, बिन मागे सब पाता है ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
करके भक्ति ऋषि-मुनियो की, अपना भाग्य सराहता है ॥

दृष्टांत–दो भाइयों का (दानी व कंजूस का)

दान सदा करना रे भैया, नही कजूसी करना।
चाहे कितनी पडे मुसीबत, सदा धर्म तू करना ॥
धर्म सहाई है प्राणी का, धर्म ही रक्षा करता है।
करता है जो धर्म की रक्षा, वो शिव रमणी वरता है ॥
धर्म मार्ग पर चलनेवाला, जग मे आदर पाता है।
सच्चा सुख मिलता है उसको, कष्ट नही वो पाता है ॥
धर्म हेतु जो दान करे वो, दानी जग मे कहलाता।
लक्ष्मी घर रहती है उसके, दिन-दिन धन बढता जाता ॥
नही कभी धन घटता भैया, धर्म कार्य मे देने से।
सौ के करोड वने मेरे भैया, जिन मदिर मे देने से ॥
सौ के करोड वने कैसे मै, तुमको आज बताता हूँ।
करना दान सदा मेरे भैया, धर्म से प्रीति लगाता हूँ ॥
दो भाई थे एक गॉव मे, दोनो हिल-मिल रहते थे।
भावो मे था अतर उनके, वैसे सग में रहते थे ॥
बडे भाई तो धर्म ध्यान मे, सबसे आगे रहते थे।
फगसन जहा धर्म का होता, बडे अवश्य ही जाते थे ॥
जितना ज्यादा हो सकता था, दान वहॉ वो देते थे।
देकर दान हाथ से अपने, अपना भाग्य सराहते थे ॥
छोटे भाई धर्म ध्यान से, दूर हमेशा रहते थे।
करता था जो बात धर्म की, गाली उसको देते थे ॥
दान नही करना सीखा था, चोरी करनी सीखी थी।
धर्म मार्ग मे लगे हुओ की, निदा करनी सीखी थी ॥
नेकी और बदी ही भैया, साथ अत मे चलती है।
करते है जो धर्म हमेशा, उनको मुक्ति मिलती है ॥
एक दिना एक नगर मे भैया, जिन मदिर का शिलान्यास हुआ।
बडे भाई ने उस मदिर मे, एक सौ एक का दान दिया ॥

देकर दान बड़ा भाई तो, फूला नही समाता है।
जिन मदिर बन जाए सुदर, कहकर खुशी मनाता है ॥
वापस घर जब गए बडे जी, चमत्कार क्या होता है।
एक करोड की खुली लाटरी, मालामाल हो जाता है ॥
छोटे का भी सुनो हाल तुम, लिखकर तुम्हे सुनाता हूॅ।
करता था जो धर्म की निदा, उसका हाल सुनाता हूॅ ॥
छोटा भाव बनाता है जो, पैसा मदिर आया है।
कैसे इसको हडफ करू मै, भाव बुरे मन लाया है ॥
एसे भाव बने जब उसके, हार्ट फेल हो जाता है।
मरकर वो तो बन गया बिच्छू, भारी कष्ट उठाता है ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
धर्म कार्यो मे धन देकर, अपना भाग्य सराहता है ॥

दृष्टांत—भोगों में दुःख व योग में सुख छिपा हुआ है

भोगो मे दुख भरा हुआ है, छिपा हुआ सुख योग मे।
भोग छोडकर बनना योगी, नही सच्चा सुख भोग मे ॥
भोग दुखो की खान है भैया, भोग नरक ले जाते है।
तजनेवाले भोग को भैया, मुक्ति पद को पाते है ॥
भोग महा दुख दाई जग मे, भोग भुजग समान है।
तजनेवाले भोग को भैया, मुक्ति के मेहमान है ॥
भोग छोडकर योगी बनना, योगी आदर पाता है।
चरण जहा पडते योगी के, आनद मगल छाता है ॥
ज्ञानी ध्यानी योगी भैया, जग मे पूजे जाते है।
सच्चे योगी की सगति से, सच्चा सुख हम पाते है ॥
योगी की वाणी से भैया, जग का हित हो जाता है।
रोग नहीं रहते योगी के, भोग दुखो को देता है ॥

महाभयकर बहुत बीमारी, भोगो से हो जाती है।
ज्ञानी ध्यानी योगी जन को, नही बीमारी होती है ॥
योग विषय मे एक कथा मै, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
भोग छोडकर योगी बनना, गुण मुनियो के गाता हूँ ॥
एक चोर था एक गॉव मे, माल चुराया करता था।
चोरी करने मे वो भैया, सुख का अनुभव करता था ॥
एक दिना वो चोर रे भैया, राजमहल मे जाता है।
चोरी करने के निमित से, महल मे वो घुस जाता है ॥
बैठा छिपकर इक कमरे मे, देखो अब क्या होता है।
आया था जो चोरी करने, कैसे योगी बनता है ॥
कहती है रानी राजा से, लडकी शादी योग्य हुई।
अच्छा-सा वर देखो राजा, चिता मुझको बहुत हुई ॥
सुनकर बात रानी की राजा, रानी से यो कहता है।
देखूगा मै धर्मी लडका, चोर बात सुन लेता है ॥
नही चोर ने चोरी की है, वापस वहॉ से चला गया।
वेश बदलकर बन गया धर्मी, और जनेऊ धार लिया ॥
जिस रस्ते जाता था राजा, उस रस्ते वो बैठ गया।
माला लेकर कर मे अपने, प्रभु का उसने ध्यान किया ॥
आई सवारी राजा जी की, देखे नृपवर धर्मी को।
कितना सुदर है ये लडका, लडकी देऊँगा इसको ॥
राजा जी ने उस धर्मी को, रथ मे है बैठाय लिया।
आधा राज दिया धर्मी को, कन्या के सग ब्याह किया ॥
देख सभी यह धर्मी भैया, राजा जी से कहता है।
भोगो मे अब नही फसूगा, योगी वो बन जाता है ॥
झूठा योगी बनने से ही, आधा राज मिला मुझको।
सच्चा योगी बन जाता तो, पाता शिव रमणी पद को ॥

उसी समय वो धर्मी भैया, सच्चा योगी बन बैठा।
त्याग दिया सब कुछ धर्मी ने, धर्म का महत्व समझ बैठा ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
भोग छोडकर योगी बनना, योग सुखो का दाता है ॥

दृष्टांत—ऋषि-मुनियों की संगति का फल

करना सगति ऋषि-मुनियो की, सगति इनकी सुखदाई।
तजना सगति पापी जन की, सगति उनकी दु खदाई ॥
पापी की सगति से भैया, पापी जन कहलाता है।
करने से सगति मुनियो की, जग मे आदर पाता है ॥
मुनियो की सगति करने से, पाप नाश हो जाते है।
बुद्धि हो जाती है निर्मल, सच्चे सुख को पाते है ॥
शुभ कर्मो का उदय होय है, भक्ति इनकी करने से।
आनद मगल होता जीवन, सगति इनकी करने से ॥
एक लडका था एक गॉव मे, निर्धन वो बेचारा था।
पास नही था पैसा उसके, किस्मत का वो मारा था ॥
बिन पैसे वो फिरे भटकता, भारी कष्ट उठाता था।
भूखा प्यास रहकर लडका, अपना समय बिताता था ॥
बात नही करता था कोई, उस लडके से भाई।
विपत्ति समय मे जीव का भैया, होता धर्म सहाई ॥
प्रेम धर्म से था लडके को, धर्म ध्यान वो करता था।
आते थे जो मुनि गॉव मे, सेवा उनकी करता था ॥
महातपस्वी मुनिराज इक, उसी गॉव मे आते है।
दया के धारी, पर उपकारी, हित उपदेश सुनाते है ॥
लडका भी जा मुनि चरणो मे, धर्म की चर्चा करता है।
बैठ मुनि के चरण कमल मे, सुख का अनुभव करता है ॥

बैठे-बैठे मुनि चरणो मे, चमत्कार क्या होता है।
उस लडके की सुनो कहानी, आगे अब क्या होता है ॥
बैठा लडका मुनि चरणो मे, सेवा भक्ति करता है।
मुनि दर्शन करने को भैया, सेठ वहॉ इक आता है ॥
नही पुत्र था कोई उसके, धन-वैभव सब भारी था।
बिना पुत्र के सेठ था चिंतित, दया धर्म का धारी था ॥
सेठ साहब जी मुनि दर्शन कर, पास मुनि के बैठ गए।
बातो ही बातो मे भैया, उस लडके के भाग्य जगे ॥
उस लडके को सेठ साहब जी, घर अपने ले जाते है ॥
उत्तराधिकारी बना उसे वो, मन अपने खुश होते है ॥
अब तक जो निर्धन था भैया, वो अब साहूकार बना।
मुनियो की सगति के कारण, धन-वैभव सब प्राप्त हुआ ॥
भारी सेठ कहाता है अब, गीत प्रभु के गाता है।
करना सगति ऋषि-मुनियो की, कहकर खुशी मनाता है ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
करके सगति ऋषि-मुनियो की, अपना भाग्य सराहता है ॥

दृष्टांत—निर्धन धनवान कैसे बनता है।

करते-करते धर्म यदि कुछ, हानि भी हो जाए।
नही छोडना धर्म को भैया, मुनि हमे समझाए ॥
हानि नही परीक्षा है वो, धर्म परीक्षा लेता है।
पास परीक्षा मे जो होता, वो सच्चा सुख पाता है ॥
श्रद्धा जिसकी धर्म मे भैया, नही कष्ट वो पाता है।
एक धर्म ही सच्चा साथी, साथ जीव के जाता है ॥
धर्म मार्ग पर चलनेवाला, जग मे आदर पाता है।
जिस भी क्षेत्र मे जाता धर्मी, आनद मगल छाता है ॥

धर्मी जन की सभी जगह पर, भैया इज्जत होती है।
ऋषि-मुनियो की शुभ आशीषे, बिगडे काम बनाती है ॥
एक धर्मी की सुनो कहानी, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
सुनकर खडे रोगटे होगे, ऐसी कथा सुनाता हूँ ॥
एक धर्मी था एक शहर मे, प्रभु पूजन नित करता था।
करते-करते काम घरेलू, ध्यान प्रभु का करता था ॥
उस धर्मी की पत्नी भी तो, धर्म ध्यान नित करती थी।
ऋषि-मुनियो का लगाके चौका, आहार उन्ही को देती थी ॥
समय-समय पर नरनारी वो, तीर्थ क्षेत्र पर जाते थे।
करके वदना तीर्थो की वो, भारी पुण्य कमाते थे ॥
एक बार उनके जीवन मे, अशुभ समय ऐसा आया।
धर्म बहुत करने पर भी तो, सकट उन पर था आया ॥
जिसके साझे मे वो धर्मी जन, मिलके कार्य करता था।
अपने साझी को वो धर्मी जन, प्रेम बहुत ही करता था ॥
अपना पैसा धर्मी जन ने, सब साझी को सौपा था।
धर्म मार्ग पर चलकर धर्मी, बीज धर्म का बोता था ॥
करते-करते धर्म एक दिन, देखो अब क्या होता है।
अशुभ समय के कारण भैया, धर्मी का क्या होता है ॥
उस साझी ने धर्मी जन को, धोखा देकर अलग किया।
पैसा हडप लिया धर्मी का, नही मन मे कुछ सोच किया ॥
पडी विपत्ति धर्म जन पर, नही धर्म उसने छोडा।
रहकर भूखा भी धर्मी ने, नही धर्म से मुख मोडा ॥
धर्मी जन और नारी उसकी, धर्म कमाते जाते थे।
विपत्ति समय मे भी वो भैया, प्रभु जी के गुण गाते थे ॥
कैसे भाग्य जगा धर्मी का, वो भी तुम्हे बताता हूँ।
ऐसे भाग्य जगे सब ही का, गुण मुनियो के गाता हूँ ॥

एक दिना धर्मी जन भैया, किसी शहर मे जाता है।
लेकर इच्छा मुनि दर्शन की, मन मे अपने जाता है ॥
करके दर्शन मुनिराज के, धर्मी जन खुश होता है।
उसी जगह पर उसको भैया, एक सेठ मिल जाता है ॥
सेठ सिनेमो का मालिक था, भारी सेठ कहाता था।
वो मालिक तो मेरे भैया, धर्मी अफसर चाहता था ॥
इच्छा पूरी हो गई उसकी, ले धर्मी को साथ चला।
काम सौपकर उस धर्मी को, दिया मैनेजर उसे बना ॥
धर्म मार्ग पर चलकर धर्मी, धनवान खूब हो जाता है।
धर्म नही तजने के कारण, हरदम मौज उडाता है ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
धर्म मार्ग पर चलनेवाला, सुखी हमेशा रहता है ॥

दृष्टांत—धन-वैभव पाने का नुक्सा

लेकर नाम वीर का भैया, नुक्सा एक बनाता हूँ।
कैसा लेना है ये नुक्सा, सब विधि तुम्हे बताता हूँ ॥
लिखा है नुक्सा जो भी मैने, नुक्सा बहु गुणकारी है।
सच्चे सुख की बात है इसमे, आत्म का हितकारी है ॥
जितनी लिखी दवाई इसमे, है अनमोल दवाई ये।
ऋषि-मुनियो से लाकर मैने, नुक्से बीच मिलाई ये ॥
ऋषि-मुनियो की ले आशीषे, नुक्सा ये तैयार किया।
धन-वैभव की जिसे जरूरत, उसके लिए तैयार किया ॥
इस नुक्से को लेकर भैया, धन-वैभव सब पाओगे।
दुर्गति से बचकर के भैया, स्वर्ग मोक्ष सुख पाओगे ॥
क्या विधि है इस नुक्से की मै, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
एक-एक कर सब बाते मै, धीरे से समझाता हूँ॥

सुबह सवेरे उठकर भैया, वीर का ध्यान लगाया कर।
चारो दिशा मे करके वदना, उत्तम भाव बनाया कर ॥
महामत्र की करना जाप तू, करके मन मे हर्षाना।
जिन दर्शन नित करके भैया, भारी पुण्य कमा लेना ॥
जिन दर्शन करने से भैया, पापो का क्षय होता है।
निकाचित कर्म उदय मे आकर, बिन फल के गल जाता है ॥
जो भी सज्जन जिन दर्शन कर, काम पे अपने जाते है।
नहीं बिगडता काम उन्हो का, सुखी हमेशा रहते है ॥
खुशी-खुशी मे दिन बीते उनका, नही घटना कोई घटती।
लक्ष्मी भी घर रहकर उनके, दिन-दिन है दूनी बढती ॥
शाम को आकर काम से अपने, जिन मदिर नित जाना।
करके आरती श्री जिनवर की, जिनवाणी सुन हर्षाना ॥
जिनवाणी को सुनकर आत्म, सच्चे सुख को पाएगी।
सच्चे सुख को पाकर आत्म, दुर्गति से बच जाएगी ॥
निश मे भोजन नही करना तुम, सदा छना जल पीना।
सोते समय सुनो मेरे भैया, ऐसे भाव बनाना ॥
जब तक नही दिन निकलेगा मै, तब तक नही कुछ खाऊँगा।
त्याग करी मै सारी वस्तु, प्रभु का ध्यान लगाऊँगा ॥
इसी बीच मे यदि मेरे भैया, आयु पूर्ण हो जाएगी।
आत्म दुर्गति से बच करके, स्वर्ग मोक्ष सुख पाएगी ॥
जो भी सज्जन इस नुक्से को, लेकर सदा निभाएगा।
गारटी से कहता हूँ मै, स्वर्ग मोक्ष सुख पाएगा ॥
नही कमी होगी घर उसके, धन वैभव स्वय आएगा।
चलनेवाला इन बातो पर, मन वाछित फल पाएगा ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
धर्म मार्ग पर चलनेवाला, स्वर्ग मोक्ष सुख पाता है ॥

दृष्टांत–दो भाईयों का (प्रत्येक जीव का भाग्य अलग-अलग होता है)

नही मान करना जीवन मे, मान महा दुख देता है।
मानी का नही आदर होता, पतन एक दिन होता है ॥

रावण राजा मान के कारण, नरक द्वार मे जाता है।
भारी विपदा सहे नरक मे, सच्चा सुख नही पाता है ॥

जितने जीव जगत मे भैया, सबका भाग्य न्यारा है।
भव्य जीव को जग मे भैया, धर्म ही अपना प्यारा है ॥

धर्म भाग्य को उज्ज्वल करता, धर्म सुखो का दाता है।
एक धर्म के कारण प्राणी, भव सागर तर जाता है ॥

अपने-अपने भाग्य का प्राणी, दुनिया मे सब खाते है।
भाग्य विषय मे एक कथा हम, लिखकर तुम्हे सुनाते है ॥

दो भाई थे एक गॉव मे, दोनो सुख से रहते थे।
छोटे भाई धर्म ध्यान मे, सबसे आगे रहते थे ॥

छोटे भाई की पत्नी तो, एक आख से कानी थी।
आदर करती थी वो सबका, महिमा धर्म की जानी थी ॥

रहते-सहते सुख से भैया, एक दिना क्या होता है।
घर मे किसी बात के ऊपर, झगडा उनमे होता है ॥

बडा भाई कहता है इक दिन, कमाके मै तो लाता हूॅ।
खाते है सब कुटुबवाले, इकला मै दुख पाता हूॅ ॥

छोटा भाई बोला भैया, नही गुस्से मे बात करो।
अलग-अलग हो जाते है हम, नही किसी से बैर करो ॥

हो गए दोनो अलग-अलग अब, आगे अब क्या होता है।
धर्म जहा पर होता भैया, धन स्वय ही आ जाता है ॥

बडे भाई की बहू तो भैया, धर्म नही मन लाती थी।
सोकर उठती देर से वो तो, कलह हमेशा करती थी ॥

गई एक दिन घर से बाहर, डाकू घर मे आते है।
लेकर सोना चादी सारा, वापस डाकू जाते है ॥
छोटे जी की बहू तो भैया, सुबह सवेरे उठती थी।
करके दर्शन वीर प्रभु के, पूजा नित वो करती थी ॥
छोटा भाई भी तो भैया, धर्म ध्यान मे आगे था।
ऋषि-मुनियो के चरणो मे वो, श्रद्धा गहरी रखता था ॥
एक दिना वो घर मे अपने, कमरा एक बनाते है।
लगे खुदाने जमीन को भैया, देखो वो क्या पाते है ॥
निकला एक घडा उसमे से, सोना-चादी भरा हुआ।
लाखो का था माल रे उसमे, हार हीरो का जडा हुआ ॥
सुनकर कविता को मेरी तुम, शिक्षा इससे ले लेना।
बैर नही करना आपस मे, धर्म से प्रीति लगा लेना ॥
धर्म मार्ग अपनाकर भैया, सच्चे सुख को पाओगे।
भूल गए यदि धर्म को भैया, भारी कष्ट उठाओगे ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
नही परस्पर बैर करे हम, बैर दु खो का दाता है ॥

दृष्टात—दहेज प्रथा को हमारे नौजवान युवक ही बंद कर सकते हैं।

नौजवानो युवको भैया, ध्यान लगाकर सुन लेना।
स्वर्ग बनाना चाहते घर को, बात मान मेरी लेना ॥
नही आख खोली यदि तुमने, नही प्रथा को बद किया।
अत्याचार हुए बहनो पर, नही यदि तुमने ध्यान दिया ॥
दूर नही वो दिन मेरे भैया, सिर धुन-धुन पछताओगे।
नही होएगे विवाह तुम्हारे, कुवारे तुम रह जाओगे ॥
दुखा दूसरे का दिल भैया, जो पैसा घर मे आता है।
वो पैसा नही रहता घर मे, पहला भी लेकर जाता है ॥

पैसा आता पुण्य से भैया, पुण्य से सब सुख मिलते है।
कैसे बद होगी ये प्रथा, मोहन भैया लिखते है ॥
युवक हमारे चाहे करना, बद प्रथा कर सकते है।
बुद्धि से ले काम वो भैया, पैसा भी पा सकते है ॥
नही दहेज मागे शादी मे, धर्मी लडकी मागे वो।
जिन पूजन मे ध्यान हो जिसका, ऋषि-मुनियो मे श्रद्धा हो ॥
आहार दान दे मुनियो को जो, धर्म मे श्रद्धा रखती हो।
आदर करे कुटुबी जन का, नही किसी से लडती हो ॥
ऐसी लडकी आकर घर मे, घर को स्वर्ग बनाती है।
लक्ष्मी भी आकर उस घर मे, अपना भाग्य सराहती है ॥
कहती है खुश होकर लक्ष्मी, नही मै वापस जाऊँगी।
पास मे रहकर धर्मी के मै, अपना भाग्य सराहूँगी ॥
घर भर दूगी धर्मी का मै, भरकर खुशी मनाऊँगी।
धर्मी जन के घर मे रहकर, मै भी इज्जत पाऊँगी ॥
मेरी इज्जत धर्मी के घर, धर्मी मेरा वर होता।
नही धर्म होता जिस घर मे, खाली वो घर हो जाता ॥
नही मागने से आती मै, नही दहेज को लेने से।
स्वय आती हूँ मै तो भैया, धर्म ध्यान के करने से ॥
लक्ष्मी को पाना यदि भैया, दहेज प्रथा को बद करो।
धर्मी लडकी लेकर भैया, महा पुण्य का काम करो ॥
धर्म जहा पर होता भैया, धन स्वय ही आ जाता है।
धर्मी लडकी लेने से घर, भी स्वर्ग-सा हो जाता है ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
दहेज मागना बद करे हम, गुण मुनियो के गाता है ॥

दृष्टांत–धर्मात्मा महिलाओं की कोख से ऋषि-मुनि जन्म लेते हैं

धर्मी महिलाओ की महिमा, नही वर्णन मै कर सकता।
एक धर्म है जो जीवो को, मोक्ष महल पहुचा सकता ॥
धर्म छोडकर प्राणी जग मे, भारी कष्ट उठाते है।
धर्म मार्ग पर चलनेवाले, पद मुक्ति का पाते है ॥
लाखो रुपए खर्च करके भी, जिसे नही, हम पा सकते।
धर्म ध्यान के कारण उसको, बिन पैसे हम पा सकते ॥
धर्मी महिला जिस घर रहती, वो घर स्वर्ग हो जाता है।
बिना कमाए आती लक्ष्मी, भूत प्रेत नही रहता है ॥
राम वीर हनुमान कृष्ण से, इस पृथ्वी पर आए है।
पारस प्रभु तीर्थकर भी, इसी धरा पर आए है ॥
धर्मी महिलाओ से भैया, जन्म उन्होने पाया है।
धन्य धन्य है वामा माता, पारस सा सुत जाया है ॥
वामा धर्मी नही होती तो, कैसे पारस आते।
केसे गाते महिमा उनकी, कैसे दर्शन पाते ॥
धर्म भरा था वामा जी मे, धर्मी सुत को जन्म दिया।
देकर जन्म पारस को भैया, जग मे अपना नाम किया ॥
जब तक सूरज चाद रहेगा, वामा जी का नाम रहेगा।
वामा जी के सुत पारस को, जग सारा प्रणाम करेगा ॥
धर्मी महिला जिस घर होती, कष्ट नही वहॉ रहते है।
धर्म के कारण उस महिला के, आनद मगल होते है ॥
धर्मी महिला के कारण ही, मुनि नगर मे आते है।
लेते है आहार उन्ही से, लेकर क्षुधा मिटाते है ॥
धन्य भाग्य उस नगर के भैया, जहा धर्मी महिला रहती है।
महा भाग्य उस घर के समझो, जिस घर मे वो तो रहती है ॥

धर्मी महिला के कारण ही, घर भी स्वर्ग बन जाता है।
ऋषि-मुनियो का चातुर्मास भी, इनके कारण होता है ॥
घर को स्वर्ग बनाना बहनो, धर्म ध्यान को अपनाओ।
धर्म ध्यान तुम करके बहना, वामा सी तुम बन जाओ ॥
त्रिसला वामा बनो सभी तुम, मोहन भैया चाहते है।
धर्मी माता के सुत होकर, श्रद्धा धर्म मे रखते है ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
धर्म मार्ग अपनाओ बहनो, धर्म सुखो का दाता है ॥

दृष्टांत—अपने को भूलकर ही हम दरिद्र बने हुए हैं

जितने जीव जगत मे भैया, सब खाली हाथो आए है।
खाली हाथो आए जग मे, हाथ पसारे जाते है ॥
नही साथ मे जाता कुछ भी, इकला जीव ये जाता है।
छल चोरी से जोडा पैसा, छोड यही पर जाता है ॥
छल चोरी करने से भैया, पाप जीव को लगता है।
पाप कर्म ही इस प्राणी को, नरक द्वार ले जाता है ॥
इकला सहता जीव महा दु ख, कोडे हटर खाता है।
छल चोरी के कारण प्राणी, नरको के दु ख पाता है ॥
छल चोरी करता ये प्राणी, भूल धर्म को जाने से।
जिनवाणी मे नही लगता मन, अशुभ कर्म के आने से ॥
अशुभ कर्म ही इस प्राणी को, नरक द्वार पहुचाता है।
धर्म मार्ग पर चलकर प्राणी, भव सागर तर जाता है ॥
सच्चा सुख तो तेरे अदर, भरा हुआ है भाई।
सच्चे रतन भरे है तुझमे, भूल गया तू भाई ॥
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित की, खान यदि तू चाहता है।
धर्म मार्ग अपना ले भैया, धर्म सुखो का दाता है ॥

धर्म मार्ग पर चलकर ही तू, निज स्वरूप मे आएगा।
निज मे रमनेवाला भैया, ही सच्चा सुख पाएगा ॥

जिसने निज को जाना भैया, उसने सब कुछ जान लिया।
जिसने नही जाना आत्म को, जीवन व्यर्थ लुटाय दिया ॥

श्रद्धा रूपी रतन को लेकर, धर्म मार्ग अपनाता चल।
निज स्वरूप मे रमकर भैया, ज्ञान की ज्योति जलाता चल ॥

जले ज्ञान की ज्योति भैया, धर्म मार्ग अपनाने से।
सच्चा सुख मिलता है भैया, जिनवाणी मन लाने से ॥

जिनवाणी को सुनकर भैया, आत्म ज्ञान जगाओ।
सयम रूपी पहन के चोला, सिद्ध शिला को जाओ ॥

सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
धर्म मार्ग पर चलकर प्राणी, भव सागर तर जाता है ॥

दृष्टात—विषयों में आसक्त प्राणी हमेशा दुःखी रहता है

विषय भोग से प्रीति हटाकर, प्रभु चरणो मे प्रीति लगा।
बात छोडकर विषय भोग की, निज आत्म मे ध्यान लगा ॥

विषय भोग के वश हो प्राणी, भारी कष्ट उठाता है।
मरकर जाता नरक गति मे, तीव्र वेदना पाता है ॥

नही आदर करता है कोई, नही पास आता उसके।
देख शक्ल लगती है बुरी, रहते दूर सभी उससे ॥

दुखी हमेशा रहता प्राणी, विषयो मे मन लाने से।
लक्ष्मी भी नही पास मे रहती, भूल प्रभु को जाने से ॥

अशुभ समय आ जाता भैया, विषयो मे मन लाने से।
धर्म ध्यान मे नही लगता मन, भूल प्रभु को जाने से ॥

विषय भोग को छोड के भैया, श्री जिनवर का ध्यान करो।
मुक्ति जिससे मिलती भैया, ऐसे सुदर काम करो ॥

सच्चा सुख नही है विषयो मे, सच्चा सुख आत्म सुख है।
जिसने जान लिया आत्म को, नही उसे कोई दुःख है ॥

आत्म ही परमात्म बनता, आत्म सुख का सागर है।
आत्म ही है ज्ञान की गगा, आत्म गुण की गागर है ॥

निज आत्म का ध्यान लगाकर, सच्चे सुख को पाया कर।
देव शास्त्र गुरु पूज्य जगत मे, उनका ध्यान लगाया कर ॥

देव शास्त्र गुरु पूज्य जगत मे, तीनो ही उपकारी है।
इन तीनो के श्री चरणो मे, सौ-सौ नमन हमारी है ॥

देव शास्त्र गुरुओ की भक्ति, सच्चे सुख को देती है।
श्रद्धा रखता है जो इनमे, दुःख उसका हर लेती है ॥

पर से प्रीति हटाकर भैया, विषय भोग का त्याग करो।
इन तीनो से प्रीति लगाकर, जीवन का उद्धार करो ॥

इन तीनो की भक्ति करके, सच्चे सुख को पाएगा।
श्रद्धा भक्ति करके, इनकी, इन जैसा बन जाएगा ॥

सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
विषय छोडकर धर्म कमाओ, धर्म सुखो का दाता है ॥

दृष्टांत—जो भी बच्चे अपने माता-पिता की सेवा करते हैं वो हमेशा सुखी रहते हैं

माता-पिता का आदर करना, नही निरादर करना तुम।
छूना उनके चरण को निश दिन, कहा उन्ही का करना तुम ॥

मात-पिता है परम हितैषी, शुभ चितक वो हमरे है।
बहुत अहसान उन्ही के हम पर, भूल गए हम सगरे है ॥

भूलो नही अहसान उन्ही का, उनकी सेवा किया करो ॥
करके सच्ची सेवा उनकी, दया धर्म को ग्रहण करो ॥

मात-पिता की सच्ची सेवा, नाश दुःखो का करती है।
सुखो को देती वो भैया, दुःख सारे हर लेती है ॥

निर्मल बुद्धि होती भैया, सेवा उनकी करने से।
आनद मगल होता जीवन, धर्म मार्ग पर चलने से ॥
कितने कष्टो को सह माता, जन्म पुत्र को देती है।
सतान जन्म के समय वो भैया, जन्म दूसरा लेती है ॥
खुद गीले मे सोकर माता, ख्याल पुत्र का करती है।
पिला दूध स्तन अपनो से, बडा पुत्र को करती है ॥
खुद भूखी रह लेती माता, पुत्र को भोजन देती है।
सुदर-सुदर वस्त्र पहनाकर, मन अपने खुश होती है ॥
भाव यही मन रहते उसके, पुत्र बडा ये हो जाए।
कुल का दीपक बने पुत्र ये, पदवी ऊँची पा जाए ॥
भाव यही मन रहते उसके, बने धर्म का धारी ये।
सेवा करे ऋषि-मुनियो की, सगति अच्छी बैठे ये ॥
तन मन धन सब लगा वो अपना, भाव यो हृदय रखते है।
योग्य बने सतान हमारी, ध्यान उसी का रखते है ॥
भूल रहे हम मात-पिता को, नही सेवा उनकी करते।
छूने मे भी चरण उन्ही के, महसूस शर्म हम है करते ॥
ज्यादा नही बढाकर इसको, पूर्ण यही पर करता हूँ।
करना सेवा मात-पिता की, अर्ज सभी से करता हूँ ॥
सेवा से मिलती है मेवा, सेवा सुख को देती है।
सच्ची सेवा मात-पिता की, दु ख सारे हर लेती है ॥
सच्ची सेवा कर श्रवण ने, जग मे नाम कमाया है।
आज्ञाकारी पुत्र कहाकर, हमको पाठ सिखाया है ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
आदर करे हम मात-पिता का, करके खुशी मनाता है ॥

दृष्टांत—ऋषि मुनियों के दर्शन का महत्व

करना दर्शन ऋषि-मुनियो के, करके दर्शन हर्षाना।
ऋषि मुनि है पूज्य हमारे, करके भक्ति हर्षाना ॥
देव शास्त्र गुरु पूज्य हमारे, जग मे पूजे जाते है।
उनके चरणो की कृपा से, मन वाछित फल मिलते है ॥
देव गुरु के दर्शन भैया, बिगडे काम बनाते है।
श्रद्धा उनमे रखनेवाले, उन जैसे बन जाते है ॥
महा पुण्य का उदय होय जब, दर्शन इनके होते है।
देव गुरु के दर्शन भैया, बीज मोक्ष का बोते है ॥
ऋषि-मुनियो के दर्शन का मै, तुमको महत्व बताता हूँ।
करके दर्शन देव गुरु के, अपना भाग्य सराहता हूँ ॥
एक व्यक्ति था एक गॉव मे, जिन दर्शन नित करता था।
देव गुरु के चरणो मे वो, श्रद्धा गहरी रखता था ॥
देता था आहार मुनियो को, देकर हर्ष मनाता था।
तीर्थ क्षेत्रो की वदना को, समय-समय पर जाता था ॥
एक दिना की सुनो कहानी, देखो अब क्या होता है।
गया एक दिन जिन मदिर वो, चमत्कार क्या होता है ॥
मुनि एक आए मदिर मे, दर्शन कर हर्षाता है।
बेठ मुनि के चरण कमल मे, भारी हर्ष मनाता है ॥
घर पर ताला लगा है उसके, बैठा वो मुनि चरणो मे।
पीछे आए चोर थे घर पर, भाव चोरी का लेकर के ॥
देखा चोरो ने जब उसके, घर पर ताला लगा हुआ।
पता लगा जब उन चोरो को, मुनि दर्शन को गया हुआ ॥
भाव बदलकर चोरी का वो, वापिस वहॉ से जाते है।
नही करेगे चोरी इसके, आपस मे वो कहते है ॥
चलकर चोर वहॉ से भैया, पास के घर मे जाते हैं।
करता था जो मुनि निदा वो, घर उसके घुस जाते है ॥

घर मे उसके घुस चोरो ने, माल था सारा बाध लिया।
भारी मार लगाई उसको, उसे बिलखता छोड दिया ॥
रो-रो रुदन मचाता है वो, याद प्रभु को करता है।
मुनि निदा करनेवाले का, ऐसा हाल हो जाता है ॥
निदा नही करे मुनियो की, करके दर्शन हर्षाए।
छूकर इनके चरण कमल को, इन जैसे हम बन जाए ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
ज्ञान की किरणे ले मुनियो से, कविता नई बनाता है ॥

दृष्टात—(दो भाइयों का) भाग्य की रचना जीव स्वयं करता है

जैसा चाहो मेरे भैया, अपना भाग्य बनालो।
उज्ज्वल भाग्य बनाना है तो, देव गुरु को ध्यालो ॥
देव शास्त्र गुरु पूज्य हमारे, आत्म के हितकारी है।
इनके चरण कमल मे भैया, सौ-सौ नमन हमारी है ॥
इन तीनो की भक्ति भैया, भव से पार उतारेगी।
उज्ज्वल भाग्य बना ये हमरा, मोक्ष द्वार पहुचाएगी ॥
कैसे बनता भाग्य मनुष्य का, वो ही तुम्हे बताता हूँ।
करके भक्ति देव गुरु की, अपना भाग्य सराहता हूँ ॥
दो भाई थे एक गॉव मे, हिल-मिल दोनो रहते थे।
भावो मे था अतर उनके, वैसे सग मे रहते थे ॥
बडे भाई थे ज्ञानी ध्यानी, नित मदिर मे जाते थे।
श्री जिन पूजा करके नित वो, अपना भाग्य सराहते थे ॥
भक्ति करते थे मुनियो की, श्रद्धा उनमे रखते थे।
आहार मुनि को देकर नित वो, पुण्य बध नित करते थे ॥

तीर्थ क्षेत्रो की वदना को, समय-समय पर जाते थे।
देकर दान तीर्थो को वो, अपना भाग्य सराहते थे ॥
कहते थे वो धर्म बडा है, धर्म ही पार लगाता है।
धर्म मार्ग पर चलनेवाला, स्वर्ग मोक्ष सुख पाता है ॥
धर्म ध्यान के कारण उनके, घर मे लक्ष्मी रहती थी।
जितनी खर्चे थे वो भैया, उतनी बढती जाती थी ॥
छोटे भाई धर्म ध्यान से, दूर हमेशा रहते थे।
ऋषि-मुनियो की निदा कर वो, मन ही मन खुश होते थे ॥
तीर्थ क्षेत्रो की वदना को, कभी नही वो जाते थे।
आहार दान के भाव नही वो, भैया कभी बनाते थे ॥
धर्म महा उपकारी जग मे, कभी नही उसने जाना।
मदिरा पीने मौज उडाने मे, था सुख उसने माना ॥
मदिरा पीकर एक दिना वो, भैया पिक्चर जाता है।
वापस घर आ करके देखा, माल सफाया सारा है। ॥
चोरी हो गई घर मे उसके, माल तनिक-सा नही छोडा।
खाने को नही रहा है दाना, फिरे भटकता अब रोता ॥
पिछला पुण्य जो भोग रहा था, भैया उसका खत्म हुआ।
धर्म नही रहने के कारण, कितना बुरा हाल हुआ ॥
सुनकर कविता को मेरी तुम, धर्म मार्ग को अपनाना।
चाहे कितनी पडे मुसीबत, भूल नही इसको जाना ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
धर्म मार्ग पर चले सभी हम, धर्म सुखो का दाता है ॥

दृष्टांत—अंत समय में जीव अपनी गल्तियों का पश्चाताप करता है।

अत समय मे जीव के, आती बाते याद।
जो उसने पीछे करी, वो झूमे दिन-रात ॥

करते है जो बुरा पर का, अत समय दु खी होते है।
बोनेवाले कीकर भैया, नही आम को पाते है ॥
निर्बल को जो सताके भैया, मन मे खुशी मनाते है।
एक दिना वो निर्बल बनकर, भारी कष्ट उठाते है ॥
खुश होकर जो तकते भैया, पर नारी मा-बहनो को।
भारी विपदा पडती उन पर, भोगे दु ख नरको के वो ॥
नरक द्वार मे भारी दु ख है, नही कहे मुख से जाते।
बचके रहना पाप कर्म से, मुनि हमे है समझाते ॥
करुणा करके मुनिवर हमको, बार-बार समझाते है।
धर्म मार्ग पर चलो रे भैया, धर्म का महत्त्व बताते है ॥
धर्म ही रक्षा करे जीव की, धर्म सुखो का दाता है।
लेता है जो शरण धर्म की, स्वर्ग मोक्ष सुख पाता है ॥
पाप कर्म का नाश छिनक मे, एक धर्म ही करता है।
लेनेवाला शरण धर्म की, कष्टो से बच जाता है ॥
धर्मी आदर पाता जग मे, धर्मी पार उतरता है।
अटल धर्म पर रहनेवाला, शिव रमणी को वरता है ॥
अच्छे काम करो जीवन मे, धर्म मार्ग को ग्रहण करो।
पाप कर्म का करो त्याग रे, जीवन का उद्धार करो ॥
जीवन सुखमय होता भैया, धर्म मार्ग अपनाने से।
कष्ट नही आते जीवन मे, देव गुरु को ध्याने से ॥
देव गुरु की भक्ति जिसके, हृदय के बिच होती है।
सदा सुखी वो रहता भैया, नही कमी कुछ रहती है ॥
देव गुरु की भक्ति करके, अपना भाग्य सराहो।
जिस पथ को अपनाया प्रभु ने, उस पथ को अपनाओ ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
देव गुरु की भक्ति करके, अपना भाग्य सराहता है ॥

दृष्टांत–एक व्यक्ति का (जिसके पास जिन दर्शन के लिए भी समय नहीं था)

जिन मदिर नित जाना भैया, जाकर हर्ष मनाना।
करके दर्शन श्री जिनवर के, अपना भाग्य सराहना ॥
श्री जिनवर का दर्शन भैया, सच्चे सुख को देता है।
आनद मगल होता जीवन, कष्ट सभी हर लेता है ॥
नही विपत्ति आती कोई, जिन मदिर नित जाने से।
बिना बुलाए आती लक्ष्मी, जिन दर्शन नित करने से ॥
जिन दर्शन नित करना भैया, दर्शन प्रभु के सुखदाई।
जिसने दर्शन किए प्रभु के, राह मोक्ष की है पाई ॥
बिगडे काम बने मेरे भैया, रेखा भाग्य पलट जाती।
करने से दर्शन जिनवर के, बुद्धि निर्मल हो जाती ॥
नही जाते जो जिन मदिर मे, नही फुरसत जिन दर्शन की।
कैसी हालत होती उनकी, कोशिश की बतलाने की ॥
एक व्यक्ति था एक गॉव मे, दूर धर्म से रहता था।
जिन दर्शन नही करता था वो, निदा सबकी करता था ॥
चोरी करने मदिरा पीने मे ही, मौज मनाता था।
माया के चक्कर मे पडकर, अपना समय बिताता था ॥
पर नारी मा-बहनो की वो, इज्जत लूटा करता था।
जिन मदिर की करके निदा, मन मे खुशी मनाता था ॥
जैसा कर्म करे ये प्राणी, वैसा ही फल पाता है।
श्री जिन की निदा करने से, कैसा हाल हो जाता है ॥
क्या रखा जिन मदिर मे वो, कहकर हर्ष मनाता है।
एक दिना वो स्कूटर पर, किसी काम से जाता है ॥
थोडा ही चल पाया था वो, ब्रेक फेल हो जाते है।
ट्रक से टक्कर हो गई उसकी, हाथ-पैर नही रहते है ॥

टूट गई हड्डी मानी की, इक अखिया भी चली गई।
नही उठानेवाला कोई, उसकी बुरी दशा हुई ॥
होस्पिटल मे पडा-पडा वो, हाय-हाय चिल्लाता है।
सूरदास कहते सब उसको, पडा-पडा पछताता है ॥
क्या कहता है पडा-पडा वो, ध्यान लगाकर सुन लेना।
सुनकर कविता को मेरी तुम, जिन मदिर मे नित जाना ॥
जिन मदिर मे नही जाने से, मेरी ऐसी दशा हुई।
निदा करने से श्री जिन की, मेरी हड्डी टूट गई ॥
जिनको कहता था मै अपना, वो ही मुझसे दूर हुए।
सगे सबधी सभी हमारे, हमसे कोसो दूर हुए ॥
जिन की निदा करता था मै, बचा उन्ही की कृपा से।
वरना मर जाता मै बिलकुल, कहता है मानी सबसे ॥
जिन मदिर नित जाऊँगा मै, जिन दर्शन नित पाऊँगा।
देव शास्त्र गुरु पूज्य जगत मे, उनकी महिमा गाऊँगा ॥
भाव यही लिखने का भैया, जिन दर्शन नित करना रे।
देव शास्त्र गुरु पूज्य जगत मे, उनकी भक्ति करना रे ॥
सुनने वालो सुन लो, सबको मोहन यही सुनाता है।
जिन दर्शन नित करना भैया, करके हर्ष मनाता है ॥

धर्म-कार्य में व्यय, सुख-समृद्धि का कारण अक्षय

दान पुण्य की महिमा श्री, जिनवर के आगम मे गाई।
जिसके कारण उच्च कुलाश्रित, हमने मनुज गति पाई ॥
धर्म कार्य मे धन देकर, जो मन मे खुशी मनाते है।
करके भक्ति ऋषि-मुनियो की, जीवन सफल बनाते है ॥
गगा-जमुना की जलधारा, क्यो सदैव बहती रहती।
जग को फल, सुगध छाया दे, वृक्षो मे महक बनी रहती ॥

सारा जल बरसा कर बादल, 'जलधर' क्यो कहलाते है।
दे देकर ये रूप प्रकृति के, स्वय भव्य हो जाते है ॥
धन दे देकर ही धरती ने, नाम वसुधरा है पाया।
कितने खनिज निकलते प्रतिदिन, फिर भी नही घटी काया ॥
कभी नही यह घटी सपदा, धर्म-कार्य मे देने से।
यह घटती है मेरे भैया, नही त्याग के करने से ॥
धर्म कार्य मे देने से धन, सहस गुणा बढ जाता है।
कैसे बढ जाता इतना यह, मोहन तुम्हे सुनाता है ॥
एक व्यक्ति था एक गॉव मे, धर्मी वह कहलाता था।
तन-मन-धन से धर्मनिष्ठ हो, जीवन सदा बिताता था ॥
धर्म ही रक्षा करे जीव की, धर्म ही पार लगाता है।
धर्म पर चलने वाला व्यक्ति, स्वर्ग-मोक्ष सुख पाता है ॥
धर्मी जन को यश मिलता है, धर्मी जन का धन बढता।
ऋषि-मुनियो के जीवन से वह, अपना भक्ति-काव्य गढता ॥
भावो के अनुसार ही भैया, कर्म-बध हो जाता है।
जैसा कर्म करे यह प्राणी, वैसा ही फल पाता है ॥
इक दिन सोचा उस धर्मी ने, जिन-मदिर मै बनवाऊँ।
बनाकर सुदर देवालय, धर्म-ध्वजा मै फहराऊँ ॥
जितने सुदर भाव थे उसके, नही द्रव्य था उतना।
दया-धर्म प्रधान जगत मे, भावो का क्या कहना ॥
प्लाट खरीदा उस धर्मी ने, जिन मदिर बनवाने को।
लिखे सभी दृष्टात कवि ने, धर्म ध्वजा फहराने को ॥
धर्मी जन उस प्लाट की भैया, बाउड्री करवाता है।
लगा खुदाई जब वह करने, चमत्कार क्या पाता है ॥
जहॉ कही खोदे धरती को, वही अशर्फी मिलती है।
कितनी सारी मिलीं उसे यह, नही कलम लिख सकती है ॥

बनवाया सुदर जिन-मदिर, धर्मशाला इक बनवाई।
देकर लाखो दान-पुण्य मे, फिर भी कमी नही आई ॥
ऐसे बढता है धन भाई, धर्म कार्य मे वर्तन से।
पाप सभी कट जाते है, श्री देवगुरु के दर्शन से ॥
सुनने वालो सुनो सभी को, मोहन यही सुनाता है।
दान-धर्म पर चलकर प्राणी, भव-सागर तर जाता है ॥

धर्म-मित्र से करो मित्रता

धर्म-मित्र से करो मित्रता, धर्म सुखो की खान है।
धर्म मार्ग पर चलने वाला, ही तो पुरुष महान है ॥
धर्मी आदर पाता जग मे, धर्मी पार उतरता है।
एक धर्म ही है जीवो के, साथ अत तक रहता है ॥
धर्म-मार्ग के साधक जन ही, उच्च सुखद पद पाते है।
धर्म छोड देने वाले नर, नरक-द्वार मे जाते है ॥
तीर्थकर पद मिला भव्य को, धर्म-मार्ग अपनाने से।
सुखी हमेशा रहता प्राणी, सयम नियम निभाने से ॥
सच्ची श्रद्धा जिसे धर्म मे, सच्चा सुख वह पाता है।
कष्टो को भी सहज भाव से, धर्मी जन सह जाता है ॥
धर्मी के जीवन मे दु ख भी, आकर सुख बन जाता है।
जहॉ कही भी जाता है, वह मान-समादर पाता है ॥
जो भी कार्य करे धर्मी जन, सफल उसी मे होता है।
पाते ही स्पर्श हाथ का, मिट्टी सोना होता है ॥
धर्म जहॉ पर होता, धन-वैभव की कमी नही रहती।
धर्मी जन के पीछे-पीछे, लक्ष्मी श्री भागी फिरती ॥
धन-लक्ष्मी कहती धर्मी से, बनी तुम्हारी दासी हूॅ।
जहॉ कही भी जाओगे तुम, सदा तुम्हारी साथी हूॅ ॥

भाव यही लिखने का मेरा, धर्म-मित्र उपकारी है।
धर्म-मित्र से करो मित्रता, महिमा इसकी न्यारी है ॥

जब से करी मित्रता इससे, इसको अपना माना है।
किस्मत खुली हमारी जब से, महत्त्व धर्म का जाना है ॥

सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
धर्म मित्र से करो मित्रता, यह भव पार लगाता है ॥

मुनि-दर्शन महिमा

ऋषि-मुनियो की भक्ति करना, करके हर्ष मनाना।
देव शास्त्र गुरु पूज्य हमारे, उनकी महिमा गाना ॥

ऋषि-मुनियो की वैयावृत्ति, भव से पार लगाती है।
देकर सच्चा ज्ञान हमे वह, सिद्ध द्वार पहुँचाती है ॥

ऋषि-मुनियो के दर्शन समझो, बडे पुण्य से मिलते है।
जिनको मिलते दर्शन उनके, जीवन धन्य समझते है ॥

ऋषि-मुनियो की भक्ति के वश, यह कवि कविता लिखता है।
छूकर उनके चरण-कमल को, हृदय सुमन खिल उठता है ॥

जिस नगरी मे मुनि पधारे, नगर वो पावन हो जाता।
उनके दर्शन से तो भैया, कौन धनी नही बन जाता ॥

बिगडे काम बने सारे ही, भक्ति उन्ही की करने से।
आनद मगल होता जीवन, देव गुरु को भजने से ॥

इन निर्धन की सुनो कहानी, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
कैसे वह धनवान बना, मै वह भी तुम्हे बताता हूँ ॥

सुनकर कविता को भैया तुम, भक्ति मुनियो की करना।
लेकर शुभ आशीष उन्ही से, आत्मराम हित कर लेना ॥

इक निर्धन था एक गॉव मे, काम रात-दिन करता था।
पहर आठ मेहनत करके भी, नह भूखा ही मरता था ॥

देव गुरु के दर्शन करने, नही कभी वह जाता था।
निश मे भोजन करता था, और भारी कष्ट उठाता था ॥
जो भी काम करे वह निर्धन, विघ्न उसी मे आता था।
क्या कारण था इसके पीछे, नही समझ वह पाता था ॥
भारी कष्ट उठाए उसने, भूल धर्म को जाने से।
बिगडी किस्मत बनती भैया, मुनियो के गुण गाने से ॥
एक बार वह पुण्य-योग से, तीर्थक्षेत्र पर जाता है।
कैसे पुण्य उदय होता है, मोहन तुम्हे सुनाता है ॥
तीर्थक्षेत्र पर जाकर उसने, श्री जिन का गुणगान किया।
करके दर्शन वीर प्रभु के, भारी पुण्य कमाय लिया ॥
सुना वहॉ पर उसने जब, मुनि इक यहॉ पधारे है।
परम तपस्वी ज्ञानवान है, प्रवचन उनके न्यारे है ॥
पॉच रुपल्ली पास भक्त के, निर्धन जीवन ढोता था।
नही समझा था अर्थ धर्म का, इसलिए दु खी वह होता था ॥
भाव बने मन मे दर्शन के, खाली हाथ नही जाना है।
ले खरीद चार का नारियल, मुनि श्री चरण चढाना है ॥
शेष एक जो बचा रुपइया, खर्च उसे कर देता है।
उस क्षण बस यो ही उमग मे, टिकट लाटरी लेता है ॥
सहज भाव से टिकट मोडकर, पाकिट मे रख लेता है।
ले नारियल दोनो हाथो मे, मुनि-दर्शन चल देता है ॥
नारियल चढा मुनि-चरणो मे, करके दर्शन हर्षाया।
करते ही दर्शन मुनिवर के, उसने सच्चा सुख पाया ॥
मुनिराज ने उसको भैया, महत्व धर्म का समझाया।
देकर सद् उपदेश उन्होने, निश का भोजन तजवाया ॥
लेकर व्रत मुनिवर से उसने, अपना भाग्य सराहा।
मुनि के आशिष का फल देखो, आगे अब क्या रग लाया ॥

परम पूज्य तपोनिधि निग्रन्थ दि जैनाचार्य 108 श्री विधासागर जी महाराज

घर आकर जब देखा उसने, लाटरी नबर आया है।
एक लाख की खुली लाटरी, पाकर हर्ष मनाया है ॥
मुनि-चरणो की कृपा से वह, निर्धन क्षण मे धनिक हुआ।
अशुभ समय टल गया रे उसका, मुनियो का वह दास हुआ ॥
बिगडी किस्मत बन जाती है, भक्ति सरल मन करने से।
आनदकारी होता जीवन, देव गुरु को भजने से ॥
भाव यही लिखने का मेरा, धर्म-मार्ग को ग्रहण करो।
ऋषि-मुनि है सब पूज्य हमारे, उनकी वैयावृत्ति करो ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
सच्चे गुरु चरणो को पाकर, कोई न निष्फल जाता है ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
दिनकर से ज्यो अधकार, मुनि दर्श से दुःख मिट जाता है ॥

मंदिर का नहिं पैसा खाना, करना कभी नहीं चोरी

नहि पैसा खाना मदिर का, दान हमेशा करना रे।
सुख से यदि चाहता रहना, श्री जिनवर को भजना रे ॥
श्री जिनवर की भक्ति से, ही कष्ट दूर हो जाते है।
करते भक्ति श्री जिन की वे, साधक मुक्ति पाते है ॥
देव शास्त्र गुरु पूज्य जगत् मे, इनकी भक्ति किया करो।
सुनकर जिनवाणी को निज पर आतम का कल्याण करो ॥
पाप कर्म से रहे दूर हम, शुभ कर्मो को किया करे।
शुभ कर्मो को करके हम सब, हर दम सुख से जिया करे ॥
दुःखी सदा वे रहते भैया, पाप कर्म जो करते है।
मंदिर का खाते जो पैसा, जीवन भर दुःख सहते है ॥
मंदिर का पैसा खा दुर्जन, नरक द्वार मे जाता है।
कितनी विपदा आती उस पर, मोहन तुम्हे सुनाता है ॥

उन तीनो के सदर्भ मे वह, व्यक्ति पागल होता जाता।
भूखा फिरता गॉव गली में, रखता कोई नहीं नाता ॥
इक दिन सुना गॉव वालो ने, पागल के अपने मुख से।
बोल रहा था चौपालो मे, पछताता भारी दुख से ॥

'मरण समय आया है मेरा, ध्यान से बात सुनो मेरी।
मदिर का नहि पैसा खाना, करना नही कभी चोरी ॥
कैसी हालत हुई हमारी, रोटी के मुहताज हुए।
लडका मर गया मर गई पत्नी, ऐबी हमे दामाद मिले ॥

ऐसा हाल हुआ है मेरा, मदिर की चोरी करने से।
सुखी नही रह सकता प्राणी, पापो की झोली भरने से ॥
सुखी यदि रहना चाहो तो, धर्माचरण करो भाई।
कभी नही खाना जीवन मे, चोरी का पैसा भाई ॥

सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
दान सदा दे जिन-मंदिर मे, देकर खुशी मनाता है ॥
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
करके दर्शन श्री जिनवर के, फूला नही समाता है ॥

नेकी और बदी का फल

बुरा करते जो औरो का, बुरा उनका ही होता है।
करते है जो नेकी भैया, भला उनका ही होता है ॥
नेकी और बदी ही निश्चित, साथ जीव के जाती है।
नेकी स्वर्गो मे ले जाती, बदी नरक भरमाती है ॥

नरक द्वार मे भारी दुख है, नरक दुखो की खान है।
करते है जो नेकी भैया, वही सत्पुरुष महान है ॥
नर तन पाकर नेकी करना, राह धर्म की चलना रे।
नही सताना किसी जीव को, पाप कर्म से बचना रे ॥

इक व्यक्ति था एक गॉव मे, साहूकार कहाता था।
नही कमी थी घर मे उसके, धर्म उसे नहि भाता था ॥
धर्मी जन को देख सदा वह, ईर्ष्या से जल जाता था।
करके निदा धर्मी जन की, मन मे हर्ष मनाता था ॥
कभी नही सोचा था उसने, धर्म महाउपकारी है।
धर्म ही सच्चा साथी जग मे, महिमा इसकी न्यारी है ॥
इक दिन वही लालची व्यक्ति, जिन मंदिर मे जाता है।
चॉदी सोना छत्र चुराकर, घर अपने ले आता है ॥
नही ठिकाना रहा खुशी का, खुश थे सब ही घरवाले।
देख माल मदिर का सब ही, बन बैठे थे मतवाले ॥
प्राणी चार थे घर मे उसके, चारो ने खुशी मनाई।
उस व्यक्ति की पत्नी ने, खुश होकर खीर बनाई ॥
नही कभी सोचा चारो ने, सभी पाप-फल पाते है।
सोने की घडवाकर चीजे, अपना ऐश्वर्य दिखाते है ॥
पहन नही पाए वे चीजे, देखो क्या-क्या होता है।
थोडे दिन के अदर ही वह, वश खत्म हो जाता हे ॥
कैसर रोग हुआ पत्नी को, खर्च हुआ पैसा सारा।
मरकर वह तो गई नरक मे, कोई नही बचावन हारा ॥
इक लडका इक लडकी थी जो, पीछे अपने छोड गई।
रोता और बिलखता उनको, नरक-द्वार मे पहुॅच गई ॥
हुई शादी उस लडकी की, ससुराल मे अपनी जाती है।
मिला शराबी घरवाला तो, दु खी हमेशा रहती है ॥
सुनो हाल लडके का भैया, ट्रेन मे इक दिन जाता है।
एक्सीडेट हुआ रस्ते मे, पिच करके मर जाता है ॥
नही कफन मिल पाया उसको, लाश नही उसकी पाई।
रोने वाला कोई नही था, नही खबर उसकी आई ॥

पापो का फल देखो भैया, देखो फल तुम नेकी का।
सुख से रहना अगर चाहते, करो भजन तुम श्री जिन का ॥
देखे तुमने दीन भिखारी, दर-दर कर फैलाते है।
मॉगा करते इक-दो पैसा, अरु भूखे मर जाते है ॥
नही पैरो मे चप्पल उनके, नहि तन पर कपडा होते।
नही सुखी जीवन है उनका, पूरब पाप कर्म ढोते ॥
सर्दी मे वे फिरे ठिठुरते, बात नही कोई करता।
ऐसी हालत हो जाती है, नेकी नही जो नर करता ॥
महिमा देखो पुण्य धर्म की, पुण्यवान सुख पाता है।
जहॉ कही भी जाता धर्मी, सुखी वहॉ हो जाता है ॥
लक्ष्मी सग सदा रहती है, कीर्ति गले लगाती है।
पूरब पुण्य धर्म के कारण, सुख-सपद इठलाती है ॥
पुण्यवान प्राणी ही देखो, मुनियो के दर्शन करते।
पाप उदय है जिनके भैया, नही दर्शन उनको मिलते ॥
पुण्यवान प्राणी इस जग मे, वॉछित फल पाते है।
करते है जो नेकी परहित, जीवन सुखी बनाते है ॥
पुण्यवान प्राणी के घर पर, किंचित् कमी नही खलती।
गुरुजन की भक्ति करने से, निर्मल बुद्धि बनी रहती ॥
करना भक्ति ऋषि-मुनियो की, भक्ति सदा ही सुखदाई।
सुख से गर रहना चाहो तुम, पर-कल्याण करो भाई ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
बदी छोडकर नेकी पालो, नेकी सुख की दाता है ॥

धर्मी सुखी, अधर्मी दुःखी

सुखी हमेशा रहता धर्मी, दु खी अधर्मी रहता है।
जो भी काम करे धर्मी जन, नफा उसी मे होता है ॥

इज्जत होती है धर्मी की, मिले सभी सुख धर्मी को।
हरी धर्म की जड होती है, भजो सदा परमातम को ॥

परमातम को भजने वाला, परमातम बन जाता है।
स्वर्ग मोक्ष सुख मिलता उसको, कष्ट नहीं वह पाता है ॥

धर्म जहॉ पर होता भैया, धन भी खुद आ जाता है।
घट जाता जब धर्म जीव का, निर्धन वह हो जाता है ॥

धर्म मार्ग पर चलने वाले, धन वैभव सब पाते है।
छोड धर्म को देने वाले, नरको के दु ख पाते है ॥

स्वर्गो मे सुख मिलता भैया, मिलता है दु ख नरको मे।
सुख की चाह अगर है तुमको, श्रद्धा रक्खो मुनियो मे ॥

ऋषि-मुनि है पूज्य हमारे, दर्शन इनके सुखदाई।
दर्शन करने से मुनियो के, कष्ट नही रहता भाई ॥

ज्ञान ज्योति देते मुनिवर श्री, जीवन-मूल्य बताते है।
ऐसे मुनियो की भक्ति कर, मोहन भजन बनाते है ॥

धर्म महाउपकारी जग मे, जैनागम मे गाया है।
लिखना नही आता था मुझको, मुनियो ने सिखलाया है ॥

सुखमय जीवन की चाहत हो, दया धर्म को ग्रहण करो।
छोड पाप का मार्ग रे भैया, सप्त व्यसन का त्याग करो ॥

मिलते है दु ख जन्म-जन्म तक, छोड धर्म को देने से।
सच्चा यश नही पाता कोई, धर्म मार्ग खो देने से ॥

घट जाता जब धर्म मनुष्य का, धन-लक्ष्मी स्वय चली जाती।
उसके आते ही जीवन मे, सदा निशा घर कर जाती ॥

नही इज्जत करता है कोई, पास नही कोई आता।
बिन पैसे नहि पूछे कोई, दूर सगा भी हो जाता ॥

दुनिया पागल कहती भैया, पैसा पास न होने से।
ज्ञानी भी बुद्धू कहलाता, छोड धर्म को देने से ॥

भाव यही लिखने का मेरा, पाप मार्ग का त्याग करो।
मिलती जिससे मोक्ष सपदा, उसी मार्ग का भाव धरो ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
ऐसा जैन धर्म पालो जो, भव सागर पार लगाता है ॥

सेवा करो सत्साधु संघ की

सेवा करो सत्साधु सघ की, करो प्रभु का ध्यान।
इनकी भक्ति से होता है, आतम का कल्याण ॥
प्रभु भक्ति करने से भैया, पाप नाश हो जाते है।
खिलता शिव स्वरूप आतम का, रोग कही खो जाते है ॥
मुनियो की भक्ति करने से, जीवन सुखमय हो जाता।
पाप मार्ग को तजकर प्राणी, धर्म मार्ग पर बढ जाता ॥
बिगडी किस्मत बन जाती है, धर्म मार्ग अपनाने से।
मन वॉछित फल पा लेते है, देव गुरु को ध्याने से ॥
देव गुरु की करो वदना, देव गुरु उपकारी है।
इनके चरण-कमल मे निश-दिन, सौ-सौ नमन हमारी है ॥
मुनियो की भक्ति करने से, मुझको भैया ज्ञान मिला।
मुझ जैसे अज्ञानी को भी, लिखने का वरदान मिला ॥
धर्म मार्ग मे रमता है मन, और कही नही लगता है।
ध्यान निरतर करने से सच, पुण्य कर्म यह पगता है ॥
इक व्यक्ति की सुनो कहानी, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
जिसने सेवा की ऋषिवर की, उसकी कथा सुनाता हूँ ॥
सुनकर कविता को भैया तुम, भक्ति उन्ही की करना।
भक्ति मे शक्ति होती है, निश्चय मन मे धरना ॥
इक व्यक्ति था एक गॉव मे, धर्मी वह कहलाता था।
धर्म कार्य करते रहने मे, अपना मन बहलाता था ॥

लेकिन जो भी काम करे वह, सफल नही होता था।
पैसा खूब लगाने पर भी, टोटा उसको होता था ॥
मेहनत खूब करी धर्मी ने, सफल नही हो पाया।
आखिर कैसे सफल हुआ वह, लिखकर मोहन हर्षाया ॥
जिस नगरी मे रहता था वह, मुनियो का सघ आया था।
सुनकर उनकी महिमा न्यारी, मन-ही-मन हर्षाया था ॥
छोड के सारे काम-काज वह, मुनि-दर्शन को जाता है।
दोनो हाथ जोड वदन कर, भक्ति मे खो जाता है ॥
नित दर्शन कर साधु सघ के, भक्ति मे लीन हुई काया।
नियम आज कुछ लूँ मुनिवर से, ऐसा उसके मन आया ॥
नियम लिए मुनिश्री चरणो मे, निश भोजन नही पाऊँगा।
नित जिन-मदिर मे जाकर मै, प्रभु का ध्यान लगाऊँगा ॥
प्रात उठकर णमोकार का, प्रतिदिन जाप करूँगा।
देव शास्त्र अरु गुरु की भक्ति, अपने हृदय वरूँगा ॥
ऐसे सुव्रत लिए मुनिवर से, आशीर्वाद पाया है।
छूकर उनके चरण माथ से, धन्य हुई काया है ॥
नियम निभाने से तो भैया, शुभ कर्मो का उदय हुआ।
जो भी काम करे वह व्यक्ति, उसमे अब वह सफल हुआ ॥
जहाँ कही वह हाथ लगाए, नफा उसी मे होता है।
सत्गुरु का आशीष सुना है, व्यर्थ कही नही होता है ॥
भाव यही लिखने का मेरा, भक्ति मुनियो की करना।
भक्ति मे शक्ति होती है, नही प्रमाद इसमे धरना ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
भक्ति करने से यह जीवन, सुखद भव्य हो जाता है ॥
भक्ति करने वाले भविजन, भव से पार उतरते है।
इक दिन मूलाचार धार कर, मुक्ति-धाम विचरते है ॥

जैसा भावे वैसा पावे

जैसे होते भाव जीव के, वैसा ही फल मिलता है।
अच्छे भावो से प्राणी को, स्वर्ग मोक्ष सुख मिलता है ॥
सद्भावो से ऋषि-मुनि ध्यानी, गुणस्थान क्रम चढते है।
दुर्भावो से पापी प्राणी, नरको मे जा गिरते है ॥
सद्भावो से वीर प्रभु ने, तीर्थंकर पद पाया है।
रावण को दुर्भावो ने ही, नरक-द्वार पहुँचाया है ॥
हिसक जीवो को देखो तुम, हिसा का फल पाते है।
देते कष्ट दूसरो को अरु, खुद जीवन घृणित बिताते है ॥
भावो से ही बने असुर, अरु भावो से भगवान है।
शुद्ध भाव से इस प्राणी का, हो जाता कल्याण है ॥
बुरे भाव तजो मेरे भाई, अच्छे भाव बनाओ।
स्वस्थ-सुखी गर रहना चाहो, शुद्धाहार अपनाओ ॥
भोजन शुद्ध सदा करने से, भाव शुद्ध हो जाते है।
सुखी रहे सब जीव जगत के, यही भावना भाते है ॥
दो भाई की सुनो कथा यह, हितकर तुम्हे सुनाता है।
जैसे जिसके भाव वही फल, तुमको आज बताता है ॥
दो भाई थे एक गॉव मे, हिल-मिल दोनो रहते थे।
भावो मे था अतर उनके, वैसे सग बिहरते थे ॥
छोटा भाई धर्म ध्यान मे, सबसे आगे रहता था।
लेकिन बडा भाई चोरी कर, सुख का अनुभव करता था ॥
नही बोध था धर्म-अधर्म का, व्यसनो मे रस पाता था।
जिन मदिर विमुख हुआ वह, क्लबो मे नित जाता था ॥
छोटा भाई ऋषि-मुनियो की, सेवा भक्ति करता था।
तीर्थो का वदन करने को, अवसर पाकर जाता था ॥
इक दिन छोटा भाव बनाता, जिन मदिर बनवाने के।
मुनि दिगबर की भक्ति का, भारी पुण्य कमाने के ॥

पैसा पास नही था उसके, देखो अब क्या होता है।
शुद्ध भावना से ही प्राणी, पुण्य बीज का बोता है ॥
निज घर मे से उसने आधा, जिन मंदिर के नाम किया।
लेकर नाम प्रभु का मन मे, शुरू पुण्य का काम किया ॥
करी खुदाई उसने भैया, गिन्नी सोने की निकली।
हार वहाँ हीरो के निकले, सिल्ली चाँदी की निकली ॥
जिन मदिर बनवाया सुदर, फिर भी अतुल सपदा थी।
फैली यश-गाथा जग मे, नहि किसी तरह की विपदा थी ॥
देखो भाव बडे भैया के, वह भी तुम्हे सुनाता हू।
देव-शास्त्र-गुरु पूज्य हमारे, उनकी महिमा गाता हूँ ॥
माल चुराऊँ जिन-मदिर का, ऐसे दुर्भाव बनाता है।
कर निश्चय चल दिया रात, यो खोटा कर्म सताता है ॥
चोरी तो थी दूर, राह मे क्या घटना घट जाती है।
चलते-चलते घबराहट मे, श्वास बद हो जाती है ॥
मरकर पहुँचा नरक द्वार मे, चौर्य व्यसन के करने से।
भारी कष्ट सहे दुर्गति के, छोड धर्म को देने से ॥
भाव यही लिखने का मेरा, सुदर भाव बनाओ।
बुरे भाव तजकर सदैव तुम, धर्म मार्ग अपनाओ ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
देव-गुरु की भक्ति से नर, भव सागर तर जाता है ॥

किसी जीव को नहीं सताओ

जीवन सुखी बनाना हो तो, करो प्रभु का ध्यान।
प्रभु ध्यान से होता भैया, आत्मा का कल्याण ॥
परम अहिसा धर्म जगत मे, सच्चे सुख का साथी है।
पर-हित मे सलग्न मनुज के, घर लक्ष्मी इठलाती है ॥

धर्मी जन की देवलोक मे, भी तो चर्चा होती है।
धर्मी के स्पर्श मात्र से, मिट्टी सोना होती है ॥
दु ख तब तक पाता है प्राणी, जब तक धर्म नही करता।
धर्म मार्ग का साधक भविजन, कभी नही दु ख से डरता ॥
धारो धर्म अहिसा का तुम, पाप कर्म से डरा करो।
सुख शांति की चाह यदि हो, सब जीवो पर दया करो ॥
नही सताना किसी जीव को, रक्षा जीवो की करना।
सुनकर कविता को भैया तुम, धर्म मार्ग अपना लेना ॥
इक व्यक्ति की सुनो कहानी, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
जिसने पाप किए जीवन मे, उसकी कथा सुनाता हूँ ॥
इक व्यक्ति था एक गॉव मे, पाप रात-दिन करता था।
कोई नही लक्ष्य जीवन का, व्यसनो मे रत रहता था ॥
करके भारी पाप कभी नहि, लज्जा अनुभव करता था।
पशु-पक्षी का मॉस और, मदिरा का सेवन करता था ॥
मुर्गी के अण्डो को भी वह, खुशी-खुशी खा जाता था।
क्या फल मिलता है पापो का, नही समझ वह पाता था ॥
आगे क्या होता है भैया, ध्यान लगाकर सुन लेना।
कितना पतन हुआ उस जन का, इससे कुछ-कुछ गुण लेना ॥
उस व्यक्ति के इक बेटा था, स्वस्थ अरु अति सुदर था।
पढने मे होशियार बहुत था, दिल का बडा समुदर था ॥
पिता एक दिन जगल मे, मृग के शिकार को जाता है।
बेटे को भी सग साथ ले, हिसा राह बताता है ॥
रात हुई जगल मे उनको, थक कर दोनो हारे है।
बैठ गए बरगद के नीचे, पापी किस्मत मारे है ॥
घूमत-घूमत एक शिकारी, उसी थान पर आता है।
देख दूर से ही उनको वह, मन मे भाव बनाता है ॥

हिरण-हिरणी का जोडा है ये, कितना सुदर प्यारा है।
मार इन्हे ले जाऊँ घर मे, ऐसा भाव विचारा है ॥
अधिक नही सोचा कुछ उसने, अपना तीर चलाया है।
तीर लगा बेटे को जाकर, विनशी उसकी काया है ॥
हाय मर गया मेरा बेटा, रो-रोकर रुदन मचाता है।
पशु-वध को आया था वन मे, बेटे का वध हो जाता है ॥
इससे आगे सुनो कथा तुम, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
देव गुरु की भक्ति का फल, जो मै यह लिख पाता हूँ ॥
मृत शरीर ले बेटे का वह, घर पर अपने आता है।
आकर अपनी पत्नी को, यह आवाज सुनाता है ॥
खोलो दरवाजा रानी तुम, देखो तो क्या लाया हूँ।
हसकर पाप किए जो मैने, उनका ही फल पाया हूँ ॥
खोला दरवाजा पत्नी ने, यह क्या हुआ विधाता।
किन कर्मो का फल पाया यह, क्यो नहि कोई बताता ॥
बोला पति, अपने कर्मो का ही, हमने फल पाया है।
अब तक सबको रहा सताता, आज पडी अपनी काया है ॥
जैसे बेटा मरा हमारा, ऐसे ही मै मारूँ था।
करता था हिसा पर की तब, नहि कुछ सोच विचारूँ था ॥
कैसी हालत हुई पत्नी की, लिखा नही मुझसे जाता।
माँ की पीडा माँ ही जाने, या फिर जान रहा ज्ञाता ॥
देख पुत्र को उसकी पत्नी, रो-रो रुदन मचाती है।
रोते-रोते उस दुखिया की, श्वास बद हो जाती है ॥
सारे घर का हुआ उजाडा, भैया पाप कमाने से।
ऐसी हालत हो जाती है, पाप-बध के पाने से ॥
हिसा करने वालो सुन लो, हिसा का तुम त्याग करो।
पहन के सयम रूपी चोला, दया धर्म अनुराग धरो ॥

दया धर्म करने से प्राणी, सुखी हमेशा रहते है।
शाश्वत वचन जैन आगम, आचार्य हमारे कहते है ॥
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
पाप छोडकर धर्म कमाओ, धर्म सुखो का दाता है ॥

प्रभु-भक्ति महिमा

नित जिन मदिर जाओ भैया, प्रेम करो जिन वाणी से।
सुख से रहना चाह यदि है, प्रेम करो हर प्राणी से ॥
प्रेम करो परमातम से तुम, भक्ति निरतर किया करो।
श्री जिनवर की भक्ति कर, फिर मुक्ति लक्ष्मी हिए वरो ॥
तीन लोक के नाथ की महिमा, सारे जग से न्यारी है।
जिनवर के श्रीचरणो मे यह, सौ-सौ नमन हमारी है ॥
प्रभुभक्ति से सब सुख मिलता, भक्ति हमे राह दिखाती है।
सच्ची भक्ति श्री जिनवर की, दु ख सारे हर लेती है ॥
सच्ची भक्ति करने वाला, सच्चा भक्त कहलाता है।
जहॉ कही भी जाता है वह, सम्मान समादर पाता है ॥
प्रभुभक्ति करने वाले की तुमको कथा सुनाता हूँ।
जिनवर की महिमा गा-गाकर, भगवद्धुनी रमाता हूँ ॥
इक व्यक्ति था एक गॉव मे, प्रभुभक्ति वह करता था।
करते-करते काम घरेलू, ध्यान प्रभु का धरता था ॥
करता था नित प्रभु की पूजा, करके खुशी मनाता था।
देव-शास्त्र-गुरु पूज्य हमारे, महिमा उनकी गाता था ॥
एक दिवस वह घर मे अपने, भक्तामर पाठ कराता है।
लीन हुआ वह प्रभु-भक्ति मे, चमत्कार क्या लाता है ॥
डाकू चलकर चार कही से, उसके घर घुस आए।
धन-दौलत सर्वस्व हडपने, निकट उसी तक आए ॥

चाँदी सोने की दो थैली, डाकू लेकर आए थे।
किसी और घर से वे उस दिन, माल लूटकर लाए थे ॥
चारो डाकू प्रभु-भक्त के, ज्यो घर मे घुस जाते है।
देख भक्त की भक्ति को वे, अचरज मे पड जाते है ॥
देख भक्त भी उन डाकू को, आदर से बैठाता है।
आदर से बेठाकर उनको, महिमा धर्म बताता है ॥
भक्तामर का पाठ सुना तो, डाकू मन मे हर्षाए।
बदल गए सब भाव उन्ही के, जो डाकू लेकर आए ॥
कहा भक्त ने डाकू जन से, जो चाहो तुम ले जाओ।
नही कमी कुछ है घर मेरे, सोना जेवर ले जाओ ॥
प्रभु-भक्ति बिन इस प्राणी का, जीना तो बेकार रहा।
सच्ची भक्ति ही प्राणी के, भैया गले का हार रहा ॥
देख रहे हो जो तुम घर मे, प्रभु-भक्ति से पाया है।
बिन माँगे पाया है सब कुछ, ये सब प्रभु की माया है ॥
सुनकर उसकी बाते डाकू, सुनो सभी क्या कहते है।
लेना पढकर शिक्षा इनसे, मोहन भैया कहते है ॥
नही करेगे चोरी अब हम, भरता इससे पाप घडा।
देखी प्रभु भक्ति से इसके, कट जाता यो पाप बडा ॥
क्या आदर है हम लोगो का, दस्यु हम कहलाते है।
प्रभु भक्ति से दूर पडे हम, भारी पाप कमाते है ॥
नीद नही आती है हमको, जगल मे छिपकर रहते।
प्रभु भक्ति को छोड सभी हम, जीवन व्यर्थ गँवा रहते ॥
लूटा माल रात-दिन रोटी, फिर भी समय नही पाई।
कभी-कभी तो लूट-पाट मे, साथी ने जान गँवाई ॥
चारो डाकू चोरी तजकर, धर्म मार्ग अपनाते है।
लाए थे जो माल चुराकर, छोड वही वे जाते है ॥

धर्म मार्ग पर चलने से, अब हरदम मौज उडाते है।
प्रभु की भक्ति करने से वे, सच्चे सुख को पाते है ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
प्रभु भक्ति से सबका बेडा, जगत पार हो जाता है।

नहीं व्यसन में पड़ा करो तुम

पाप कर्म से रहो दूर तुम, पापी प्राणी दुख पाता।
करने वाला पाप हमेशा, नरक द्वार मे है जाता ॥
हसकर पाप किए जाता फिर, फल मिलने पर रोता है।
चेत नही आता पहिले जब, पाप बीज को बोता है ॥
इक लडका था एक गॉव मे, पाप रात-दिन करता था।
अपनी बिगडी चाल चलन से, सबकी खुशियॉ हरता था ॥
करता था गुरुजन की निदा, वचन बुरे वह कहता था।
मदिरा पीने मे वह निशदिन, सुख का अनुभव करता था ॥
पर-नारी बहनो की उसके, इज्जत का अर्थ नही था।
इन खोटे व्यसनो का उसको, बुद्धि-विवेक नही था ॥
चोरी करता था वह भैया, जब कभी हेकडी भरता था।
भूल धर्म को जाने से वह, नही पाप से डरता था ॥
शादी हो गई उसकी अब, घरवाली घर मे आई।
एक ऑख से कानी है पहले, यह खबर नहीं लग पाई ॥
रोगी थी वह औरत भैया, सदा आह भरती रहती।
रोग कैसर के कारण, दिन-रात रुदन करती रहती ॥
पाप रात-दिन करने वाले, दुखी हमेशा रहते है।
नही शब्द मेरे है ये सब, आगम पुराण कहते है ॥
वर्ष हुए जब शादी को दो, शिशु जन्म सुनकर हर्षाया।
लेकिन हाय विधाता तुमने, कैसी दी शिशु को काया ॥
देखा, जन्म से अधा था, वह पैरो से बेकार।
बहरा गूँगा रहा साथ मे, जीने को लाचार ॥

राक्षस रूप देखकर उसका, धिक्-धिक् सब जन कहते।
जैसी करनी वैसी भरनी, पापो का फल कहते ॥

दुख मे डूबे दोनो प्राणी, रोटी के मुहताज हुए।
धन-सपदा मिट गई जल्द ही, दोनों अब कगाल हुए ॥

उस बच्चे के तन से यो, दुर्गंध निरतर आती थी।
घृणा सभी करते उससे, घर नही जली दीपक बाती ॥

अच्छे कर्म करो रे भैया, दूर पाप से सदा रहो।
परहित को आतम हित मानो, नही व्यसन मे पडा करो ॥

पति पत्नी दोनो मिल करके, हाथ पसारे फिरते है।
लेकर उस बच्चे को सग मे, गली गली बिचरते है ॥

ज्यादा नही बढाकर इसको, पूर्ण यही पर करता हूँ।
अच्छे कर्म करो मेरे भैया, अर्ज सभी से करता हूँ ॥

अच्छे कर्म करोगे भैया, अच्छा ही फल पाओगे।
देव-गुरु की भक्ति करके, भव से तुम तर जाओगे ॥

सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
पाप व्यसन तज धर्म कमाओ, धर्म सुखो का दाता है ॥

प्रभु की भक्ति सदा करो तुम

होता सुखमय जीवन भैया, श्री जिनवर के अर्चन से।
पाप सभी कट जाते भैया, देव-शास्त्र गुरु-दर्शन से ॥

भक्ति करना परम देव की, भक्ति मे शक्ति होती।
सच्ची भक्ति जनम-जनम के, दुख सारे हर लेती ॥

सच्ची भक्ति करने वाला, भव से पार उतरता है।
भूल प्रभु को जाने वाला, नरको के दुख भरता है ॥

श्री जिनवर है पूज्य हमारे, शिक्षा हमने पाई है।
गुण अनत सर्वज्ञ हितकर, महिमा उनकी गाई है ॥

ऐसे श्री जिन की भक्ति कर, मैने लिखना सीखा।
चरण-कमल मे रहकर उनके, भजन बनाना सीखा ॥
सुख-दु ख पाता है यह प्राणी, अपने ही कर्मो से।
इसलिए करो सत्कर्म, और तर जाओ जग-सागर से ॥
सुखी हमेशा रहता प्राणी, धर्म मार्ग अपनाने से।
दु खी नही होता यह प्राणी, जिनवर को ध्याने से ॥
देव-गुरु को भजो रात-दिन, देव-गुरु उपकारी है।
इनके चरण-कमल मे भैया, सौ-सौ नमन हमारी हैं ॥
जिनके घर मे देव-गुरु का, पावन नाम लिया जाता।
वह घर है आबाद, जहॉ पर, निशदिन दान किया जाता ॥
नही कमी कुछ रहती घर मे, लक्ष्मी दिन-दिन बढती है।
वीतराग की भक्ति से ही, पाप शृखला कटती है ॥
ज्यादा लालच नही करे हम, करे प्रभु का ध्यान।
प्रभु ध्यान से होता भैया, आत्म का कल्याण ॥
लोभ महा दु खदाई जग मे, लोभी कष्ट उठाता है।
मरकर जाता नरक द्वार मे, नरको के दु ख पाता है ॥
लोभ छोडकर धर्म कमाएँ, धर्म सुखो का दाता है।
धर्म मार्ग पर चलने वाला, स्वर्ग मोक्ष सुख पाता है ॥
भाव यही लिखने का मेरा, धर्म मार्ग को ग्रहण करो।
करके भक्ति देव गुरु की, निज पर का कल्याण करो ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
बने रहे मुनिवर चरणो मे, जनम जनम का नाता है ॥

जिन-दर्शन नियम लेने का फल

जिन दर्शन नित करना भैया, करके दर्शन हर्षाना।
उनकी अर्चा पूजा करके, भारी पुण्य कमाना ॥

जनम-जनम के पापो का क्षय, जिन-दर्शन से होता है।
लिख करके महिमा जिनवर की, कवि बहुत खुश होता है ॥
श्री जिनवर के दर्शन भैया, बडे पुण्य से मिलते है।
जिसकी श्रद्धा देव गुरु मे, हृदय कमल वे खिलते है ॥
मगलमय होता है जीवन, श्री जिन दर्शन करने से।
रक भी राजा बन जाता, नवकार मत्र उचरने से ॥
दिन-दिन लक्ष्मी बढती घर मे, दूर दैन्य हो जाता है।
श्री जिन के दर्शन करने से, निर्मल बुद्धि पाता है ॥
शुभ कार्यो मे लगता है मन, नही पाप मे रमता है।
श्री जिन के दर्शन करने से, आती चित्त मे समता है ॥
लडका था वह एक गॉव का, दु खी बहुत वह रहता था।
जिन-दर्शन का भाव नही था, यो स्वच्छद विचरता था ॥
मदिरा पी-पीकर वह भैया, दुखिया जीवन जीता था।
करके निदा धर्मीजन की, पुण्य कर्म से रीता था ॥
नही पता था उसको भैया, जिन मदिर क्यो जाते है।
श्री जिन के दर्शन करने से, स्वस्थ-सुखी हो जाते है ॥
उसने तो जीवन मे भैया, चोरी करना सीखा था।
धर्मीजन की निदा करना, ही लडके ने सीखा था ॥
वह मोहताज हुआ रोटी का, भारी पाप कमाने से।
सुखी नही रह सकता प्राणी, पाप मार्ग अपनाने से ॥
इक दिन उसी गॉव मे भैया, इक मुनिराज पधारे है।
दया-धर्म के अवतारी वे, अधम अनेको तारे है ॥
वह लडका भी शुभ कर्मो से, मुनि-दर्शन को जाता है।
दर्शन मुनिवर के करके, णमोकार मत्र को ध्याता है ॥
नियम लिया मुनिवर से उसने, नित जिन मंदिर जाऊँगा।
पूजन श्री जिनवर का करके, ही मै खाना खाऊँगा ॥

चोरी करनी छोड दी उसने, मदिरा का भी त्याग किया।
पाप मार्ग को तजकर श्री जिन, मे प्रशस्त अनुराग किया ॥
जिन दर्शन नित करने से, अब सुनो सभी क्या होता है।
कैसे भाग्य जगे लडके के, सुनकर अचरज होता है ॥
इक दिन उस लडके के घर की, दीवार अचानक गिर जाती।
तभी दिखाई दिया एक घट, यो बिगडी किस्मत फिर जाती ॥
मिली अशर्फी कितनी ही, अरु सोना-चॉदी बहुत मिला।
हार मिले हीरे के उसको, उसका सोया भाग्य जगा ॥
क्षण मे राजा बना रक से, जिन दर्शन नित करने से।
आनद मगल होता जीवन, प्रभु की भक्ति करने से ॥
ले लो आज नियम तुम भैया, जिन मदिर नित जाना।
करके दर्शन श्री जिनवर के, मन मे अपने हर्षाना ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
करके दर्शन श्री जिनवर के, मन-ही-मन हर्षाता है ॥

गरीब की आह

नही सताना किसी जीव को, प्राण सभी को प्यारे है।
प्राण सभी को ऐसे प्यारे, जैसे तुम्हे तुम्हारे है ॥
आह नही लेना दुखियो की, आह महा दु ख देती है।
दु खी जनो की आहे भैया, सर्वनाश कर देती है ॥
कैसे करती नाश ये आहे, वह भी तुम्हे सुनाता हूँ।
कविता लिखने से पहले मै, देव-गुरु को ध्याता हूँ ॥
देव-गुरु की कृपा का फल, कविता मै लिख पाता हूँ।
नही काव्य गढने की प्रतिभा, गीत प्रभु के गाता हूँ ॥
ऋषि-मुनियो की शुभ आशीषे, कभी न खाली जाती।
उनकी शुभ आशीष से भैया, किस्मत ही बन जाती ॥

मैने तो जीवन मे अपने, देव-गुरु को ध्याया है।
मिला सभी कुछ इस जीवन मे, पूर्व पुण्य की छाया है ॥
मुनियो के चरणो को छूकर, अपना भाग्य सराहा है।
जहॉ कही मुनिश्री पधारे, दर्शन कर सुख पाया है ॥
कैसे लिखूॅ सुमहिमा उनकी, नही लिखी मुझसे जाती।
करके दर्शन वीतराग के, आत्मा वही विरम जाती ॥
एक गॉव मे इक बुढिया थी, बुढिया सुख से रहती थी।
कमी नही थी घर मे उसके, निरहकार विचरती थी ॥
एक गरीब आदमी इक दिन, बुढिया के घर आया।
रकम चाहिए मुझे ब्याज से, यही ढाई सौ बतलाया ॥
नोट लिखाकर बुढिया मॉ भी, ढाई सौ गिन देती है।
सूद नाममात्र का लेकर, मन अपना भर लेती है ॥
थोडे दिन के बाद वही जन, बुढिया के घर आता है।
सूद और मूलधन पूरा, बुढिया को दे जाता है ॥
पैसा देकर वह बेचारा, अपने घर को चला गया।
परनोट नही फाडा बुढिया ने, मन उसका बेईमान बना ॥
दावा किया अदालत मे जा, हाजिर वह परनोट किया।
रुपए नही चुकाए मेरे, इस जन ने यह खोट किया ॥
आगे क्या होता है भैया, ध्यान लगाकर सुन लेना।
झूठी नही हकीकत है ये, सुनकर शिक्षा ले लेना ॥
जज साहब ने उस व्यक्ति को, देखो क्या उद्‌बोध किया।
रुपए तीन सौ दो बुढिया को, उसने यह उद्‌घोष किया ॥
सुन जज का निर्णय गरीब वह, रो-रो नीर बहाता है।
रुपए तो सब चुका दिए, फिर कोई क्यो मुझे सताता है ॥
भरकर आह दीन वह बोला, अर्ज एक मे करता हूॅ।
मेरी अर्ज सुनो जज साहब, एक बात मै कहता हूॅ ॥

जज साहब बोले व्यक्ति से, बोलो तुम क्या कहते हो।
सही बात नि शक कहो यो, व्यर्थ दु खी क्यो होते हो ॥
गगाजल को हाथ मे लेकर, यदि बुढिया यह कह दे।
रुपए नही मिले है वापस, जज के समक्ष उचर दे ॥
रुपए दूँगा नकद तीन सौ, सच्चे मन से कहता हूँ।
चाहे कितना कष्ट उठाऊँ, नही निज वचन मुकरता हूँ ॥
लेकर गगाजल हाथो मे, बुढिया यह कह देती है।
रुपए नहीं दिए मुझको कह, झूठ सहारा लेती है ॥
झूठी कसम खाई बुढिया ने, धर्म का था अपमान किया।
आह गरीब की लेने से अब, देखो क्या था अजाम जिया ॥
अगले दिन ही उस बुढिया का, युवा पुत्र मर जाता है।
हुआ कोढ देह मे उसके, धन भी सब लुट जाता है ॥
हुई भिखारिन वह बुढिया अब, भारी पाप कमाने से।
ऐसी हालत हो जाती है, आह दीन की पाने से ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
आह नही लेना दुखियो की, गुण मुनियो के गाता है ॥

सेवा-भक्ति करने से जीवन का उद्धार

भक्ति करने से मुनियो की, लाभ जीव को होता है।
पडा हुआ अज्ञान का परदा, आतम से हट जाता है ॥
धर्म मार्ग मे लगता है मन, भक्ति उनकी करने से।
सुखी हमेशा रहता प्राणी, जिन-दर्शन नित करने से ॥
सोया भाग्य जगे मेरे भैया, आशीष उन्हो की लेने से।
निर्धन भी बन जाता राजा, चरण मुनि के छूने से ॥
दर्शन करने से मुनियो के, पाप नाश हो जाता है।
रोगी प्राणी भी दर्शन कर, रोग मुक्त हो जाता है ॥

आत्म सुख का अनुभव करती, भक्ति उनकी करने से।
पापी भी पावन हो जाते, देव गुरु को भजने से ॥
पाप मार्ग से हटकर बुद्धि, धर्म मार्ग मे लगती है।
महिमा लिखने मे मुनियो की, कलम कवि की चलती है ॥
ऋषि-मुनियो के पद-कमल मे, अपना ध्यान लगाता हूँ।
चलती है तब कलम स्वय ही, कविता पूरी पाता हूँ ॥
टॉपिक मिल जाता खुद मुझको, कलम स्वय ही चलती है।
पाप मार्ग से हटकर बुद्धि, धर्म मार्ग मे लगती है ॥
इक लडके की सुनो कहानी, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
जिसने भक्ति की मुनियो की, उसकी कथा सुनाता हूँ ॥
वह लडका था एक गॉव का, धर्म ध्यान नित करता था।
ऋषि-मुनियो के चरणो मे वह, श्रद्धा गहरी रखता था ॥
जिन दर्शन नित करता था वह, करके खुशी मनाता था।
करके भक्ति देव-गुरु की, मन प्रसन्न इठलाता था ॥
देव-गुरु ही इस प्राणी को, भव से पार लगाते है।
करने वाले भक्ति इनकी, मन वॉछित फल पाते है ॥
पढ-लिखकर बन गया आफिसर, भक्ति उनकी करने से।
धर्म-ध्वजा फहराता है वह, आशीष उन्ही की पा करके ॥
जीवन सुखमय हुआ है उसका, देव-गुरु को ध्याने से।
पाप मार्ग से हट गई बुद्धि, आशीष उन्ही की पाने से ॥
सुनकर इन वचनो को भैया, पाप मार्ग का त्याग करो।
भला यदि चाहते अपना, देव-गुरु का भजन करो ॥
भक्ति किया करो मुनियो की, करो प्रभु का ध्यान।
ऋषि-मुनियो की भक्ति से ही, बनता जीव महान ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
भक्ति करने से मुनियो की, इसको आनद आता है ॥

भक्त को अच्छे-बुरे का आभास पहले से ही हो जाता है

करना भक्ति प्रभु की प्यारे, प्रभु नाम सुखदाता है।
भजने वाला प्रभु को भैया, स्वर्ग मोक्ष सुख पाता है ॥
मन से भक्ति करने वाला, सच्चा भक्त कहाता है।
भक्ति मे शक्ति है भैया, लिख मोहन हर्षाता है ॥
भक्ति ही भगवान बनाती, भक्ति पार लगाती है।
सच्ची भक्ति श्री जिनवर की, पूर्वाभास कराती है ॥
कष्ट नही होने देती वह, कष्ट दूर कर देती है।
तीन लोक के नाथ की भक्ति, दुख सारे हर लेती है ॥
कैसे पार लगाती भक्ति, तुमको आज सुनाता हूँ।
करके भक्ति देव-गुरु की, जिनवाणी मन लाता हूँ ॥
एक व्यक्ति था एक गॉव मे, प्रभु भक्ति वह करता था।
करके भक्ति श्री जिनवर की, निर्भय सदा विचरता था ॥
प्रभु भक्ति मे लीन होय वह, सुदर भजन सुनाता था।
करके नृत्य प्रभु के आगे, फूला नही समाता था ॥
नवकार मत्र को जपकर, पापो का क्षय करता था।
देकर वह आहार मुनि को, पुण्य की झोली भरता था ॥
जच जाती थी बात दूर की, प्रभु भक्त को भाई।
करते रक्षा देव-भक्त की, प्रभु भक्ति सुखदाई ॥
एक बार वह धर्मी बाहर, जाने को तैयार हुआ।
करने लगा तैयारी जब वह, मन मे सोच-विचार हुआ ॥
कोई कह रहा धर्मी से, आज कही नही गमन करो।
जपो यही नवकार मत्र को, वीर प्रभु का ध्यान करो ॥
जिस राह से सोच रहे थे, प्रभु-भक्त तुम जाना।
उसी राह मे छिपा हुआ है, डाकू दल सरदाना ॥
नही गया उस दिन वह भैया, वही प्रभु का ध्यान किया।
रक्षा करी धर्म ने उसकी, उसे पूर्व ही भान दिया ॥

उस ही दिन की सॉय बेला, समाचार यह आता है।
सुनो ध्यान से मेरे भैया, मोहन तुम्हे सुनाता है ॥
चार व्यक्ति मारे डाकू ने, माल पास नही कुछ छोडा।
कुछ को घायल किया उन्होने, कुछ को रोता है छोडा ॥
करी धर्म ने भक्त की रक्षा, भक्ति मे शक्ति होती।
सच्ची भक्ति श्री जिनवर की, पाप कर्म-मल धोती ॥
करना भक्ति श्री जिनवर की, भक्ति पार लगाएगी।
भक्ति ही भगवान् बनाकर, सिद्ध द्वार पहुँचाएगी ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
करके भक्ति श्री जिनवर की, आनदित हो जाता है ॥

भक्ति से मुक्ति

प्रभु नाम सुखदाई जग मे, प्रभु नाम हितकारी है।
वीतराग के श्री चरणो मे, सो-सौ नमन हमारी है ॥
भूल प्रभु को जाने वाले, नहि सच्चा सुख पाते है।
सदा दुखी रहते वो भैया, नरको के दुख पाते है ॥
नरको के दुख सह आए हम, फिर भी अकल नही आई।
कितनी मार सही नरको मे, भूल गए उसको भाई ॥
पशु-गति के दुख भी सहन किए, कोडे अरु डडे खाकर।
फिर भी नहीं चेत पाए हम, इतने कष्ट उठाकर ॥
भूखे-प्यासे रहे बहुत दिन, रो-रो रुदन मचाया।
भूल गया तू पिछली बाते, मुनियो ने समझाया ॥
धर्म मार्ग अपनाओ भैया, ऋषि-मुनि बतलाते है।
धर्म मार्ग पर चलने वाले, ही सच्चा सुख पाते है ॥
प्रभु भक्ति करके हर्षाओ, महिमा प्रभु की गाओ।
करके पूजा श्री जिनवर की, भारी पुण्य कमाओ ॥

बड़ी मुश्किल से मिला मनुष्य भव, व्यर्थ नही यह खोना।
करके भक्ति प्रभु चरणो की, पुण्य बीज अब बोना ॥
जीवन सुखमय हुआ हमारा, जिनवर को भजने से।
भक्ति करने से मुनियो की, निशि भोजन तजने से ॥
भाव यही लिखने का मेरा, धर्म मार्ग अपनाओ।
करके भक्ति देव-गुरु की, उन जैसे बन जाओ ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
करके भक्ति देव-गुरु की, सदा सुखी रहता है ॥

सुनो सदा जिनवाणी

आदर करो सदा मुनियो का, सुनो सदा जिनवाणी।
स्वस्थ सुखी यदि रहना चाहो, पिओ छानकर पानी ॥
धर्म मार्ग अपनाओ भैया, धर्मी जन सुख पाता है।
तजने वाला धर्म मार्ग को, दु खी सदा ही रहता है ॥
क्षमा और सयम को पालो, व्रत-नियमो को ग्रहण करो।
करके भक्ति ऋषि-मुनियो की, पाप कर्म का दहन करो ॥
नियम धर्म पालन से भैया, प्राणी मुक्ति पाता है।
चौरासी के चक्कर से बच, सर्व सिद्ध हो जाता है ॥
परम पूज्य है मुनि हमारे, सद् उपदेश सुनाते है।
देकर शिक्षा उत्तम हमको, धर्म राह दिखलाते है ॥
करके करुणा मुनिवर हम पर, नियम हमे दिलवाते है।
भोगो के हम दास हुए है, हमे कहॉ वे भाते है ॥
लेकर नियम तोड जो देते, नही सुखी वे रहते है।
ऐसे प्राणी ही तो भैया, पाप घडा भरते है ॥
नियम तोडने वाला प्राणी, भारी कष्ट उठाता है।
नरक पशुगति रहा भटकता, नही कही सुख पाता है ॥

एक व्यक्ति की सुनो कहानी, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
भूला था जो धर्म राह को, उसकी कथा सुनाता हूँ ॥
एक व्यक्ति था साठ साल का, धन-वैभव मे फूला था।
मोह राग के चक्कर मे वह, निज स्वरूप को भूला था ॥
तन की सेवा करने मे ही अपना समय बिताता था।
नही कभी पहचाना निज को, परहित से न नाता था ॥
नही पता था उसको भैया, किसे आत्मा कहते है।
अच्छे बुरे बीज कर्मो का, स्वय जीव ही बोते है ॥
कहता था वह व्यक्ति सभी से, किसने आतम देखी है।
तन-सेवा जीवन विलासिता ही, सारा सुख देती है ॥
भूल धर्म को जाने से ही, वह सब ऐसा कहता था।
पाप कर्म के उदय से भैया, नहि निरोग रहता था ॥
उस व्यक्ति के नगर मे इक दिन, मुनिराज इक आते है।
करुणा-सागर मुनि दिगबर, हित उपदेश सुनाते है ॥
मुनिवर के दर्शन करने को, नरनारी सब आते है।
शुभ कर्मो से सभी नगर जन, मुनि-चरणो मे जाते है ॥
नियम लिए सबने मुनिवर से, लेकर हर्ष मनाया है।
उस व्यक्ति से भी मुनिवर ने, निश-भोजन त्याग कराया है ॥
मुनि-चरणो मे व्रत पवित्र ले, निश का भोजन त्याग किया।
लेकिन अगले ही दिन उसने, नियम तोड अपराध किया ॥
नियम तोडने से देखो तुम, आगे अब क्या होता है।
अपने ही हाथो यह प्राणी, पाप गठरिया ढोता है ॥
एक दिवस वह व्यक्ति भैया, घर के बाहर जाता है।
पैर फसा खड्डे मे उसका, पैर टूट रह जाता है ॥
हॉस्पिटल मे पडा हुआ वह, सिर धुन-धुन पछताता है।
क्या कहता है सुनो ध्यान से, मोहन तुम्हे सुनाता है ॥

'नियम तोडने से देखो तुम, मेरा कैसा हाल हुआ।
रोटी नही मिली खाने को, भैया मै कगाल हुआ ॥
मुनि मुझे समझाते थे मै, फिर भी नही समझता था।
पाप-कर्म को करने मे ही, सुख का अनुभव करता था ॥
अक्ल मुझे तब आई भैया, जब पापो ने घेर लिया।
महत्त्व धर्म का समझा तब, जब चिडिया ने चुग खेत लिया॥
भला यदि चाहो तुम अपना, लेकर नियम निभाना।
देव-शास्त्र-गुरु पूज्य जगत् मे, उनकी महिमा गाना ॥'
भाव यही लिखने का मेरा, लेकर नियम निभाएँ।
करके भक्ति देव-गुरु की, जीवन सफल बनाएँ ॥
जीवन सुखमय हुआ हमारा, लेकर नियम निभाने से।
सुखी हमेशा रहता प्राणी, जिन-दर्शन नित पाने से ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
पाप-कर्म का करे त्याग हम, पाप जगत भरमाता है ॥

बडे गॉव वाले बाबा पार्श्वनाथ की महिमा

बडे गॉव वाले बाबा की, महिमा तुम्हे सुनाता हूँ।
गाकर महिमा बाबा की मै, अपना सौभाग्य मनाता हूँ ॥
बडे गॉव मे आकर भैया, अपना भाग्य सराहो।
करके दर्शन पार्श्वनाथ के, भारी पुण्य कमाओ ॥
एक बार जो भी बाबा के, दर्शन पा जाता है।
दर्शन करते ही बाबा के, जन्म सफल हो जाता है ॥
दर्शन करने से बाबा के, सुख का अनुभव होता है।
रहे सदा प्रभु के चरणो मे, मनुआ का मन होता है ॥
प्रभु चरणो मे आकर वापस, नही कभी जाना चाहा।
बिन मॉगे मिलता है सब कुछ, नही कोई महिमा थाहा ॥

कैसे लिखूँ महिमा प्रभु तेरी, नही लिखी मुझसे जाती।
मिले सदा दर्शन बाबा के, हरदम ये आशा रहती ॥
एक व्यक्ति की सुनो कहानी, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
कविता लिखने से पहले मै, बाबा को शीष झुकाता हूँ ॥
एक व्यक्ति था एक गॉव मे, निर्धन वह कहलाता था।
निर्धन होने के कारण वह, दु खी हमेशा रहता था ॥
जो भी काम करे वह निर्धन, सफल नही हो पाता था।
मेहनत करने पर भी उसके, घाटा ही पड जाता था ॥
मेहनत खूब करी थी उसने, पैसा खूब लगाया था।
आखिर मे तो उसको भैया, हाथ नही कुछ आया था ॥
एक दिवस वह दु खी होयकर, इक जगल मे जाता है।
ज्यादा थकने के कारण वह, बैठ वहॉ पर जाता है ॥
सोच रहा था मन मे अपने, कैसे कर्म किए मैने।
पाप पूर्व मे किए थे जो भी, फल पाया उनका मैने ॥
इसी बीच मे उसने देखा, बालक इक आता है।
वह बालक भी वही पास मे, बैठ वहॉ पर जाता है ॥
पूछा व्यक्ति ने लडके से, बेटे कहॉ से आए हो।
कौन शहर के हो वासी तुम, वन मे क्यो भरमाए हो ॥
बोला बालक उस व्यक्ति से, बडे गॉव से आया हूँ।
पारस प्रभु जो वहॉ विराजे, दर्शन करके आया हूँ ॥
बाबा के दर्शन करने से, जीवन सुखमय होता है।
निर्धन भी बन जाता राजा, पूर्व पाप सब धोता है ॥
सुनकर सब बाते वह व्यक्ति, बडे गॉव मे आता है।
करके दर्शन बाबा के वह, फूला नही समाता है ॥
दर्शन कर चल दिया वापसी, आगे अब क्या होता है।
कैसे भाग्य जगे व्यक्ति के, लिख मोहन खुश होता है ॥
चलते-चलते उसी राह, एक ठेकेदार निकलता है।
बातो-ही-बातो मे उसको, खान का ठेका मिलता है ॥

ठेका लेकर करी खुदाई, चमत्कार क्या होता है।
लोहा जहॉ निकलता था वहॉ, तॉबा पीतल होता है ॥

लक्ष्मीपति बन गया शीघ्र ही, दर्श प्रभु का पाने से।
आनद मगल होता जीवन, पारस के गुण गाने से ॥

पारस बाबा के दर्शन कर, अपना भाग्य सराहो।
दर्शन करने बाबा के तुम, बडे गॉव मे आओ ॥

सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
बडे गॉव वाले बाबा के, दर्शन कर हर्षाता है ॥

सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
भक्ति करने मे बाबा की, आनद उसको आता है ॥

धर्म और धन का संवाद

धन और धर्म की बात एक दिन, आपस मे क्या होती है।
जो-जो बात हुई दोनो मे, कलम उन्हे स्वर देती है ॥

इक दिन धनश्री धर्म के घर पर, आकर खुशी मनाता है।
क्या कहता है धर्म से धनश्री, मोहन तुम्हे सुनाता है ॥

धन कहता है धर्म से भैया, जहॉ कही तू जाएगा।
तेरे पीछे-पीछे मुझको, वही सदा तू पाएगा ॥

धर्मी जन की मुझे जरूरत, मै धर्मी का दास हूँ।
चरण जहॉ पडते धर्मी के, करता वहॉ मै वास हूँ ॥

धर्मी जन के सग मे रहकर, अपना भाग्य बनाता हूँ।
जितना खर्चे धर्मी मुझको, उतना ही बढ जाता हूँ ॥

धर्मी जन के घर मे भैया, मेरी इज्जत होती है।
धर्म जहॉ पर होता सच मे, नही कमी कुछ होती है ॥

कहता है धन धर्मी जन से, धर्म ही सच्चा साथी है।
रिश्ते नाते है सब झूठे, धर्म ही सच्चा नाती है ॥

साथ नही देता जब कोई, साथ धर्म तब देता है।
धर्म मार्ग पर चलने वाला, आतम हित कर लेता है ॥
छोड धर्म को देते है जो, छोड उन्हे मै देता हूँ।
अपनाते जो धर्म हृदय से, पास उन्ही के होता हूँ ॥
पापी जन के पास नही, मै स्थायी जाता हूँ।
चला गया यदि कभी वहाँ पर, भाग शीघ्र आता हूँ ॥
भक्ति जो मुनियो की करते, आहार उन्हे जो देते है।
धर्म कार्य मे धन देने से, उनके पुण्य निखरते है ॥
ऐसे धर्मी जीवो के मै, भैया घर मे रहता हूँ।
जहाँ-जहाँ भी जाए धर्मी, सग उन्ही के रहता हूँ ॥
कहा धर्म ने धन से भैया, नही तुझे मैने चाहा।
तुझे चाहने वाला जब तब, भूल धर्म को भरमाया ॥
तेरे चक्कर मे पड प्राणी, धर्म मार्ग बिसराते है।
लेकिन परम तपस्वी मुनिवर, नही नेह लगाते है ॥
चाहा जिसने तुझको पाना, दूर तू उनसे जाता है।
जिसने धर्म मार्ग अपनाया, पास तू उनके आता है ॥
भाव यही लिखने का मेरा, धर्म मार्ग को ग्रहण करो।
धन-वैभव पाओगे खुद ही, सदा प्रभु का ध्यान करो ॥
सेवा करो सदा मुनियो की, सेवा से सुख मिलता है।
सच्ची भक्ति से श्री जिन की, स्वर्ग मोक्ष मिलता है ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
धर्म मार्ग पर चलने वाला, धन वैभव सब पाता है ॥

जो सुख में सुमरण करे

धन-वैभव पाकर के भैया, नही प्रभु को भूलो।
दु ख मे नही कभी घबराओ, सुख मे मग्न न फूलो ॥

दु ख जाने पर सुख आता है, सुख जाने पर आता दु ख।
देव गुरु की भक्ति से ही, मिलता है आतम का सुख ॥

देव गुरु की भक्ति करके, प्राणी भव से तर जाता।
जिन्हे भटकना है भव वन मे, दूर धर्म से रह जाता ॥

दूर धर्म से रहने वाले, नरको के दु:ख पाते है।
धर्म मार्ग पर चलने वाले, स्वर्ग मोक्ष सुख पाते है ॥

जिसने धर्म मार्ग अपनाया, उसका बेडा पार हुआ।
जिसने तजा धर्म को भैया, आखिर मे वह हार गया ॥

धर्म मार्ग को तजकर भैया, कैसे प्राणी दु ख पाता।
भक्ति करने से मुनियो की, कवि को है आनद आता ॥

एक व्यक्ति था एक गॉव मे, साहूकार कहाता था।
नही कमी थी घर मे उसके, दौलत खूब कमाता था ॥

दोलत के चक्कर मे वह, सारा समय बिताता था।
देव-गुरु को भूल गया था, मदिरा नित अपनाता था ॥

तीर्थक्षेत्र या मदिर को वह, कभी नही जाता था।
जैन धर्म से नही था नाता, नही भक्ति भाता था ॥

भूल गया धर्म कर्म वह, धन-वैभव के मद मे।
क्या हालत हो जाती भैया, अहकार के पद मे ॥

कपडे की दुकान थी उसकी, रोकड काफी आती थी।
पैसा खूब कमाने पर भी, तृष्णा बढती जाती थी ॥

छोड धर्म को पाप जो करता, पाप कर्म को ढोता है।
साहूकार कहाता था जो, देखो अब क्या होता है ॥

बिजली की चिनगारी इक दिन, कपडे पर पड जाती है।
दो घटे के अदर उसकी, दुकान राख हो जाती है ॥

साहूकार कहाने वाला, क्षण-भर मे बरबाद हुआ।
जिसने तजा धर्म को भैया, उसका खोटा हाल हुआ ॥

ज्यादा नही बढाकर इसको, पूर्ण यही पर करता हूँ।
करना भक्ति देव-गुरु की, अर्ज सभी से करता हूँ ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
भूलो नही धर्म को भैया, धर्म ही पार लगाता है ॥

भाग्य एक कोरा कागज है, जो चाहो सो लिख लो

भाग्य एक कोरा कागज है, जो चाहे सो लिख लो।
उत्तम भाग्य बनाना है तो, देव-गुरु को भज लो ॥
अपने हाथो ही यह प्राणी, अपना भाग्य बनाता है।
प्रभु की भक्ति करने वाला ही, सच्चा सुख पाता है ॥
भाग्य आश्रित रहते है वो, जो पुरुषार्थ नही करते।
यो प्रमाद मे जीने वाले, नहि सम्यक् दर्शन गहते ॥
पुरुषार्थ औ परहित करने से, मोक्ष लक्ष्मी पाते है।
अच्छे कर्म करो मेरे भैया, ऋषि-मुनि बतलाते है ॥
अच्छे कर्मो के करने से, अच्छा ही फल मिलता है।
ऋषि-मुनियो की भक्ति से ही, जीवन सुखमय बनता है ॥
पुरुषार्थी का भव्य आचरण, कितना सुख देता है।
लिखकर महिमा ऋषि-मुनियो की, मोहन खुश होता है ॥
एक लडका था एक गॉव मे, मद बुद्धि कहलाता था।
नही समझ आता था उसके, सो-सोकर समय गॅवाता था ॥
बिना परिश्रम के लडके ने, सब कुछ ही पाना है।
अगर भाग्य मे बोला मेरे, उसे कहॉ जाना है ॥
माता-पिता जब कहते उससे, पढ लिखकर कुछ काम करो।
दिन-भर अच्छी मेहनत करके, लौट रात विश्राम करो ॥
कहता था यह लडका उनसे, मेरा भाग्य सबल है।
बिना भाग्य के सुनो पिताजी, यह पुरुषार्थ विफल है ॥

ऐसा कहते करते उसको, कितना समय व्यतीत हुआ।
बैठ भाग्य के रहा भरोसे, नहि उसने कुछ काम किया ॥
उस लडके के गॉव मे एक दिन, मुनिराज इक आते है।
परम तपस्वी मुनिराज वह, हित-उपदेश सुनाते है ॥
शुभ कर्मो से वह लडका भी, मुनि चरणो मे जाता है।
हाथ जोडकर मनसा वाचा, मुनिवर को माथ झुकाता है ॥
बोला लडका श्री मुनिवर जी, धर्म का महत्त्व बता दीजे।
भाग्य विषय मे बाते गुरुवर, आप हमे समझा दीजे ॥
सुनकर उसकी बाते मुनिवर, दया भाव चित लाते है।
क्या बतलाया श्री मुनिवर ने, वो ही तुम्हे सुनाते है ॥
मुनिवर ने बतलाया उसको, स्वय भाग्य नहि आता है।
अपने हाथो ही यह प्राणी, अपना भाग्य बनाता है ॥
जो बाते बतलाएँगे हम, जो-जो नियम दिलाएँगे।
उनका पालन करने मे अब, नहि प्रमाद को लाएँगे ॥
सुबह सबेरे उठकर तुमको, जिन मदिर मे जाना है।
करके दर्शन श्री जिनवर के, मन मे हर्ष मनाना है ॥
गधोदक को लेकर अपने, मस्तक सदा लगाया कर।
सद्बुद्धि दो स्वामी मुझको, यह शुभ भाव बनाया कर ॥
णमोकार की माला जपकर, श्री जिन के गुण गाया कर।
दे आहार ऋषि-मुनियो को, भारी पुण्य कमाया कर ॥
तीर्थ-क्षेत्रो की वदना को, समय-समय पर जाना।
निश का भोजन तजकर भैया, हिसा से बच जाना ॥
निश मे भोजन करने से, जीवो की हिसा होती है।
निश मे भोजन करने से ही, बुद्धि मद होती है ॥
मुनिवर से सुन ज्ञान की बाते, लडका हर्ष मनाता है।
खुले ज्ञान के चक्षु उसके, लेकर नियम निभाता है ॥

जो भी नियम दिए मुनिवर ने, उसने उन्हे निभाया है।
पुरुषार्थ कर प्रमाद तजा, तब भाग्य ने पलटा खाया है ॥
ज्यादा नहीं बढाकर इसको, पूर्ण यही पर करते है।
सब कुछ ही मिल जाता उसको, जो पुरुषार्थ धरते है ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
मद बुद्धि भी धर्म ध्यान कर, ज्ञानवान बन जाता है ॥

बड़े पुण्य से मिला मनुज भव

करके भक्ति श्री जिनवर की, अपना भाग्य सराहो।
बडे पुण्य से मिला मनुज भव, इसको सफल बनाओ ॥
श्री जिनवर की भक्ति भैया, भव से पार लगाती है।
जन्म-जन्म के पाप नाश कर, दु ख को दूर भगाती है ॥
बुद्धू को भी कर दे पडित, रक को राजा कर देती।
श्री जिनवर की भक्ति भैया, कष्ट सभी के हर लेती ॥
तरह-तरह की कविता लिखकर, प्रभु की भक्ति करता हूँ।
धर्म-मार्ग पर चलो सभी जन, यही विचार मै रखता हूँ ॥
नर तन चोला इस प्राणी को, बारम्बार नही मिलता।
जिसने इसकी कदर न जानी, चौरासी मे रुलता फिरता ॥
कठिनाई से नर तन पाया, साथ मे उत्तम कुल भी।
पाई जिनवाणी भी भैया, फिर भी हो ढुलमुल ही ॥
सुन ले तेरा हाल क्या होगा, नरक द्वार जाएगा।
भारी मार पडेगी तुझको, यो अनत दु ख पाएगा ॥
मुह तेरा यह नीचे होगा, पैर वहॉ ऊपर होगे।
चारो तरफ उस नरक द्वार मे, सब तेरे दुश्मन होगे ॥
भूखे-प्यासे इस प्राणी को, जब नरकवास सहना पडता।
पाप कर्म का फल पाकर, अनत काल रहना पडता ॥

गरम-गरम लोहे के खभे, खडे वहॉ पर होते है।
चढा के उनपे इस प्राणी को, पटक अधर से देते है ॥
नीचे भाले बरछी होते, उन पर काया गिरती है।
गिरते ही ऊपर से उसकी, दु ख की चीख निकलती है ॥
राध-रुधिर की मेरे भैया, वैतरणी इक बहती है।
दुर्गध होती बहुत वहॉ, जिनवाणी ऐसा कहती है ॥
सह आए हम उन दु खो को, फिर भी समझ न पाए।
मुनिवर ने समझाया हमको, फिर भी नही समझ पाए ॥
पशुओ को तुम देखो भैया, कितनी पीडा सहते है।
देख रहे ऑखो से अपनी, फिर भी नही समझते है ॥
कोई प्राणी लूला-लगडा, कोई कारो मे फिरता।
जैसा कर्म करे यह प्राणी, वैसा फल इसको मिलता ॥
पाप कर्म से रहे दूर हम, श्री जिनवर का भजन करे।
करके भक्ति श्री जिनवर की, आत्मा का कल्याण करे ॥
भाव यही लिखने का मेरा, धर्म महा उपकारी है।
देव गुरु की भक्ति भैया, आतम की हितकारी है ॥
धर्म मार्ग पर चलकर प्राणी, कष्टो से बच जाता है।
भक्ति करने से श्री जिन की, स्वर्ग मोक्ष सुख पाता है ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
प्रभु भजन ही इस प्राणी का, बेडा पार लगाता है ॥

दुःखियों को सताना महापाप है।

सता गरीबो को जो प्राणी, मन मे खुशी मनाते है।
क्या हालत हो जाती उनकी, मोहन तुम्हे सुनाते है ॥
नही सताना दु खियो को रे, उन्हे सताना पाप है।
प्रभु की भक्ति करने से ही, होता पाप विनाश है ॥

पापो से तुम रहो दूर, ये पाप नरक ले जाते है।
पाप सदा ही इस प्राणी को, दर-दर मे भटकाते है ॥
जिसने पाप किया जीवन मे, उसका बुरा हाल हुआ।
मिला नतीजा जब पापो का, तब पापी बेहाल हुआ ॥
अच्छे बुरे कर्मो का फल, जीव स्वय ही पाता है।
करता है एक दान सदा, इक हाथ पसारे रहता है ॥
हॉस्पिटल मे जाकर देखो, कैसे-कैसे रोगी है।
कोई अधा है मेरे भैया, कोई ज्वर का रोगी है ॥
कोई कोढी पडा वहॉ पर, कोई दिल का रोगी है।
बिन बच्चे के कोई दु खिया, नामर्दी का रोगी है ॥
इक प्राणी महलो मे सोता, एक सडको पर है सोता।
भूखा इक मरता है दिन-भर, इक खाकर मोटा होता ॥
क्या कारण है इन सबका ये, सोच नही हम पाते है।
मोह माया के चक्कर मे पड, भूल प्रभु को जाते है ॥
करते है जो प्रभु की भक्ति, वो सुखी हमेशा रहते है।
दु ख देते जो धर्मी जन को, दु खी हमेशा रहते है ॥
धर्मी जन को दु ख देकर जो, मन मे खुशी मनाते है।
उसी विषय मे एक कथा हम, लिखकर तुम्हे सुनाते है ॥
एक भिखारी एक गॉव मे, रोटी मॉगा करता था।
दीनभाव से जैसे-तैसे, उदर पूर्ति करता था ॥
एक दिवस मैने भी उसको, खाने को दो रोटी दी।
उस बूढे से बाते करने की, मन मे जिज्ञासा थी ॥
मैने पूछा उस बूढे से, एक बात तुम बतलाओ।
अपने जीवन की घटना, तुम बाबा हमे सुनाओ ॥
सुनकर मेरी बाते उसकी, ऑखो मे ऑसू आते।
जो बतलाया उस बाबा ने, वह ही हम तुम्हे सुनाते ॥

क्या कहता है बूढा बाबा, ध्यान लगाकर सुन लेना।
धर्म मार्ग पर चलकर भैया, आतम का हित कर लेना ॥
बेटा मै भी कुछ दिन पहले, सुख से घर मे रहता था।
एक लडका था मेरे भैया, व्यसनो मे रत रहता था ॥
फैक्ट्री मे सर्विस कर, वह अपना समय बिताता था।
चोरी चुगली के जीवन से, सीधा उसका नाता था ॥
धर्मी जन की करके चुगली, मन मे खुशी मनाता था।
चोरी कर मदिरा पीकर के, दिल अपना बहलाता था ॥
एक दिवस मालिक ने उसको, चोरी करते लिया पकड।
मार लगाई उसको भारी, सॉकल से भी दिया जकड ॥
भारी मार के कारण, उसके हाथ पैर बेकार हुए।
हुआ अत जीवन का उसके, यो घर भी नीलाम हुए ॥
नही सहारा रहा मुझे, तब मै भी यो बेकार हुआ।
घर-गृहस्थी छूट गई, अरु खाने को लाचार हुआ ॥
रोटी नही मिली खाने को, नाम भिखारी है पाया।
कपडा नही आज है तन पर, कर्मो का फल यो पाया ॥
धर्म मार्ग पर लगे हुओ की, जो भी निदा करते है।
ऐसे प्राणी मरकर भैया, नरको के दु ख भरते है ॥
सुनकर कविता को मेरी तुम, दया धर्म को ग्रहण करो।
चुगली निदा नही करोगे, ऐसा भैया नियम करो ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
धर्म मार्ग पर चलने वाला, स्वर्ग मोक्ष सुख पाता है ॥

पाप कर्म के उदय से मित्र भी शत्रु हो जाते हैं

सुख से रहना अगर चाहते, करो भक्ति भगवान की।
भक्ति मे शक्ति होती है, जय बोलो दया-निधान की ॥

भक्ति पार लगाती भैया, भक्ति दुख हर लेती है।
सच्ची भक्ति श्री जिनवर की, जीवन सुख भर देती है ॥
धर्म छोडकर जो भी प्राणी, पाप मार्ग मे लगते है।
क्या हालत हो जाती उनकी, मोहन भैया लिखते है ॥
इक लडका था एक शहर मे, साहूकार कहाता था।
कार पास मे थी उसके, वह क्लबो मे नित जाता था ॥
मदिरा पीने मे वह लडका, सुख का अनुभव करता था।
करके निदा धर्मी जन की, यो स्वच्छद विचरता था ॥
पर-नारी मॉ-बहनो की वह, इज्जत लूटा करता था।
बडा नही अपने से किसी को, लडका कभी समझता था ॥
कभी नही सोचा था उसने, पुण्य से लक्ष्मी आती है।
पिछले पुण्य से मिली लक्ष्मी, पाप उदय से जाती है ॥
लक्ष्मी रहती है उस घर मे, दान पुण्य जहॉ होता है।
धर्म नही जिस घर मे होता, वह पाप बीज ही ढोता है ॥
पाप बुद्धि थी उस लडके की, जाने क्या-क्या कहता था।
करता था नित धर्म की निदा, नही जिन मदिर जाता था ॥
पाप पुण्य किसने देखा है, नही धर्म कुछ होता है।
करता था वह बाते ऐसी, आगे तब क्या होता है ॥
एक दिवस वह बैठ कार मे, किसी काम से जाता है।
ट्रक से टक्कर हो गई उसकी, तडफ-तडफ मर जाता है ॥
कौए खा रहे नोच-नोचकर, घरवालो को खबर नही।
धर्म की निदा करने का तो, होता है अजाम यही ॥
मरकर वो तो गया नरक मे, नरको के दुख भोग रहा।
धर्म मार्ग पर लगे सभी जन, मोहन भैया सोच रहा ॥
धर्म मार्ग पर चलकर प्राणी, सच्चे सुख को पाता है।
धर्म मार्ग पर चलने वाला, गीत खुशी के गाता है ॥

लिखने मे यदि हुई कोई गलती, ज्ञानीजन तुम माफ करो।
तुम ज्ञानी मे अल्पबुद्धि हूँ, भूल-चूक सब माफ करो ॥
भाव यही लिखने का मेरा, धर्म मार्ग को अपनाओ।
आतम का हित यदि चाहते, प्रभु भक्ति कर हर्षाओ ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
धर्म एक ही अपना साथी, भव से पार लगाता है ॥

सच्चे सुख की प्राप्ति

सच्चे सुख की चाह अगर है, करो प्रभु का ध्यान।
प्रभु ध्यान से होता भैया, आत्मा का कल्याण ॥
प्रभु भक्ति से प्राणी जग मे, सुखी हमेशा रहते है।
भक्ति मे शक्ति होती है, मुनि हमारे कहते है ॥
प्रभु की भक्ति करके प्राणी, भव सागर तर जाता है।
सयम और अहिसा पथ का, वह राही बन जाता है ॥
प्रभु भक्ति ने ही तो भैया, नाग का हार बनाया था।
प्रभु भक्ति की शक्ति ने ही, जल बिच कमल रचाया था ॥
ऋषि-मुनियो की भक्ति से ही, ज्ञान ज्योति मिलती है।
ज्ञान ज्योति ही जीवन का, अज्ञान दूर कर देती है ॥
ऋषि-मुनि भडार ज्ञान के, कठिन तपस्या करते है।
रात्रि भोजन त्याग कराकर, धर्म भावना भरते है ॥
सयम का पालन करना ही, मुनिजन हमे सिखाते है।
अहोभाग्य है उनके जिनको, दर्शन उनके हो जाते है ॥
करो सदा दर्शन मुनियो के, सुनो सदा जिनवाणी।
स्वस्थ-सुखी रहना चाहो तो, पिओ छानकर पानी ॥
नही सताओ किसी जीव को, धर्म मार्ग को ग्रहण करो।
देव-गुरु की भक्ति करके, आत्मा का कल्याण करो ॥

अनत काल से फिरे भटकते, लख चौरासी योनी मे।
भारी मार सही कोडो की, भूल गया अनहोनी मे ॥
पिछले दु ख मत भूलो भैया, जो नरको मे पाय रहे।
दु ख ही दु ख थे नरक गति मे, मुनि हमे समझाय रहे ॥
धर्म मार्ग पर नही चले तो, वापिस वही पर जाओगे।
करके बात याद मुनिवर की, सिर धुन-धुन पछताओगे ॥
अब भी समय समझ लो भैया, मुनि हमे समझाते हैं।
देव-गुरु की भक्ति से ही, सकट सब कट जाते है ॥
देव-गुरु की भक्ति से ही, घर मे सुख छा जाता है।
लिखने मे महिमा मुनियो की, आनदित हो जाता है ॥
देव शास्त्र गुरुओ मे भैया, जब से श्रद्धा जागी है।
बिगडी किस्मत बनी हमारी, दूर दरिद्रता भागी है ॥
सुख से रहना चाह यदि हो, भक्ति उनकी किया करो।
पाप मार्ग को तजकर भैया, हितकर जीवन जिया करो ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
देव-गुरु की भक्ति से ही, प्राणी मुक्ति पाता है ॥

नर-तन चोला पाकर रे अब प्रभु के गुण गा लो

सुख से रहना चाह अगर हो, करो भक्ति भगवान् की।
भक्ति पार लगाती भैया, जय बोलो दयानिधान की ॥
करने वाले भक्ति प्रभु की, सच्चे भक्त कहाते है।
सदा सुखी रहते वे भैया, नही कष्ट वो पाते है ॥
भक्ति ही भगवान बनाती, भक्ति मे शक्ति होती।
सच्च भक्ति श्री जिनवर की, दु ख सारे है हर लेती ॥
नर तन चोला पाकर भी जो, भूल प्रभु को जाते है।
क्या हालत हो जाती उनकी, लिखकर तुम्हे सुनाते है ॥

एक व्यक्ति था एक गॉव मे, व्यक्ति पैसे वाला था।
नही कमी थी घर मे कुछ भी, धन मे वो मतवाला था ॥
धन-वैभव पा करके वह तो, श्री जिनवर को भूल गया।
भक्ति किसको कहते है वह, पापी प्राणी भूल गया ॥
खाने पीने मे निश-वासर, अपनासमय बिताता था।
जिन दर्शन की नही कल्पना भी, मन मे वह लाता था ॥
क्या रखा है धर्म-ध्यान मे, कहकर खुशी मनाताथा।
जुआ और मद के व्यसनो मे, रमकर यो इठलाता था ॥
तीथक्षेत्र की परम वदना, उसने कभी न जानी थी।
भूल धर्म को जाने से, बस यही अवस्था पानी थी ॥
भूल धर्म को जाने से ही, देखो कैसा हाल हुआ।
जिसने तजा धर्म को भैया, उसका तो बेहाल हुआ ॥
एक दिवस वह मद का प्यासा, मदिरालय मे जाता है।
भूल गया पी-पीकर मदिरा, क्या से क्या हो जाता है ॥
मदिरा पीते ही वह भैया, दमको अपनी तोड चला।
मदिरा जहरीली थी उस दिन, बच्चे इकले छोड चला ॥
सारे घर का हुआ उजाडा, धर्म मार्ग को तजने से।
सुखी हमेशा रहता प्राणी, श्री जिनवर को भजने से ॥
भाव यही लिखने का मेरा, धर्म मार्ग को ग्रहण करो।
पाप-मार्ग को तुरत छोडकर, श्री जिन का गुणगान करो ॥
श्री जिन की भक्ति ही हमको, भव से पार लगाती है।
पाप-कर्म का करे नाश वो, शिव मजिल पहुँचाती है ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
पाप छोडकर धर्म करे हम, धर्म सुखो का दाता है ॥

गुरु निंदा तज भक्ति करो तुम

निदा नही करो गुरुओ की, निदा से दुख मिलता है।
भक्ति करो सदा साधु की, भक्ति से सुख मिलता है ॥
साधुजनो की निदा से, यह जीव नरक मे जाता है।
तजने वाला धर्म को भैया, भारी कष्ट उठाता है ॥
जिसने करी धर्म की निदा, उसका बुरा हाल हुआ।
जिने भक्ति की मुनियो की, वो भैया निहाल हुआ ॥
जिनवाणी की विनय से भैया, ज्ञान बहुत मिलता है।
तजने वाला धर्म कर्म को, चौरासी मे रुलता है ॥
ऋषि-मुनियो की भक्ति करके, जो भी मैने पाया है।
उसकी चर्चा ही कविता मे, कहकर तुम्हे बताया है ॥
भला यदि चाहते अपना, करो भले तुम काम।
देव-गुरु की भक्ति से ही, बनता जीव महान ॥
इक लडके की सुनो कथा, मै लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
करता था जो धर्म की निदा, उसकी कथा सुनाता हूँ ॥
सुनकर खडे रोगटे होगे, ध्यान लगाकर सुन लेना।
सुख से रहना चाह यदि हो, मुनियो की भक्ति करना ॥
धर्मी जन को देख के लडका, निदा उनकी करता था।
धर्म नही कुछ होता जग मे, लडका ऐसा कहता था ॥
खुश होकर कहता था लडका, पाप-पुण्य किसने देखा।
खाओ पीओ मौज मनाओ, क्लबो मे सुख है मिलता ॥
खोटी सगति मे पड करके, वह तो ऐसा कहता था।
होने वाला पतन था उसका, इसीलिए वो कहता था ॥
पूरी हुई पढाई उसकी, शादी उसकी होती है।
कैसी फूटी किस्मत उसकी, कलम कवि की लिखती है ॥
घरवाली जो आई उसके, कैसर की वो रोगी थी।
शुगर बीमारी थी औरत को, जन्म से ही वो रोगी थी ॥

पता लगा जब उस लडके को, कैसर की ये रोगी है।
शुगर बीमारी है औरत को, पत्नी तेरी रोगीहै ॥
हार्ट अटैक हुआ लडके का, नही प्राण तन से निकले।
जैसे कर्म करे यह प्राणी, वैसे फल इसको मिलते ॥
पडा हुआ खटिया पर लडका, सोच-सोच दु ख पाता है।
करके याद बात वो पिछली, सिर धुन-धुन पछताता है ॥
कहता है रो करके लडका, कैसा हाल हुआ मेरा।
निदा करने से मुनियो की, दु खो ने मुझको घेरा ॥
पूरी नही अधूरी है ये, पूरी इसको करता हूँ।
कविता लिखने से पहले मै, प्रभु की भक्ति करता हूँ ॥
पति-पत्नी दोनो अब भैया, तन से है बेकार हुए।
घरवालो के ऊपर ही तो, दोनो अब है भार हुए ॥
खर्च नही करने को पैसा,नही दवाई लानेको।
पापो का फल भोग रहे वो, लिखी बात समझाने को ॥
वश नही चल सकता, उनका धन-वैभव सब नाश हुआ।
निदा करने से मुनियो की, कैसा सत्यानाश हुआ ॥
हाथ जोड कहता वो सबसे, अर्ज सभी से करते है।
क्या करते है अर्ज सभी से, मोहन भैया लिखते है ॥
निदा नही करना जीवन मे, कभी भूलकर मुनियो की।
सुख से रहना यदि चाहते, करना भक्ति गुरुओ की ॥
निदा करने से देखो तुम, हम रोगी कहलाए है।
सच्चे सुख की बात छोड दो, कष्ट अनेको पाए है ॥
नही पता था हमको भैया, ऐसा भी हो जाता है।
निदा करने से मुनियो की, जीव नरक मे जाता है ॥
दु ख पा करके समझा हमने, धर्म-ध्यान क्या होता है।
जब चिडियो ने खेत चुग लिया, पछताये क्या होता है ॥

भाव यही लिखने का मेरा, धर्मी जन सुख पाता है।
करने वाला धर्म की निदा, भारी कष्ट उठाता है ॥

सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
भक्ति करे ऋषि-मुनियो की, भक्ति से सुख पाता है ॥

मनुष्य जीवन की सार्थकता

कितनी मुश्किल से हमने यह, नर तन चोला पाया है।
शुभ कर्मो से हमने भैया, उत्तम कुल यह पाया है ॥

शुभ कर्मो से मिला जैन कुल, मिली हमे जिनवाणी।
जिनवाणी ही हमे बताती, पियो छानकर पानी।
जिनवाणी ही हमे बताती, धर्म जीव का साथी है।
धर्म मार्ग पर चलकर आतम, कष्टो से बच जाती है ॥

रहकर दूर धर्म से हमने, भारी कष्ट उठाए है।
भूल गए हम उन दु:खो को, नरको मे जो पाए है ॥

भूखे-प्यासे रहे वहॉ पर, नही साथ कोई होता।
पाप कर्म का फल यह प्राणी, नरको मे जाकर ढोता ॥

स्वर्ग मिले अच्छे कर्मो से, नरक पाप से मिलता है।
धर्म मार्ग को तजने वाला, चौरासी मे रुलता है ॥

भरी जवानी मे हम भैया, नही धर्म से दूर रहे।
इक दिन यो ढल जाएगी यह, ऐसा सोच-विचार करे ॥

क्यो करता अभिमान अरे तू, इस भरपूर जवानी का।
सुदर-सी नारी का पगले, दौलत मोटर गाडी का ॥

काम नही आऍगे ये सब, काम धर्म ही आएगा।
धर्म मार्ग पर चलने वाला, सच्चे सुखको पाएगा ॥

एक बूढे बाबा की भैया, सुनो कथा तुम ध्यान से।
भला यदि चाहते अपना, प्रेम करो भगवान से ॥

एक बूढा था एक गॉव मे, भारी कष्ट उठाता था।
पडा-पडा खटिया पर निशदिन, हाहाकार मचाता था ॥
रोगो से वह घिरा हुआ था, नही धर्म का ज्ञान था।
किन कर्मो से दु खी रहा वह, उसे नही कुछ भान था ॥
दिल का रोगी था वह बूढा, बीमार सदा वह रहता था।
कम दिखता था ऑखो से, यो कष्ट रात-दिन सहता था ॥
नही पास कोई आता था, अशुभ कर्म के आने से।
दु खी हमेशा रहता प्राणी, पाप कर्म अपनाने से ॥
एक दिवस बूढे बाबा का, मरण समय नजदीक हुआ।
बुलवाया परिवार जनो को, कुछ कहने का भाव हुआ ॥
घरवाले सब हुए इकट्ठे, पास-पडौसी भी आए।
बाते सुनने को बूढे की, नाती भी उसके आए ॥
सबको पास बिठाकर भैया, बूढा क्या समझाता है।
जो समझाया उस बूढे ने, मोहन तुम्हे सुनाता है ॥
जीवन मैने सारा अपना, विषय-भोग मे है खोया।
प्रभु-भक्ति नहि कीनी मैने, चादर तान सदा सोया ॥
जिन-मदिर को छोड सदा ही, क्लबो मे मै जाता था।
करके निदा ऋषि-मुनियो की, मन मे खुशी मनाता था ॥
नही जवानी मे सोचा था, तुझे बुढापा आएगा।
खटिया पर तू पडेगा इक दिन, कर्मो का फल पाएगा ॥
कहॉ गई भरपूर जवानी, कहॉ गई ऑगनवाडी।
कहॉ गई क्लबो की रौनक, कहॉ गई मोटरगाडी ॥
मैने सारा जीवन अपना, यूॅ ही व्यर्थ गॅवाया।
सभल जाओ तुम मुझे देखकर, इसीलिए बुलवाया ॥
शिक्षा अच्छी दी बूढे ने, सबको पास बुलाकर।
भक्ति करो सदा श्री जिन की, बोला वो हर्षाकर ॥

भरपूर जवानी के मद मे तुम, नही धर्म को तज देना।
एक धर्म ही जीवन-साथी, धर्म मार्ग को भज लेना ॥
परनारी माँ बहिनो को तुम, माता तुल्य समझना रे।
भक्ति करना ऋषि-मुनियो की, करके हर्ष मनाना रे ॥
जिन-मदिर मे नित जाना तुम, दर्शन प्रभु के सुखदाई।
प्रभु दर्शन से पाप कटे सब, पाप सदा ही दु खदायी ॥
क्लबो मे नही जाना भैया, तीर्थक्षेत्रो पर जाना।
करके वदन तीर्थो की तुम, भारी पुण्य कमाना ॥
नही सताना किसी जीव को, प्राण सभी को प्यारे है।
जीओ और जीने दो सबको, कहते प्रभु हमारे है ॥
भरपूर जवानी पाकर मैने, धर्म कर्म बिसराया है।
दु खी हुआ मै वृद्धापन मे, करनी काफल पाया है ॥
मेरी बाते सुनकर सब तुम, धर्म मार्ग अपना लेना।
पाकर भी भरपूर जवानी, नही धर्म को तज देना ॥
देकर शिक्षा सबको बूढा, प्राणो को तज देता है।
धर्म महा उपकारी जग मे, धर्म-समाधि लेता है ॥
भाव यही लिखने का मेरा, भजो सदा भगवान को।
भक्ति श्री गुरुदेव शास्त्र को, पाना पद निर्वाण को ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
पाप छोडकर धर्म करो तुम, धर्म सुखो का दाता है ॥

दूसरों को सताने वाले स्वयं कभी सुखी नहीं होते

नही सताना किसी जीव को, रक्षा जीवो की करना।
भला यदि चाहते अपना, श्री जिन की भक्ति करना ॥
श्री जिन की भक्ति ही भैया, भव से पार लगाती है।
देकर सच्चा ज्ञान हमे वह, मोक्ष-द्वार पहुँचाती है ॥

अभय दान देना जीवो को, दु खियो के दु ख दूर करो।
सेवा भाव सदा उर मे धर, उनका तुम सताप हरो ॥
पर का जो जन बुरा चाहता, दु खी हमेशा रहता है।
रक्षा करता जो जीवो की, सुखी हमेशा रहता है ॥
दु ख देकर सुख नहि पाएगा, सुख देकर सुख पाएगा।
पर का बुरा चाहने वाला, नरक-द्वार मे जाएगा ॥
अब भी समय समझ ले भैया, ऋषि-मुनि समझाते है।
अर्पित जिनका जीवन परहित, नही कभी पछताते है ॥
एक व्यक्ति की सुनो कथा मै, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
जिसने पाप किए जीवन-भर, उसकी कथा बताता हूँ ॥
एक व्यक्ति था एक गॉव मे, दिन-भर पाप कमाता था।
सता-सताकर जीवो को वह, मन मे खुशी मनाता था ॥
कभी जीव की हत्या करता, कभी सताता निर्धन को।
धर्मी की निदा करता, अरु पीडा देता गुरु-जन को ॥
महत्त्व धर्म का नहि जीवन मे, उस व्यक्ति ने जाना था।
हिसक बन पीडा पहुँचाने मे, सुख उसने माना था ॥
बीज पाप के बोए उसने, दया-धर्म नहि जाना था।
बीज पाप के बोने वाला, भटक रहा गति नाना था ॥
इक धर्मी को सताके इक दिन, वह जगल मे जाता है।
शेर मिला उसको जगल मे, देखो अब क्या पाता है ॥
पजा मारा शेर ने उसको, उसका काम तमाम किया।
पाप-मार्ग पर चलने से, यह देखो क्या अजाम मिला ॥
नरक-द्वार मे चला गया वो, भारी पाप कमाने से।
भूखा-प्यासा रहना पडता, दुराचार अपनाने से ॥
भाव यही लिखने का मेरा, सब जीवो से प्रेम करो।
नही सताना किसी जीव को, दया-धर्म तुम ग्रहण करो ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
सुखी रहे सब जीव जगत् के, गुण मुनियो के गाता है ॥

हर समय जिनेद्र देव का ध्यान करो, पता नहीं कब आयु पूर्ण हो जाए

घडी-घडी पल-पल छिन-छिन निश दिन, प्रभु का ध्यान लगाओ।
करके भक्ति श्री जिनवर की, अपना भाग्य सराहो ॥
श्री जिनवर की भक्ति भैया, पाप-कर्म को चूर करे।
देकर सद्‌बुद्धि वह हमको, अज्ञान तिमिर को दूर करे ॥
सुखी हमेशा रहता प्राणी, प्रभु का ध्यान लगाने से।
स्वर्ग मोक्ष सुख मिलता भैया, धर्म-मार्ग अपनाने से ॥
पाप कर्म से रहो दूर तुम, पाप नरक ले जाता है।
नरक-द्वार मे भारी दुख है, शास्त्र हमे बतलाता है ॥
नरक-द्वार के कष्टो को जब, मुनिश्री हमे बतलाते है।
सुनकर खडे रोगटे होते, फिर भी समझ न पाते है ॥
मोह माया के चक्कर मे हम, धर्म कर्म सब भूल गए।
भूल गए हम उन दुखो को, नरको मे जो सहे गए ॥
नहि फुरसत है हमको भैया, प्रभु का ध्यान लगाने की।
नही लगन है हमको भैया, आतम रास रचाने की ॥
आतम को हम भूल गए है, तन को सदा सजाते है।
तन को अपना मान रहे हम, इसीलिए दुख पाते है ॥
नही तन अपना साथी भैया, नही धन अपना साथी है।
एक धर्म ही सच्चा साथी, धर्म ही सच्चा नाती है ॥
धर्म-मार्ग पर चलने से ही, आतम परमातम बनता।
धर्म मार्ग तजने से ही, जीव चौरासी मे रुलता ॥
मुश्किल से नर तन पाया, पाकर इसे गवॉय दिया।
आ गया बुढापा तुझको फिर भी, धर्म-मार्ग नहि चला हिया॥
बीत गई सो बीत गई अब, आगे की सुध लेना रे।
करके भक्ति श्री जिनवर की, जन्म सफल कर लेना रे ॥

अभय दान देना जीवो को, दु खियो के दु ख दूर करो।
सेवा भाव सदा उर मे धर, उनका तुम सताप हरो ॥
पर का जो जन बुरा चाहता, दु खी हमेशा रहता है।
रक्षा करता जो जीवो की, सुखी हमेशा रहता है ॥
दु ख देकर सुख नहि पाएगा, सुख देकर सुख पाएगा।
पर का बुरा चाहने वाला, नरक-द्वार मे जाएगा ॥
अब भी समय समझ ले भैया, ऋषि-मुनि समझाते है।
अर्पित जिनका जीवन परहित, नही कभी पछताते है ॥
एक व्यक्ति की सुनो कथा मै, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
जिसने पाप किए जीवन-भर, उसकी कथा बताता हूँ ॥
एक व्यक्ति था एक गॉव मे, दिन-भर पाप कमाता था।
सता-सताकर जीवो को वह, मन मे खुशी मनाता था ॥
कभी जीव की हत्या करता, कभी सताता निर्धन को।
धर्मी की निदा करता, अरु पीडा देता गुरु-जन को ॥
महत्त्व धर्म का नहि जीवन मे, उस व्यक्ति ने जाना था।
हिसक बन पीडा पहुँचाने मे, सुख उसने माना था ॥
बीज पाप के बोए उसने, दया-धर्म नहि जाना था।
बीज पाप के बोने वाला, भटक रहा गति नाना था ॥
इक धर्मी को सताके इक दिन, वह जगल मे जाता है।
शेर मिला उसको जगल मे, देखो अब क्या पाता है ॥
पजा मारा शेर ने उसको, उसका काम तमाम किया।
पाप-मार्ग पर चलने से, यह देखो क्या अजाम मिला ॥
नरक-द्वार मे चला गया वो, भारी पाप कमाने से।
भूखा-प्यासा रहना पडता, दुराचार अपनाने से ॥
भाव यही लिखने का मेरा, सब जीवो से प्रेम करो।
नही सताना किसी जीव को, दया-धर्म तुम ग्रहण करो ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
सुखी रहे सब जीव जगत् के, गुण मुनियो के गाता है ॥

हर समय जिनेंद्र देव का ध्यान करो, पता नहीं कब आयु पूर्ण हो जाए

घडी-घडी पल-पल छिन-छिन निश दिन, प्रभु का ध्यान लगाओ।
करके भक्ति श्री जिनवर की, अपना भाग्य सराहो ॥
श्री जिनवर की भक्ति भैया, पाप-कर्म को चूर करे।
देकर सद्बुद्धि वह हमको, अज्ञान तिमिर को दूर करे ॥
सुखी हमेशा रहता प्राणी, प्रभु का ध्यान लगाने से।
स्वर्ग मोक्ष सुख मिलता भैया, धर्म-मार्ग अपनाने से ॥
पाप कर्म से रहो दूर तुम, पाप नरक ले जाता है।
नरक-द्वार मे भारी दु ख है, शास्त्र हमे बतलाता है ॥
नरक-द्वार के कष्टो को जब, मुनिश्री हमे बतलाते है।
सुनकर खडे रोगटे होते, फिर भी समझ न पाते है ॥
मोह माया के चक्कर मे हम, धर्म कर्म सब भूल गए।
भूल गए हम उन दु खो को, नरको मे जो सहे गए ॥
नहि फुरसत है हमको भैया, प्रभु का ध्यान लगाने की।
नही लगन है हमको भैया, आतम रास रचाने की ॥
आतम को हम भूल गए है, तन को सदा सजाते है।
तन को अपना मान रहे हम, इसीलिए दु ख पाते है ॥
नही तन अपना साथी भैया, नही धन अपना साथी है।
एक धर्म ही सच्चा साथी, धर्म ही सच्चा नाती है ॥
धर्म-मार्ग पर चलने से ही, आतम परमातम बनता।
धर्म मार्ग तजने से ही, जीव चौरासी मे रुलता ॥
मुश्किल से नर तन पाया, पाकर इसे गवॉय दिया।
आ गया बुढापा तुझको फिर भी, धर्म-मार्ग नहि चला हिया॥
बीत गई सो बीत गई अब, आगे की सुध लेना रे।
करके भक्ति श्री जिनवर की, जन्म सफल कर लेना रे ॥

प्रभु-भक्ति सुखदाई भैया, प्रभु नाम हितकारी है।
प्रभु की पूजा करने वाला, सच्चा एक पुजारी है ॥
भाव यही लिखने का मेरा, भजो सदा भगवान को।
करके भक्ति देव-गुरु की, पाना पद-निर्वाण को ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
प्रभु भक्ति से इस प्राणी का, बेडा पार हो जाता है ॥

देव-दर्शन महिमा

दर्शन करो सदा श्री जिन के, नित जिन मदिर मे जाओ।
करके दर्शन वीतराग के, नित आतम को ध्याओ ॥
पाप सभी कट जाते भैया, श्री जिन दर्शन करने से।
आनदमय होता यह जीवन, प्रभु का नाम उचरने से ॥
प्रभु की भक्ति ही प्राणी को, भव से पार लगाती है।
भक्ति ही सद्बुद्धि देकर, बिगडे काम बनाती है ॥
बिगडी किस्मत बनती भैया, बहरेसुनने लग जाते है।
लगडे पर्वत पर चढ जाते, निर्धन राजा बन जाते ॥
मूरख भी बन जाता पडित, ज्ञानी जग मे कहलाता।
जिन दर्शन की महिमा लिखकर, मोहन भैया हर्षाता ॥
जिन दर्शन नित करने से यह, जीवन सुखमय बनता है।
कलह नही रहती है घर मे, रोग दूर भग जाता है ॥
सच्चा सुख मिलता प्राणी को, नित जिन मदिर जाने से।
जन्म-जन्म के पाप कटत है, प्रभु का दर्शन पाने से ॥
दो भाई की सुनो कथा मै, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
जिन दर्शन की महिमा लिखकर, मन मे हर्ष मनाता हूँ ॥
दो भाई थे एक गॉव मे, हिल-मिल कभी न रहते थे।
भावो मे था अतर उनके, वैसे सग विचरते थे ॥
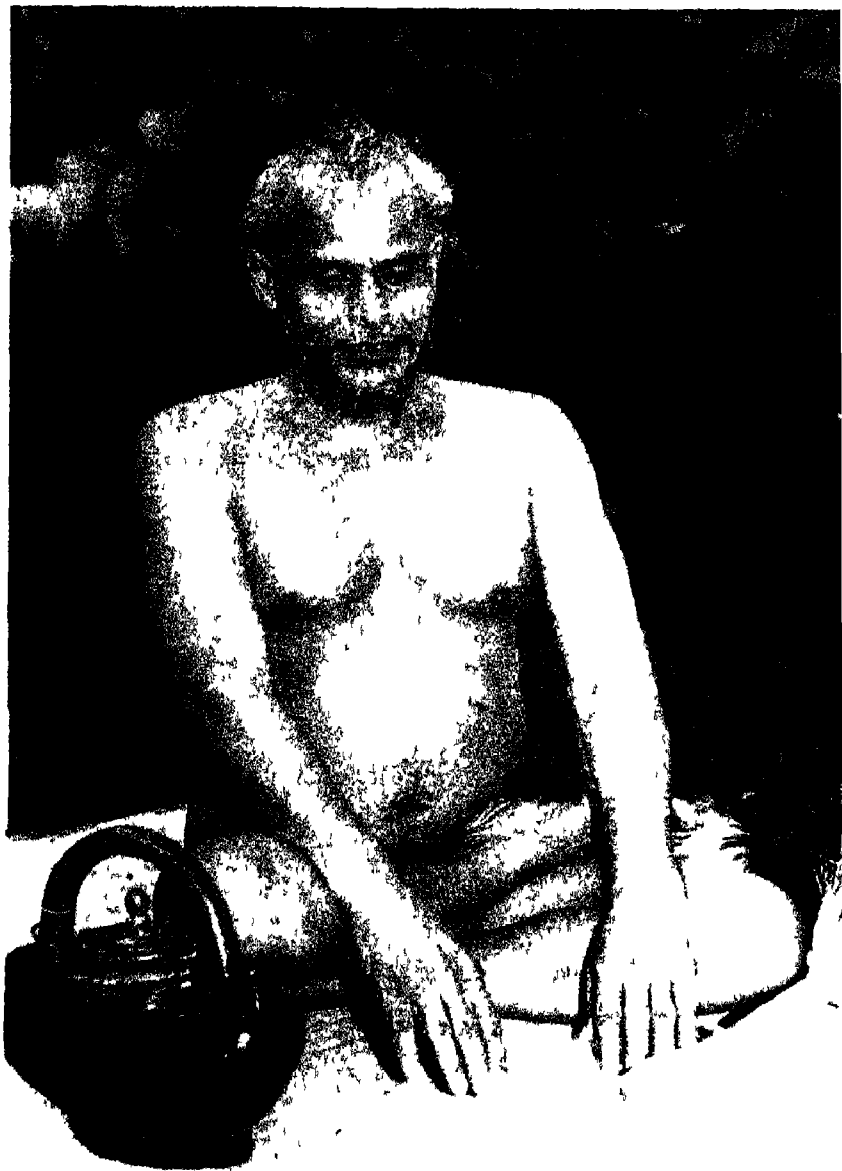
परम पूज्य तपोनिधि निग्रन्थ दि जैनाचार्य 108
श्री विद्या भूषण सन्मति सागर जी महाराज

बडा भाई तो धर्म-ध्यान से, दूर हमेशा रहता था।
जिन मंदिर नहि जाता था वह, जिन दर्शन नहि करता था ॥
जाते थे जो जिन मंदिर मे, निदा उनकी करता था।
ऋषि-मुनियो की सेवा-भक्ति, कभी नही वह करता था ॥
छोटा भाई धर्म-ध्यान मे, सबसे आगे रहता था।
वीतराग गुणलीन सदा वह, दर्श प्रभु का करता था ॥
कहता था छोटा खुश होकर, धर्म ही पार लगाएगा।
धर्म मार्ग पर चलकर प्राणी, भव सागर तर जाएगा ॥
एक दिवस दोनो भाई को, किसी शहर मे जाना था।
काम घरेलू था दोनो को, लौट रात-घर आना था ॥
जिस गाडी मे जाना था वह, सुबह सवेरे जाती थी।
टाइम उसका सात बजे था, ठीक समय यो आती थी ॥
इससे आगे सुनो कथा तुम, ध्यान लगाकर सुन लेना।
भला यदि चाहते अपना, नित प्रभु के दर्शन करना ॥
बडा भाई तो उठा सुबह, अरु स्टेशन चल देता है।
छोटा जिन मदिर मे जाकर, प्रभु दर्शन पा लेता है ॥
गाडी आते बडा भाई वह, जा गाडी मे बैठा।
लेकिन छोटा मदिर मे ही, भक्ति-भाव मे पैठा ॥
थोडी दूर चली थी गाडी, गाडी एक्सीडेट हुई।
मृत्यु हो गई बडे भाई की, खबर गॉव मे फैल गई ॥
छोटा तो जिन पूजन करके, घर को वापस होता है।
घर पर वापिस आते ही तुम, सुनो सभी क्या होता है ॥
पढा अखबार छोटे भाई ने, लाटरी नबर आया है।
पॉच लाख की खुली लाटरी, बिना कमाए पाया है ॥
बिना कमाए पाया पैसा, श्री जिन दर्शन करने से।
प्राण गॅवाए बडे ने अपने, छोड धर्म को देने से ॥

भाव यही लिखने का मेरा, नित जिन मदिर मे जाओ।
करके दर्शन श्री जिनवर के, बिन माँगे सब कुछ पाओ ॥
बिन माँगे सब कुछ मिलता है, प्रभु का ध्यान लगाने से।
सच्चा सुख मिलता आतम को, प्रभु के गुण गाने से ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
करके दर्शन श्री जिनवर के, कौन नही सुख पाता है ॥

मुनि-भक्ति महिमा

ऋषि-मुनियो के दर्शन भैया, बडे पुण्य से मिलते है।
जिनको मिलते दर्शन उनके, पुष्प पुण्य के खिलते है ॥
जिस नगरी मे जाते साधु, नगर वो पावन हो जाता।
कैसे लिखूँ महिमा उनकी, नही लिखा मुझसे जाता ॥
नही कमी कुछ रहती घर मे, भक्ति इनकी करने से।
कट जाते सब पाप छिनक मे, दर्शन इनके करने से ॥
जिसने भक्ति की मुनियो की, भक्ति का फल पाया है।
इनकी भक्ति से ही मुझको, कविता लिखना आया है ॥
मिला सभी कुछ मुझको भैया, भक्ति इनकी करने से।
मिले सदा दर्शन मुनियो के, भाव हमेशा धरने से ॥
नहि निदा करना मुनियो की, निदा से होती हानि।
निदा करने वाले की ही, लिखी है मैने एक कहानी ॥
निदा करने वाले भैया, भारी कष्ट उठाते है।
रोटी के पड जाते लाले, नरको के दुख पाते है ॥
एक व्यक्ति था एक गॉव मे, दूर धर्म से रहता था।
करके निदा ऋषि-मुनियो की, दुराचरण मे बहता था ॥
सौ बीघे भूमि थी उसके, बैलो की पच जोडी थी।
दस भैसे थी भैया उसके, कोठी एक निगोडी थी ॥

सोना-चॉदी पास बहुत था, लडका सुदर शिक्षित था।
कमी नहि थी घर मे कुछ भी, वैभव सभी सुरक्षित था ॥
एक दिवस उस व्यक्ति को यो, कोई आकर कहता है।
ऋषि-मुनि आ रहे नगर मे, व्यर्थ गर्व क्यो करता है ॥
पाकर हित उपदेश उन्ही से, कुछ विनम्र बन जाओ।
करके दर्शन वीतराग के, पुण्य कर्म अपनाओ ॥
सुनकर ऐसी बाते गर्वी, वह क्रोधित होता है।
नही दिगबर आने दूँगा, भाव पाप के बोता है ॥
गया नगर से बाहर व्यक्ति, खडा वहाँ हो जाता है।
कैसे आते मुनि दिगबर, कहकर यो इठलाता है ॥
ऐसे भाव बने जब उसके, देखो अब क्या होता है।
मुनि नही आए थे अब तक, पहले ही क्या होता है ॥
हार्ट फैल हो गया व्यक्ति का, कोई नही सहाय हुआ।
जो जन हितू बने थे उसके, उनका भी बेहाल हुआ ॥
ऐब लगे लडके को उसके, होटल मे वह जाता है।
वेश्या और जुए मे पडकर, बिल्कुल ही लुट जाता है ॥
रोग लगा पशुओ के उसके, पशु सभी मर जाते है।
सोना-चॉदी चोर चुराकर, घर अपने ले जाते है ॥
कितना बुरा हाल हुआ है, निदा मुनि की करने से।
नरक द्वार मे जाना पडता, देव गुरु को तजने से ॥
ज्यादा नही बढाकर इसको, पूर्ण यही पर करता हूँ।
दास सदा हूँ ऋषि-मुनियो का, भक्ति मे रमता हूँ ॥
निदा नही कभी तुम करना, भक्ति इनकी किया करो।
करके भक्ति ऋषि-मुनियो की, ज्ञानामृत को पिया करो ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
भक्ति से मुनियो की जीवन, सुखमय हो जाता है ॥

जिनेंद्र देव की भक्ति करने से बुद्धि निर्मल होती है

श्री जिनवर की भक्ति करके, अपना भाग्य सराहो।
सुखी रहे सब जीव जगत के, सुदर भाव बनाओ ॥
भावो से ही इस प्राणी की, उन्नति-अवनति होती है।
श्री जिनवर की भक्ति भैया, सकल पाप धोती है ॥
भाव शुद्ध होगे जब भैया, खाना शुद्ध हम खाएँगे।
निशि मे भोजन नही करेगे, छना शुद्ध जल पीएँगे ॥
छना हुआ जल पीने वाले, सदा निरोगी रहते है।
निशि का भोजन तजने वाले, सुखी हमेशा रहते है ॥
शुद्ध अन्न खाने से भैया, बुद्धि निर्मल रहती है।
निशि मे भोजन करने से ही, मद बुद्धि हो जाती है ॥
मद बुद्धि कैसे हो जाती, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
निर्मल वो बन जाती कैसे, वो भी तुम्हे बताता हूँ ॥
श्री जिनवर की भक्ति का फल, लिखना मुझको आया है।
भक्ति करने से मुनियो की, बिन माँगे सब पाया है ॥
एक लडका था एक गाँव मे, निशि मे भोजन करता था।
नहि जिन मदिर जाता था वो, पाप रात-दिन करता था ॥
बिना छना जल पीता था वो, पीकर खुशी मनाता था।
धर्म-कार्य मे वह मदैव यो, सबसे पीछे रहता था ॥
घर से कहकर जाता था वह, ट्यूशन मुझको पढना है।
दे दो फीस मुझे पापा तुम, जमा मदरसे करना है ॥
घर से चला मदरसे कहकर, नही मदरसे जाता था।
वह लडका तो मेरे भैया, नित क्लबो मे जाता था ॥
सोसायटी थी गदी उसकी, मित्र सभी बेकार थे।
कोई चोर, उचक्का, ज्वारी, कुछ के हीन विचार थे ॥
होटल का खाना खाकर वो, अपनी भूख मिटाता था।
कभी-कभी लडको के सग वो, चोरी करने जाता था। ॥

हुई परीक्षा उस लडके की, रिजल्ट भी आ जाता है।
फेल हुआ सभी विषयो मे, जीरो नबर आता है ॥
रो-रोकर वह नीर बहाता, जीरो नबर आने से।
मद बुद्धि हो जाती उसकी, निशि मे भोजन पाने से ॥
कैसे निर्मल होती बुद्धि, ध्यान लगाकर सुन लेना।
निर्मल बुद्धि यदि चाहते, विनय गुरु की कर लेना ॥
मदबुद्धि लडके की देखो, कैसे भाग्य चमकता है।
कैसे निर्मल होती बुद्धि, लिख मोहन खुश होता है ॥
एक दिवस वह बहुत दु खी हो, इक जगल मे जाता है।
देख वहॉ पर मुनिराज को, फूला नही समाता है ॥
करके दर्शन श्री मुनिवर के, लडका उनसे कहता है।
सद्बुद्धि दे दो प्रभु मुझको, चरण माथ वह धरता है ॥
करके दया श्री मुनिवर जी, लडके को समझाते है।
सप्त व्यसन का त्याग कराकर, निशि भोजन तजवाते है ॥
नित जिन मदिर मे जाने का, उस लडके को नियम दिया।
विनय गुरु की करना मन से, महत्त्व धर्म समझाय दिया ॥
छूकर चरण श्री मुनिवर के, लडका घर पर आता है।
जो भी नियम लिए मुनिवर से, उनका पालन करता है ॥
हुई परीक्षा उस लडके की, रिजल्ट भी आ जाता है।
देखे नबर जिसने उसके, अचरज वह कर जाता है ॥
अपने कालिज मे वह लडका, सर्वप्रथम आया है।
नियम धर्म के पालन से ही, जग मे नाम कमाया है ॥
ज्यादा नही बढाकर इसको, पूर्ण यही पर करता हूॅ।
भक्ति करना ऋषि-मुनियो की, अर्ज सभी से करता हूॅ ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
श्री जिन की भक्ति करने से, ज्ञान स्वय हो जाता है ॥

मित्र उसे बनाओ जो सदाचारी हो

धर्मी जन से करो दोस्ती, धर्मी जन से प्यार।
एक धर्म है जो जीवो को, करता भव से पार ॥
करता भव से पार जो भैया, वो ही सच्चा साथी है।
दूर पाप से रहने वाला ही, तो सच्चा नाती है ॥
नाता जोडो उससे भैया, जिसे धर्म से प्यार हो।
सच्ची भक्ति श्री जिनवर की, जिसके गले का हार हो ॥
भूल धर्म को जाने से ही, प्राणी कष्ट उठाता है।
धर्म मार्ग को तजने वाला ही, पापी कहलाता है ॥
रुचि पाप मे भैया जिसकी, पाप रात-दिन करता है।
भूल गया जो श्री जिनवर को, चोरी निश-दिन करता है ॥
क्या हालत हो जाती उसकी, ध्यान लगाकर सुन लेना।
पापी जन से रहे दूर हम, धर्म मार्ग अपना लेना ॥
पापी की सगति से भैया, द्वार नरक का खुलता है।
करने से भक्ति मुनियो की, जीवन सुखमय बनता है ॥
एक लडके की सुनो कहानी, कैसे पतन हुआ उसका।
जिसने सगति की पापी की, बुरा हाल हुआ उसका ॥
इक लडका था एक गॉव मे, पाप सदा वह करता था।
धर्मी जन की करके निदा, पाप-घडा वह भरता था ॥
दिन-भर पीता था मदिरा को, पीकर खुशी मनाता था।
पापी सारे दोस्त थे उसके, पास वेश्या के जाता था ॥
कभी नही सोचा था उसने, पाप महा दु ख देता है।
दुराचरण मे रमकर व्यक्ति, नरको के दु ख पाता है ॥
रोग बहुत लग जाते उसको, नही कोई आदर करता।
सत्व नही रहता है तन मे, टी बी का रोगी बनता ॥
एक दिवस वह लडका भैया, वेश्या के घर जाता है।
लगा खेलने जुआ निरतर, देखो अब क्या पाता है ॥

मित्र चार थे उस लड़के के, वे भी पास मे बैठे थे।
पापी दोस्त थे सारे उसके, बात पाप की कहते थे ॥
खेल रहा था जुआ उस समय, मित्रो के सग मे अपने।
क्या होता है इसी बीच मे, सुनो ध्यान से सब अपने ॥
पुलिस वहॉ पर आई भैया, पकड पुलिस ने उसे लिया।
भाग गए साथी सब उसके, उसका बुरा हाल किया ॥
भारी मार पडी इकले पर, काम नही कोई आया।
जिनको समझा था वो अपना, नही काम वो भी आया ॥
अपना था जो सच्चा साथी, भूल उसे वह बैठा था।
धर्म-मित्र को छोड के वह तो, मन मे अपने ऐठा था ॥
खुली ऑख अब उस लडके की, अकल उसे अब आई है।
सच कहते है मुनि हमारे, पाप महा दु खदाई है ॥
छोड के लडका पाप मार्ग अब, धर्म मार्ग अपनाता है।
एकधर्म ही सच्चा साथी, धर्म ही पार लगाता है ॥
सुनकर इस कविता को भैया, पापो का हम त्याग करे ॥
पापी जन से रहे दूर हम, धर्मी जन से प्यार करे ॥
धर्मी जन की करे सगति, अपना भाग्य बनाएँ।
देव-शास्त्र-गुरु पूज्य जगत मे, उनकी महिमा गाएँ ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
पाप मार्ग से रहे दूर हम, धर्म सुखो का दाता है ॥

आदर करो सदा धर्मी का

आदर करो सदा धर्मी का, धर्मी जन सुख पाता है।
धर्म मार्ग को तजने वाला, दु खी बना रह जाता है ॥
धर्म मार्ग को तजने वाला, नरको के कष्ट उठाता है।
जहॉ कही भी जाता है वो, वही ठुकराया जाता है ॥

पाप मार्ग पर चलने वाले, कष्ट अनेको पाते है।
मेरी नहि बात यह भैया, शास्त्र हमारे गाते है ॥
जो भी कार्य करे पापी जन, नही सफल वो होता है।
पापी जन के पाप के कारण, हर क्षण मे टोटा रहता है ॥
सोना मिट्टी हो जाता है, चॉदी पत्थर हो जाती।
पापी जन के पाप के कारण, लक्ष्मी शीघ्र निकल जाती ॥
लक्ष्मी रहती है उस घर मे, धर्म जहॉ पर होता है।
नही खेद मन मे आता है, सुखद नीद वह सोता है ॥
धर्म मार्ग पर चले सभी जन, ऐसा भाव हमारा है।
देव-शास्त्र-गुरुओ को नित ही, सौ-सौ नमन हमारा है ॥
देव-शास्त्र-गुरुओ की भक्ति, बिगडे काम बनाती है।
पाप मार्ग से हटा जीव को, आत्म ज्ञान कराती है ॥
अज्ञान दूर कर देती भक्ति, कष्ट सभी हर लेती है।
सच्ची भक्ति श्री जिनवर की, मनवॉछित फल देतीहै ॥
जिसने प्रेम किया धर्मी से, उसका बेडा पार हुआ।
जिसने निदा करी धर्म की, नरको का मेहमान हुआ ॥
हर तरह के प्राणी जग मे, हमे दिखाई देते है।
पाप कर्म से बनते दु खिया, धर्म से राजा बनते है ॥
जिसने किया धर्म का पालन, धर्मी जग मे कहलाया।
आदर पाया सभी जगह पर, स्वर्ग मोक्ष उसने पाया ॥
स्वर्ग मोक्ष सुख मिलता भैया, धर्म मार्ग अपनाने से।
कष्ट नही रहते जीवन मे, देव-गुरु को ध्याने से ॥
भाव यही लिखने का मेरा, धर्म मार्ग को अपनाओ।
धर्म सहाई है प्राणी का, इसे नही तुम बिसराओ ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
धर्म मार्ग को तजने वाला, नरको के दु ख पाता है ॥

मुनि-चरणों की धूल

मुनि-चरणो की धूलि भक्त ने, अपने शीश लगाई है।
कर वदन सपूर्ण सघ का, मन मे खुशी मनाई है ॥
ऋषि-मुनियो की चरण-धूलि, यह बुद्धि निर्मल कर देती।
महा भयकर रोग अनेको, भव-परभव के हर लेती ॥
ऋषि-मुनियो की चरण-धूलि, यह बडे पुण्य से मिलती है।
जिनको मिल गई धूलि उन्ही की, सच्ची किस्मत खुलती है ॥
किस्मत खुली हमारी भैया, मुनियो के गुण गाने से।
बुद्धि निर्मल हो गई मेरी, धूलि शीश लगाने से ॥
ऋषि-मुनियो की भक्ति करके, मन मे खुशी मनाता हूँ।
लिखकर उनकी महिमा निशदिन, सुदर सुर से गाता हूँ ॥
ऋषि-मुनियो की शुभ आशीषे, कभी न खाली जाती है।
उनके चरणो की कृपा से, अशुभ घडी टल जाती है ॥
कैसे टलती अशुभ घडी यह, तुमको आज बताता हूँ।
मुनि-चरणो की धूलि का मै, तुमको महत्त्व बताता हूँ ॥
इक लडका था एक गाँव मे, सुख सयम से रहता था।
देव-गुरु के चरणो मे वह, श्रद्धा गहरी रखता था ॥
जिन मदिर नित जाता था वह, जाकर हर्ष मनाता था।
करके पूजन श्री जिनवर की, भारी पुण्य कमाता था ॥
माता-पिता की सेवा लडका, सच्चे मन से करता था।
करके उनकी सेवा निशदिन, सुख का अनुभव करता था ॥
कहता था वह लडका सबसे, धर्म महाउपकारी है।
ऋषि-मुनियो की भक्ति भैया, आत्मा की हितकारी है ॥
ऋषि-मुनियो की भक्ति सबको, भव से पार लगाती है।
भक्ति ही भगवान बनाती, कष्ट सभी हर लेती है ॥
एक दिवस वह लडका भैया, घर से चल देता है।
करने दर्शन मुनि सघ के, पथिक राह लेता है ॥

नगर पहुँचकर उस लडके ने, मुनियो को प्रणाम किया।
करके दर्शन मुनि सघ के, फिर उनका गुणगान किया ॥
भारी हर्ष मनाया उसने, मुनिवर को शीश झुका करके।
फूला नही समाया लडका, धूलि शीश लगा करके ॥
बैठ गया वह मुनि-चरणो मे, देखो अब क्या होता है।
वापस घर चलने को लडका, खडा वहॉ पर होता है ॥
जैसे खडा हुआ वह लडका, चलने को तैयार हुआ।
जिस बस मे जाना था उसको, उसका भैया समय हुआ ॥
तभी वहॉ आए इक सज्जन, सज्जन उससे कहते है।
आज नही जाओ तुम, मेरे अतर्भाव विचरते है ॥
आहार श्री मुनिवर को देकर, कल वापस घर जाना।
करके भक्ति ऋषि-मुनियो की, भारी पुण्य कमाना ॥
नही गया वह लडका उस दिन, ठहर वहीं पर जाता है।
उसी शाम को सुनो सभी तुम, समाचार क्या आता है ॥
बस की टक्कर हुई ट्रक से, नही बचने कोई पाया।
गिर गई बस गहरे खड्डे मे, समाचार यह है आया ॥
वो ही बस थी यह तो भैया, जिसमे इसको जाना था।
मुनियो की भक्ति के कारण, इसको बच जाना था ॥
जीवन रहा सुरक्षित उस दिन, अशुभ कर्म का नाश हुआ।
चारो तरफ ऋषि-मुनियो की, भक्ति का जयकार हुआ ॥
ज्यादा नहीं बढाकर इसको, पूर्ण यही पर करता हूँ।
करना भक्ति ऋषि-मुनियो की, अर्ज सभी से करता हूँ ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
करके भक्ति ऋषि-मुनियो की, अपना भाग्य बनाता है ॥

शाकाहारी सदा सुखी

भोजन शुद्ध करो मेरे भैया, करो मॉस का त्याग।
भोजन-शुद्धि से बुद्धि का, होता सदा विकास ॥

भोजन-शुद्धि से ही भैया, भाव धर्म के रहते है।
जिसके भाव धर्म के होगे, सुखी जगत मे रहते है ॥

नर तन चोला पा करके, जो दूर धर्म से रहते है।
ऐसे अविवेकी तन तज कर, नरक द्वार मे जाते है ॥

नरक द्वार के दु ख सह आए, फिर भी अक्ल नहीं आई।
मार सही भारी नरको मे, भूल गए उसको भाई ॥

भोजन शुद्ध छोड के जो जन, अण्डे मछली खाते है।
कभी नही बनते सुख-साथी, दु खी हमेशा रहते है ॥

इक कोढी की सुनो कहानी, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
पाप किया जिसने जीवन-भर, उसकी कथा सुनाता हूँ ॥

इक कोढी था एक गॉव मे, मॉस सदा वह खाता था।
तजकर शाकाहारी भोजन, हिसा कर भूख मिटाता था ॥

कभी नही सोचा था उसने, मॉस को खाना पाप है।
मूक पशु वध करना यह तो, एक बडा अभिशाप है ॥

एक दिवस वह कोढी भैया, सडक किनारे बैठा था।
सर्दी का मौसम था उस दिन, भूख व्याधि से ऐठा था ॥

कोढ के कारण उसके तन से, भैया बदबू आती थी।
धिक-धिक उसको कहते थे सब, जनता मार भगाती थी ॥

एक दिवस कोढी का भैया, मरण समय जब आय गया।
मरते-मरते देखो कोढी, हमको क्या बतलाय गया ॥

नही सताना किसी जीव को, प्राण उन्हे भी प्यारे है।
प्राण उन्हे भी ऐसे प्यारे, जैसे हमे हमारे है ॥

बुरा हाल हुआ है मेरा, भारी पाप कमाने से।
कोढी बन जाता है प्राणी, मॉंस जीव का खाने से ॥

मुनि मुझे समझाते थे मै, फिर भी नही समझता था।
खुश होकर के मै तो निशदिन, जीव घात करता था ॥
जिह्वा का मै दास बना था, भूल धर्म को जाने से।
भारी कष्ट उठाने पडते, छोड धर्म भरमाने से ॥
समझ मुझे अब आई भैया, मै तो अब पछताता हूँ।
बात नही मानी गुरुओ की, अब उनको शीश झुकाता हूँ ॥
छोड पाप की बाते भैया, दया धर्म को ग्रहण करो।
नही सताना किसी जीव को, शुद्ध भोज तुम ग्रहण करो ॥
भाव यही लिखने का मेरा, पाप दु खो का दाता है।
लेता है जो शरण धर्म की, स्वर्ग मोक्ष सुख पाता है ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन सविनय कहता है।
शुद्ध खाना खाने से प्राणी, सुखी हमेशा रहता है ॥

प्रेम करो भगवान से

धन से प्रेम करे ये प्राणी, धन मे ही सुख मान रहा।
धन को साथी समझे अपना, धन को सब कुछ जान रहा ॥
धन की धुन मे लगा हुआ है, धन मे पागल बना हुआ।
नीद नही आती है इसको, धन का भूत सवार हुआ ॥
भूल गया है खुद को पगला, भूल गया इसान को।
धन-वैभव मे सुख नही कोई, भजो सदा भगवान को ॥
भूल प्रभु को जाने से ही, नही धन-वैभव आता है।
भूल प्रभु को जाता है जो, वो निर्धन हो जाता है ॥
धन कैसे आता है घर मे, आज तुम्हे बतलाता हूँ।
कविता लिखने से पहले मै, प्रभु का ध्यान लगाता हूँ ॥
धन खुद चल करके आएगा, नही कमी धन की होगी।
जिसकी श्रद्धा श्री जिनवर मे, इच्छा सब पूरी होगी ॥

होते देव सहाय उन्ही पर, महिमा उनकी गाते है।
जिनकी श्रद्धा देव गुरु मे, सच्चा सुख वे पाते है ॥
भूले नही धर्म को भैया, याद करे भगवान को।
सुख की चाह अगर है भैया, पाएँ सम्यक् ज्ञान को ॥
करते है जो प्रेम धर्म से, भक्ति प्रभु की करते है।
सुनो ध्यान से कान लगाकर, निर्धन के दु ख रहते है ॥
इक लडका था एक गॉव मे, प्रभु भक्ति वो करता था।
देव शास्त्र गुरु पूज्य जगत मे, श्रद्धा उनमे रखता था ॥
देव शास्त्र गुरुओ मे श्रद्धा, बिगडे काम बनाती है।
धन-वैभव की बात छोड दो, सिद्ध द्वार पहुँचाती है ॥
जिन भक्ति के भजन सुनाकर, लडका खुशी मनाता था।
ऋषि-मुनियो की सेवा करके, उनमे हृदय रमाता था ॥
एक दिवस वह लडका भैया, इक जगल मे जाता है।
मुनिश्री थे विराजमान तह, उनमे ध्यान लगाता है ॥
चलते-चलते बीहड वन मे, चमत्कार क्या होता है।
थैली एक पडी रास्ते मे, उठा उसे वो लेता है ॥
खोल के देखा उस थैली को, हीरे-पन्ने भरे हुए।
मिली अशर्फी हार, स्वर्ण का, कगन-मोती जडे हुए ॥
मालामाल हुआ वह लडका, देव-गुरु को ध्याने से।
नही कमी कुछ रहती घर मे, मुनियो के गुण गाने से ॥
ज्यादा नही बढाकर इसको, पूर्ण यही पर करता हूँ।
देव शास्त्र गुरु पूज्य हमारे, भक्ति उनकी करता हूँ ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
करने वाला भक्ति प्रभु की, नही दीन रह जाता है ॥

बुरे का हाल बुरा होता है

अन्याय नही करना जीवन मे, करना भक्ति मुनियो की।
तन मन धन सब लगा के अपना, करना रक्षा दीनो की ॥

तीर्थ क्षेत्रो पर मुनियो ने, मुक्ति पद को प्राप्त किया।
देकर हित उपदेश उन्होने, जीवो का कल्याण किया ॥
कैसे लिक्खूँ महिमा उनकी, नही लिखी मुझसे जाती।
उनकी भक्ति करने से ही, आत्मा सच्चा सुख पाती ॥
धन्य भाग्य है उनके भैया, जो भक्ति इनकी करते।
इनकी भक्ति करने वाले, इस जग से पार उतरते ॥
जिसने धर्म मार्ग अपनाया, उसका बेडा पार हुआ।
तजा धर्म जिसने मिथ्यावश, उनका जन्म नि सार हुआ ॥
एक व्यक्ति की सुनो कथा, मै लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
अहित किया जिसने जीवन-भर, उसकी कथा सुनाता हूँ ॥
पढकर इस पर अमल करे सब, ऐसा भाव हमारा है।
नही सताना किसी जीव को, जीवन सबको प्यारा है ॥
एक व्यक्ति था एक गॉव मे, अन्याय सदा वो करता था।
न्याय मार्ग को छोड रात-दिन, विषयो मे ही रमता था ॥
खाना पीना मौज उडाना, ही उसने बस जाना था।
धर्म छोड बेईमानी करना, उसने जीवन माना था ॥
जिन दर्शन की नही चाह थी, भूल धर्म को जाने से।
धर्म कार्य के भाव नही थे, अशुभ कर्म के आने से ॥
कैसे क्या करता वह व्यक्ति, ध्यान लगाकर सुन लेना।
भला यदि चाहते अपना, धर्म मार्ग को गुन लेना ॥
काम किया गिरवी का जमकर, ब्याज वसूली करता था।
ब्याज के धधे मे भी देखो, कैसे घपला करता था ॥
एक दिवस इक निर्धन व्यक्ति, गहने लेकर आता है।
दो हजार की मुझे जरूरत, ऐसा उसे सुनाता है ॥
परनोट लिखाकर दो हजार का, दस्तखत उससे करवाए।
चला गया निर्धन घर वापस, कर याद प्रभु को हर्षाए ॥

निर्धन के जाते ही महाजन, कपट जाल फैलाता है।
दो के बीस बना करके वह, मन मे खुशी मनाता है ॥
भारी पाप कमाया उसने, भूल धर्म को जाने से।
कैसी हालत हो जाती है, बेईमानी अपनाने से ॥
फालिज उसको पड गया इक दिन, अग सभी बेकार हुए।
परनोटो को खा गए चूहे, स्वप्न सभी बेकार हुए ॥
मरने से पहले देखो वह, क्या कुछ कहके जाता है।
उन बातो को मोहन भैया, लिखकर तुम्हे सुनाता है ॥
अन्याय नही करना जीवन मे, लोभ दु खो का दाता है।
धर्म नही बिसराना भैया, धर्म सुखो का दाता है ॥
गुणी मुझे समझाते थे फिर भी, नही ध्यान मे लाता था।
दो के बीस बनाने मे ही, अपना समय बिताता था ॥
सारी उम्र बिताई मैने, दो के बीस बनाने मे।
अक्ल मुझे अब आई भैया, फालिज के पड जाने मे ॥
इकला ही दु ख भोग रहा मै, नरको का मेहमान बना।
सग चला नही कोई मेरे, जिनके लिए यह पाप किया ॥
खाते थे सब परिजन मेरे, पाप अकेला करता था।
सदा पाप करने मे ही मै, सुख का अनुभव करता था ॥
ये सब बाते बता महाजन, नरक द्वार मे चला गया।
बेईमानी नही करे कदापि, हमको वह समझाय गया ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
लोभ छोडकर धर्म कमाएँ, धर्म सुखो का दाता है ॥

आदर करो सदा गुरुओं का

आदर करो सदा गुरुओ का, नही निरादर करना तुम।
भला यदि चाहते अपना, सुनो काम की बाते तुम ॥

ऐसी बात बताऊँगा मै, जीवन मे सुख पाओगे।
जग मे नाम तुम्हारा होगा, तुम महान बन जाओगे ॥

सुबह सवेरे उठकर भैया, प्रभु का ध्यान लगाना तुम।
करके दर्शन श्री जिनवर के, निज सौभाग्य मनाना तुम ॥

जपना सदा नवकार मत्र को, महामत्र यह सुखकारी।
इसके जपने से ही भैया, मिलती है विद्या सारी ॥

जपने वाला णमोकार को, पहला नबर पाता है।
इसी मत्र पर श्रद्धा रखकर, मोहन काव्य सुनाता है ॥

गदी पुस्तक नही पढना तुम, पढना पुस्तक ज्ञान की।
जिनवाणी की करे विनय हम, विनय करे भगवान की ॥

कुजी ली मैने मुनियो से, विनय करी जिनवाणी की।
देव गुरु की भक्ति से ही, आई बुद्धि रचाने की ॥

आदर कर गुरुओ का अपने, करना तुम सम्मान।
गुरुओ की कृपा से प्राणी, बन जाता भगवान ॥

गुरु कृपा जिस पर हो जाती, समझो उसके भाग्य जगे।
गुरु कृपा के कारण ही तो, राम कृष्ण भगवान बने ॥

कक्षा मे जब गुरुवर आएँ, खडे सभी तुम हो जाना।
कहे गुरुवर जब तुम सबको, बैठ सभी तुम सब जाना ॥

गुरुवर के आने पर भी, जो बच्चे बैठे रहते है।
ऐसे बच्चे अक्सर भैया, फेल हमेशा होते है ॥

जितने घटे गुरु पढाएँ, ध्यान लगाकर तुम पढना।
नही छोडना कोई घटा, नही प्रमाद किचित् करना ॥

घर जाकर तुम सबसे पहले, माता-पिता को करो प्रणाम।
माता-पिता की सेवा से ही, बन जाते सब बिगडे काम ॥

बहु उपकार है उनके हम पर, नही चुका हम सकते है।
छूकर उनके चरणो को ही, हम सुख पा सकते है ॥

माता-पिता का करो नाम तुम, पहला नबर आ करके।
उज्ज्वल भविष्य बनाओ अपना, देव गुरु का ध्यान करके ॥
कक्षा मे यदि दोस्त बनाओ, पहले उसकी परख करो।
पढने में जो सदा अग्रणी, उसको ही तुम मित्र वरो ॥
आदर करता हो जो सबका, प्रेम धर्म से करता हो।
नही होटलो मे जाता हो, गुरुओं मे मन धरता हो ॥
जिन दर्शन नित करना हो जो, कुदृष्टि ना रखता हो।
पर नारी मॉ-बहनो को जो, माता तुल्य समझता हो ॥
ये सब कार्य करोगे जब तुम, नबर पहला पाओगे।
गारटी से कहता हूँ मै, तुम महान बन जाओगे ॥
मिला सभी कुछ मुझको भैया, आदर गुरुओ का करके।
मिली ज्ञान की बाते मुझको, सेवा मुनियो की करके ॥
लिखने मे यदि हुई चूक हो, लेखक माफी चाहेगा।
डका बजे धर्म का जग मे, ऐसे भजन बनाएगा ॥
होवे जय-जयकार धर्म की, होवे बाते ज्ञान की।
करे तरक्की देश हमारा, जय बोलो भगवान की ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
आदर करो सदा गुरुओ का, करके खुशी मनाता है ॥

सदा आगे रहो

धर्म कार्य में जो जन भैया, सबसे पीछे रहते है।
नेकी नही करते वे समझो, सदा बदी वे करते है ॥
बदी हमेशा करने वाले, कष्ट अनेको पाते हैं।
नेक कार्य करने वाले ही, नेक पुरुष कहलाते है ॥
धर्म कार्य में जो जन भैया, सबसे आगे रहते हैं।
ऐसे प्राणी ही तो जग मे, सदा सफलता पाते है ॥

कार्य पूर्ण होते सब उनके, कष्ट नही कोई रहता।
धर्म मार्ग पर चलने से ही, वैभव स्वय वृद्धि करता ॥
वैभव बढ़ता है उन सबका, धर्म सदा जो करते है।
देते दान खुले मन से अरु, तीर्थ वदना करते है ॥
देते जो आहार साधु को, देकर हर्ष मनाते है।
सदा सुखी वे रहते भैया, स्वर्ग मोक्ष सुख पाते है ॥
धर्म मार्ग पर चलने वाला, भव्य जीव कहलाता है।
जो भी कार्य करे धर्मी जन, सिद्धि उसी मे पाता है ॥
धर्मी जन के धर्म के कारण, पुय बध होता रहता।
सुख सपत्ति बढ़ती है निशदिन, पापी सब खोता रहता ॥
धन-वैभव यो बढे निरतर, दान-पुण्य नित करने से।
आनद मगल होता जीवन, धर्म मार्ग पर चलने से ॥
धर्म मार्ग को तजने वाले, नही सफलता पाते है।
जहॉ कही भी जाते पापी, वही अनादर पाते है ॥
दु खी हमेशा रहता पापी, पाप सदा धोखा देता।
पापी प्राणी का दुनिया मे, नही कोई अपना होता ॥
अपने भी बेगाने बनते, पाप उदय जब आता है।
पापी प्राणी तो जेलो मे, कोडे हटर खाता है ॥
पापी की नहि इज्जत होती, पापी नरको मे जाता।
भूखा-प्यासा रहता पापी, पापो का ऐसा नाता ॥
आठ पहर करके मेहनत भी, पापी भूखो मरता है।
हाथ पसारे फिरता पापी, करनी का फल भरता है ॥
सुखी चाहो गर जीवन मे, तुम पाप मार्ग को तज देना।
पर हित मे तुम ध्यान लगाकर, धर्म मार्ग अपना लेना ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
धर्म मार्ग पर चलकर प्राणी, सुख-सपदा पाता है ॥

काया एक दिन जलकर राख हो जाएगी

मुश्किल से यह नर तन पाया, पाकर इसको व्यर्थ गवाता।
घटो करता सेवा इसकी, आखिर मे ये काम न आता ॥
तेल-फुलेल लगाने मे ही, अपना समय बिताता है।
मोहजाल मे पडकर प्राणी, भूल स्वय को जाता है ॥
भूल गए जो निज आतम को, वो मूरख कहलाता है।
ज्ञानी जन तो ज्ञान मार्ग से, अपना हित कर जाता है ॥
भोगो मे जो लिप्त रहा वह, अत समय पछताता है।
धर्म मार्ग पर चलने वाला, भव्य जीव कहलाता है ॥
नर तन पा सयम साधन कर, मनुज मुक्ति को पाता है।
आसक्ति यदि हुई देह से, जग दु ख सतत उठाता है ॥
नर तन पाकर भी जो मानव, धर्म नहीं मन लाते है।
ऐसे प्राणी हो तो भैया, अतकाल पछताते है ॥
सुनकर वाणी ऋषि-मुनियो की, स्व-पर का कल्याण करो।
दर्शन-ज्ञान-चारित्र धार कर, धर्म-मार्ग को वरण करो ॥
बात नही गुरुजन की मानी, सिर धुन-धुन पछताओगे।
काया काम नही देगी यो, जीवन व्यर्थ गॅवाओगे ॥
साथ नही देगा कोई भी, यम के घर जाने को।
नरको के कष्टो मे तेरे, होगा नहि हाथ बटाने को ॥
कलह वहॉ पर रहती हरदम, नही शाति मिलती है।
जितनी सुविधा मिली यहॉ पर, और कहॉ मिलती है ॥
यहॉ की बातें वहॉ पै तुझको, याद सभी दिलवाएँगे।
आएगी जब याद तुझे वो, शूली पर लटकाएँगे ॥
नही दया आएगी तुझ पर, त्राहि त्राहि मचेगी।
पैरो मे जजीरे होगी, गल पैनी धार चढ़ेगी ॥
दूध दही की बात छोड दो, पानी वहाँ नही मिलता।
बार अठारह एक श्वास मे, देह वहॉ मरता-जिलता ॥

गरम-गरम लोहे की कीले, तन मे ठोकी जाती है।
आग अखड जलाकर उसमे, काया झोकी जाती है ॥
इसीलिए कहते गुरु प्रतिदिन, काया से मत राग करो।
सयम व्रत धारण करके तुम, सदा प्रभु का ध्यान करो ॥
भाव यही लिखने का मेरा, धर्म-मार्ग को ग्रहण करो।
सुख से रहना चाह यदि हो, देव-गुरु का ध्यान करो ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
पाप छोडकर धर्म कमाओ, धर्म सुखो का दाता है ॥

साधु-वंदना

ऋषि-मुनि है पूज्य हमारे, उनको शीश झुकाता हूँ।
उनकी महिमा लिखकर ही मै, अपना भाग्य बनाता हूँ ॥
ऋषि-मुनियो की भक्ति भैया, भव से पार लगाती है।
मुनियो की भक्ति ही प्यारे, बिगड़े काम बनाती है ॥
जन्म-जन्म के पापो का क्षय, मुनि-भक्ति से हो जाता।
इनकी शुभ आशीष मिले तो, निर्धन राजा बन जाता ॥
कष्ट नही रहते जीवन मे, जीवन सुखमय हो जाता।
इनकी भक्ति करने वाला, ज्ञानी जग मे कहलाता ॥
जिसके हृदय मुनि की भक्ति, सदा समाई रहती है।
आने वाली विपद आपदा, दूर स्वय हो जाती है ॥
अज्ञान दूर हो जाता भैया, भक्ति इनकी करने से।
मन वांछित फल पाता प्राणी, सेवा इनकी करने से ॥
ऋषि-मुनियो की भक्ति का फल, लिखना मुझको आया है।
हुआ खुशहाल हमारा जीवन, बिन माँगे सब पाया है ॥
पाकर शुभ आशीष इन्ही की कविता लिखता जाता हूँ।
सुखी रहे सब जीव जगत के, भाव हमेशा भाता हूँ ॥

करते-करते काम घरेलू, ध्यान इन्हीं का करता हूँ।
इनकी भक्ति करने मे ही, सुख का अनुभव करता हूँ ॥
क्रोध-लोभ घट कर जीवन मे, त्याग भाव बढ़ जाता है।
ऐसा अतिशय मुनि भक्ति का, ज्ञान स्वय हो जाता है ॥
सुख-शांति घर मे हो जाती, कलह, कष्ट नहीं रहता है।
मुनियों की भक्ति करने से, पाप दूर जा भगता है ॥
इक व्यक्ति की सुनो कथा मै, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
लेना शिक्षा पढकर इससे, गुण मुनियों के गाता हूँ ॥
इक व्यक्ति था एक गॉव मे, मुनि-निंदा वो करता था।
करके निंदा ऋषि-मुनियो की, यों स्वच्छद विचरता था ॥
कभी नही सोचा था उसने, मुनि-निंदा से दु ख मिलता।
मुनि निंदा से ही यह प्राणी, चौरासी मे है रुलता ॥
भारी कष्ट उठाने पडते, नरक द्वार मे जा करके।
क्या हालत हो जाती जन की, धर्म मार्ग बिसरा करके ॥
उस व्यक्ति के गॉव मे इक दिन, मुनि-सघ इक आता है।
वह व्यक्ति भी देख उन्ही को, निंदा कर इठलाता है ॥
बुरे भाव बनाए उसने, नहि मन मे कुछ सोच है।
घर पर चला गया वह दुर्जन, देखो अब क्या होता है ॥
घर पर जाकर बैठा ही था, चार चोर घुस आए।
हड्डी तोड दई सब उसकी, हटर बहुत लगाए ॥
माल बॉध ले गए लूटकर, नही तनिक भी है छोडा।
ऐसी हालत कर दी उसकी, किसी काम का नहि छोड़ा॥
लहुलुहान अधमरा छोडकर, चोर वहॉ से चले गए।
जितना हाथ लगा उनको, वह सारा साथ समेट गए ॥
तड़फ-तडफकर मरा दुष्ट वह, नरक-द्वार में चला गया।
कैसी हालत हुई वहाँ पर, लिखने का है भाव हुआ ॥

नरक-द्वार मे सारी बाते, याद उसे दिलवाई है।
निंदा तूने करी साधु की, 'हॉ' उससे भरवाई है ॥
मुख को उसके खोल वहॉ पर, लोहा पिघलाकर डाला।
कीले ठोक दई है तन मे, मुह काला यो कर डाला ॥
ले जा करके मीलो ऊपर, छोड वहॉ पर दिया उसे।
खड-खड हो गयी देह यो, पछताए अब सिर धुनके ॥
रो-रो रुदन मचाए अब वो, नही कोई सुनने वाला।
पीडा-ही-पीडा नरको मे, जाए वहॉ निंदा वाला ॥
भाव यही लिखने का मेरा, देव-गुरु की विनय करो।
निंदा नही करे हम उनकी, सब जीवो से प्रेम करो ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
मुनि निंदा करने से प्राणी, नरको के दुख पाता है ॥

कुसंगति का फल

यदि चाहते सुख से रहना, करो प्रभु का ध्यान।
प्रभु-भक्ति से होता भैया, आतम का कल्याण ॥
शुभ कर्मो से मिला मनुष्य भव, मिली ये सुदर काया।
शुभ कर्मो से मिला उच्च कुल, मिली ये दौलत माया ॥
सब कुछ पाकर भी तू भैया, इसको व्यर्थ गॅवाता।
कुसगति मे पडकर निशदिन, धर्म नही मन लाता ॥
कुसगति मे पडकर प्राणी, भारी कष्ट उठाता है।
मिलता फल जब कुसगति का, तब प्राणी पछताता है ॥
कुसगति मे पड करके जो, भूल धर्म को जाते है।
नही आदर करते गुरुओ का, व्यसनो मे रम जाते है ॥
विद्यालय का बना बहाना, क्लबों मे जो जाते है।
क्या हालत होती है उनकी, मोहन तुम्हे सुनाते है ॥

इक लडका था एक गाँव मे, पढ़ने कालिज जाता था।
बना बहाना कालिज का वो, होटल मे नित जाता था ॥
क्लबो मे भी जा करे वह, फूला नही समाता था।
दादा-बाबा की इज्जत को, नहीं ध्यान वो लाता था ॥
पैसे चोरी करके घर से, पहुँच क्लब मे जाता था।
बना बहाना पुस्तक का वो, पैसे घर से पाता था ॥
गदी आदत ने लडके पर, अपना रग जमाया था।
फसा पुलिस के चगुल मे वो, सकट उस पर छाया था ॥
एक दिवस वह लडका भैया, चोरी करने जाता है।
चोरी करने के चक्कर मे, पकड लिया वह जाता है ॥
भारी मार पडी लडके को, पोल खुली उसकी सारी।
अच्छा जिसको कहते थे सब, कहे धिक-धिक दुनिया सारी।
जिनको मित्र कहे था लडका, पास नही उसके आए।
क्लबो मे जो सग साथ थे, नही निकट अपने पाए ॥
पडा अकेला जेल के अदर, हाय-हाय चिल्लाता है।
करके बात याद गुरुओ की, सिर धुन-धुन पछताता है ॥
भाव यही लिखने का मेरा, कुसगति का त्याग करे।
आदर करे सदा गुरुओ का, पढ-लिखकर विद्वान् बने ॥
गुरु-भक्ति का फल देखो तुम, लिखना मुझको आया है।
देव-शास्त्र-गुरु पूज्य हमारे, उनका ध्यान लगाया है ॥
ऋषि-मुनियो की सगति से ही, प्राणी सच्चा सुख पाया।
उनकी भक्ति से प्राणी का, अज्ञान दूर है हो जाता ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
देव-गुरु की भक्ति से ही, प्राणी मुक्ति पाता है ॥

धर्म-मार्ग अपनाओ

धर्म मार्ग पर चलो हमेशा, धर्म सुखो का दाता है।
धर्म मार्ग पर चलने वाला, सुखी स्वय को पाता है ॥

धर्मी आदर पाता जग मे, धर्मी पार उतरता है।
धर्म मार्ग को तजने वाला, नरक द्वार मे जाता है ॥
दस धर्मो का करना पालन, धर्म ये दस सुखकारी है।
आत्मा के हितकारी है ये, सभी धर्म गुणकारी है ॥
दस धर्मों का पालन करना, मुनि हमे सिखलाते है।
दया के धारी पर उपकारी, धर्म का महत्त्व बताते हैं ॥
भक्ति करो सदा मुनियो की, दस धर्मो को ग्रहण करो।
पाप मार्ग को तजकर भैया, आत्मा का कल्याण करो ॥
दो भाइयो की सुनो कथा, मै लिखकर तुम्हे सुनाता हूॅ।
कविता लिखने से पहले मै, प्रभु का ध्यान लगाता हूॅ ॥
दो भाई थे एक नगर मे, दोनो हिलमिल रहते थे।
भावो मे था अतर लेकिन, वैसे सग विचरते थे ॥
बडा भाई था ज्ञानी-ध्यानी, प्रभु-पूजन नित करता था।
करके भक्ति ऋषि-मुनियो की, भारी पुण्य कमाता था ॥
तीर्थक्षेत्रो पर जाता था, जाकर हर्ष मनाता था।
वदन तीर्थो की करके वह, आनदित हो जाता था ॥
दस लक्षण के पर्व मे वह, व्यापार नही कुछ करता था।
दस धर्मो का करके पालन, आतम का हित करता था ॥
वापिस तीर्थो से जब आया, चमत्कार क्या होता है।
एक लाख का नफा माल मे, उसे अचानक होता है ॥
छोटे का भी सुनो हाल तुम, लिखकर तुम्हे सुनाता हूॅ।
लेना पढकर शिक्षा इससे, गुण मुनियो के गाता हूँ ॥
एक ट्रक गुड लेकर छोटा, अपने घर पर आता है।
करके बद गुड को कमरे मे, चोरी करने जाता है ॥
छोटा भाई धर्म ध्यान से, दूर हमेशा रहता था।
करके निदा ऋषि-मुनियो की, दुर्व्यसनो मे रमता था ॥

दस लक्षण के पर्व मे भी वो, जिन मदिर नहिं जाता था।
दान नही देता था कभी वो, चोरी कर खुश होता था ॥
चोरी के चक्कर मे छोटा, इक दिन पकडा जाता है।
बद हुआ जेलो मे वह तो, हाहाकार मचाता है ॥
बंद है जेल के अदर छोटा, देखो घर क्या होता है।
वर्षा इतनी हो गई ज्यादा, गुड सारा बह जाता है ॥
टूट गया वह जेल के अदर, भारी पाप कमाने से।
सुखी नही रह सकता प्राणी, छोड धर्म को देने से ॥
सुनने वालो सुन लो सबको, मोहन यही सुनाता है।
धर्म मार्ग पर चलने वाला, सुखी हमेशा रहता है ॥

श्रद्धा रखो सदा धर्म पर

धर्म महा सुखदाई जग मे, धर्म सदा आचरना।
चाहे कितनी पडे मुसीबत, धर्म नही तुम तजना ॥
करते है जो धर्म आचरण, सदा सुखी वे रहते है।
धर्म के ऊपर मरने वाले, अजर अमर पद गहते है ॥
भूलो नही धर्म को भैया, धर्म मुक्ति का दाता है।
लेता है जो शरण धर्म की, भव से वह तिर जाता है ॥
इक महिला की सुनो कहानी, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
धर्म रमा था जिसके अदर, उसकी बात बताता हूँ ॥
एक गॉव मे इक महिला थी, धर्म ध्यान नित करती थी।
चाहे कितनी पडी आपदा, याद प्रभु को रखती थी ॥
नित मदिर मे जाकर महिला, पूजन पाठ रचाती थी।
देव-शास्त्र-गुरु पूज्य जगत मे, उनका ध्यान लगाती थी ॥
ऋषि-मुनि जो गाँव मे आते, शुद्धाहार कराती थी।
श्रद्धा भक्ति कर मुनियो की, बीज धर्म उपजाती थी ॥

सदा गरीबो की रक्षा मे, अपना द्रव्य लगाती थी।
सिद्ध चक्र का पाठ कराकर, फूली नहीं समाती थी॥
इक लडका था उस महिला के, बहुत अधिक बीमार हुआ।
नहीं ठीक हो पाया लड़का, सबने कितना था उपचार किया॥
देख पुत्र की हालत माता, धर्म ध्यान मन लाती है।
धर्म ही रक्षा करे जीव की, सुदर भाव बनाती है॥
जाकर मंदिर मे वह माता, गधोदक ले आती है।
देवगुरु का करके सुमरन, मुख पर वह छिटकाती है॥
लगते ही गधोदक लडका, बैठ स्वय ही जाता है।
देव शास्त्र गुरु पूज्य जगत मे, जय जयकार लगाता है॥
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
श्रद्धा रखो सदा धर्म पर, धर्म ही पार लगाता है॥

धर्मभूषण जी महाराज के कैलाश नगर चातुर्मास स्थापना के अवसर पर

कितना शुभ दिन आज का भाई, मुख से नही कहा जाता।
पुण्य उदय जब होता भैया, तब ऐसा अवसर आता॥
पुण्यवान जीवो के सुन लो, भाग्य निराले होते है।
पुण्य के कारण ही तो चातुर्मास नगर मे होते है॥
चतुर्मास जहाँ होता है, आनद मगल रहता है।
ऋषि-मुनियो के प्रवचन से, अज्ञान तिमिर भग जाता है॥
चातुर्मास जिस नगर मे होता, देव वहाँ पर आते है।
जाकर वापिस स्वर्गलोक में, मुनि की महिमा गाते हैं॥
धन्य भाग्य इस नगर के भैया, मुनियो ने चातुर्मास किया।
कर स्थापना चार मास की, सद्मार्ग दिखलाय दिया॥
धर्म की गगा बहे जहाँ पर, अतिशय नित नए होते है।
ऋषि-मुनियों के प्रेरक प्रवचन, बीज धर्म का बोते हैं॥

धर्म पाप का नाशक है, अरु, धर्म सुखो का दाता है।
एक धर्म है जो जीवो के, साथ अत मे जाता है॥
धर्म जहॉ पर होता भैया, नहीं कोई पाप ठहर पाता।
चातुर्मास जिस नगर मे होता, आनद वहॉ ठहर जाता॥
चातुर्मास किया मुनिवर ने, नित मंदिर सब आना।
सुनकर अमृत वाणी इनकी, जीवन सफल बनाना॥
पूज्य मुनि के अतरग मे, माल बहुत है भाई।
जैसा चाहेगा तू लेना, वैसा ही मिल जाई॥
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित की, खान इन्ही पै भारी है।
तप रूपी किरणे है इन पर, क्षमा धर्म पिचकारी है॥
ज्ञान-गग है पास मे इनके, दस धर्मो की माला है।
सुदर मोती है माला मे, हर मोती गुणवाला है॥
सच्ची श्रद्धा रख मुनिवर मे, जो चाहो सो ले लेना।
आतम का हित अगर चाहते, अमृत वाणी गह लेना॥
नियम धर्म लेकर मुनिवर से, सोया भाग्य जगाओ।
सुनकर अमृत वाणी इनकी, मुक्ति मार्ग पर जाओ॥
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
पा आशीष पूज्य मुनिवर की, भजन बनाकर लाता है॥

पर को त्यागो स्व में आओ

पेट को भाडा देता है तू, नही काम कुछ पाता है।
हलुआ पूरी और मिठाई, सब तू इसे खिलाता है॥
सुदर वस्त्र इसे पहना के, कितना तू इतराता है।
निज आत्म को भूल गया तू, इसीलिए दुख पाता है॥
चौबीस घटे करके मेहनत, पेट को अपने भरता है।
खाने पीने मौज उड़ाने मे, सुख अनुभव करता है॥

सच्चा सुख किसको कहते हैं, नहीं समझ तू पाता है।
विषय भोग के चक्कर मे पड, हीरा जन्म गॅवाता है॥
पर से दृष्टि हटा ले अपनी, निज मे दृष्टि रमाले।
निज स्वरूप मे रमकर भैया, सच्चे सुख को पाले॥
सच्चा सुख तो तेरे अदर, भरा हुआ है भाई।
जिसने आतम की सुध ली है, उसने मुक्ति पाई॥
तेरे अदर भरा हुआ है, सम्यक सुख का सागर।
अनत गुणो की खान है रे तू, ज्ञान गुणो की गागर॥
कर्मरूप पर्दे ने इसको, ढका हुआ है भाई।
इन कर्मों के कारण ही तो, हमने विपदा पाई॥
शुभ कर्मो का हुआ उदय जब, सच्चे गुरुवर आए।
गुरुवर ने आ करके भैया, सोये पथिक जगाए॥
गुरुवर ने बतलाया हमको, आतम ज्ञान जगाओ।
अष्ट कर्म का करो नाश अरु, मुक्ति का पद पाओ॥
आतम ध्यान लगाकर ही हम, कर्म नाश कर सकते है।
निज स्वरूप मे रमकर भैया, सच्चा सुख गह सकते है॥
हलुआ पूरी और मिठाई, सब आतम से न्यारे है।
जब तक नहि जाना आत्म को, तब तक यही प्यारे है॥
जिसने सुध ले ली आतम की, उसने इनको छोड दिया।
निज आत्म मे रमकर उसने, पर से नाता तोड दिया॥
पर से दृष्टि हटाकर भैया, आतम ध्यान लगाओ।
जिससे आत्म-हित होवे, ऐसे मार्ग को अपनाओ॥
पर से दृष्टि हटाकर आतम, सच्चे सुख को पाएगा।
राग-द्वेष का नाम मिटाकर, सिद्ध शिला को जाएगा॥
सिद्ध शिला को जाने वाले, पर से दृष्टि हटाता चल।
निज स्वरूप मे रमकर भैया, ज्ञान की जोत जलाता चल॥

सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
निज आतम का ध्यान करे वह, सदा सुखी हो जाता है॥

लक्ष्मी किसको वर चुनती है

लक्ष्मी किसको वर चुनती है, आज तुम्हे बताता हूँ।
रहती किसके घर मे लक्ष्मी, वह भी तुम्हे बताता हूँ॥
नही बुलाने से ये आती, नही खुशामद करने से।
लक्ष्मी स्वय आती है भैया, दया धर्म के करने से॥
देव शास्त्र गुरुओ की भक्ति, जिसके अदर होती है।
उसको वर चुनती है लक्ष्मी, बनती निर्मल ज्योति है॥
धर्मी के घर का निवास, वह अपना भाग्य सराहे।
छोडे यदि लक्ष्मी को धर्मी, नही वो वापस आवे॥
लक्ष्मी और पुण्य का जोडा, चला सदा से आया है।
पुण्यवान जीवो को इसने, उन्नत पथ दिखलाया है॥
सदा पाप से करती घृणा, पापी के नहि जाती।
जिस घर होते पाप रे भैया, चली वहाँ से जाती॥
धर्म बढे जब जीव का भैया, धन भी स्वय बढ जाता है।
धन और धर्म बढे जब दोनो, मन गौरव पा जाता है॥
पाप नही करना जीवन मे, पाप दु:खो का द्वार है।
करते है जो पाप रे चेतन, पाते कष्ट अपार है॥
पाप नरक ले जाता भैया, पुण्य स्वर्ग का दाता है।
जैसा कर्म करे ये प्राणी, वैसा ही फल पाता है॥
सुख का जीवन गर तुम, चाहो दया धर्म को अपनाना।
लक्ष्मी को पाना चाहो तो, पापों से डरते रहना॥
पाप को छोडकर धर्म कमाओ, धर्म सुखों का द्वार है।
धर्म मार्ग पर चलकर प्राणी, होता भव से पार है॥

भव से तरना चाहो गर तुम, धर्म मार्ग अपनाओ।
ऋषि-मुनियो की सेवा करके, जीवन सफल बनाओ॥
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
धर्म मार्ग पर चले सभी हम, धर्म सुखो का दाता है॥

करना सेवा साधु-संत की

करना सेवा साधु-सत की, सेवा उनकी सुखदाई।
करने से सेवा मुनिजन की, मेवा मिलती है भाई॥
कैसी होती है वह मेवा, आज तुम्हे बतलाता हूँ।
सेवा से मिलती है मेवा, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ॥
मुक्ति रूपी मेवा मिलती, कष्ट नहीं रहता कोई।
सेवा से मुनियो की भाई, पाप कर्म सब क्षय होई॥
बिना बुलाए लक्ष्मी आती, सेवा उनकी करने से।
आनद मगल होता जीवन, उनको सदा सुमरने से॥
उपसर्ग नहीं आता है कोई, विघ्न दूर ही रहते है।
मुनि-भक्तो घर-द्वारे पर, कभी न पग वे धरते है॥
सर्प की माला बने भक्ति से, निर्धन सेठ कहाता है।
करने से भक्ति मुनिजन की, देखो क्या हो जाता है॥
एक लडका था एक नगर मे, मुनियो की भक्ति करता था।
सच्ची श्रद्धा से वह लडका, आहार दान देता था॥
एक दिना वह शुभ कर्म से भैया, आहार साधु को देता है।
करके बारबार वदना, फूला नही समाता है॥
निर्धन था वह लडका सुदर, नहीं कमाई ज्यादा थी।
ऋषि-मुनियो मे हो दृढ श्रद्धा, यही एक अभिलाषा थी॥
देकर के आहार मुनि को, मुनिवर के पैर दबाता है।
लेकर आशीर्वाद उन्हो से, किसी काम से जाता है॥

चलते-चलते बीच राह मे, उसको ठेकेदार मिला।
ठेके थे खानो के उस पर, कैसे उसका भाग्य खुला॥
बातो ही बातो मे लडका, खान का ठेका लेता है।
सस्ता ठेका मिला यकायक, खान लोह की ले लेता है॥
आशीर्वाद की महिमा देखो, देखो महिमा मुनियों की।
कैसे भाग्य जगा लडके का, सुनो कविता मन मोहन की॥
करी खुदाई खान की भैया, लोहा नही निकलता है।
सोना भरा पडा था उसमे, हीरा बहुत निकलता है॥
धन-वैभव सपन्न हुआ वह, यश फैला उस लडके का।
सेवा करने से मुनिजन की, सेठ बना जो निर्धन था॥
सुनकर इस कविता को भैया, सेवा मुनि-जन की करना।
देव शास्त्र गुरु पूज्य जगत मे, तीनो की भक्ति करना॥
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
करके सेवा ऋषि-मुनियो की, भजन बनाकर लाता है॥

दुःख को हर ले, सुख को देवे

दु ख को हर ले, सुख को देवे, वही धर्म कहलाता है।
श्रद्धा धर्म मे रखने वाला, कभी न दु ख को पाता है॥
धर्मी आदर पाता जग मे, धर्मी पार उतरता है।
धर्म मार्ग पर चलने वाला, सुख का अनुभव करता है॥
लक्ष्मी घर आती धर्मी के, आकर वापिस नहि जाती।
धर्म नहि होता जिस घर मे, बनती कभी नही साथी॥
छोड धर्म को देने वाला, भारी कष्ट उठाता है।
भारी विपदा पडती उस पर, अत नरक मे जाता है॥
नरक गति मे कितने दु ख है, नही कहे मुख से जाते।
दाना पानी नहीं वहाँ पर, बिजली के हटर पडते॥

पेड़ो के पत्ते भी नरक मे, तेज धार के होते है।
पडते है जब तन के ऊपर, टुकडे टुकडे करते है॥
रक्त राध से भरी हुई, नदियाँ बहती रहती हैं।
कीड़ो के झुण्ड भरे होते, दुर्गध उगलती रहती है॥
जीव परस्पर लडे वहॉ पर, हरदम कटते मरते है।
सुनकर खडे रोगटे होते, ऐसे दु ख वो भरते है॥
करुणा करके सत गुरुओ ने, सच्चा मार्ग बताया।
धर्म महा उपकारी जग मे, गुरुओ ने समझाया॥
धर्म मार्ग पर चले सभी हम, श्रद्धा भाग जगाएँ।
ऋषि-मुनियो की वाणी सुनकर, सच्चे सुख को पाएँ॥
ऋषि-मुनि ही भैया हमको, सच्चा मार्ग दिखाते है।
धर्म मार्ग पर चलकर ही वे, सिद्ध शिला को जाते है॥
चाहे कितनी पडे मुसीबत, भूल धर्म को मत जाना।
धर्म सहाई है इस जग मे, श्रद्धा ऐसी मन लाना॥
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
धर्म मार्ग पर चलें सभी हम, धर्म सुखो का दाता है॥

नवयुवकों के प्रति

जवानी हमको मिली है, मुक्ति पाने के लिए।
भाव सयम के बनाओ, मोक्ष जाने के लिए॥
मुक्ति की यदि चाह तुम्हे है, ज्ञान चक्षु को खोलो।
अज्ञान आवरण हटाकर, निज को निज मे घोलो॥
अधकार अज्ञान का जब तक, तेरे पास रहेगा।
समझो व्यर्थ गया यौवन यह, दुष्ट कर्म घेरेगा॥
ज्ञान की चाह यदि तुमको, पास चलो ज्ञानी के।
सयम रूपी लिए कुल्हाड़ा, कर्म को दलते चलो॥

रतन अमोलक मिला मनुज भव, मुक्ति पाने के लिए।
त्याग देते घर सुजन तब, मोक्ष जाने के लिए॥
पहले के शुभ कर्मो से यह, नर तन चोला पाया है।
उत्तम कुल भी पाया तूने, वैभव भी सब पाया है॥
जिनवाणी का मिला समागम, कर्मो का क्षय करने को।
सुदर मिली जवानी तुझको, मुक्तिरानी वरने को॥
मुक्ति को तू भूल गया अब, विषयो मे सुख पाने से।
जिन दर्शन भी भूल गया रे, कुसगति मे जाने से॥
कुसगति ही तो तुझको, नरक द्वार पहुँचाएगी।
भारी मार लगाकर तुझको, बाते याद दिलाएगी॥
जिसे समझता पगले अपना, वह दु खो का द्वार है।
अपना अपना करके प्राणी, पाता कष्ट अपार है॥
अपना था जो सच्चा साथी, उसको तूने छोड दिया।
निज की तुझको खबर नही है, पर से नाता जोड लिया॥
पर मे सुख का नाम नही है, पर से प्रीति हटा ले।
स्व मे रमकर मेरे भैया, जीवन सफल बना ले॥
स्व मे रमकर ही तू इक दिन, सच्चे सुख को पाएगा।
पर से प्रीति हटाकर ही तू, सिद्ध शिला को जाएगा॥
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
उठो जवानो सयम पालो, सयम सुख का दाता है॥

भोगों में आसक्त प्राणी की दशा

भोगो मे सुख पाने वाले, जरा मन मे कुछ सोच।
मोह की मदिरा पीकर प्राणी, हो रहा मदहोश॥
भोगो मे सुख मान रहे जो, वो भोगो के दास है।
विषय भोग मे फसने वाले, रहते सदा उदास है॥

विषयो का तू दास बना है सयम नहि मन लाने से।
सयम नहीं पालन करता रे, भोगो मे फँस जाने से॥
भोग महा दु खदाई जग मे, भोग नरक ले जाते है।
रखते है जो रुचि भोगो मे, भारी कष्ट उठाते है॥
भोगो मे यदि सुख होता तो, तीर्थकर क्यो तजते।
काहे को शिव साधन करते, काहे घर को तजते॥
भोगो मे यदि सुख होता तो, ऋषि-मुनि क्यो बनते।
धन वैभव क्यो तजते वो अर, क्यो आतम को भजते॥
भोगो मे नही सुख है किचित, सयम सुख का साधन है।
सयम ही उपकारक तेरा, सयम ही आराधन है॥
बडे पुण्य से मिला मनुज तन, बारबार नही मिलता है।
भोगो मे जो इसको खोता, चौरासी मे जा रुलता है॥
कभी नरक मे जाता है वो, कभी पशु गति मे जाता।
तरह तरह के बदल के चोले, भारी कष्टो को पाता॥
नही धर्म मे रुचि जिसकी, नही मनुआ जिनवाणी मे।
नही सयम का भाव है मन मे, नहि दृष्टि निज आतम मे॥
मरकर ऐसे जीव रे भैया, नरको के दु ख पाएँगे।
रोटी पानी नही मिलेगा, कोडे हटर खाएँगे॥
टुकडे टुकडे करे नरक मे, कलह हमेशा रहती है।
सुनकर खडे रोगटे होते, ऐसी गर्मी पडती है॥
कूलर पखे नही वहॉ पर, नही है मोटर गाडी।
नही वहाँ पर सूट रे भैया, नही है सुदर साडी॥
नही चाहे यदि नरक यातना, पर से प्रीत हटाता चल।
भोगो को कम करके भैया, धर्म मार्ग अपनाता चल॥
सयम का कर पालन हरदम, निज मे दृष्टि रमाता चल।
मुक्ति जिससे मिलती ऐसा, तू मार्ग अपनाता चल॥

सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
भोगो के नहि बने दास हम, भोग नरक ले जाता है॥

धर्म मार्ग पर चलने से...

धर्म ही रक्षा करे जीव की, धर्म ही पार लगाता है।
श्रद्धा रखो सदा धर्म मे, धर्म सुखो का दाता है॥

धर्म ही मुक्ति देता भैया, बिगडे काम बनाता है।
रहने वाला अटल धर्म पर, कष्टो से बच जाता है॥

श्रद्धा जिसकी अटल धर्म पर, श्रद्धालु कहलाता है।
आदर पाता सभी जगह वह, सन्मार्ग पा जाता है॥

धर्म ही सच्चा साथी जग मे, धर्म महा उपकारी है।
कैसे लिखूँ महिमा इसकी, महिमा इसकी न्यारी है॥

एक व्यक्ति की सुनो कहानी, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
मरता मरता बचा था कैसे, तुमको आज बताता हूँ॥

एक व्यक्ति था एक गॉव मे, धर्म आचरण करता था।
ऋषि-मुनियो के चरणो मे वो, श्रद्धा गहरी रखता था॥

मुनियो की भक्ति करके, वह नित दिन उन्हे ध्याता था।
लेकर शिक्षा उत्तम उनसे, धर्म ध्यान मन लाता था॥

ऋषि-मुनियो ने उसको भैया, एक बात बतलाई थी।
सोच सझ कर करो काम तुम, सच्ची बात बताई थी॥

जल्दी नही करना जीवन मे, सयम अच्छा होता है।
सयम से लो काम सदा तुम, बिन आपद सब होता है॥

एक बार इक धर्मी व्यक्ति, बहुत अधिक बीमार हुआ।
बचने की नहि कोई आसा, ऐसा तेज बुखार हुआ॥

डाक्टर आया घर पर उसके, देख दवाई देता है।
व्यक्ति का मुनीम रे भैया, डाक्टर से क्या कहता है॥

दस हजार रुपए ले लो तुम, इजेक्शन इसे लगा देना।
इजेक्शन के अदर गुपचुप, देकर जहर सुला देना॥
जहर हलाहल का सुआ जब, इसके अदर जाएगा।
लगते ही मर जाएगा ये, काम मेरा बन जाएगा॥
सपत्ति जो भी है इसकी, मै अपने घर ले जाऊँगा।
कोठी बॅगले बनाके अपने, हरदम मौज उडाऊँगा॥
लालच मे आ करके डॉक्टर, जहर सुए मे भरता है।
लेकर सुआ हाथ मे अपने, रोगी से वह कहता है॥
देखो सुआ लगाता हूॅ मै, तुम करवट अपनी बदलो।
अभी ठीक करता हूॅ तुमको, ध्यान प्रभु का धर लो॥
देख सुए को बोला व्यक्ति, डॉक्टर जरा ठहरना तुम।
आई बाते याद मुनि की, सयम से काम बरतना तुम॥
सुनकर तभी बात रोगी की, डॉक्टर घबरा जाता है।
सुआ बदल दिया डाक्टर ने, दूसरा सुआ लाता है॥
देख दूसरा सुआ व्यक्ति वह, मन मे शका करता है।
सच बतलाओ कहता डाक्टर, दाल मे काला लगता है॥
उस व्यक्ति को सारी बाते, डाक्टर जी बतलाते है।
मुनीम साहब की करतूते, साफ साफ कह जाते है॥
ज्यादा नही बढाकर इसको, पूर्ण यही पर करता हूॅ।
धर्म से जान बची व्यक्ति की, श्रद्धा धर्म मे रखता हूॅ॥
कहता है वो व्यक्ति भैया, धर्म ने मुझे बचाया है।
मुनियो की बातो ने मुझको, सच्चा ज्ञान सिखाया है॥
सुनकर कविता को मेरी तुम, धर्म मार्ग को अपनाना।
ऋषि-मुनियो की सद्भक्ति कर, मन मे अति हर्षाना॥
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
धर्म ही रक्षा करे जीव की, धर्म ही पार लगाता है॥

ज्ञान गुरु ही देत हैं

ज्ञान गुरु ही देत है, गुरु ज्ञान की खान।
विनय गुरु की कीजिए, विनय बिना नही ज्ञान॥

बिना ज्ञान के जीव का, नही होता कल्याण।
चौरासी मे घूम रहा, यह वन करके अज्ञान॥

चौरासी मे घूम कर, नही मिला सतोष।
मदिरा पीकर मोह की, बना रहा मदहोश॥

खुद अपनी जड काटता, खुद ही करता पाप।
जब फल भोगे पाप का, तब रोता दिन रात॥

रोने से नही दुख कभी, हुआ किसी का शात।
आतम का चितवन करो, बैठ सदा एकात॥

तृष्णा ज्यादा बढ गई, किया न कोई जतन।
धर्म घटे जब जीव का, होता तभी पतन॥

जिनवाणी के श्रवण का, समय नही है पास।
धर्म ध्यान से होत है, अशुभ कर्म का नाश॥

सद् गुरुओ के पास मे, भरा ज्ञान भडार।
श्रद्धा विनय से ले उसे, कर आत्म उद्धार॥

पर की परवा मत करो, निज का करो ख्याल।
निज सुख का भडार है, पर दुख से बेहाल॥

सद् गुरुओ को छोडकर, नही पाएगा ज्ञान।
झुलस रहा है रात दिन, विषयो मे अज्ञान॥

धर्म सुखो का मार्ग है, धर्म करे उद्धार।
धर्म सहाई जीव का, करो धर्म से प्यार॥

सुनकर बाते ज्ञान की, तजो पाप का मार्ग।
दर्शन से भगवान के, होता है वैराग्य॥

लिखने मे यदि है त्रुटि, क्षमा करो गुणवान।
गुरुवर का उपदेश सुन, करो आत्म कल्याण॥

पूज्य गुरु से मॉगता, मोहन शुभ आशीष।
लगे धर्म मे मन सदा, उगे ज्ञान का बीज॥

पूज्य गुरुवर दीजिए, हमको शुभ आशीष।
नही बढकर इससे कोई, मोहन दूजी चीज॥

हे आत्मन् यदि तूने सच्चे देव शास्त्र गुरुओं की वाणी सुनकर भी अपना कल्याण नहीं किया तो तुझे नरकों में जाना पड़ेगा

धीरे से समझाता हूॅ मै, अपने प्रिय आतम को।
पर से प्रीति हटाकर अपनी, भजो सदा परमातम को॥

परमातम ही तुझको आतम, सच्चा सुख दे सकता है।
वीतरागता देकर तुझको, अपने सम कर सकता है॥

जिनवाणी माता ही तेरी, सच्ची मॉ कहलाती है।
अज्ञान तिमिर को हटा दूर, वह ज्ञान सुधारस देती है॥

सच्चे गुरुवर ही आत्म को, सच्चा मार्ग बताते है।
सयम रूपी पहन के चोला, हित उपदेश सुनाते है॥

देव गुरु को भूल आत्म रे, भारी कष्ट उठाए है।
कितने कष्ट सहे है तूने, लिखे नही यहॉ जाए है॥

चौरासी मे फिरी भटकती, सच्चा सुख नही मिल पाया।
कितनी मार सही नरको मे, नहीं यहॉ मै लिख पाया॥

पशु गति मे भी हे आतम तू, बहुत बार हो आई।
कितनी पीडा सही है तूने, जिनवाणी ने बतलाई॥

पशु गति मे बकरा जब था तू, तुझको काटा जाता था।
चलाके पैनी छुरी तुझ पर, ग्रास बनाया जाता था॥

भैसा बनकर जब बोगी मे, तुझको जोता जाता था।
सौ मन से भी ज्यादा बोझा, तुझ पर लादा जाता था॥

भूख लगी थी पेट मे तेरे, झाग मुँह मे आए थे।
नही मिला पानी पीने को, ये दुख तूने पाए थे॥
सुनकर ऐसी बाते आतम, रो रो नीर बहाती है।
दुखो से डर करके वह तब, सुनो सभी क्या कहती है॥
नियम धर्म का पालन करके, निज स्वभाव मे आऊँगी।
ऋषि-मुनियो की वाणी सुनकर, भव सागर तर जाऊँगी॥
नित मन्दिर मे जाकर मै तो, दर्श प्रभु का पाऊँगी।
विनय भक्ति कर जिनवाणी की, अपना हित कर पाऊँगी॥
सुनकर वाणी ऋषि-मुनियो की, सम्यक किरणे पाऊँगी।
सयम रूपी पहन के चोला, मोक्ष महा फल पाऊँगी॥
जब तक प्राण रहेगे तन मे, गुण मुनियो के गाऊँगी।
नही छोडूँगी दर्श प्रभु का, दर्शन कर हरषाऊँगी॥
इन बातो पर चलकर आतम, नियम धर्म मन लाती है।
सुनकर वाणी ऋषि-मुनियो की, कष्टो से बच जाती है॥
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
करलो आतम का हित भैया, गया समय नही आता है॥

हम स्वयं को भूल बैठे हैं

मोह की मदिरा पीकर के हम, भूल स्वय को जाते है।
निज आतम की नही है चिता, तजे धर्म को बैठे है॥
मोह रूपी मदिरा ने हमको, जग के चक्कर कटवाए।
चौरासी मे फिरे भटकते, आतम हित नहि कर पाए॥
आतम को हम भूल गए है, धन-दौलत के फेरे मे।
जिनवाणी मे नहि लगता मन, पडे हुए जग घेरे मे॥
श्री करुणा करके पूज्य मुनिवर, नित हमको समझाते है।
देकर शिक्षा अच्छी हमको, सद्मार्ग बतलाते है॥

मोहरूप मदिरा को त्यागो, मोह महा दुखदाई है।
जिसने त्यागा महा मोह को, उसने मुक्ति पाई है॥
मोहरूप मदिरा को तजकर, धर्म मार्ग को अपनाओ।
आतम का हित नही जहॉ पर, उस मार्ग पर मत जाओ॥
धर्म मार्ग पर चलने से ही, आतम हित हो सकता है।
मोह ममता कम करके प्राणी, ही सुख से रह सकता है॥
सुख से गर रहना चाहे तू, धर्म मार्ग अपनाता चल।
ऋषि-मुनियो की वाणी सुनकर, ज्ञान की ज्योति जलाता चल॥
ज्ञान की ज्योति जगेगी जब तू, आतम हित कर पाएगा।
ऋषि-मुनियो की वाणी सुनकर, कष्टो से बच जाएगा॥
पर से प्रीति हटाकर अपनी, निज से प्रीति लगा ले।
ऋषि-मुनियो की वाणी सुनकर, जीवन सफल बना ले॥
अब भी समय, समझ ले भैया, गया समय नही आता है।
जिनवाणी को सुनकर प्राणी, मोक्ष महा फल पाता है॥
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
पर से प्रीति हटा ले भैया, पर दुखो का दाता है॥

जिनवाणी माँ

जिनवाणी मॉ तुम्हे भूलकर, कितने कष्ट उठाए है।
छोड के सच्ची मॉ को हमने, नरको के दुख पाए है॥
जगह नही ऐसी कोई भी, जहॉ नही हो आए है।
चौरासी मे फिरे भटकते, भारी कष्ट उठाए है॥
नरक पशु के दुख सहकर भी, नही समझ हम पाते है।
पर मे दृष्टि लगाकर अपनी, भूल स्वय को जाते है॥
निज-पर का नहि भेद समझते, इसलिए दुख पाते है।
पर मे दृष्टि रखने वाले, सच्चा सुख नहि पाते है॥

सच्चा ज्ञान कराती माता, ज्ञान की तू भडार है।
श्रद्धाभक्ति से माँ तेरी, होता बेडा पार है॥
जिसके दिल मे बस गई मॉ तू, उसका बेडा पार हुआ।
जिस पर कृपा हुई मॉ तेरी, वो ही भव से पार हुआ॥
ऋषि-मुनि भी तेरी महिमा, शुद्ध भाव से गाते है।
तेरी भक्ति करने वाले, मोक्ष द्वार मे जाते है॥
सच्चा मार्ग बताती मॉ तू, तेरी महिमा न्यारी है।
तेरे चरण-कमल मे माता, सौ सौ नमन हमारी है॥
नरक स्वर्ग के दु ख-सुख का, मॉ तू ही ज्ञान कराती।
कैसे होवे आतम का हित, तू ही हमे बताती॥
ज्ञान किरण फैला दो मॉ तुम, सोया भाग्य जगा दो।
करके कृपा मुझ पापी पर, भव से पार लगा दो॥
ज्ञान की ज्योति मॉ तुम, शरण तुम्हारी आए है।
सुनकर मॉ जिनवाणी को हम, श्रद्धा भाव जगाए है॥
जन्म अनतो बार लिए मै, मिली अनतो माता।
तेरे जैसी मुझको अब तक, मिली न कोई माता॥
सच्ची माता है तू हमरी, सच्चा ज्ञान कराती।
अच्छा बुरा क्या जग मे, जिनवाणी बतलाती॥
हाथ जोड कहता है मोहन, चरण तेरे न छोडेगे।
चलकर तेरी बातो पर हम, भव बधन को तोडेगे॥
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
जिनवाणी की महिमा लिखकर, अपना भाग्य जगाता है॥

भाव मात्र मेरे अपने॥

नहि लिखता हूँ कविता को मै, मात्र भाव मेरे अपने।
नही कलम है मेरी भैया, सच्चे देव गुरु अपने॥

देव गुरु है पूज्य जगत मे, और मात्र जिनवाणी।
इन तीनो का सुमरन करके, पार हो गए ज्ञानी॥
भाव कहॉ से आते भैया, वो भी तुम्हे बताता हूॅ।
जिनकी कृपा है मुझ पर मै, उनका नाम बताता हूॅ॥
शुद्ध भाव से जब यह आतम, देव गुरु को ध्याती है।
विनय भक्ति कर जिनवाणी की, गीत धर्म के गाती है॥
तीन लोक के नाथ हो स्वामी, तेरी महिमा न्यारी है।
तेरे चरण-कमल मे प्रभुवर सौ सौ नमन हमारी है॥
जिनवाणी को कहती आतम, तुम्ही सच्ची माता हो।
ज्ञान भरा है तेरे अदर, ज्ञानामृत की दाता हो॥
तेरी कृपा से मॉ मूरख, भी इक दिन पडित बन जाता।
जिसके अदर तू विराजती, वो सच्चा सुख पाता॥
ऋषि-मुनि भी तेरी महिमा को, शुद्ध भाव से गाते है।
चलकर तेरी बातो पर मॉ, सिद्ध शिला को जाते है॥
गुरुओ के चरणो मे आतम, आकर भाग्य सराहे।
सुनकर उनकी अमृत वाणी, ज्ञान की जोत जलाए॥
ज्ञान गुरु ही देते भैया, गुरु महा उपकारी है।
पूज्य गुरु के श्रीचरणो मे, सौ सौ नमन हमारी है॥
गुरुओ की आशीष सदा ही, बिगडे काम बनाए।
रहकर इनके श्रीचरणो मे, कुदन-सा हो जाए॥
इन तीनो मे जब आतम की, सच्ची श्रद्धा जगती है।
भाव स्वय आ जाते भैया, कलम स्वय ही चलती है॥
अह भाव जिसके मन मे, हो नही तरक्की कर पाता।
चाहे कितना करे परिश्रम, नही सफलता पा पाता॥
आत्म हित के इच्छुक सज्जन, इन तीनो का ध्यान करो।
करके सुमरन इनको भैया, निज का तुम कल्याण करो॥

सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
श्रद्धा रखकर इन तीनो मे, भजन बनाकर लाता है॥

ऋषि-मुनियों की भक्ति का फल

ऋषि-मुनियो की भक्ति भैया, भव से पार लगाती है।
मुनियो की भक्ति ही भैया, बिगडे काम बनाती है॥
भक्ति मे शक्ति होती है, भक्ति दु ख हर लेती है।
सच्ची भक्ति देव गुरु की, अज्ञान दूर कर देती है॥
भूल गया जो देव गुरु को, दुखिया जग मे कहलाता।
मरकर जाता नरक द्वार मे, कष्ट अनेको है पाता॥
मुनियो की भक्ति से भैया, ज्ञान बहुत हो जाता है।
करने से सेवा मुनियो की, अशुभ समय टल जाता है॥
मिथ्यात्व दूर हो जाता, वाणी इनकी सुनने से।
कष्ट नही रहते जीवन मे, देव गुरु को भजने से॥
जिनकी श्रद्धा देव गुरु मे, मेरे भैया होती है।
जीवन सुखमय होता उनका, घर मे लक्ष्मी होती है॥
सुख शांति रहती है घर मे, नही विघ्न कोई आता।
देव गुरु को भजने वाला, धर्मी जग मे कहलाता॥
इक लडके की सुनो कथा मै, लिखकर तुम्हे सुनाता हूॅ।
गूॅगा कैसे लगा बोलने, वो ही तुम्हे बताता हूॅ॥
कविता लिखने से पहले मै, श्री देव गुरु को ध्याता।
उनकी भक्ति का ही फल है, कविता जो मै लिख पाता॥
एक गूॅगा लड़का था भैया, गॉव मे अपने रहता था।
गूंगा होने के कारण वह, दु खी सदा ही रहता था॥
चाहत थी कुछ बोल सके पर, नही बोल पाता था।
एक कमी के कारण ही वो, कष्ट अनेको पाता था॥

उस गूँगे के गॉव एक दिन, मुनिवर एक पधारे।
उनको लख गूँगे ने मन मे, जय-जय शब्द उचारे॥
हित उपदेश दिया मुनिवर ने, धर्म महा उपकारी है।
धर्म मार्ग अपनाओ भैया, आतम का हितकारी है॥
बडी लालसा गूँगे की, पर मुख से नहि कुछ कह पाता।
बेचारा क्या कर सकता था, रोने को लग जाता॥
देख तभी उसकी यह हालत, दया मुनिवर को आई।
कैसे भाग्य जगे लडके के, कलम कवि की लिख पाई॥
बोले मुनिवर उस गूँगे से, रोना अपना बद करो।
जैसा मै कहता जाऊँ, तुम वैसा ही अनुसरण करो॥
बोले मुनिवर णमो अरिहताण, चमत्कार क्या होता है।
लडका भी णमो अरिहताण, कहने अब लग जाता है॥
जय जयकार हुई मुनिवर की, लडका उनका दास हुआ।
सच्ची भक्ति के कारण ही, गूँगे पन का नाश हुआ॥
गाता अब वो भजन प्रभु के, सबको भजन सुनाता है।
रखकर श्रद्धा णमोकार पर, सच्चे सुख को पाता है॥
भाव यही लिखने का मेरा, भक्ति मे शक्ति होती।
सच्ची भक्ति देव गुरु की, कष्ट सभी के हर लेती॥
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
देव गुरु की भक्ति का फल, कविता ये लिख पाता है॥

बुरा भी अच्छा बन जाता है।

अच्छा भी बुरा बन जाता, बुरी सगति पाने से।
बुरा भी अच्छा बन जाता, धर्म मार्ग अपनाने से॥
धर्म मार्ग पर चलने वाले, सच्चे सुख को पाते हैं।
तजने वाले धर्म को भैया, नरक द्वार मे जाते है॥

नरक गति मे भारी दु ख है, साधु हमे बतलाते है।
सगति करने वाले इनकी, इन जैसे बन जाते है॥

सगति बुरी बहुत दु खदायी, नरक द्वार ले जाती है।
भारी दु ख है नरक गति मे, जिनवाणी बतलाती है॥

इक लडके की सुनो कहानी, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
सगति बुरी मे फँसा हुआ था, उसकी कथा सुनाता हूँ॥

एक लडका था एक गॉव मे, दूर धर्म से रहता था।
ऋषि-मुनियो की श्रद्धा भक्ति, नही कभी वो करता था॥

मदिरा पीकर लडका मन मे, अपने खुश हो जाता था।
पर नारी और मॉ बहनो पर, कुदृष्टि वो रखता था॥

नही सुनी जिनवाणी उसने, नही धर्म को माना था।
चोरी और डकैती करने मे, सुख उसने माना था॥

करते है जो बुरा और का, नही भला उनका होता।
अपने हाथो ही यह प्राणी, बीज भाग्य का है बोता॥

एक दिना वो लडका भैया, चोरी करने जाता है।
अशुभ कर्म से उस लडके के, देखो क्या घट जाता है॥

चोरी करने लगा वो लडका, जाग वहॉ हो जाती है।
लगी अचानक गोली उसको, स्वास बद हो जाती है॥

बुरी सगति मे पडने से, देखो कैसा हाल हुआ।
नही खबर है घर वालो को, कैसे यह अतकाल हुआ॥

पडा सडक पर गोली खाए, कोई नही खबर पाता।
कौए खा रहे नोच-नोच कर, पास नही कोई आता॥

जिनको अपना कहता था वो, नही पास वो भी आए।
नही कफन मिल पाया उसको, धिक् धिक् सब कहते जाएँ॥

हालत ऐसी हो जाती है, खोटी सगति पाने से।
ऋषि-मुनियो की भक्ति करना, कविता मेरी भाने से॥

गुरुजनो की भक्ति करके, कविता लिखता जाता हूँ।
देव-शास्त्र-गुरु पूज्य जगत मे, महिमा इनकी गाता हूँ॥
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
बुरी संगति नहि करे कभी हम, धर्म सुखो का दाता है॥

महिमा न्यारी अणुव्रतों की

पच अणुव्रत का महत्व मै, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
करना धारण इन व्रतो को, महिमा इनकी गाता हूँ॥
महिमा न्यारी अणुव्रतो की, सुनकर शिक्षा ले लेना।
आत्म का हित चाहो यदि तो, पालन इनको कर लेना॥
इनका पालन करने वाले, सच्चे सुख को पाते है।
सुनो ध्यान भव्य श्रावको, तुमको कथा सुनाते है॥
इक लडकी थी एक गॉव मे, धर्म ध्यान मन लाती थी।
ऋषि-मुनियो के चरणो मे, श्रद्धा से शीश नवाती थी॥
एक दिना वह लडकी भैया, नियम मुनि से लेती है।
लेकर पच अणुव्रतो को वो, वापस घर चल देती है॥
पता लगा जब पिता श्री को, क्रोधित उस पर होते है।
छोडो इन व्रतो को पुत्री, ये सब निष्फल थोथे है॥
कहती लडकी पिता से अपने, यो नियम नही तोडूँगी।
जिनसे नियम लिए है मैने, पास उन्ही के छोडूँगी॥
लडकी पिता चले मिल दोनो, चलते चलते जाते है।
तभी राह पर देख एक जन, वही ठिठक रह जाते है॥
कहती लडकी ने बापू से, क्यो पुलिस ने इसको धारा है।
बोले बापू बेटी इसने, एक सुजन को मारा है॥
कटती हुई जीभ इक जन की, आगे चलकर देखी।
लडकी बोली पिताश्री से, देखो यह अनदेखी॥

कहने लगे पिताजी बेटी, इसने बडा झूठ बोला।
ये समाज के वे कीडे है, जिनने सदा जहर घोला॥

आगे जाकर इक लडके को, कोडे खाते देखा है।
कहा पिता ने बेटी इसके, चोरी का ही टेका है॥

देखा फिर आगे जा करके, इक लडके का मुँह काला।
कहा पिता ने बेटी इसने, छेडी एक सुव्रता बाला॥

आगे जाकर देख अचानक, नौजवान लडके को।
बँधा हुआ था रस्सी से, वह जकड रखा था तन को॥

कहा पिता ने बेटी इसने, नृप की भैस चुराई है।
किया परिग्रह सग्रह इसने, करके विपदा पाई है॥

ये पॉचो का त्याग ही भैया, अणुव्रतो का सार है।
पालन करते जो व्रतो को, उनकी कही न हार है॥

पाप कर्म-फल देख पिता के, नीर ऑख से बहता है।
अपनी गलती के ऊपर, वह पश्चाताप ही करता है॥

नियम लिया पिता ने भी अब, अणुव्रतो के पालन का।
पिता और बेटी ने मिलकर, पूर्ण हित किया आतम का॥

निज आतम का हित चाहो तो, अणुव्रत का पालन करना।
धर्म ध्यान अपनाकर भैया, मुक्ति रूप रमणी वरना॥

सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
पालन करो अणुव्रतो का, अणुव्रत सुख का दाता है॥

सूली भी होती सिंहासन

सुख शाति होती जिस घर मे, वो घर स्वर्ग कहलाता है।
कलह सदा रहती जिस घर मे, नरक वही कहलाता है॥

नरक बना लो चाहे घर को, चाहे स्वर्ग बना लो।
जैसा चाहो मेरे भैया, वैसा भाग्य बना लो॥

लिक्खी है कविता इक मैने, पढकर तुम्हे सुनाता हूँ।
चलना इन बातो पर भैया, ज्ञान की बात बताता हूँ॥
निज मे दृष्टि लगाना अपनी, पर से दृष्टि हटाना।
पर मे नही सुख लेश सुख का, निज मे छिपा खजाना॥
दस धर्मो का पालन करके, छिपा खजाना पालो।
छोड के जग के झूठे झझट, आतम ध्यान लगा लो॥
जिनवाणी को सुनकर प्यारे, सोया भाग्य जगा लो।
जिन दर्शन नित करके भैया, भारी पुण्य कमा लो॥
जिन दर्शन करने से भैया, पाप नाश हो जाते है।
निकाक्षित कर्म उदय मे आकर, बिन फल के गल जाते है॥
शूली भी होती सिहासन, धर्म मार्ग अपनाने से।
नाग का हार बने मेरे भैया, प्रभु का ध्यान लगाने से॥
अग्नि नीर बनी सीता के, श्रद्धा धर्म मे लाने से।
ठडा हुआ तोप का गोला, वीर का ध्यान लगाने से॥
लक्ष्मी भी उस घर मे रहती, धर्म जहॉ पर रहता है।
धर्म जहॉ पर होता भैया, कष्ट नही कोई होता है॥
ऋषि-मुनियो के चरण रे भैया, जिस घर मे पड जाते है।
पावन हो जाता है वो घर, क्लेश खत्म हो जाते है॥
नही कलह रहती उस घर मे, सुख शाति छा जाती है।
बहती धारा प्रेम गग की, धरा स्वर्ग बन जाती है॥
सुनकर कविता मेरी भैया, धर्म मार्ग अपनाओ।
जिनवाणी को सुनकर भैया, आत्म-ज्ञान जगाओ॥
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
धर्म मार्ग पर चलकर प्राणी, सुख शाति पा जाता है॥

धर्मभूषण जी महाराज का कैलाश नगर चातुर्मास

धन्य भाग्य इस नगर के भैया, गुरुवर ने चातुर्मास किया।
करके चातुर्मास यहॉ पर सोया भाग्य जगाय दिया॥

श्री 108 आचार्य धर्म भूषण जी महाराज लेखक को आशीर्वाद देते हुए।

गुरुदेव तुम्हारे आने से, कितनी रौनक आई है।
शास्त्र सभा मे इतनी जनता, तुमरे कारण आई है॥
तुमरी महिमा न्यारी गुरुवर, नहीं मुख से कह सकता हूँ।
बना समदर पूरी स्याही, फिर भी नहीं लिख सकता हूँ॥
पूज्य गुरुवर तुमने हमको, सद् मार्ग दिखलाया है।
भटके हुए पथिक मे तुमने, श्रद्धा भाव जगाया है॥
कितनी प्यारी छवि तुम्हारी, कहने मे नहि आती है।
करके दर्शन जनता तुमरे, अपना भाग्य जगाती है॥
कठिन तपस्या करके गुरुवर, नाश कर्म का करते है।
अमृत वाणी सुना-सुनाकर, धर्म भावना भरते है॥
पूज्य गुरुवर के चरणो से, मैने नाता जोडा है।
श्रद्धा रख चरणो मे तुमरे, पर से नाता तोडा है॥
पर से प्रीति हटाकर मैने, तुमसे प्रीति लगाई है।
तुमरे चरणो की कृपा से, बुद्धि निर्मल पाई है॥
नही लिखना आता था मुझको, तुमने ही सिखलाया है।
निश का भोजन त्याग कराके, धर्म स्वरूप बताया है॥
लिखना तुमने मुझे सिखाया, आदर सबका करना।
प्राण भले ही जाएँ अपने, नही वचन से हटना॥
भला नही कर सकते जग का, बुरा कभी न करना।
सदा दीन दुखियो का भैया, जितना हो दुख हरना॥
तुमने ही तो मुझे बोलना, बीच सभा सिखलाया।
लिखना मुक्तक और कविता, भजन मुझे सिखलाया॥
पूज्य गुरुवर छवि तुम्हारी, सारे जग से न्यारी है।
तुमरी महिमा सेवक तुमरा, गाता बार हजारी है॥
तुमरी शुभ आशीष प्राप्त कर, ही मै पुस्तक लिख पाया।
जिसके योग्य नही था मै तो, तुम चरणो से हो पाया॥

शुभ आशीष तुम्हारा पाकर, कविता नई बनाता हूँ।
मिले हमेशा ऐसे गुरुवर, भाव यही मन लाता हूँ॥
तुमरा चातुर्मास हमेशा, इस नगरी मे होवे।
ऋषि-मुनियो के चातुर्मास ही, बीज धर्म के बोवे॥
लिखने मे यदि हुई हो गलती, मोहन माफी चाहे।
लिखकर महिमा पूज्य गुरु की, अपना भाग्य सराहे॥
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
गुरु कृपा से ही प्राणी का, बेडा पार हो जाता है॥

ऋषि-मुनियों के चातुर्मास का महत्व

दृष्टांत दो भाइयो का

ऋषि-मुनियो के चौमासे का, तुमको महत्व बताता हूँ।
देव शास्त्र गुरु पूज्य हमारे, महिमा उनकी गाता हूँ॥
इन तीनो की श्रद्धा भक्ति, जिसके अदर होती है।
उसकी चर्चा स्वर्ग लोक मे, भी देवो मे होती हे॥
महा भाग्य से इन तीनो के, भैया दर्शन होते हे।
देव गुरु के दर्शन भैया, बीज धर्म का बोते हे॥
देव गुरु की भक्ति करके, प्राणी मुक्ति पाता हे।
भूल इन्हे जो जाता भैया, नरक द्वार मे जाता है॥
देव गुरु की भक्ति मे जो, अपना समय बिताते है।
चातुर्मास करा मुनियो के, फूले नही समाते है॥
क्या फल मिलता उनको भैया, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
लिखी कथा दो भाई की मै, गाकर तुम्हे सुनाता हूँ॥
दो भाई थे एक गॉव मे, हिल मिल दोनो रहते थे।
भावो मे था अतर उनके, वैसे सग विचरते थे॥

बडा भाई था रामू उनमे, छोटा श्याम कहाता था।
श्याम कहाने वाला भैया, घर घर आदर पाता था॥
श्रद्धा गहरी धर्म के प्रति, श्याम हमेशा रखता था।
ऋषि-मुनि जो नगर मे आते, भक्ति उनकी करता था॥
नवधा भक्ति से श्यामू जी, आहार हमेशा देते थे।
दे आहार ऋषि-मुनियो को, पुण्य बध नित करते थे॥
चातुर्मास ऋषि-मुनियो के, अपने गॉव कराते थे।
करके उनकी श्रद्धा भक्ति, निज सौभाग्य बढाते थे॥
बडा भाई जो रामू था, नही वह मदिर को जाता था।
नही धर्म को जाना उसने, नही दान वो करता था॥
चोरी और डकैती करना, रामू ने जाना था।
धर्म छोडकर पाप कमाने मे, सुख उसने माना था॥
एक बार की बात उसी ने, चीनी का व्यापार करा।
सौ सो बोरी चीनी ले ली, लेकर कर्जा माल भरा॥
चीनी लेकर रख दी भैया, देखो अब क्या होता है।
जैसा कर्म करे ये प्राणी, वैसा ही फल ढोता है॥
बद करके कमरे मे चीनी, रामू बाहर आता है।
ब्लैक-भाव का पता लगाने, फिर बाजार को जाता है॥
चोरी के इस मोल-तोल मे, पकड लिया जाता है।
उधर देख उसका घर निर्जन, चोरो का दल घुस जाता है॥
ले गए चीनी चोर चुराकर, छोड नही कुछ जाते है।
इधर श्यामू का भाग्य भी तुमको, लिखकर आज सुनाते है॥
श्यामू गए जिन पूजा करने, उधर भाव बढ जाता है।
भाव बढा इतना चीनी का, चार गुना हो जाता है॥
बिना कमाए श्यामू अब तो, भारी सेठ कहाते है।
धर्म ध्यान के कारण श्यामू, जग मे आदर पाते है॥

सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
धर्म जहॉ पर होता भैया, पुण्य स्वय आ जाता है॥

घर को स्वर्ग बना दे औरत

घर को स्वर्ग बना दे औरत, बना नरक भी सकती है।
जैसा चाहे घर को औरत, बना वो वैसा सकती है॥

औरत चाहे कृष्ण बनाना, चाहे राम बनाना वो।
ऐसी शक्ति है औरत मे, पुत्र वीर सा जन्मे वो॥

चाह यदि पारस-से सुत की, वामा-सी बनना होगा।
धर्म मार्ग पर चलकर बहनो, आतम हित करना होगा॥

धर्म मार्ग अपनाकर बहनो, पारस-सा सुत पाओगी।
वामा त्रिशला-सी बनकर तुम, जग मे नाम कमाओगी॥

कथा लिखी दो बहनो की मै, लिखकर तुम्हे सुनाता हूॅ।
धर्म महा उपकारी जग मे, धर्म से प्रीति लगाता हूॅ॥

एक बाप की थी दो बेटी, दोनो हिल मिल रहती थी।
छोटी बेटी धर्म ध्यान मे, सबसे आगे रहती थी॥

बडी नही मंदिर जाती थी, नही धर्म को माने थी।
फैशन करने पिक्चर जाने मे, ही सुख वो माने थी॥

खाना पीना मौज उडाना, ही बस उसने जाना था।
रोटी पौना भी नहि सीखा, नही काम कुछ जाना था॥

हो गई शादी बड़ी बहन की, सासो के घर जाती है।
सास कहे रोटी पौने को, रोने वो लग जाती है॥

सब्जी का जब आता नबर, नही बनानी आती है।
लगी बिनारन जब सब्जी को, इक उॅगली कट जाती है॥

घर मे कलह हुई अब भैया, उस लडकी के आने से।
छोड दिया लडकी को भैया, नही काम कर पाने से॥

छोटी का भी सुनो हाल तुम, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
ऐसी बेटी हो सब घर मे, प्रभु का ध्यान लगाता हूँ॥
छोटी बेटी धर्म-ध्यान मे, सबसे आगे रहती थी।
सुबह सबेरे उठकर भैया, जिन मंदिर को जाती थी॥
कपडे सीना रोटी पौना, सब कुछ उसने जाना था।
मुनियो को आहार रे भैया, उसने देना जाना थां॥
निर्जल करती व्रत वो लडकी, ध्यान प्रभु का करती थी।
देव शास्त्र गुरुओ की भक्ति, सच्चे मन से करती थी॥
शादी हो गई उसकी भैया, सास के घर वो जाती है।
धर्म नही था सास के घर मे, रौनक अब छा जाती है॥
सास ससुर की सेवा करके, मन मे अति हरषाती है।
धर्म मार्ग पर लगा सभी को, आनद मगल गाती है॥
उसी नगर मे मुनिराज इक, तीन दिना से आए थे।
विधि नही मिलने के कारण, नही आहार वो पाए थे॥
पता लगा जब उस लडकी को, पास मुनि के जाती है।
करके दर्शन श्री मुनिवर के, नियम एक वह लेती है॥
आहार नही दूँ जब तक मुनि को, नही मै पानी पीऊँगी।
दे आहार मुनिवर को मै, फिर भोजन कर पाऊँगी॥
श्रद्धा लेकर मन मे लडकी, चौका आन लगाती है।
नवधा भक्ति से पडगाकर, पुण्य दान का पाती है॥
देश दृश्य ऐसा देवो ने, स्वर्गो मे जय जयकार किया।
रतन बरसने लगे वहॉ पर, जैन धर्म प्रचार हुआ॥
यश फैला लडकी का भैया, धर्म ध्यान मन लाने से।
हुई स्वर्ग मे चर्चा उसकी, आहार मुनि को देने से॥
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
धर्म मार्ग पर चलकर प्राणी, भव सागर तर जाता है॥

सच्ची श्रद्धा देव गुरु में

कैसे बनती कविता भैया, अरु भाव कहाँ से आते है।
देव शास्त्र गुरु पूज्य हमारे, इनको शीश झुकाते है॥
सच्ची श्रद्धा देव गुरु मे, मन वाछित फल देती है।
विनय भक्ति जिनवाणी माँ की, अज्ञान दूर कर देती है॥
ज्ञान नही होने से प्राणी, भारी कष्ट उठाता है।
चौरासी मे फिरे भटकता, सच्चा सुख नहि पाता है॥
सेवा करते है पुद्गुल की, चेतन को हम भूल गए।
नहि समझने से चेतन को, चौरासी मे झूल गए॥
नही समझना कभी चाहते, अपने प्रिय आतम को।
मान बडाई के चक्कर मे, भूल गए परमातम को॥
परमातम को भूल गए हम, इसीलिए दु ख पाया है।
धन दौलत सग्रह करने मे, सारा समय बिताया है॥
मूल मे भूल हुई है हमसे, आतम हित नही कर पाते।
पर मे ही सुख मान लिया है, इसीलिए हम दु ख पाते॥
जिन मदिर मे भी आकर के, सच्चा सुख कब चाहा।
बढे हमारी दौलत कुनबा, अरू दीखे सुदर काया॥
अनत गुणो के सागर है प्रभु, अनत ज्ञान की खान।
सच्चे सुख को देने वाले, है श्री जिन भगवान॥
चाह अगर है ज्ञान गुणो की, श्रद्धा भाव जगाओ।
सच्ची श्रद्धा रख प्रभुवर मे, जो चाहो सो पाओ॥
वीतराग है प्रभु हमारे, वीतरागता देते है।
देकर स्वामी वीतरागता, अपने सम कर लेते है॥
जिसको चाहत वीतराग की, चाह नही कुछ रखता है।
जग के झझट से वह प्राणी, दूर हमेशा रहता है॥
जग के वैभव नही चाहता, वीतरागता की चाहत है।
दे दो स्वामी वीतरागता, प्रभु गुण मे मन पागत है॥

लिखूँ कविता जितनी स्वामी, सबमे तेरी महिमा हो।
वीतरागता हो कविता मे, तुम चरणो मे श्रद्धा हो॥
जिसकी श्रद्धा तुम चरणो मे, कष्ट नही वो पाता है।
धन दौलत की बात छोड दो, मन वाछित फल पाता है॥
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
करके सुमरन देव गुरु का, कविता नई बनाता है॥

धर्मभूषण जी महाराज का कैलाश नगर चातुर्मास

धर्म से पीछे हटने वालो, ध्यान लगाकर सुन लेना।
आतम का हित चाहत हो गर, गुरुओ की वाणी सुनना॥
ज्ञान गुरु ही देते भैया, गुरु महा उपकारी है।
राग-द्वेष का नाम मिटाकर, करते तप ये भारी है॥
कैसी महिमा है गुरुवर की, तुमको आज सुनाता हूँ।
पूज्य गुरुवर के चरणो मे, अपना शीश झुकाता हूँ॥
बडे भाग्य इस नगर के जो, गुरुवर ने चातुर्मास किया।
करके चातुर्मास यहाँ पर, सोया भाग्य जगाय दिया॥
मोह नीद मे सोने वालो, दर्शन इनके कर लेना।
सम्यक रूपी किरणे लेकर, जीवन सफल बना लेना॥
सुबह शाम अमृत वाणी कर, मिथ्या तिमिर भगाते है।
सच्चा सुख मिलता है जिससे, ऐसा पाठ पढाते है॥
बडे पुण्य से ऋषि-मुनियो के, भैया दर्शन होते है।
ऋषि-मुनियो के दर्शन भैया, बीज धर्म का बोते है॥
छोड के सारे कामकाज तू, इनके चरणो मे आना।
देव शास्त्र गुरुओ की भक्ति, करके मन मे हर्षाना॥
देव-शास्त्र-गुरुओ के दर्शन, सच्चे सुख को देते है।
इनकी कृपा से प्राणी, के कष्ट दूर हो जाते है॥

जो भी सज्जन देवगुरु का, नित उठ दर्शन करते है।
जिनवाणी माता की जो जन, विनय भाव से करते है॥

ऐसे प्राणी ही इस जग मे, सच्चे सुख को पाते है।
मन वांछित फल मिलता उनको, नही कष्ट वो पाते है॥

चाहत हो गर सुख से रहना, देव गुरु को ध्याले।
इनकी अमृत वाणी सुनकर, धर्म मार्ग अपना ले॥

धर्म मार्ग पर चलकर ही तू, सच्चे सुख को पाएगा।
वाणी नही सुनी सतो की, सिर धुन धुन पछताएगा॥

सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
अमृत वाणी सुन गुरुवर की, मुक्ति-पथ पा जाता है॥

धर्मभूषण जी महाराज का शाहदरा से विहार

चले छोड मुनिवर जी हमको, हम सब शीश नमाते है।
आओगे जल्दी ही वापिस, ऐसी आस लगाते है॥

कितनी प्यारी छवि तुम्हारी, कहने मे नहि आती है।
सुन उपदेश तुम्हारे जनता, फूली नही समाती है॥

सुबह शाम अमृत वाणी कर, मिथ्या तिमिर नसाते हो।
सच्चा सुख मिलता है जिससे, ऐसा पाठ पढाते हो॥

राग द्वेष का नाम नही है, कठिन तपस्या करते हो।
रात्रि भोजन त्याग कराकर, धर्म भावना भरते हो॥

तेरे गुण गौरव को गुरुवर, मुख से ना कह सकते है।
बना समदर पूरी स्याही, फिर भी ना लिख सकते है॥

कितनी रौनक है मंदिर मे, नर नारी सब आते है।
बैठ तुम्हारे चरणो मे, सब भारी पुण्य कमाते है॥

चले छोडकर गुरुवर जी तुम, कैसे रौनक आएगी।
अमृत वाणी को फिर कैसे, यह सुन जनता पाएगी॥

हृदय भर जाता है हमरा, गुरुवर तुमरे जाने से।
नही मिलेगा तुमसा गुरुवर, हमको और जमाने से॥

जाना ही है तुमको गुरुवर, जाने से इनकार नहीं।
जल्दी आना वापिस गुरुवर, भूल न जाना हमे कहीं॥

भूल चूक यदि हुई हो हमसे, माफी उसकी चाहत है।
करना चातुर्मास यही पर, चरणो मे सिर नावत है॥

मिले सदा दर्शन गुरुवर के, ऐसे भाव बनाते है।
देव गुरु की भक्ति से ही, पाप सभी कट जाते है॥

तुमरा शुभ आशीष प्राप्त कर, निशि का भोजन छोडा है।
तेरी कृपा से गुरुवर जी, धर्म से नाता जोडा है॥

गुरुवर तेरी भक्ति करके, भारी पुण्य कमाएँगे।
चरण चिह्नो पर चलकर तेरे, तुझ जैसे बन जाएँगे॥

धर्म ही सब कुछ है मेरा तो, धर्मभूषण गुरु हमारे है।
धर्मभूषण के चरण मुझे तो, प्राणो से भी प्यारे है॥

हाथ जोड कहता है मोहन, गुण तेरे हम गाएँगे।
आना जल्दी गुरुवर जी तुम, तुमको लेने आएँगे॥

गुणवान बनो तुम

गुणवान बनो तुम मेरे भैया, गुणीजन आदर पाता है।
जहाँ कही भी जाता है वह, वही पै पूजा जाता है॥

गुणवानो की कीर्ति सुपावन, फैल स्वय ही जाती है।
देख गुणो को जनता उसके, दर्शन को ललचाती है॥

अपना हित तो करता ही है, पर का भी हित करता है।
सुखी रहे सब जीव जगत के, भाव यही मन धरता है॥

देश गुणो को गुणी के भैया, हर्ष सभी को होता है।
कितना महापुरुष यह देखो, मुख से यही निकलता है॥

शासक और प्रजा मिल दोनो, आदर उसका करते है।
सगति करके गुणी की वह भी, सुख का अनुभव करते है ॥
धर्म सभाओ मे गुणीजन को, सदा बुलाया जाता है।
गुणी जन के सानिध्य मे उत्सव, खूब मनाया जाता है ॥
गुणवानो के पास मे भैया, सेठ महाजन आते है।
सुनकर बाते ज्ञान की उनसे, मन अपने हर्षाते है ॥
ज्ञान जहॉ पर होता भैया, नही कमी कुछ रहती है।
ज्ञानी और ज्ञानगुण से ही, गगा धर्म की बहती है ॥
दुर्गुण त्यागो, गुण अपनाओ, यही धर्म का सार है।
धर्म मार्ग पर चलकर प्राणी, होता भव से पार है ॥
सुनकर कविता को मेरी तुम, गुण की बाते ग्रहण करो।
विषय भोग की बाते तजकर, आतमहित की बात करो ॥
गुणीजनो की सगति करके, आतमहित कर पाओगे।
जिनवाणी को सुनकर भैया, सच्चे सुख को पाओगे ॥
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
सगति करके गुणीजनो की, ज्ञान की जोत जलाता है ॥

गुरु की शिक्षा शिष्य को

ज्ञान गुरु ही देते भैया, गुरु महा उपकारी है।
कैसे लिखूँ महिमा इनकी, इनकी महिमा न्यारी है।
पुण्य उदय से ऋषि-मुनियो के, भैया दर्शन होते है।
मुनियो के दर्शन ही भैया, बीज धर्म का बोते है।
श्रद्धा रखने वाले इनमे, इन जैसे बन जाते है।
ऋषि-मुनियो को देव भी भैया, अपना शीश झुकाते है।
स्वर्गो मे वो महिमा इनकी, शुद्ध भाव से गाते है।
बन जाएँ हम भी मुनिवर से, भाव यही मन लाते है।
इनकी त्याग तपस्या की, वो महिमा निश-दिन गाते है।

मनुष्य गति मिल जाए हमको, ऐसा भाव बनाते है।
अशुभ समय टल जाता भैया, दर्शन इनके करने से।
आनद मगल होता जीवन, गुरु चरण चित धरने से।
पावन हो जाती है धरती, चरण इन्हो के पडने मे।
कैसे लिक्खूँ महिमा इनकी, नही आती है लिखने मे।
जगल मे हो जाता मगल, ऋषि-मुनियो के आने से।
मनवाछित फल मिलता भैया, आहार दान के देने से।
पूज्य गुरु के श्रीचरणो से, मैने शिक्षा पाई है।
धर्मभूषण है गुरु हमारे, इनमे प्रीति लगाई है।
प्रीति लगाई जब से इनमे, लिखना मुझको आया है।
पूज्य गुरु की शिक्षा मोहन, लिख करके यहॉ लाया है।
शिक्षा जो दी तुमने मुझको, पालन कर हर्षाता हूँ।
चलकर शिक्षा पर तुमरी मै, ज्ञानसुधा रस पाता हूँ।
निश का भोजन त्याग कराके, श्रद्धा भाव जगाया है।
धर्म महा उपकारी जग मे, तुमने हमे बताया है।
णमोकार की जाप दी तुमने, सप्त व्यसन तजवाया है।
क्रोध समान शत्रु नहि कोई, क्षमा का महत्व बताया है।
सदा धर्म पर डटना अपने, नही कभी पीछे हटना।
निदा नहि करना गुरुओ की, जितना हो आदर करना।
आलू गोभी त्याग कराकर, लिखना मुझे सिखाया है।
बीच सभा के मुझे बोलना, तुम चरणो से आया है।
करते करते धर्म यदि कुछ, हानि भी हो जाए।
नही भूलना धर्म को अपने, धर्म ही पार लगाए।
गुणी मुनिजन का आदर कर, अपना भाग्य सराहो।
कुसगति मे नही बैठना, जिन दर्शन नित पाओ।
कुदृष्टि नही रखना अपनी, परनारी मॉ बहनो पर।
रमना हो तो रमो सदा ही दर्शन ज्ञान, सुनयनो पर।
नही सताना किसी जीव को, दुखियो के दुख हरना।

ऋषियो की भक्ति करके, निज जीवन सफल तुम करना।
अणुव्रतो का करना पालन, अणुव्रत सुख के दाता है।
करता है जो पालन इनका, मुक्ति धाम को पाता है।
ये सब शिक्षा दी गुरुवर ने, पालन इनका करता हूँ।
पूज्य गुरु को शीश झुकाकर, नमन इन्हें मै करता हूँ।
धन दौलत मै नहीं चाहता, आशीष इन्ही की पाता हूँ।
मिले सदा दर्शन गुरुवर के, भाव यही मन लाता हूँ।
तुमरे चरणो की धूलि ही, मुझ माथे पर लगी रहे।
श्रद्धा जो है मेरी तुझमे, मेरी गुरुवर बनी रहे।
लिखने मे यदि हुई हो गलती, माफ शिष्य को कर देना।
करके क्षमा शिष्य को गुरुवर, अपने सम तुम कर लेना।
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
विनय गुरु की करके प्राणी, भव सागर तर जाता है।

भोगों में आसक्त प्राणी की दशा

भोग महा दुखदाई जग मे, भोग दुखो के द्वार है।
दास बने है जो भोगो के, पाते कष्ट अपार है।
धर्म छोडकर जो भोगो मे, रुचि अपनी रखते है।
मरकर जाते नरक गति मे, तीव्र वेदना सहते है।
नहि भोगो मे सुख है भैया, नही भोग मे ज्ञान।
मान रहे जो सुख भोगो में, वो ही है अज्ञान।
बिना ज्ञान के प्राणी जग मे, भारी कष्ट उठाता है।
चौरासी मे फिरे भटकता, सच्चा सुख नही पाता है।
सच्चा सुख था जिसमे भैया, तूने बहुत प्रमाद किया।
विषय भोग मे फँसकर मूरख, जीवन को बरबाद किया।
नर तन चोला जीव को भैया, बडे पुण्य से मिलता है।
पाकर इसको करे तपस्या, इसीलिए यह मिलता है।
पशु गति मे देख रहे हम, साड गधो और भैसो को।

नही अक्ल आती है हमको, देख इन्ही के दुखो को।
सूरी और गधी को देखो, देखो प्यारे हथिनी को।
कितने दुख सहते ये प्राणी, सुनो कथा तुम इनकी तो।
इनकी कथा निराली भैया, सुनकर शिक्षा ले लेना।
सुनकर कविता को मेरी तुम, भोगो को कम कर देना।
पूर्व भवो मे साड गधे भी, हम जैसे ही प्राणी थे।
सभी ठाठ थे घर मे इनके, नहीं किसी से ये कम थे।
सूरी और गधी भी भैया, पूर्व भवो मे लड़की थी।
जैसी लड़की हम लोगो की, ऐसी ये भी लडकी थी।
सुदर तन पाकर इन सबने, विषय भोग अपनाया था।
धर्म ध्यान को छोड के भैया, विषयो मे सुख पाया था।
ऋषि-मुनियो की नही वाणी ये, शुद्ध भाव से सुनते थे।
विषय-भोग ही सुख का कारण, कह करके खुश होते थे।
नही मदिर मे जाते थे ये, नहीं सुनी जिनवाणी को।
जिन पूजन का ध्यान नही था, तकी सदा परनारी को।
मरकर मेरे प्यारे वे ही, आज पशु कहलाए है।
भैसे और गधे कहलाकर, भारी कष्ट उठाए है।
नही भैसा बनना है हमको, और नहीं सूरी बनना।
कम करके भोगो को प्यारे, धर्म मार्ग मे रुचि रखना।
धर्म ही रक्षा करे जीव की, धर्म ही पार लगाता है।
धर्म मार्ग पर चलकर प्राणी, सच्चे सुख को पाता है।
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
भोगो मे नहि सुख है भैया, धर्म सुखो का दाता है।

सच्चे देव-शास्त्र-गुरुओं की भक्ति का फल

ऋषि-मुनियो की महिमा न्यारी, लिखी नहीं मुझसे जाती।
करके इनकी भक्ति भैया, आत्मा कुदन बन जाती।
भक्ति नही करने से इनकी, भारी कष्ट उठाए है।
चौरासी मे फिरे भटकते, नरको के दुख पाए है।

कभी पशु गति मे जन्मे हम, कभी नरक के दु ख सहे।
कितनी विपदा सही है हमने, बिना ज्ञान के कष्ट सहे।
भारी विपदा सही नरक की, तीव्र वेदना पाई है।
विषय-भोग के चक्कर मे पड, सारी उम्र बिताई है।
आतम का हित कैसे होता, नही समझ हम पाते है।
धर्म मार्ग पर चलकर प्राणी, सच्चे सुख को पाते है।
आतम-हित की बाते भैया, ऋषि-मुनि बतलाते है।
जिनवाणी माता को हम सब, अपना शीश झुकाते है।
ऋषि-मुनियो की श्रद्धा भक्ति, सच्चे सुख को देती है।
अज्ञान तिमिर को हटा दूर वह, ज्ञान ज्योति भर देती है।
करते जो सेवा मुनियो की, कष्ट नही वो पाते है।
भक्ति करने वाले इनकी, इन जैसे बन जाते है।
भक्ति ही भगवान बनाती, भक्ति मुक्ति देती हे।
भक्ति ही प्राणी को भैया, पदवी ऊँची देती है।
भक्ति ही भगवान को भैया, शुद्ध ज्ञान प्रकटाती हे।
भक्ति ही भगवान बनाकर, सिद्ध महल पहुँचाती है।
भक्ति मे शक्ति हे भैया, भक्ति सुख की दाता है।
सच्ची भक्ति करके प्राणी, भव सागर तर जाता है।
भक्ति मे शक्ति है भैया, नाग को हार बनाने की।
दु ख को सुख मे बदल दे भक्ति, जल बिच कमल रचाने की।
अगनि नीर बना दे भक्ति, ठडा गोला कर देती।
मरणासन क्षण मे प्राणी को, यह सबल स्वस्थ वह कर देती।
विष को अमृत करे भक्ति, रक भूपति बन जाता।
सच्ची श्रद्धा से वह प्राणी, दु ख सारे यो सह जाता।
सच्ची श्रद्धा देव गुरु मे, मन वाछित फल देती है।
विनय भक्ति जिनवाणी माँ की, अज्ञान दूर कर देती है।
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
करके भक्ति देव गुरु की, आतम मे रम जाता है।

धर्म सुखों का दाता है

धर्म मार्ग पर चलने से ही, प्राणी सच्चा सुख पाता।
तजने वाला धर्म को भैया, नरको के दु:ख है पाता।
नरक गति के दु:ख सह आए, फिर भी अक्ल नही आई।
देख यहॉ की चकाचौध हम, भूल गए वो दु:ख भाई।
बडी मुश्किल से नर भव पाया, उत्तम कुल भी पाया है।
ये सब पाकर दु:खी रहे तो, समझो खाक कमाया है।
जिनवाणी मॉ हमे बताती, ऋषि-मुनि समझाते है।
देख हमारी हालत को वे, दया भाव चित लाते है'
नही विनय करते गुरुओ की, धर्म मार्ग जो तजते है।
निदा करते धर्मी जन की, गलत राह पर चलते है।
ऐसे प्राणी देखो भैया, दु:खी दिखाई देते है।
जहॉ कही भी जाते है ये, सदा अनादर पाते है।
धर्म नही जिन घरो मे होता, पतन उन्ही का होता है।
सुख नहि रहता नाम मात्र को, जन्म दु:खो का होता है।
दु:खो से घिर जाते वे घर, चैन नही उनको मिलता।
सदा दु:खी रहते वो प्राणी, जहॉ पर धर्म नही पलता।
धर्म छोडकर सुख पाया हो, नही ऐसा मैने देखा।
धर्म मार्ग पर चलने वाला, सुखी हमेशा है देखा।
पाप मार्ग का त्याग करे हम, धर्म मार्ग अपनाऍ।
फूल चमन मे खिल जाएँ यदि, धर्म मार्ग पर चल पाऍ।
जीवन सुखमय हो जाएगा, पास नही दु:ख फटकेगा।
सुख शाति आ जाएगी तब, आत्म ज्ञान प्रकटेगा।
जिधर भी जाता धर्मी प्राणी, स्वर्गो सा आनद छाता।
एक धर्म ही है जो जग मे, सुख शाति धन दे पाता।
भाव यही लिखने का मेरा, धर्म मार्ग हम अपनाऍ।
समय बहुत थोडा है बाकी, आतम का हित कर पाएँ।
नही भरोसा क्षण का भैया, मृत्यु ने जाल बिछाया है।
अब भी समय समझ ले मनुआ, गुरुओ ने जतलाया है।

सीख नही गुरुओ की मानी, सिर धुन धुन पछताएगा।
साथ नही जाएगा कोई, इकला ही दुख पाएगा।
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
ऋषि-मुनियो की कृपा का फल, सुख से समय बिताता है।

दस लक्षण पर्व का संदेश

दस लक्षण का पर्व ये पावन, क्या सदेशा लाया है।
पढकर तुम्हे सुनाऊँ उसको, यह हमे जगाने आया है।
चहुँ गति मे हम फिरे भटकते, काल अनत बिताया।
भारी कष्ट उठाए हमने, जन्म मरण दुख पाया।
मुश्किल से यह मिला मनुज भव, नर तन चोला पाया।
मिली यहाँ जिनवाणी हमको, फिर भी ना सुन पाया।
सुन ले जिनवाणी तू भैया, दस धर्मो को अपना ले।
भला यदि चाहता अपना, स्वय को भी कुछ समझा ले।
नही अपनाया दस धर्मो को, जन्म मरण दुख पाएगा।
भारी कष्ट सहेगा भैया, सिर धुन धुन पछताएगा।
करके दया श्री मुनिवर जी, बार बार समझाते है।
कर लो आतम का हित भैया, ज्ञान की बात बताते है।
दस धर्मो के पालन से ही, प्राणी मुक्ति पाता है।
भूल धर्म को जाने वाला, नरको के दुख पाता है।
नरको के दुख भूल गए हम, पाप कमाना जारी है।
धर्म ध्यान से हट गए पीछे, भोगो से ही यारी है।
जिनको यार बनाया हमने, ये दुर्गति ले जाएँगे।
पाप कर्म फिर हँसेगा हम पर, रो रो नीर बहाएँगे।
नही चलेगी वहाँ हमारी, नही कोई हमरे होगे।
मुख तेरा होगा नीचे को, पैर वहाँ ऊपर होगे।
तरह तरह के कष्ट अनेको, इस प्राणी को मिलते है।
जिनकी होनहार अच्छी, वे जिनवाणी सुनते है।
सुनकर इस कविता को भैया, दस धर्मो को ग्रहण करो।
धर्म महा उपकारी जग मे, देव गुरु की विनय करो।

सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
दस धर्मो के पालन से ही, प्राणी मुक्ति पाता है।

धर्मभूषण जी महाराज का क्षु. अवस्था में गाँव बावली में पदार्पण

पता लगा जब हमको गुरुवर, गॉव बावली आए है।
करने दर्शन पूज्य गुरु के, आज यहाँ हम आए है।
जन्मस्थान हमारा है ये, पढ लिखकर ईह बडा हुआ।
भक्ति करी साधु सतन की, भक्ति का फल प्राप्त हुआ।
गॉव बावली की जनता तो, धर्म ध्यान में नामी है।
भक्ति करने मे सतो की, ये तो भैया नामी है।
देख के श्रद्धा इस नगरी की, गुरु यहॉ पर आए है।
छपरौली से चलकर गुरुवर, गॉव हमारे आए है।
छपरौली मे श्री गुरुवर ने, अपना चातुर्मास किया।
ज्ञान रतन बरसाए वहॉ, धर्मशाला का शिलान्यास किया।
रथ सुदर बनवाया इक औ, औषधालय बनवाया है।
हाल वहॉ पर दो बनवाए, जीर्णोद्वार कराया है।
स्वर्ग बनी छपरौली नगरी, सानिध्य तुम्हारा पाने से।
कितनी रौनक हुई यहॉ पर, गुरुदेव के आने से।
छपरौली मे जाकर मैने, दर्श आपका पाया था।
देख वहॉ की धर्मी जनता, मन मे अति हर्षाया था।
परम तपस्वी हो गुरुवर तुम, हित उपदेश सुनाते हो।
रात्रि भोजन त्याग कराकर, धर्म का महत्व बताते हो।
वीतराग है छवि तुम्हारी, वेश दिगबर धारा है।
जब से दर्शन किए तुम्हारे, जागा भाग्य हमारा है।
धर्मी जनता इस नगरी की, नगरी ये आबाद हुई।
पाकर शुभ आशीष तुम्हारी, जग मे ये विख्यात हुई।
गाँव बावली के नर नारी, खुशहाल दिखाई देते है।

श्री गुरुवर की कृपा का फल, ऐसा सब ही कहते है।
तुम जैसे गुरु परम तपस्वी, जिस भी क्षेत्र मे जाते है।
आनद मगल होता जीवन, रोग कष्ट भग जाते है।
गुरुवर मेरे कुलभूषण है, जिनवाणी है माता।
तुम दोनो के श्रीचरणो मे, मोहन शीश झुकाता।
सन पचासी मे गरुवर जी, मुझ पर था उपसर्ग हुआ।
तुमरा शुभ आशीष पाय कर, कष्ट मेरा वो दूर हुआ।
मरने से बच गया ये मोहन, तुमरी कृपा पाने से।
आनद मगल होता जीवन, देव गुरु को ध्याने से।
मैने तो तब चरण-धूलि, यह अपने शीश लगाई है।
सच पूछो तो गुरुवर मुझको, अकल तभी से आई है।
सब कुछ पाकर छोड दिया सब, क्षुल्लक तुम कहलाते हो।
ज्ञानी ध्यानी हो गुरुवर तुम, हित उपदेश सुनाते हो।
गॉव बावली के नर नारी, प्रेम धर्म से करते है।
प्रेम धर्म से करने वाले, ही तो पार उतरते है।
लिखने मे यदि हुई हो गलती, गुरुवर गलती माफ करो।
देकर ज्ञान किरण हमको अब, हमरा भी उद्धार करो।

मेरी आत्मा की आवाज नवयुवकों के प्रति

सुनो आवाज आत्मा की तुम, तुमको आज सुनाता हूॅ।
ऋषि-मुनियो के चरणो को छू, अपना भाग्य सराहता हूॅ।
ऋषि-मुनि ही जग मे भैया, बीज धर्म का बोते है।
करते है जो सगति इनकी, इन जैसे बन जाते है।
देख रहे हम आज घरो मे, नवयुवको और बहनो को।
नही धर्म मे रुचि उनकी, करता है मन फैशन को।
तरह तरह के फैशन मे वो, सारा समय बिताते है।
निज आत्म को भूल गए है, विषयो मे सुख पाते है।
छोड धर्म की बातो को वो, प्यार की बाते करते है।

मात-पिता की नहीं कदापि, सेवा वो तो करते है।
मंदिर मे जाने मे भैया, शर्म बहुत ही आती है।
नहीं लगती जिनवाणी अच्छी, फिल्म हृदय को भाती है।
बाजे वालो मे मिल करके, नाच-कूद खुश होते है।
नृत्य का नबर जब आता है, तब भैया शरमाते हैं।
ऐसे चलता रहा क्रम तो, पतन हमारा निश्चित है।
कैसे होगा भला जगत का, सब कुछ असत् अनिश्चित है।
धर्म जहॉ पर घटता भैया, अरू फैशन बढ जाता है।
समझो निश्चित है उस घर का, पतन एक दिन होता है।
युवा आज जो कहलाते है, कल बूढे कहलाएँगे।
फैशन के जो बने दास है, वो नरको मे जाऍगे।
छोड के फैशन धर्म कमाओ, धर्म सुखों का द्वार है।
धर्म मार्ग पर चलकर प्राणी, होता भव से पार है।
ऋषि-मुनि जो देख रहे हम, इनकी महिमा न्यारी है।
इनके चरणकमल मे भैया, सौ सौ नमन हमारी है।
फैशन छोडा धर्म बढाया, नियम धर्म मन लाए है।
सयम रूपी पहन के चोला, पद मुनियो का पाए है।
चाहो गर कल्याण युवको तुम, धर्म मार्ग को अपनाओ।
देव गुरु की भक्ति करके, जिनवाणी सुन हरषाओ।
नही सुनी जिनवाणी भैया, सिर धुन धुन पछताओगे।
धर्म मार्ग पर नही चले तो, नरक गति मे जाओगे।
सुनकर मेरी कविता युवको, फैशन को कम कर देना।
जिस पथ को अपनाया मैने, उस पथ को अपना लेना
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
फैशन छोडो धर्म कमाओ, धर्म ही पार लगाता है।

भक्तामर स्तोत्र की महिमा

भक्तामर का पाठ रे भैया, सच्चे सुख को देता है।
श्रद्धा से जो करते इसको, दु ख उनके हर लेता है।

नही विपद आने देता है, श्रद्धा मन मे बढने से।
रोग शोक नही रहते भैया, भक्तामर के पढने से।
कैसे लिखूँ महिमा इसकी, लिखी नही मुझसे जाती।
महिमा इसकी न्यारी भैया, जिनवाणी है बतलाती।
सुनो ध्यान से मेरे भैया, इसकी कथा सुनाता हूँ।
श्रद्धा इसमे रखना भैया, महिमा इसकी गाता हूँ।
राजा भोज बडे गुणग्राही, उज्जैनी मे रहते थे।
सस्कृत विद्या से तो राजा, प्रेम बहुत ही करते थे।
उस नगरी मे सेठ धनजय, जैन धर्म के धारी थे।
ऋषि-मुनियो मे भक्ति रखते, महा जैन व्रतधारी थे।
राजा भोज का एक मत्री, कालिदास कहाता था।
जैन धर्म से बैर पालकर, मन ही मन इठलाता था।
सेठ धनजय और मत्री मे, वाद-विवाद हो जाता है।
कालिदास मत्री राजा से, सेठ की निदा करता है।
उसी नगर मे मानतुग जी, श्री महाराज पधारे थे।
सेठ धनजय ने शिक्षा हित, उनके चरण निहारे थे।
एक दिना मत्री जी भैया, राजा भोज से कहते है।
शास्त्रार्थ हो मानतुग से, कौन विजय गहते है।
मत्री अनुरोध श्रवण करे, राजा चित मे लाते है।
महाराजश्री को लाओ यहॉ पर, ऐसा हुक्म सुनाते है।
दूत गए उपवन मे नृप के, मुनि को शीश झुकाते है।
चलो हमारे साथ मुनिवर, भक्ति भाव से कहते है।
सुनकर बाते उनकी मुनिवर, उनसे यो कह देते है।
नही प्रयोजन नृप से हमको, न ही हम कुछ लेते है।
सुनकर दूत बात मुनिवर की, राज सभा मे जाते है।
जैसी बात कही मुनिवर ने, नृप से वे फरमाते है।
दूतो की बातो को सुन नृप, क्रोधित अति हो जाते है
पकड के लाओ मुनिराज को, आज्ञा यो दे जाते है।
पकड लाए वे मुनिराज को, ला करके बैठाते है।

उपसर्ग समझकर मुनिराज भी, मौन ग्रहण कर जाते है।
क्रोधित हो राजा मुनिवर को, बेडी से कस देते है।
डाल हथकडी हाथो मे वो, बद कोठो मे करते है।
अडतालिस कोठो के भीतर, बदीगृह मे बद किए।
लगाके ताले मोटे भैया, पहरेदार बैठाय दिए।
तीन दिवस तक पूज्य मुनिवर, बदीगृह मे रहते है।
चौथे दिन वो आदिनाथ, स्तोत्र काव्य को रचते है।
ज्योहि मुनिवर एक बार उस, पाठ को मन मे ध्याते है।
त्यो हथकडियाँ बेडी ताले, टूट सभी स्वय जाते है।
देख मुनिवर मुक्त विराजे, पहरेदार घबराते है।
पहुँच नृप के पास वो भैया, सारी बात बताते है।
सुनकर उनकी बाते राजा, दुबारा बद कर देते है।
आदिनाथ स्तोत्र के कारण, फिर बाहर आ जाते है।
देख महिमा मुनिराज की, नृप का हृदय काँप उठा।
पाप कर्म पर अपने नृप को, भारी पश्चात्ताप हुआ।
देख महिमा मुनिराज की, नृप और मत्री कहते है।
क्षमा करो तुम हमे मुनिवर, चरण तुम्हारे पडते है।
राजा भोज मुनि से भैया, श्रावक के व्रत लेते है।
मुनिराज और जैन धर्म की, महिमा वो अब गाते है।
किया धर्म प्रचार नृप ने, जैन धर्म का भारत मे।
भक्तामर का पाठ करे नित, विघ्न दूर कर दे क्षण मे।
नाश करे विघ्नो का ये तो, सच्चे सुख को देता है।
श्रद्धा से जो पढते इसको, मन वाछित फल लेता है।
लिखने मे यदि हुई हो गलती, लेखक विनय चाहता है।
श्रद्धा रख भक्तामर मे वो, कविता लिखता जाता है।
सुबह सबेरे उठकर भैया, भक्तामर का पाठ करो।
धर्म मार्ग पर चलकर भैया, आत्म का उद्धार करो।
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
भक्तामर का पाठ करे नित, धर्म सुखो का दाता है।

सत्य वचन सुखकारी है

सत्य वचन नित बोलो भैया, सत्य वचन सुखकारी है।
पालन करते सत्य धर्म जो, उनको नमन हमारी है।
सत्य धर्म का पालन भैया, जग मे मुनिवर करते है।
सत्य धर्म का करके पालन, शिव रमणी को वरते है।
हित मित वचन बोलते मुनिवर, ज्ञान की बाते करते है।
आतम का हित होता जिससे, ऐसे वचन उचरते है।
सत्य धर्म का धारी भैया, सच्चे सुख को पाता है।
पालन करने वाला इसको, सिद्ध शिला को जाता है।
वचन सिद्धि हो जाती भैया, सत्य धर्म के पालन से।
आत्म हित नही होता भैया, मिथ्या वचन उचारन से।
सत्य धर्म की महिमा भैया, तुमको आज सुनाता हूँ।
सुनकर शिक्षा लेना इससे, ज्ञान की बात बताता हूँ।
दो भाई थे एक गॉव मे, दोनो हिल मिल रहते थे।
भावो मे था अतर उनके, वैसे सग विचरतेथे।
बडा भाई तो धर्म ध्यान से, दूर हमेशा रहता था।
ऋषि-मुनियो को देख बडा तो, निदा उनकी करता था।
गुणियो का वह करे निरादर, मदिरा मे नित डोले था।
छोटी छोटी बातो मे वो, झूठ वचन ही बोले था।
अविनय करके जिनवाणी की, मन मे खुशी मनाता था।
दस लक्षण के पर्व मे भी वो, जिन मदिर नहि जाता था।
एक दिवस वो किसी काम से, जगल मे से जाता है।
नाग एक डस लेता पग मे, तत् क्षण वह मर जाता है।
मरकर गया नरक मे लडका, धर्म की निदा करने से।
भारी विपदा सहनी पडती, झूठ वचन के कहने से।
छोटा भाई धर्म ध्यान मे, सबसे आगे रहता था।
दस लक्षण के पर्व मे वो तो, ब्रह्मचर्य मे रहता था।
जिनवाणी को सुनता था वो, ज्ञान की बाते करता था।

देव गुरु के चरणो मे वो, श्रद्धा गहरी रखता था।
हित मित वचन बोलकर लडका, अपना समय बिताता था।
सत्य धर्म का पालन करके, मन अपने हर्षाता था।
ऋषि-मुनियों की भक्ति कर वो, फूला नहीं समाता था।
सत्य धर्म के कारण वो तो, जग मे आदर पाता है।
एक दिवस वह जिन दर्शन कर घर को वापिस आता है।
आयु पूर्ण हुई है उसकी, देखो अब क्या होता है।
मरकर लडका गया स्वर्ग मे, स्वर्गो मे जा देव हुआ।
उत्तम सत्य धर्म के कारण, ऊँचे पद को प्राप्त किया।
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
उत्तम सत्य धर्म का धारी, शिव रमणी को पाता है।

मर कर गया स्वर्ग में सूकर

ऋषि मुनि है पूज्य जगत मे, महिमा इनकी न्यारी है।
इनके चरण-कमल मे भैया, सौ-सौ नमन हमारी है।
श्रद्धा गहरी रखना इनमे, श्रद्धा पार लगाती है।
सच्ची श्रद्धा पापी को भी, सिद्ध द्वार ले जाती है।
अजन जैसे बने निरजन, श्रद्धा इनमे होने से।
दर्शन इनके होते भैया, उदय पुण्य का होने से।
श्रद्धा नहीं होने से प्राणी, भव भव के दु ख पाता है।
श्रद्धा जिसकी हो गई इनमे, भव से वो तिर जाता है।
श्रद्धा विषय मे एक कहानी, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
इक सूकर की सुनो कथा तुम, तुमको आज सुनाता हूँ।
रहता जिस जगल मे वह, जगल बहुत गहन था।
गुफा एक थी उस जगल में, रहता शेर मगन था।
जगल मे रहकर वो सूकर, अपना समय बिताता था।
जगली सुअर होकर भी वो, नही मॉस अपनाता था।
एक दिना उस ही जगल मे, ऋषि मुनि इक आते है।

बैठ गुफा मे मुनिराज वो, अपना ध्यान लगाते है।
इसी बीच में उसी गुफा मे, सूकर वो आ जाता है।
देख मुनिवर को वो सूकर, अपना शीश झुकाता है।
करता सोच विचार वो मन मे, पुण्य उदय मम आया है।
ऐसे मुनिवर का जीवन मे, मैने दर्शन पाया है।
खाना पीना त्याग सभी वो, मुनि-चरणो मे बैठ गया।
श्रद्धा उनमे हो गई उसकी, शुभ कर्मो का उदय हुआ।
श्रद्धा उनमे होने से अब, देखो क्या कुछ होता है।
एक धर्म है जो जीवो के, साथ अत मे जाता है।
भूखा प्यासा सिह घूमता, उधर एक आ जाता है।
मुनिवर को खाने को भैया, शेर गुफा मे जाता है।
समझ भावो को शेर के सूकर, नही जाने उसको देता।
गुफा मे जाने से वो सूकर, रोक वही उसको लेता।
झपट पडा वो सूकर उस पर, दोनो मे युद्ध होता है।
लडते लडते उन दोनो का, भैया अत हो जाता है।
मर गए सूकर शेर वे दोनो, आपस मे भिड जाने से।
स्वर्ग सूअर को मिला शेर को, नरक पाप के पाने से।
शेर महा दु ख पाता भैया, बुरे भाव बनाने से।
स्वर्गो के सुख भोगे सूकर, श्रद्धा मन अपनाने से।
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
श्रद्धा धर्म मे रखो अपनी, धर्म ही पार लगाता है।

निंदा नहिं करना जीवन में

धर्म महा उपकारी जग मे, धर्म सुखो का दाता है।
धर्म मार्ग पर चलने वाला, कष्टो से बच जाता है।
धर्म समान मित्र नहि जग मे, धर्म ही पार लगाता है।
यश मिलता है धर्म से भैया, साथ धर्म ही जाता है।
धर्म छोडकर प्राणी जग मे, भारी कष्ट उठाते है।

मरकर जाते नरक गति मे, घोर परीषह सहते है।
इक लडके की सुनो कहानी, लिखकर तुम्हे सुनाता हूं।
नही धर्म को माना जिसने, उसकी कथा सुनाता हूॅ।
एक लडका था एक गॉव मे, दूर धर्म से रहता था।
खुश होकर वो मन म अपने, धर्म की निदा करता था।
ऋषि-मुनियो की नही कभी वो, विनय भाव से करता था।
निदित वचन सुनाकर उनको, मन मे खुश हो जाता था।
कभी नही मदिर जाता था, दान नही वो करता था।
चोरी करने मदिरा पीने, मे सुख अनुभव करता था।
दस लक्षण के पर्व मे भी वो, निश मे खाना खाता था।
पर नारी मॉ बहनो पर, वो कुदृष्टि निज रखता था।
धर्मी जन का कभी नही वो, भैया आदर करता था।
तज के इज्जत मॉ बहनो की, पाप बध नित करता था।
करते करते पाप कभी तो, घडा पाप का भरता है।
पाप कर्म के कारण प्राणी, चौरासी मे रुलता है।
एक दिवस वो लडका भैया, चोरी करने जाता है।
अशुभ कर्म के कारण लडका, पकडा वहॉ पे जाता है।
मार पडी इतनी लडके को, हाथ पैर सब टूट गए।
ऑख से अधा हो गया लडका, बहरे दोनो कान हुए।
खून टपकता टपटप उनसे, रो रो रुदन मचाता है।
अपनी करनी पर वो लडका, सिर धुन धुन पछताता है।
रो रोकर क्या कहता लड़का, ध्यान लगाकर सुन लेना।
कविता पढकर मेरी भैया, शिक्षा इससे ले लेना।
निदा नहि करना जीवन मे, धर्म और धर्मात्मा की।
निदा से सहनी पडती है, घोर विपत्ति नरकन की।
निदा करने से ही भैया, उसका बुरा हाल हुआ।
नही बचाने वाला भैया, उसको कोई आज मिला।
भीख मॉगता पडा सडक पर, हाय हाय चिल्लाता है।
धर्म मार्ग तजने के कारण, ऐसा हाल हो जाता है।

सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
धर्म मार्ग पर चले सभी हम, धर्म सुखो का दाता है।

देव-शास्त्र-गुरुओं की भक्ति

देव-शास्त्र गुरुओ की भक्ति, सच्चे सुख को देती है।
रखते हैं जो श्रद्धा इनमे, दु ख उनका हर लेती है।
भक्ति नही करते जो इनकी, भव भव के दु ख पाते हैं।
चौरासी मे फिरे भटकते, भारी कष्ट उठाते है।
मन वांछित फल मिलता भैया, श्रद्धा इनमे लाने से।
पाप सभी कट जाते उनके, जिन दर्शन नित पाने से।
जिन दर्शन नित करे सभी हम, श्रद्धा भाव जगाएँ।
देव शास्त्र गुरु पूज्य जगत मे, उनको शीश झुकाए।
दो भाईयो की सुनो कथा तुम, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
धर्म बडा है इस दुनिया मे, धर्म से प्रीति लगाता हूँ।
दो भाई थे एक गॉव मे, सुख से दोनो रहते थे।
छोटे भाई धर्म ध्यान मे, सबसे आगे रहते थे।
नित मंदिर मे जाते थे वो, बडा धर्म को कहते थे।
ऋषि-मुनियो की श्रद्धा भक्ति, सच्चे मन से करते थे।
बडा नही मदिर जाता था, नही धर्म वो माने था।
चोरी करने मदिरा पीने मे, ही सुख वो मानै था।
दरू धर्म से रहने वाले, दु खी हमेशा रहते है।
करते है जो धर्म की रक्षा, सुखी हमेशा रहते है।
एक दिवस दोनो भाई को, उनके पिता बुलाते है।
अत समय वो जान के अपना, शिक्षा उनको देते है।
माल बहुत था पास पिता के, कोठी भी एक सुदर थी।
नही कमी थी घर मे कुछ भी, श्रद्धा धर्म मे गहरी थी।
बडे भाई को कहा पिता ने, छोटे का तुम रखना ध्यान।
कष्ट नही इसको कुछ होवे, अब तुम इसके पिता समान।

इतना कहकर पिता ने भैया, महामत्र को याद किया।
नाम प्रभु का भजते भजते, निज प्राणो का त्याग किया।
पिता जी उनके मर गए भैया, देखो अब क्या होता है
बडा भाई तो छोटे को अब, नहीं हिस्सा कुछ देता है।
कमरा एक दिया छोटे को, कहा इसी मे रहा करो।
रूखी सूखी खाकर रोटी, पेट को अपने भरा करो।
धर्म मार्ग पर चलने वाला, नहीं कभी दुख पाता है।
छोड धर्म को देने वाला, नरक द्वार मे जाता है।
बडा भाई तो मदिरा पीकर, वेश्यालय नित जाता है।
कर्जदार हो गया बहुत वो, धर्म नही मन लाता है।
छोटा नित मदिर जाता है, जिन-पूजन नित करता है।
करते करते काम घरेलू, याद प्रभु को करता है।
छोटा करने लगा खुदाई, एक दिना निज कमरे मे।
हीरे मोती मिली अशरर्फी, धरी उसे एक मटके मे।
करोड़पति बन गया वो भैया, धर्म ध्यान मन लाने से।
नही कमी कुछ रहती घर मे, जिन-पूजन नित करने से।
बडे भाई की बिक गई कोठी, वेश्यालय मे जाने से।
भीख मॉगता फिरता दर दर, धर्म नही मन लाने से।
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
धर्म मार्ग पर चलने वाला, सुखी हमेशा रहता है।

विदाई गीत

क्षु. कुलभूषण जी महाराज के बावली गाँव में चातुर्मास पूर्ण होने के बाद

चले छोडकर गुरु हमारे, कैसे तुम्हे भुलाएँगे।
बहु उपकार किए है हम पर, तुमरे गुण हम गाऍगे।
तुमरी छत्र छाया मे रहकर, फूले नही समाए है।
करके दर्शन गुरुवर तेरे, निज सौभाग्य सराहे है।

वीतराग है छवि तुम्हारी, सबके मन को भाती है।
सुन उपदेश तुम्हारे जनता, मन अपने हर्षाती है।
राग द्वेष का नाम नही है, कठिन तपस्या कीनी है।
हित मित वचन सुनाकर गुरुवर, धर्म भाव भर दीनी है।
धर्म महा उपकारी जग मे, तुमने हमे बताया है।
क्षुल्लक पदवी लेकर तुमने, जैन धर्म चमकाया है।
लिखना मुझको लेख सिखाया, आदर सबका करना।
प्राण भले ही जाएँ अपने, नही वचन से हटना।
भला नही कर सकते जग का, बुरा कभी न करना।
सदा दीन दुखियो का भैया, जितना हो दुख हरना।
निश का भोजन त्याग कराकर, श्रद्धा भाव जगाया।
करके चातुर्मास यहाँ पर, हमरा मान बढाया।
गुरुवर तेरे गुणो को हम सब, मुख से ना कह सकते है।
बना समदर पूरी स्याही, फिर भी ना लिख सकते है।
याद करेगे हम सब तुमको, तेरे गुण हम गाएँगे।
तेरे गुण हम गा-गाकर, भारी पुण्य कमाएँगे।
सनो की सेवा से मिलती, मुक्ती रूपी मेवा।
देव गुरु है पूज्य जगत मे, जिनवाणी सुख देवा।
दव गुरु की करके भक्ति, सच्चे सुख को पाएँगे।
मिले हमेशा दर्शन तुमरे, ऐसी आस लगाएँगे।
गुरुवर आज विहार आपका, भर आए मम नैना।
भूल चूक यदि हुई हो हमसे, हमे क्षमा कर देना।
हाथ जोड कहता है मोहन, गुरु जीएँ वर्ष हजार।
श्रद्धा भक्ति से हम तुमको, नमन करे सौ बार।
मोहन का बस एक इरादा, चरण न तुमरे छोडॅगा।
बनकर तुमसा गुरुवर मै भी, भव-बधन को तोड़ूँगा।

धर्मभूषण जी महाराज सोनीपत में

सोनीपत नगरी की चर्चा, देव स्वर्ग मे करते है।
क्या चर्चा होती है वहाँ पर, मोहन तुम्हे सुनाते है।

क्या कहते है देव स्वर्ग मे, ध्यान लगाकर सुन लेना।
भला यदि चाहते हो अपना, धर्म मार्ग अपना लेना।
भारत देश के अदर भैया, हरियाणा अति प्यारा है।
सोनीपत इक जिला है उसमे, सभी जिलो से न्यारा है।
वातावरण है शात वहॉ का, धर्मी सारी जनता है।
धर्मो का सम्मान वहॉ पर, जिन धर्म मे गहरी श्रद्धा है।
पुण्य के बादल उस नगरी मे, हरदम छाए रहते है।
धर्म कार्य होते रहते, ऋषि मुनि आते रहते है।
देख वहॉ की धर्म भावना, मुनि विहार करते है।
मुनियो के दर्शन तो भैया, किस्मत वाले पाते है।
पुण्य विशेष का उदय रे भैया, सोनीपत का आया।
उसी पुण्य का भागी होने, मोहन यहॉ पर आया।
अशोक विहार से चलकर मुनिवर, सोनीपत मे आए।
चहुँ तरफा फैली हरियाली, सब जन हर्ष मनाए।
स्वागत किया सभी ने मिलकर, देवो ने हर्ष मनाया है।
सोता हुआ जगाकर मुझको, उनके पास पहुँचाया है।
कब तक सोते रहोगे भैया, जीवन आधा बीत चुका।
बाल सफेद लगे है आने, नही सयम कुछ गृहण किया।
ऑख खुली जब देखा मैने, ये सब किसकी माया है।
कौन जगाने आया तुझको, किसकी तुझ पर छाया है।
जिसने मुझे जगाया भैया, उनका नाम बताता हूँ।
जिनकी कृपा हुई है मुझ पर, वो भी तुम्हे बताता हूँ।
नाम उन्ही का धर्मभूषण है, धर्म की वर्षा करते है।
हित मित प्रिय वाणी मे वो, ज्ञान की वर्षा करते है।
जहॉ भी जाते गुरु हमारे, फूल चमन मे खिल जाते।
औषधालय जिन मदिर भैया, जहॉ नही वहॉ बनवाते।
रथ बनवाते है सोने के, सयम प्रकाश छपवाया है।
जैन धर्म का डका फिर, दुनिया मे आज बजाया है।

कहाँ तक लिखूँ महिमा तुमरी, लघु बुद्धि मेरी है।
तुम जैसे सतो की सेवा, करना आदत्त मेरी है।
तुमरी सेवा करके मैने, जीवन मे सब कुछ पाया।
जीवन भी तो चला गया था, वो भी तुमसे है पाया।
तुमरे चरणो की कृपा से, प्रेम सभी का पाया है।
सच्ची भक्ति का फल मुझको, खीच यहाँ पर लाया है।
सोनीपत से चलकर गुरुवर, शहर शाहदरा मे आना।
लिखने मे यदि हुई हो गलती, माफ हमे तुम कर देना।
आप भी आना सभी वहाँ पर, हाथ जोड मै कहता हूँ।
अपने बडे-बुजुर्गो की, आशीष हमेशा गहता हूँ।

धर्म की महिमा अपार है

किस्सा तीन चोर का सुन लो, तुमको आज सुनाता हूँ।
धर्म महा उपकारी जग मे, गुण मुनियो के गाता हूँ।
धर्म ही रक्षा करे जीव की, धर्म ही पार लगाता है।
इच्छित वस्तु मिले धर्म से, धर्म सुखों का दाता है।
धर्म समान मित्र नहि जग मे, धर्मी आदर पाता है।
श्रद्धा जिसकी धर्म मे भैया, भव से वो तिर जाता है।
इक धर्मी की सुनो कहानी, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
रक्षा कैसे करी धर्म ने, तुमको आज बताता हूँ।
एक गॉव मे एक धर्मी था, प्रभु पूजन नित करता था।
ऋषि-मुनियो के चरणो मे वो, श्रद्धा गहरी रखता था।
परिग्रह का परिमाण था उसको नहीं कपट वो करता था।
नेक कमाई करके धर्मी, धर्मध्यान नित करता था।
गोलक एक बनाई उसने, दान पात्र था नाम रखा।
नेक कमाई मे से प्रतिदिन, दान का एक प्रमाण रखा।
तीन चोर थे गाँव मे भैया, चोरी करते रहते थे।
दया धर्म का भाव नहीं था, दु खी सदा वो रहते थे।

एक दिवस वो किसी गाँव से, माल चुराकर लाए।
लाखो का था माल वो भैया, हीरा मोती लाए।
लेकर माल बहुत-सा फिर भी, नहि चोरो को सब्र हुआ।
परिग्रह का परिमाण नहीं था, नहि उनको सतोष हुआ।
परिग्रह का परिमाण करे बिन, सच्चा सुख नहि पाएँगे।
जितना ज्यादा होय परिग्रह, उतना ही दुख पाएँगे।
लेकर माल चोर वो भैया, धर्मी के घर आते है।
चोरी करने के निमित्त से, घर उसके घुस जाते है।
घर मे घुस गए चोर माल, पर नजर कही नहि आया।
कैसे रक्षा करी धर्म ने, मोहन लिख करके लाया।
एक चोर की नजर रे भैया, उस गोलक पर जाती है।
चोर उठाने लगा जब गोलक, छूट हाथ से जाती है।
गिरते ही धरती पर गोलक, जोरो से आवाज हुई।
निद्रा खुल गई सबकी भैया, धर्म ने रक्षा आन करी।
धर्मी ने उठ करके देखा, कोई नजर नही आया।
माल चोर जो लाए थे, वो भी धर्मी को मिल पाया।
माल नही चोरी हो पाया, धर्म ध्यान मन लाने से।
बिना कमाए आई लक्ष्मी, मुनियो के गुण गाने से।
पता लगाकर धर्मी ने, वह माल जमा करवाया।
जिसकी थी वह खुशी खुशी, अपनी सपत्ति गह पाया।
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
परिग्रह का परिमाण करे हम, गुण मुनियो के गाता है।
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
भूले नहीं धर्म को भैया, धर्म साथ मे जाता है।

धर्मभूषण जी महाराज त्रिनगर में

सब कुछ दिया आपने गुरुवर, नही कमी कुछ छोडी है।
त्याग परिग्रह बने दिगबर, प्रीति जगत से तोडी है।

शहर शाहदरा आना गुरुवर, अर्ज आपसे करते है।
आकर मान बढ़ाना हमरा, हम सब सदा सुमरते है।
धर्म का महत् बताया तुमने, निश का भोजन तजवाया।
जिन-दर्शन करना रे निश दिन, कविता लिखना सिखलाया।
तुमरी कृपा से गुरुवरजी, भजन बनाना सीखा है।
गुणीजनो का आदर करना भी, तुमसे ही सीखा है।
पूजन करनी मुझे सिखाई, बात ज्ञान की समझाई।
सुख की चाह अगर है भैया, सदा धर्म करना भाई।
दे आहार ऋषि-मुनियो को, मन मे अपने हर्षाना।
चाहे कितनी पडे मुसीबत, नही दु खो से घबराना।
दु ख तब तक ही रहता भैया, जब तक धर्म नही करते।
धर्म मार्ग पर चलने वाले, नही दु खो से है डरते।
लक्ष्मी भी रहती उस घर मे, धर्म जहॉ पर होता है।
ज्ञानी जन तो सदा ज्ञान से, आतम हित कर लेता है।
देव रतन बरसाए वहॉ पर, आहार मुनि जहॉ करने।
हम भी भजन सुनाएँ उनको, धर्म मे जो श्रद्धा रखते।
सरल स्वभाव पूज्य गुरुवर का, हित मित बाते करते है।
छोटे बडे सभी पर अपनी, गुरुवर कृपा रखते है।
श्रद्धा रखो णमोकार पर, यह मत्रराज कहलाता है।
इसको जपने वाला प्राणी, सुखी सदा हो जाता है।
भाव यही लिखने का मेरा, धर्म मार्ग हम ग्रहण करे।
धर्मभूषण जो यहॉ बिराजे, इनसे कुछ व्रत ग्रहण करे।
लिखने मे यदि हुई हो गलती, बच्चा समझ क्षमा करना।
शाहदरा वालों का गुरुवर, स्वीकार निमत्रण है करना।
रामनगर शाहदरा वाले, पलक बिछाए बैठे है।
धर्मभूषण जी के दर्शन की, आस लगाए बैठे है।
आप भी आना सभी वहॉ पर, हाथ जोड मै कहता हूॅ।
अपने बडे बुजुर्गो की, आशीष हमेशा गहता हूॅ।

रात्रि भोजन-त्याग

करुणा के धारी पर उपकारी, नियम हमे दिलवाते है।
हम मूरख जन नहीं सोचते, ऐसा क्यो करवाते है।
रात्रि का क्यो छोडा भोजन, किस्सा तुम्हे सुनाऊँ।
मुनिराज के चरणो पडकर, अपना शीश झुकाऊँ।
निश भोजन जब करता था मै, नही कभी लिख पाता था।
बुद्धि भ्रष्ट हुई थी मेरी, नही समझ कुछ आता था।
जब से नियम लिया मुनिवर से, निशि भोजन नहीं पाऊँगा।
प्राण भले ही जाएँ अपने, नित मंदिर मे जाऊँगा।
छूकर चरण तुम्हारे मुनिवर, कहा आपका माना है।
सब कुछ मिला मुझे चरणो से, लिखना मैने जाना है।
छोडा निशि का भोजन जब से, लिखने की विद्या आई।
मुनिवर के चरणो मे मैने, यह विवेक बुद्धि पाई।
निश मे भोजन करने से यो, मृत्यु तक हो जाती है।
जिनवाणी ही भैया हमको, सही मार्ग बतलाती है।
एक मनुष्य की कथा सुनो मै, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
निशि मे भोजन वह करता था, उसका हाल बताता हूँ।
एक मनुष्य ने जाकर निशि मे, होटल मे खाना खाया।
धर्म-कर्म किसको कहते है, कभी नही वह मन लाया।
खाना खाने लगा रात को, बिजली इकदम झपक गई।
इतने मे एक छपकी आकर, सब्जी अदर टपक गई।
गर्म-गर्म सब्जी के अदर, छपकी ने जो वास किया।
गिरते ही विष बना भोज तब, नहि कोई अहसास किया।
खाना खाते ही वह भैया, दम को अपनी तोड चला।
सयमहीन रहा जीवन मे, बच्चे इकले छोड चला।
सारे घर का हुआ उजाडा, निशि का भोजन करने से।
अब भी समय समझ ले मनुआ, फिर क्या हो पछताने से।
भोजन जो निशि मे खाते हो, आगे से मत खाना।

लेकर नियम मुनि से हमको, मुक्ति पद है पाना।
इन नियमों पर चलने वाला, सदा-सदा सुख पाता है।
पर-उपकारी सदा जगत् मे, आनद मगल गाता है।
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
निशि का भोजन करे त्याग हम, गुण मुनियो के गाता है।

धर्म के प्रभाव से निर्धन भी धनवान

जैन धर्म की महिमा न्यारी, धर्म ही पार लगाता है।
धर्म मार्ग पर चलकर प्राणी, भव सागर तर जाता है।
धर्मी का जग आदर करता, धर्मी पार उतरता है।
धर्म मार्ग पर चलने वाला, शिवरमणी को वरता है।
निर्धन भी बन जाए धनी, यह धर्म मार्ग अपनाने से।
धन वाला भी होवे निर्धन, यो कुमार्ग पर जाने से।
इक लडकी की सुनो कथा मै, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
धर्म बडा है इस दुनिया मे, धर्म से प्रीति लगाता हूँ।
नहि धर्म को तजना भैया, सदा धर्म को अपनाना।
धर्म मार्ग पर चलकर तुम भी, जीवन सफल बना लेना।
इक लडकी थी एक गॉव मे, धर्म का पालन करती थी।
नित मदिर मे जाकर वह, प्रभु पूजन नित करती थी।
भक्तामर का पाठ करे थी, नित मदिर मे जा करके।
ऋषि-मुनियो की सुने थी वाणी, श्रद्धा मन धारण करके।
ऋषि-मुनियो की वाणी सुनकर, अपना भाग्य सराहे।
दे आहार उन्हे जब तक वह, फूली नही समाए।
निर्धन थी वो लड़की भैया, नहि खाने को दाना था।
धर्म सहाई है इस जग मे, ऐसा उसने माना था।
विवाह योग्य हो गई वो लडकी, बात कही क्या बनती है।
उसके मात-पिता को उसके, फिक्र ब्याह की होती है।
पैसा पास नही होने से, चिंतित निश-दिन रहते थे।

कैसे करे ब्याह बेटी का, इसी फिक्र मे रहते थे।
धर्म सहाई होता भैया, धर्म सुखो का दाता है।
उस लड़की के धर्म के कारण, देखो अब क्या होता है।
उस लडकी के गाँव मे भैया, मुनियो ने चार्तुमास किया।
करके चातुर्मास वहॉ पर, जैन धर्म प्रचार किया।
सुदर भजन सुनाती लडकी, ऋषि-मुनियो के आने से।
शास्त्र-सभा मे जाती थी नित, श्रद्धा धर्म मे लाने से।
एक दिवस इक सेठजी भैया, मुनि-दर्शन को आते हैं।
सुना भजन जब सेठ ने उसका, सेठ साब क्या कहते हैं।
शादी योग्य है लडका मेरा, यह लडकी तो हम चाहत है।
ऐसी धर्मी लड़की से हम, रिश्ता करना चाहत है।
हो गई शादी उस लडकी की, सेठ साब के लडके से।
नही लगा पैसा शादी मे, निकल गई चिता मन से।
धर्म ही रक्षा करे जीव की, धर्म ही पार लगाता है।
धर्म मार्ग पर चलने वाला, सुखी सदा हो जाता है।
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
धर्म मार्ग पर चले सभी हम, धर्म सुखो का दाता है।

धर्मभूषण जी महाराज का कैलाश नगर चातुर्मास

चरण छॉव मुझे तुम दे दो, चरण तुम्हारे गहता हूँ।
तुम चरणो मे लगा रहे मन, और नही कुछ कहता हूँ।
तुम चरणो की कृपा से ही, किस्मत पलटा खाएगी।
तुमरी एक नजर से गुरुवर, बिगडी सब बन जाएगी।
सुनी पुकार हमारी तुमने, अपना आशीर्वाद दिया।
चरणो में बैठाकर अपने, हमको सद् उपदेश दिया।
जीरो नबर का तुमने ही, एक सौ एक बनाया है।
जब से दर्शन किए तुम्हारे, बिन माँगे सब पाया है।
बुद्धू जिसको कहती दुनिया, उसने पुस्तक लिख डाली।

तेरे चरणो की कृपा से, सूखे मे छाई हरियाली।
सब कहते है मुझसे हरदम, तब गुरु कहाँ रहते है।
उनका नाम बताओ हमको, कहॉ विहार करते है।
मैने उन्हे बताया वे, कैलाश नगर विराजे है।
वैसे मेरे हृदय सिहासन, पर वे, हरदम साजे है।
नाम है उनका धर्मभूषण, धर्म की वर्षा करते हैं।
हित मित प्रिय वाणी मे वे, अमृत वर्षा करते है।
निर्धन को धनवान बनाकर, क्षण भर मे राजा कर दे।
मरा जिसे कहती है दुनिया, उसको भी जिदा कर दे।
ऐसे गुरु का हाथ मुझ पर, गीत उन्ही का गाया है।
उनकी कृपा का ही फल है, जो प्रेम तुम्हारा पाया है।
लिखने मे यदि हुई हो गलती, गुरुवर गलती माफ करो।
लिखूॅ सदा मै गीत तुम्हारे, सदा हमारे पास रहो।

श्री धर्मभूषण जी महाराज जिस समय अशोक विहार में विराजमान थे

अशोक विहार से चलकर गुरुवर, शहर शाहदरा मे आना।
पलक बिछाए बैठे है हम, भूल नही उनको जाना।
तुमरे दर्शन की गुरुवर वो, आस लगाए बैठे है।
तुमरी अमृतवाणी सुनने, हरदम प्यासे बैठे है।
उनकी प्यास बुझाओगे तुम, यह विश्वास हमारा है।
ज्ञान रतन की वृष्टि करोगे, कहता भक्त तुम्हारा है।
तुम जैसे गुरु परम तपस्वी, जिस भी क्षेत्र मे जाते है।
आनद मगल होता जीवन, कष्ट नही रह जाते है।
अशोक विहार मे देखो गुरुवर, कितना आनद आया है।
धर्मभूषण जी के चरणो मे, मोहन शीश नवाया है।
भक्त तुम्हारे दूर-दूर से, गुरुवर जी यहॉ आए है।
हर खुश है यहॉ आने वाला, गुरुवर सबको भाए है।

सरल स्वभाव तुम्हारा गुरुवर, हित मित वचन सुनाते हो।
सुखी रहें सब जीव जगत के, ऐसी राह बताते हो।
ज्ञानी ध्यानी गुरु हमारे, गुरु महा उपकारी है।
धर्म का भूषण गहा इन्होने, इनको नमन हमारी है।
इनकी त्याग तपस्या की, चर्चा स्वर्गो मे होती है।
निकल गई जो बात जीभ से, अवश्य पूरी होती है।
तुम जैसे सतो ने गुरुवर, मुझको जीवनदान दिया।
भजन बनाने अरु कविता का, तुमने ही तो ज्ञान दिया।
त्रिनगर और शालीमार से, भक्त तुम्हारे आए है।
अशोक विहार की धर्म भावना, देख गुरु यहॉ आए है।
अशोक विहार वालो ने गुरु का, प्रेम बहुत ही पाया है।
इसीलिए तो पूज्य गुरु ने, हफ्ता एक बढाया है।
अपनी कृपा रखना हम पर, हम बुद्धू ससारी है।
पूज्यपाद श्री धर्मभूषण को, सौ सौ नमन हमारी है।
लिखने मे यदि हुई हो गलती, मोहन माफी चाहेगा।
जहॉ कही भी जाओगे गुरु, यह दर्शन-सुख पाएगा।

धर्मभूषण जी महाराज के गौहाना में विराजमान के समय

बहुत दिनो से भाव था मन मे, आज पूर्ण हो पाया है।
धर्मभूषण जी के दर्शन को, मोहन यहॉ पर आया है।
सुनी प्रशसा गौहाना की, धर्म नगरी इसको कहते।
बडे भाग्य है गौहाना के, यहॉ साधु आते रहते।
मुनिवर यहाँ पधारे भैया, बहुत बडे उपकारी है।
इनके चरण कमल मे भैया, सौ सौ नमन हमारी है।
परम तपस्वी हैं श्री मुनिवर, कठिन तपस्या करते है।
हिम मित प्रिय वाणी मे ये, ज्ञान की वर्षा करते है।
जन्म जन्म के शुभ कर्मो का, आज मेल हो गया है।
इसीलिए तो पूज्य मुनि का, हमने दर्शन पाया है।

ऐसे गुरु कहाँ मिलते है, ऐसी छवि नही मिलती।
जिनके दर्श मात्र से आतम, क्षण भर मे निर्मल होती।
ऐसे गुरु का हाथ है मुझ पर, गीत उन्ही का गाया है।
इनकी कृपा से ही मैने, प्रेम तुम्हारा पाया है।
गौहाना मे आकर मैने, अपना भाग्य सराहा है।
देख यहॉ की धर्मी जनता, फूला नहीं समाया है।
नियम व्रत लेना मुनिवर से, तुमसे अर्ज हमारी है।
बिगडी किस्मत बन जाएगी, श्रद्धा यही हमारी है।
होगा पूर्ण विकास तुम्हारा, आबाद सभी हो जाओगे।
इनके आशीर्वाद से भैया, सुख से समय बिताओगे।
जब से नियम लिया गुरुवर से, निश भोजन नहि पाऊॅगा।
प्राण भले ही जाएॅ अपने, नित मंदिर मे जाऊॅगा।
उसका ही फल मिला आज ये, सुख से समय बिताता हूॅ।
जहाँ कही भी जाएॅ गुरुवर, दर्शन का सुख पाता हूॅ।
सुख शांति रहती है घर मे, धर्म भाव धर्म अपनाते है।
गुरु की कृपा से देखो हम, ऐसे भजन बनाते है।
पाऊॅ प्रेम तुम्हारा हरदम, दर्शन गुरु के पाऊ मै।
लिखने मे यदि हुई हो गलती, क्षमा सभी से चाहूॅ मै।
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
गुरु कृपा से ही ये प्राणी, भव पार हो जाता है।

चाँदनपुर वाले बड़े बाबा

जब से मैने बाबा तेरे, दर पर आना शुरू किया।
चाँदन गाँव के जिन मंदिर मे, आकर तेरा दर्श किया।
किस्मत खुली हमारी बाबा, बिन मॉगे सब कुछ पाया।
लिखकर तेरी महिमा मोहन, तेरे चरणो मे लाया।
तुम हो परम दयालु स्वामी, तुम सबके दु ख हरते हो।
तेरी महिमा जग से न्यारी, जग के नाथ कहाते हो।

चॉदनपुर वाले बाबा के, जो भी दर्शन करता है।
रहता वह खुशहाल हमेशा, नहीं कष्ट सहता है।
बिन मॉगे सब मिल जाता है, नही इच्छा कोई रहती।
ऐसी महिमा है बाबा की, नहीं कमी घर मे रहती।
दीन दरिद्री तेरे दर पर, आकर राजा बन जाते।
तेरे दर्शन से स्वामी जी, पाप सभी है कट जाते।
तेरी कृपा का फल बाबा, लिखना मुझको आया है।
हुआ खुशहाल हमारा जीवन, जब से तुमको ध्याया है।
भूलूॅ नही तुम्हे मै स्वामी, नित तेरा गुणगान करूँ।
तेरे दर्शन मिले हमेशा, ऐसे हरदम भाव वरूँ।
अनत काल तक कष्ट उठाए, भूल आपको जाने से।
सच्चा सुख नही मिला कही भी, मिला आपको पाने से।
भक्ति मे यदि कमी रही हो, क्षमा आपसे चाही है।
तुम हो स्वामी हम है सेवक, चरणो मे शीश झुकाई है।
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
भक्ति करो सदा स्वामी की, भक्ति से सुख पाता है।

तृष्णा दुःख की जननी हैं

तृष्णा जितनी बढे जीव की, उतना ही दु ख पाता है।
तृष्णा के वश होकर प्राणी, भूल स्वय को जाता है।
तृष्णा रूपी खड्डा गहरा, नही नाप हम सकते है।
तृष्णा को कम करके ही हम, सच्चा सुख पा सकते है।
तृष्णा के वश होकर भैया, जीव महादु ख पाते है।
दास बने जो तृष्णा के वो, नरक द्वार मे जाते है।
तृष्णा कैसे दु ख देती है, आज तुम्हे बतलाता हूँ।
लेना पढकर शिक्षा इससे', गुण मुनियो के गाता हूँ।
एक गॉव मे इक व्यक्ति था, नहीं वो मंदिर जाता था।
तृष्णा नागिन के वश होकर, धर्म नही मन लाता था।

नहीं सुनी जिनवाणी उसने, नही आत्म को जाना था।
खाने पीने मौज उड़ाने मे, सुख उसने माना था।
सगति नहीं की सद् गुरुओ की, नहीं दान वो करता था।
पर मे दृष्टि रखकर अपनी, समय वो पूरा करता था।
पैसा बहुत लगाकर उसने, सुदर महल बनाया।
कूलर पखे लगाके उसमे, मन मे हर्ष मनाया।
मोटर कार खरीदी उसने, वीडीओ भी मॅगवाया।
नहीं मिटी थी तृष्णा अब भी, फ्रिज भी एक मॅगाया।
तृष्णा रूपी डाकिन ने भई, उस पर रग जमाया था।
करके वश मे उसको अपने, अपना दास बनाया था।
तृष्णा नागिन के वश हो वह, कही घूमने जाता है।
कपडे धोने की मशीन वो, साथ मे लेकर आता है।
कपडे धोने लगा एक दिन, नहि स्विच को बद किया।
हाथ डालकर लगा घुमाने, करट हाथ मे उसे लगा।
पकड लिया बिजली ने अब तो, मरते दम तक नही छोडा।
निकल गई जब सॉस रे भैया, तब बिजली ने उसे छोडा।
तृष्णा नागिन के वश होकर, अपनी जान गॅवाई है।
मरकर पहुॅचा नरक द्वार मे, भारी विपदा पाई है।
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
दास बने नहि तृष्णा के हम, तृष्णा दु ख की दाता है।

स्वप्न में भी निंदा नहीं करना

देव-शास्त्र-गुरुओ की भक्ति, सच्चे सुख को देती है।
श्रद्धा भक्ति देव गुरु की, मुक्ति निकट ला देती है।
रखने वाले श्रद्धा इनमे, कष्टो से बच जाते है।
निदा करने वाले इनकी, नरक द्वार मे जाते है।
देव-शास्त्र-गुरुओ की निदा, नही स्वप्न मे करना।
जितनी ज्यादा हो सकती हो, श्रद्धा भक्ति धरना।

श्रद्धा ही भगवान बनाती, श्रद्धा सुख उपजाती है।
सच्ची श्रद्धा पापी को भी, भव से पार लगाती है।
अजन भी बन गया निरजन, श्रद्धा धर्म मे लाने से।
पाप सभी कट जाते भैया, देव गुरु को ध्याने से।
देव गुरु को भूल के प्राणी, भारी कष्ट उठाता है।
चौरासी मे फिरे भटकता, सच्चा सुख नहि पाता है।
एक व्यक्ति की सुनो कहानी, लिखकर तुम्हे सुनाता हूॅ।
करते निदा जो मुनियो की, उनकी कथा सुनाता हूॅ।
एक व्यक्ति था एक गॉव मे, दूर धर्म से रहता था।
निदा करके ऋषि-मुनियो की, मन अपने हर्षाता था।
नही धर्म को जाना उसने, नहि मुनियो के गुण देखे।
जिन्हे भटकना है नरको मे, वो निदा इनकी करते।
जैसे करते कर्म आज हम, वही उदय कल आते है।
दुष्कर्मो के कारण ही तो, जीव नरक मे जाते है।
करते करते पाप कभी तो, घडा पाप का भरता है।
निदा करने वाले का तुम, सुनो हाल क्या होता है।
निदा करता था खुश होकर, धर्म नही मन लाने से।
कैसा हाल हुआ है उसका, निदा मुनि की करने से।
करके निदा मुनि की इक दिन, स्टेशन पर जाता है।
चलती चलती गाडी मे वो, भैया चढ नहि पाता है।
नही चढ पाया गाडी मे वो, पटरी पर गिर जाता है।
हाथ पैर कट जाते उसके, श्वास बद हो जाता है।
ऐसा हाल हुआ है उसका, धर्म नही मन धरने से।
कितनी बुरी दशा हुई है, निदा मुनि की करने से।
नही उठाने वाला कोई, चीलो का वो ग्रास हुआ।
मुनि निदा के कारण भैया, नरक गति मे वास हुआ।
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
ऋषि-मुनियो की भक्ति करके, गीत प्रभु के गाता है।

ज्योति कालोनी पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

स्वर्गो सा आनद छाया है, भगवान स्वर्ग से आए है।
पच कल्याणक देखने हम सब, आज यहॉ पर आए है।
कितना आनद बरस रहा है, कितनी रौनक आई है।
मुनिवर व माता के दर्शन, करने जनता आई है।
ज्योति कालोनी की चर्चाएँ, देव स्वर्ग मे करते हैं।
मुनिश्री की अमृतवाणी, जहॉ लोग नित सुनते है।
क्या कहते है देव स्वर्ग मे, ध्यान लगाकर सुन लेना।
भला यदि चाहो तुम अपना, धर्म मार्ग अपना लेना।
भारत देश के अदर भैया, दिल्ली नगरी प्यारी है।
ज्योति कालोनी सुदर उनमे, सब कालोनी मे न्यारी है।
वातावरण है शात वहॉ का, धर्मी वहॉ की जनता है।
हर धर्म का मान वहॉ पर, जिन धर्म मे गहरी श्रद्धा है।
पुण्य के बादल इस नगरी मे, हरदम छाए रहते है।
धर्म कार्य यहाँ होते रहते, ऋषि-मुनि सदा विहरते है।
देख यहॉ की धर्म भावना, मुनि यहॉ पर आते है।
मुनियो के दर्शन तो भैया, किस्मत वाले पाते है।
विशेष पुण्य का उदय रे भैया, ज्योति कालोनी का आया।
उसी पुण्य का भागी होने, मोहन भी दौडा आया।
कुमुद नदी मुनिश्री पधारे, पंडित जी यहॉ आए हैं।
शिखरचद है नाम इनका, प्रतिष्ठाचार्य कहाए है।
बचपन से ही मैने इनका, आशीर्वाद है पाया।
जिएँ हजारो साल मुनिवर, यही प्रभु से है चाहा।
जहॉ भी जाते पूज्य मुनिवर, फूल चमन मे खिल जाते।
हित मित प्रिय वाणी मे ये, महत्व धर्म का समझाते।
शाहदरा क्षेत्र वालो ने इनका, प्रेम बहुत पाया है।
इनके आशीर्वाद से भैया, आनद यहॉ पर छाया है।
हर्ष सम्राट की महिमा न्यारी, नही लिखी मुझसे जाती।

इनके दर्शन करने से तो, बिगडी किस्मत बन जाती।
बिगडी किस्मत बनी हमारी, बिन मॉगे सब कुछ पाया।
इनकी सेवा करने से तो, जीवन मे आनद आया।
मात पिता जो बने प्रभु के, उनको नमन हमारी है।
ऐसे महाजनो की सेवा, किसको नही प्यारी है।
सेवा सदा करूँगा उनकी, सेवा का फल पाया है।
सच्ची श्रद्धा का फल देखो, मन हर्षित हो आया है।
ज्योति कालोनी की धर्मी जनता, धर्म मे आगे रहती है।
साधू सतो की ये सेवा, सच्चे मन से करती है।
पाया प्रेम इन्ही का हमने, आशीर्वाद भी पाया है।
इनका प्रेम ही भैया हमको, खींच यहॉ पर लाया है।
चाहूँ आशीर्वाद तुम्हारा, दर्शन प्रभु के नित चाहूँ।
देख यहॉ का दृश्य मनोहर, अपना भाग्य सराहूँ।
लिखने मे यदि हुई हो गलती, मोहन माफी चाहेगा।
ज्योति कालोनी के मंदिर, आ आकर रम जाएगा।
वीर प्रभु जी यहॉ विराजे, इनके दर्शन कर हर्षाएगा।

धर्मभूषण जी महाराज का सोनीपत से गन्नौर नगर में पदार्पण। उस समय लिखा भावः—

सोनीपत से चलकर गुरुवर, गन्नौर नगर मे है आए।
देख यहॉ पर ठाठ धर्म के, मोहन भैया हर्षाए।
ये सब माया है गुरुवर की, गुरु महा उपकारी है।।
इनके चरण कमल मे भैया, सौ सौ नमन हमारी है।
नाम धर्मभूषण है इनका, धर्म की वर्षा करते है।
हित मित प्रिय वाणी मे ये, नित ज्ञान की वर्षा करते है
इनकी कृपा से ही हम तो, आज यहॉ पर आए है।
करने दर्शन श्री गुरुवर के, शाहदरा से आए हैं।
चरण जहाँ पड़ जाते गुरु के, धरती पावन हो जाती।

जगल मे हो जाता मगल, बिगडी किसमत बन जाती।
बहरे सुनने लग जाते है, अधे ऑखे पा जाते।
मुझ जैसे बुद्धू प्राणी भी, देखो भजन बना जाते।
पुस्तक पॉच लिखी है मैने, ये सब तुमरी माया है।
तुमरी कृपा का ही फल है, प्रेम तुम्हारा पाया है।
स्कूल गन्नौर नगर का देखो, गुरु कृपा से बन पाया।
कुलभूषण से धर्मभूषण भी, नाम गुरु ने यहीं पाया।
इसी धरा पर पूज्य गुरु ने, मुनिवर का पद पाया है।
पूज्य गुरु का स्वर्गो मे भी, देवो ने यश गाया है।
पूज्य गुरु की महिमा लिखने की, बस मेरी ही आदत है।
नहीं प्रशसा चाहे गुरुवर, नहि यश की कोई चाहत है।
कितनी रौनक हुई यहॉ पर, पूज्य गुरु के आने से।
पाया प्रेम तुम्हारा मैने, गन्नौर नगर मे आने से।
लिखने मे यदि हुई हो गलती, गुरुवर गलती माफ करो।
जल्दी जल्दी आऊँ यहॉ पर, आशीर्वाद प्रदान करो।
आशीर्वाद तुम्हारा पाकर, सभी जगह मे जाता हूँ।
पूज्य गुरुवर धर्मभूषण को, अपना शीश झुकाता हूँ।

प्रभु से माँगो

मॉगो भैया खुलकर माँगो, मुँह मॉगा मिल जाएगा।
वीतरागता मॉगो भैया, कष्ट नही तू पाएगा।
धन वैभव हम मॉग प्रभु से, मन मे खुशी मनाते है।
एक लडका भी दे दो हमको, ऐसे भाव बनाते है।
तरह तरह की भौतिक वस्तु, मॉग प्रभु से लेते है।
निज आतम को भूल गए जो, वो ही ऐसा करते है।
असली माल खजाना तजकर, नकली माल को मॉग रहे।
बढ़े ससार हमारा जिनसे, ऐसी वस्तु माँग रहे।
अनत काल से इस प्राणी ने, कष्ट अनेको पाएँ हैं।

जन्म मरण के दु ख सहकर भी, नहीं समझ कुछ पाए है।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित की, खान प्रभु जी रखते हैं।
तीन लोक के स्वामी है वो, ध्यान सभी का रखते हैं।
जो भी प्राणी सच्चे मन से, भक्ति प्रभु की करता है।
नही इच्छाएँ रहती उनको, सच्चा सुख वो वरता है।
भूल स्वय को जाने से ही, इच्छाओ के दास हुए।
मेहनत काफी करने पर भी, रोटी के मोहताज हुए।
प्रभु की भक्ति करे बिना हम, सच्चा सुख नही पाएँगे।
चाहे कितनी भी दौलत हो, सुखी नही रह पाएँगे।
सुख से रहना चाहत हो तो, देव गुरु के दास बनो।
करके भक्ति देव गुरु की, आतम का कल्याण करो।
माँगो ज्ञान की किरणे प्रभु से, माँगो सम्यक् ज्ञान।
सम्यक् ज्ञानी का ही भैया, होता है कल्याण।
तुमरे चरणो मे स्वामी जी, मनुआ मेरा लगा रहे।
चाहे कितनी पडे मुसीबत, धर्म पै ये नित अडा रहे।
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
बन जाऊँ मै प्रभु तुम जैसा, गीत तुम्हारे गाता है।
भाव यही लिखने का मेरा, बिन माँगे प्रभु देते है।
भव्य जीव भक्ति की, मूरख दौलत नौका खेते है।

दो बेटे : एक दृष्टांत

एक बाप के थे दो बेटे, दोनो हिल मिल रहते थे।
भावो मे था अतर उनके, वैसे सग विचरते थे।
दोनो बेटो का किस्सा मै, गाकर तुम्हे सुनाता हूँ।
जैसा सतो ने बतलाया, वैसा तुम्हे बताता हूँ।
बडे बेटे का नाम था रामू, दूजा श्याम कहाता था।
श्याम कहाने वाला बेटा, घर घर आदर पाता था।
रामू नटखट बेटा था वह, नित्य सिनेमा जाता था।

पी मदिरा रामू रात्रि को, घोर नशे मे रहता था।
मात पिता का करे अनादर, दु:ख उनको पहुँचाए।
भाई-बहन को कुछ ना समझे, पीडा दे इठलाए।
जो भी पास पडौसी आता, वचन बुरे वो कहता था।
कटु वचन कहकर नित दिन, पाप बध करता था।
पाप बंध नित कर करके ही, वह जीवन पूरा करता था।
देव गुरु की कभी नहीं वह, विनय भाव से करता था।
आगे सुनो श्याम का किस्सा भी, तुमको बतलाता हूँ।
ऐसा बेटा मिले सभी को, विनय प्रभु से करता हूँ।
उस बेटे का नाम जगत मे, दूर दूर तक नामी था।
धर्म-कर्म के कारण श्यामू, विद्वानो मे नामी था।
पूजा-पाठ प्रभु की श्यामू, नित्य नियम से करता था।
करके श्रद्धा से पूजन को, काम बाद मे करता था।
चौबीसो घटे वह मन मे, नाम प्रभु का रखता था।
करते करते काम घरेलू, ध्यान उसी का धरता था।
माता-पिता के चरण श्यामू, सच्चे मन से छूता था।
चरण वदना करके उनकी, नित सामायिक करता था।
विनय सभी गुरुओ की करके, विद्या पढ़ने जाता था।
जो भी विद्या पढी श्यामू ने, मन मे धरता जाता था।
जो भी मित्र श्यामू से मिलता, आदर उसका करता था।
आदर सबका कर करके ही, पुण्य बध वह करता था।
सुनो अत मे राम श्यामू की, कौन गति होती है।
भले-बुरे कर्मो की करनी, सदा भोगनी होती है।
मदिरा पीकर रामू रात को, एक दिना घर जाता है।
ट्रक के नीचे आया रामू, पता नही फिर पाया है।
जैसे भाव थे रामू जी के, वैसे निमित्त मिल जाते है।
नरक गति को पाकर रामू, महा दु:खो को पाते है।
पूजन करके सुबह को श्यामू, मुनि दर्शन को जाता था।

मुनि दर्शन करके इक दिन, काम पर अपने जाता था।
देखा श्याम ने वहाँ पै जाके, पोस्टर एक लगा पाया।
पंच कल्याणक हो रहा नगर मे, ऐसा उसने लिखा पाया।
गया श्यामू वापिस नगर मे, नृत्य प्रभु को दिखलाया।
इसी बीच मे श्यामू जी का, चलता श्वास रुका पाया।
जैसे भाव थे श्यामू जी के, वैसे निमित्त मिल जाते है।
धर्म ध्यान के कारण श्यामू, स्वर्ग सुखो को पाते है।
भाव यही है इसका मोहन, विनय धर्म की करना।
मात पिता के चरण को छूकर, सेवा उनकी करना।

श्री 108 धर्मभूषण जी महाराज का उनके अशोक विहार से सोनीपत प्रस्थान के अवसर पर

कल तक रौनक थी जो यहाँ पर, आज नहीं वो पाई है।
कारण जब मैने पूछा तो, बात समझ मे आई है।
पता लगा जब मुझको भैया, पूज्य गुरुवर जाएँगे।
सुनकर दिल भर आया मेरा, अब कैसे उन्हें मनाएँगे।
कोई बात नहीं गुरुवर जी, अब तुम सोनीपत जाओगे।
देख वहाँ की भक्ति-भावना, भूल हमे तुम जाओगे।
नही भूलने देगे हम सब, यह विश्वास हमारा है।
वापस तुमको लाएँगे हम, कहता जन जन सारा है।
सेवा नहि कर पाए कुछ भी, सब दिल्ली वाले कहते है।
तुम चरणो की धूलि पाने, हम रामनगर से आते है।
शाहदरा और दिल्ली वाले मिल, हम पास तुम्हारे आएँगे।
चातुर्मास तुम्हारा गुरुवर, सब मिल यही कराएँगे।
भक्ति इतनी करेगे तुमरी, तुम्हे यहाँ आना होगा।
देख हमारी भक्ति भावना, चातुर्मास करना होगा।
स्वर्गो से भी देव गुरुवर, इस धरती पर आएँगे।
क्या खूबी है इस धरती मे, वो भी उन्हे बताएँगे।

धर्म भावना बहुत यहाँ पर, धर्मी सब नर नारी हैं।
कैलाश नगर के बाद गुरुवर, अब तो हमरी बारी है।
भक्ति इतनी करेगे तुमरी, जितना सागर मे पानी।
धर्मभूषण है नाम तुम्हारा, मुनिवर तुम ज्ञानी ध्यानी।
सोनीपत मे जाकर गुरुवर, निर्णय स्वय तुम कर लेना।
जहाँ की भक्ति होगी ज्यादा, चातुर्मास वहाँ कर लेना।
सिर्फ भक्ति है हम पै गुरुवर, और नही कुछ लाए है।
भूल चूक जो हुई हो हमसे, क्षमा माँगने आए है।
क्षमा हमे तुम कर दो गुरुवर, गुरु हमारे सच्चे है।
ये ही हमरे मात-पिता है, हम तो इनके बच्चे है।

चार बेटे : एक दृष्टांत

एक बाप के बेटे चार थे, चारो आनद करते थे।
चारो आनद कर करके ही, जीवन पूरा करते थे।
बडे बेटे की सुदर औरत, सारे ब्याह कर लाए थे।
ला करके औरत को घर मे, आनद बहुत मनाए थे।
शादी को थोडे दिन बीते, औरत मन क्या लाती है।
सिखा सिखा कर मर्द को अपने, मन सबके फडवाती है।
कहती सबसे मर्द मेरा ही, कमा-कमा कर लाता है।
मेहनत चौबीस घटे करके, पेट सभी का भरता है।
इसी बीच मे सारे भैया, मिलकर निर्णय करते है
कर दो पिता अलग हम सबको, अपना भाग्य परखते है।
होशियार थे बहुत पिता जी, उनके मन को जान गए।
करके सुमिरण वीर प्रभु का, लडको से ये वचन कहे।
बेटा, सुन लो बात मेरी तुम, एक बात मै कहता हूँ।
सारे मिलकर करो यात्रा, अलग बाद मे करता हूँ।
पितृ आज्ञा सभी बेटो ने, खुशी-खुशी स्वीकार करी।
हलवा पूरी और मिठाई, बाँध यात्रा गमन करी।

परम पूज्य तपोनिधि निग्रन्थ दि मुनि श्री 108 उपाध्याय ज्ञान सागर जी महाराज।

चलते-चलते सभी कुटुबी, आ पहुँचे उस तीर्थ पर।
दर्शन किए प्रभु के पहले, दीप जलाया फिर मिलकर।
इससे आगे सुनो कथा मै, गाकर तुम्हे सुनाता हूँ।
जैसा जिसका भाग्य था भाई, वैसा तुम्हे बताता हूँ।
बडे पुत्र को बुला पिता जी, आज्ञा उसको देते है।
देकर बीस रुपैए उसको, लाने को कुछ कहते है।
लेकर बीस रुपैए लडका, नगर बीच मे जाता है।
बना भाग्य से उनके अपने, लेकर चालीस आता है।
इसी तरह से पुत्र दूसरा, नगर बीच मे जाता है।
लगा के सट्टा नगर बीच मे, पैतालीस कर लाता है।
बारी आई तीजे जी की, तीजे जन्म से अधे थे।
सुमरण करके वीर प्रभु का, पत्नी साथ ले चलते थे।
चलते-चलते अधे जी को, पैर मे ठोकर लगती है।
प्रभु सुमरण के कारण ही, थाल अशर्फी मिलती है।
इसी तरह से सुत चौथे को, बुला पिताजी कहते है।
बीस रुपए देकर उसको, लाने को कुछ कहते है।
लेकर गोला, चावल, किशमिश, पूजन पाठ रचाता है।
श्रद्धा भक्ति से प्रभु जी की, पूजन करता जाता है।
पूजन करते देख देव भी, स्वर्गो मे शरमाते है।
स्वर्गो से लाकर माल बहुत सा, पिता पास पहुँचाते है।
देख माल को सभी कुटुबी, मन ही मन हरषाते है।
उसी माल को खाकर सारे, अपनी भूख मिटाते है।
इसी बीच मे चौथा बेटा, पूजन कर आ जाता है।
पूजन करके पिता को अपने, चरणो शीश झुकाता है।
बेटा कहता पिता से अपने, गलती मेरी माफ करो।
लेके कुछ भी नही आया हूँ, भूल चूक सब माफ करो।
सुनकर ऐसा सभी कुटुबी, चरणो मे गिर जाते है।
चरणो मे गिर करके उसके, रो-रो नीर बहाते है।

उसी समय से सारे भैया, पूजन मे लग जाते है।
अलग-अलग का भाव था मन मे, भूल उसे वे जाते है।
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
पूजन करने वाला प्रभु की, कभी न खाली जाता है।
प्रभु पूजन से भाग्यहीन भी, धनिक शीघ्र हो जाता है।
पाकर के सुख इस दुनियाँ मे, मुक्ति मदिर पाता है।

दृष्टांत : माँ-बेटे का

अपनी माँ के एक पुत्र था, सुदर बडा-सा प्यारा।
पास मे जो भी था माता के, सारा उस पर वारा।
सही इसान बनाया उसको, सच्ची राह दिखाई।
वृद्धपने मे बने सहायक, लौ थी यही लगाई।
बुढिया माँ को नही ज्ञात था, इक दिन ऐसा होगा।
पुत्र तेरे ही हाथो तेरा, खून एक दिन होगा।
इससे आगे सुनो कथा, मै लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
इश्क बुरा है इस दुनिया मे, धर्म से प्रीति लगाता हूँ।
सुदर वस्त्र पहन के लडका, एक दिवस कालिज जाता।
इश्क लगा मडराने सिर पर, लडकी से टकरा जाता।
बोला, तुमसे करूँगा शादी, चाहे कुछ भी हो जावे।
नही, मरूँगा अभी यहाँ पर, धरती अबर हो जावे।
सोच समझकर लडकी बोली, शादी तभी रचाऊँगी।
शर्त मेरी तू कर दे पूरी, मै तेरी हो जाऊँगी।
बोला, लडका मदहोशी मे, शर्त मुझे बतला दीजे।
अभी शर्त पूरी करता हूँ, शादी मुझसे ही कीजै।
लडकी बोली अपनी माँ का धड, जब तक नही लाएगा।
नही बनूँगी तेरी मै तो, ब्याह नही रच पाएगा।
धड जब तू लाकर दे देगा, मै तेरी बन जाऊँगी।
नई नवेली बनकर तेरी, हरदम मौज उडाऊँगी।

मदहोशी मे चला भटकता, घर पर अपने पहुँचा।
नहीं आवाज लगाई माँ को, नहीं मन मे कुछ खटका।
छुरा निकाल जेब से उसने, माँ की गर्दन काट लई।
बॉध जोडकर कपड़े मे फिर, जाकर उस लडकी को दी।
बोली लडकी रे नालायक, तू मेरा नहीं हो सकता।
मॉ का जो नही हुआ जगत मे, मेरा कैसे हो सकता।
फूटी किस्मत को ले अपनी, धड को ले वह लौट चला।
छाया नशा जो भी था उस पर, वो भी सारा उतर चला।
चलते-चलते ठोकर लगकर, मदहोशी गिर जाता है।
गिरते ही धड मे से भैया, शब्द सुनो क्या आता है।
सच बतला दे मेरे बेटे, चोट तुझे तो नहीं आई।
मरी अभागन छोड बेटे को, चोट देख मै नहि पाई।
उधर पुलिस को लगा पता, जब माँ का खून किया उसने।
वारट लेकर घर आ पहुँची, बेडी डाली झट उसने।
जज साहब बोले मुलजिम से, फॉसी तुम्हे चढ़ाऊँगा।
मॉ का खून किया है तुमने, तुमको मजा चखाऊँगा।
बुला गवाह तेरा हो, तुझको आज छुडाएगा।
वरना तू अब तो जल्दी ही, फाँसी पर चढ जाएगा।
देख पुत्र की हालत माता, धड मे से यह कहती है।
नहि मुलजिम बेटा है मेरा, न कोई गलती इसकी है।
सुनी बात जब मॉ की जज ने, मुलजिम को है रिहा किया।
खुली हथकडी हाथ से उसने, वापस घर को भेज दिया।
अत मे सुन लो बेटा मॉ से, सिर धुन-धुन कया कहता है।
मॉ सम कोई नहीं जगत् मे, रो-रो नीर बहाता है।
जो भी सज्जन अपनी मॉ का, कहना मन से मानेगे।
दुनिया वाले उनको मोहन अच्छे बच्चे जानेगे।
सुनो अत मे सुनने वालो, मोहन तुम्हे सुनाता है।
माँ की इज्जत करने वाला, आनद खूब मनाता है।

दृष्टांत : एक चोर का

माल चोरी का मोरी मे का, किस्सा एक सुनाऊँ।
चोरी करना महा पाप है, गुण मुनियो के गाऊँ।
आया जब चोरी का पैसा, मन मे खुशी हुई भारी।
पी शराब जुआ खेला और, वेश्या से जोडी यारी।
धर्म कर्म सब भूल गया, चोरी कर मतवाला।
फल इसका क्या होगा मूरख, नही बतानेवाला।
तेरी करनी तुझको भरनी, शास्त्र हमे बतलाते है।
एक चोर का लिखकर किस्सा, मोहन तुम्हे सुनाते है।
एक गॉव मे एक चोर था, चोरी वो नित करता था।
चोरी करते-करते भी वो, दिन भर भूखा मरता था।
दुनिया भर की बुरी आदते, उसके अदर छाई थी।
लूटी इज्जत मॉ-बहनो की, धर्म से प्रीति हटाई थी।
करते-करते पाप कभी तो, घडा पाप का भरता है।
पाप कर्म के कारण प्राणी, चौरासी मे रुलता है।
कैसे फूटा घडा पाप का, क्या हालत हो जाती है।
जिनवाणी ही जग मे भैया, सच्चा मार्ग बताती है।
पॉच हजार रुपए की चोरी, चोर एक दिन कर लाया।
मिला हजार रुपए उसमे, तो सुदर एक भैस लाया।
दूध नही पिया था अब तक, पाप उदय उसका आया।
लगा रोग भैस को ऐसा, नही समझ कोई पाया।
पैसा जो भी था उस पर वो, सभी खर्च हो जाता है।
इतना खर्च किया पैसा वो, कर्जदार हो जाता है।
करके कर्जा भी वह अपनी, भैस ठीक नहि कर पाया।
पाप कर्म कुछ किए थे ऐसे, जिनका फल उसने पाया।
उठा एक दिन सोकर मूरख, भैस मरी वो पाता है।
देख भैस को अब तो भैया, रो-रो नीर बहाता है।
पाप कर्म मे ना करता तो, आज उदय मे नही आते।

पाप कर्म के कारण प्राणी, नरक गति को है पाते।
देख चोर को सभी पडौसी, शिक्षा उससे लेते है।
चोरी करना महा पाप है, मन मे अपने कहते है।
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
चोरी करना महा पाप है, गुण मुनियो के गाता है।
चोरी नही करेगे हम सब, पूजन पाठ रचाएँगे।
रूखी सूखी खाकर हम तो, वीरा के गुण गाएँगे।

ईर्ष्या के कारण ही मानव दुःखी हैं

ईर्ष्या रूपी भट्टी मे ये, मानव कैसा झुलस रहा।
देख दूसरे को ऊँचा यह, अदर अपने सुलग रहा।
ईर्ष्या जिसके हृदय मे होती, पतन उसी का होता है।
ईर्ष्या करने वाला भैया, बीज नरक के बोता है।
ईर्ष्या के कारण मानव के, गुण क्षीण हो जाते है।
ईर्ष्या की यह एक कथा, हम लिखकर तुम्हे सुनाते है।
चार श्रेष्ठ विद्वान् एक दिन, राज-सभा मे जाते है।
चारो उच्च कोटि के वक्ता, ज्ञानी वो कहलाते है।
अतिथि सत्कार किया राजा ने उन चारो विद्वानो का।
कितनी विद्वता है इनमे, यही जानना चाहा था।
पहले से राजा ने पूछा, विद्वान दूसरा कितना है।
उत्तर दिया भूप को उसने, कोरा गधा ही जितना है।
दूजे से नृप वर ने पूछा, विद्वान तीसरा कैसा है।
उत्तर मिला नृपति को उससे, यह कोरा घोडा जैसा है।
विद्वान तीसरे से जब पूछा, विद्वान ये चौथा कैसा है।
उत्तर मिला नृपति को उससे, यह तो ऊँट ही जैसा है।
चौथे से नृपवर ने पूछा, पहला कितना महान है।
उत्तर मिला नृपति को उससे, यह बिलकुल बैल समान है।
सुनकर बाते उन चारो की, नृपति चकित हो जाता है।

खाने मे उन चारो को वह, सुन लो क्या भिजवाता है।
पहले को तो चावल भूसी, दूजे को दाना प्यारा।
तीजे के लिए नीम के पत्ते, चौथे को चारा आया।
देख के ऐसा भोजन चारो, विद्वान चकित हो जाते है।
क्रोधित होकर वो चारो, फिर नृप से यो फरमाते है।
कैसा भोजन लाए हो, कैसे हम इसको खाएँगे।
भोजन नहीं विद्वानो का ये, इसको पशु ही खाएँगे।
सुनकर उनकी बाते नृपवर, उनसे यो फरमाया है।
जैसा तुमने दिया है परिचय, वैसा भोजन आया है।
सुनकर चारो नृप की बाते, मन ही मन शरमाते है।
हुए तिरस्कृत राजा से वे, वापस घर पै आते है।
थे चारो विद्वान वो भैया, लेकिन मन मे ईर्ष्या थी।
ईर्ष्या के कारण चारो ने, आपस मे निदा की थी।
ईर्ष्या नही इनमे होती तो, चारो का आदर होता।
उच्चराज पद मिलता इनको, रहने को बॅगला मिलता।
ईर्ष्या छोडे धर्म कमाएँ, सुख-दु ख मे हम आएँ काम।
पर-गुण के प्रेमी बनकर हम, जग मे कीर्ति गहे अविराम।
बैर भाव का करे त्याग हम, निज आतम मे रमण करे।
छोडे ईर्ष्या रूप अगिन को, सौहार्द मित्र व्यवहार करे।
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
ईर्ष्या का परित्याग करे हम, अहिसा पथ अपनाता है।

जिनपूजा की महिमा

जिन पूजन की महिमा भैया, लिखकर तुम्हे सुनाता हूॅ।
करना निश दिन श्रीजिन पूजा, करके खुशी मनाता हूॅ।
मन वांछित फल मिलता भैया, श्रीजिन पूजन करने से।
पाप सभी कट जाते इक दिन, न्हवन प्रभु का करने से।
न्हवन प्रभु का जब होता है, चहुँ दिशि आनद छाता है।

देवलोक से देव भी आकर, दर्श प्रभु का पाता है।
उदय पुण्य का आता है जब, पाप नाश हो जाता है।
पूजन श्रीजिन की करने से, रक राजपद पाता है।
आनद मंगल होता जीवन, श्रीजिन पूजन करने से।
नही कमी कुछ रहती घर मे, सच्ची भक्ति करने से।
आतम को मिलती है शाति, श्रीजिन पूजा करने से।
रोग नही रहते है तन मे, न्हवन प्रभु का करने से।
बुद्धि भी हो जाती निर्मल, न्हवन प्रभु का करने से।
सच्चा सुख मिलता है भैया, श्रीजिन पूजा करने से।
एक व्यक्ति की सुनो कहानी, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
करता था जो पूजन प्रभु की, उसकी कथा सुनाता हूँ।
एक गॉव मे एक व्यक्ति था, काम दूध का करता था।
पूजन करता था निश दिन वो, हरदम सुखी विचरता था।
श्रीजिन के चरणो मे वो तो, श्रद्धा गहरी रखता था।
जिन पूजन है उत्तम जग मे, भाव हृदय मे धरता था।
एक दिवस उस व्यक्ति का, सैपिल भर लिया जाता है।
सैंपिल दूध का उसके भैया, पास नहि हो पाता है।
हुआ मुकदमा जारी उस पर, आगे अब क्या होता है।
सुनो ध्यान से कान लगाकर, धर्म सहाई होता है।
बीस हजार रुपए उस पर, जुर्माना हो जाता है।
श्रीजिन की पूजा करने से, बिगडा सब सध जाता है।
श्रीजिन की पूजा करने वो, व्यक्ति मदिर जाता है।
श्रद्धा भक्ति से श्रीजिन की, पूजा करता जाता है।
पूजन करते करते देखो, क्या से क्या हो जाता है।
इसी बीच मे जज साहब भी, दर्शन करने आता है।
जज साहब जी देख उसे तब, मन मे कुछ हैरान हुए।
देखकर उसकी पूजा-भक्ति, उनके ऐसे भाव हुए।
कैसिल किया मुकदमा उसका, जुर्माना भी नही किया।

उसको अच्छा व्यक्ति कहकर, जज ने खुद धन्यवाद दिया।
इज्जत करता है जज उसकी, श्रीजिन पूजा करने से।
जुर्माना भी नही हुआ है, पूजा प्रभु की करने से।
पढकर इस कविता को भैया, शिक्षा इससे ले लेना।
श्रीजिन की पूजा करके नित, जीवन सफल बना लेना।
श्रीजिन की पूजा करके तुम, सच्चे सुख को पाओगे।
आनंद मगल होगा जीवन, कष्टो से बच जाओगे।
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
श्रीजिन पूजन करना निशदिन, करके हर्ष मनाता है।

ऋषि-मुनियों की संगति का फल

ऋषि-मुनियो की सगति करना, सच्चे सुख को पाएगा।
श्रद्धा-भक्ति कर मुनियो की, पद मुनियो का पाएगा।
ऋषि-मुनियो की सगति भैया, सच्चे सुख को देती है।
पाप-कर्म का करे नाश वो, ज्ञान की किरणे देती है।
पाप सभी कट जाते भैया, दर्शन इनके करने से।
आनद मगल होता जीवन, सगति इनकी करने से।
ऋषि-मुनियो के करना दर्शन, करके हर्ष मनाना।
देव शास्त्र गुरु पूज्य जगत मे, इनको नही भुलाना।
इनकी महिमा न्यारी भैया, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
एक बुढिया बाई की तुमको, लिखकर गाथा गाता हूँ।
एक बुढिया थी एक गॉव मे, धर्म नही मन लाती थी।
निश मे भोजन करती थी वह, जिन मंदिर नही जाती थी।
ऋषि-मुनियो का आदर करना, नहि बुढिया ने जाना था।
खाने पीने मौज उडाने मे उत्तम, सुख माना था।
धन दौलत को बडा मानकर, बुढ़िया समय बिताती थी।
तीर्थक्षेत्रो की वदना का, भाव नही मन लाती थी।
सारा जीवन बीता उसका, वैभव मे सुख पाने मे।।

पौरुष थक गए उस बुढिया के, पूर्ण बुढापा आने मे।
उस बुढिया के गॉव मे भैया, मुनिराज इक आते है।
धर्म कर्म की सच्ची बाते, जीवो को सिखलाते है।
सुनकर महिमा मुनिराज की, बुढिया भी वहॉ जाती है।
करके दर्शन मुनिराज के, अपना भाग्य सराहती है।
कहती है बुढ़िया मन अपने, वह कहके पछाताती है।
खोया जीवन व्यर्थ मे अपना, रो रो नीर बहाती है।
नियम दिए मुनिवर ने उसको, देखो अब क्या होता है।
एक धर्म है जो जीवो के, साथ अत मे जाता है।
निश का भोजन त्याग कराया, जिनदर्शन नियम दिलाया है।
नवकार मत्र की जाप को देकर, धर्म का महत्व बताया है।
लेकर नियम चली वह बुढिया, घर पै अपने आती है।
करती कामकाज वह फिर भी, मत्र को जपती जाती है।
जपते जपते नवकार मत्र को, आयु पूर्ण हो जाती है।
मरकर गई स्वर्ग मे बुढिया, सबको सबक सिखाती है।
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
ऋषि-मुनियो की भक्ति करके, जीव महासुख पाता है।

जिनवाणी किन्हें नहिं सुहाती है

सुनो ध्यान से मेरे भैया, सच्ची बात सुनाऊॅ।
जिन बातो को भूल गए हम, वे बाते बतलाऊॅ।
सुखी नही इसान आज कल, भूल धर्म को जाने से।
जिनवाणी मे नही लगता मन, अशुभ कर्म के आने से।
अशुभ कर्म ही इस प्राणी को, नरक द्वार ले जाता है।
शुभ कर्मो के कारण प्राणी, स्वर्ग सुखो को पाता है।
एक बाप के है दो बेटे, दोनो का मन न्यारा है।
एक होटलो मे नित जाता, धर्म एक को प्यारा है।
सुनता गाने एक फिल्म के, एक सुखद जिनवाणी को।

एक ज्ञान की बाते करता, एक तके परनारी को।
इक वेश्या के पास मे जाता, एक को तीर्थ प्यारे है।
एक कुगुरु की सेवा करता, एक को सुगुरु प्यारे है।
दोनो का तुम करो फैसला, कौन कहॉ क्या पाएगा।
एक नरक का गामी उनमे, एक स्वर्ग मे जाएगा।
सुनकर कविता को तुम भैया, अपना भाग्य बना लो।
सच्चे सुख को पाना है तो, धर्म मार्ग अपना लो।
धर्म मार्ग पर चलकर प्राणी, सच्चे सुख को पाता है।
जिनवाणी की बाते सुनकर, कष्टो से बच जाता है।
जिनवाणी को सुनने वाले, भव्य पुरुष कहलाते है।
नही सुहाती है ये जिसको, नरको मे वो जाते है।
बीत गई सो बीत गई अब, आगे ध्यान लगाया कर।
जिनवाणी को सुनकर भैया, धर्म मार्ग अपनाया कर।
जिनवाणी को सुनकर ही तू, सच्चे सुख को पाएगा।
शास्त्र-सभा मे नही गया तो, अभव्य जीव कहलाएगा।
जिनवाणी की बाते सुनकर, सोया भाग्य जगा ले।
सयम रूपी पहन के चोला, मुक्ति का पद पा ले।
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
जिनवाणी को सुने सभी हम, सुनकर आनद पाता है।

शिष्य के भाव गुरु के चरणों में

पूज्य गुरु जी दीजिए, हमको शुभ आशीष।
नही और इससे बढकर है, जग मे दूजी चीज।
शुभ आशीष तुम्हारी गुरुवर, बिगडा भाग्य बनाती है।
धर्म मार्ग पर लगा जीव को, शिव मजिल पहुँचाती है।
धर्म मार्ग पर चलकर प्राणी, सच्चे सुख को पाता है।
ऋषि-मुनियो की भक्ति करके, भव-सागर तर जाता है।
मिथ्या-तिमिर भगाकर गुरुवर, दो सयम का बीज।
नही और इससे बढकर है, जग मे दूजी चीज।

गुरुओ की आशीष से, होता बेडा पार।
पूज्य गुरुजी कीजिए, मेरा भी उद्धार।
ज्ञान गुरु ही देते है, गुरु बिन नाही ज्ञान।
ज्ञान गुणो की खान है, सम्यक ज्ञान प्रधान।
विनय गुरु की कीजिए विनय ज्ञान का मूल।
ज्ञान स्वय आ जात है, विनय जहॉ बेतूल।
विनय हमें सिखलाइए, विनय ज्ञान की बीज।
नही और इससे बढकर है, जग मे दूजी चीज।
गुरुवर तुमरी भक्ति कर, अपना भाग्य सराहूँ।
पाकर शुभ आशीष तुम्हारी, भजन बनाकर लाऊँ।
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाए।
श्रद्धा-भक्ति से मुनियो की, अज्ञान दूर हो जाए।

धर्मीजन का आदर करना चाहिए

धर्मीजन का करना आदर, धर्म मार्ग अपनाना रे।
करना नहि निदा धर्मी की, नित जिन मदिर जाना रे।
निदा करते जो धर्मी की, वो पापी कहलाते है।
मरकर जाते नरक द्वार मे, भारी कष्ट उठाते है
धर्मीजन के जीवन मे दु ख, आकर सुख बन जाता है।
करके पापी पाप रात दिन, मन मे खुशी मनाता है।
खुश होकर के कहता पापी, मदिर मे क्या रक्खा है।
धर्मीजन की पापी प्राणी, काट हमेशा करता है।
जहॉ मिले धर्मीजन उसको, देख क्रोध वो करता है।
नही अपने से बडा किसी को, पापी सदा समझता है।
नही पता पापी प्राणी को, पापो का फल पाते है।
पाप रात दिन करने वाले, भारी कष्ट उठाते है।
पाप रात दिन करने वालो, बात हमारी सुन लेना।
भला यदि चाहो तुम अपना, पाप मार्ग को तज देना।
नही निदा करना धर्मी की, कभी भूलकर भाई।

धर्मी जन की सारी दुनिया, करती सदा बडाई।
इक पापी प्राणी की तुमको, लिखकर कथा सुनाता हूॅ।
करता था जो धर्म की निदा, उसका हाल बताता हूॅ।
एक लडका था एक गॉव मे, पापी वो कहलाता था।
करके निदा धर्मी जन की, लडका खुशी मनाता था।
धर्मी जन को देख वो लडका, व्यग हमेशा करता था।
ढोग धर्म को कहकर लडका, सुख का अनुभव करता था।
धर्म की निदा करता था वो, भूल धर्म को जाने से।
कैसी हालत हो जाती है, धर्म को ढोग बताने से।
धर्म को ढोगी कहने वाले, लडके का क्या होता है।
सुनो ध्यान से कान लगाकर, आगे अब क्या होता है।
शादी हो गई उस लडके की, घरवाली घर आती है।
एक ऑख से कानी औरत, लडके के घर आती है।
लडके की पत्नी को भैया, दिल का दौरा पडता था।
कान से बहरी थी वो भैया, दिमाग काम नही करता था।
लडकी सात हुई उसके घर, नही लडका कोई पाया।
बदसूरत थी सातो लडकी, देख उन्हे वो घबराया।
फैक्टरी एक लगाई उसने, रबड का माल बनाने की।
कवि ने कोशिश की है भैया, धर्म का महत्व बताने की।
माल नही बन पाया उसमे, आग वहॉ लग जाती है।
फैक्टरी राख हुई जल करके, पत्नी भी मर जाती है।
नाश हुआ सारा धन उसका, पाप आचरण करने से।
किसमत फूट गई है उसकी, निदा धर्म की करने से।
हाथ पसारे फिरता है वो, घर घर और चौराहो पर।
क्रोध नही करना जीवन मे, कभी धर्म और धर्मी पर।
भाव यही लिखने का मेरा, प्रेम करो भगवान से।
निदा नही करे धर्मी की, शिक्षा ले गुणवान से।
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
धर्मीजन का करके आदर, अपना भाग्य सराहता है।

परम पूज्य गुरुदेव श्री 108 धर्मभूषण जी महाराज के कैलाश नगर में हुए चातुर्मास के अवसर पर उस समय लिखा पत्र।

कैसा स्वास्थ्य तुम्हारा गुरुवर, अब कैसी तबियत रहती है।
तुमरे दर्शन करने की तो, हरदम मम इच्छा रहँती है।
दूर बहुत भी रहकर तुम तो, पास मुझे तो लगते हो।
मेरे हृदय के हो राजा तुम, महा विद्वान कहाते हो।
जहॉ भी जाता हूँ मै गुरुवर, तुमरी चर्चा सुनता हूँ।
परम तपस्वी है श्री गुरुवर, मन मे हरदम गुनता हूँ।
नहि परिग्रह पास तुम्हारे, राग द्वेष नही करते हो।
छोटे बडे सभी को तुम तो, एक समान समझते हो।
नही चिता है रोग की तुमको, तुम तो सच्चे साधु हो।
सब कुछ पाकर छोड दिया सब, धर्मभूषण वीतरागी हो।
भरी जवानी मे गुरुवर जी, तुमने सयम धारा है।
तुम जैसे मुनि सतो का ही, हमको मिला सहारा है।
कठिन से कठिन कार्य गुरुवर, तुम कृपा से बन जाते।
मुझ जैसे बुद्धू अज्ञानी भी, कविताऍ लिख पाते।
पुस्तक पॉच लिखी है मेने, आशीष तुम्हारा पाकर के।
जीवन सुखमय हुआ हमारा, तुम चरणो मे आ करके।
जब से मैने तुम चरणो की, धूलि शीश लगाई है।
सच पूछो तो गुरुवर मुझको, अकल तभी से आई है।
फूल चमन मे खिल जाते है, पापी पावन हो जाते।
तुमरी कृपा से गुरुवर जी, अधे ऑखे पा जाते।
देव गुरु को जो भी ध्याते, सदा सुखी वो रहते है।
कमी नही कुछ रहती उनको, आबाद हमेशा रहते है।
महा भयकर उपसर्ग अनेको, मेरे जीवन मे आए।
देखी जब तुमरी कृपा तो, नही मेरा कुछ कर पाए।
उपसर्ग चले जब वापस देखो, आपस मे क्या कहते है
सुनो ध्यान से कान लगाकर, देखो वो क्या कहते है।

गलत जगह हम आ गए भैया, नही यहॉ हमको आना था।
भूल गए जो गुरु चरणो को, पास उन्हीं के जाना था।
गलती हमने बहुत बडी की, पास मोहन के आ करके।
दास है ये तो धर्मभूषण का, नाम जिन्हो का है जग मे।
मैंने उनसे कहा रे भैया, ठीक जगह तुम आए हो।
नाम है मोहन बुद्धू बोलो, क्या संदेशा लाए हो।
बोले शरमाकर वो, हम तो पास उन्ही के जाते है।
भूल धर्म को जो जाते है, हम उन पर छा जाते है।
देव गुरु के भक्तो पर, उपसर्ग नही हम करते है।
धर्म मार्ग पर लगे हुओ की, हम तो रक्षा करते है।
भाव यही लिखने का मेरा, धर्मी जन सुख पाता है।
गुरु कृपा से ही प्राणी का, अशुभ समय टल जाता है।
लिखने मे यदि हुई हो गलती, मोहन को माफी दीजे।
गुरु चरणो की कृपा से, अपना जीवन सफल बना लीजे।

(धर्मभूषण जी महाराज का अशोक बिहार में चातुर्मास)

भाग्य बडे हैं हम लोगो के, जो गुरु यहॉ पधारे है।
भाग्य बडे है त्रिनगर के, गुरुवर के दर्शन पाए है।
सभी जगह जाने का भैया, मुझको है सौभाग्य मिला।
धर्मभूषण जी की भक्ति, करने का सयोग मिला।
जब से भक्ति की गुरुवर की, भक्ति का फल पाया है।
भक्ति का फल ही तो मुझको, खीच यहॉ पर लाया है।
अशोक बिहार वालो की भक्ति, की स्वर्गो मे बात हुई।
देव-देवियॉ बैठ गए सब, सुनो सभी क्या बात हुई।
कहा उन्होने अशोक बिहार मे, धर्मभूषण जी आए है।
धर्मभूषण के गीत स्वर्ग मे, देवो ने भी गाए है।
नही है रोगी गुरु हमारे, अशुभ कर्म का खेल है।
कचन जैसी काया उनकी, सिद्धो से उनका मेल है।
मेल जिन्हो का है सिद्धो से, रोगी नहीं वो हो सकते।

कृपा जिस पर होती उनकी, दुखीं नही वो हो सकते।
अशोक बिहार वाले तो गुरु को, भूल नहीं कभी पाएँगे।
चातुर्मास पूज्य गुरुवर का, मिलकर यहीं कराएँगे।
जो आज्ञा होगी गुरु की, सदा हमे स्वीकार है।
करना चातुर्मास यहीं पर, विनती सौ सौ बार है।
क्या जाएगा गुरुवर तुमरा, यदि बिगडी हमरी बन जाँए।
फूल चमन मे खिल जाएँगे, चातुर्मास तुम्हारा हो जाए।
नियम धर्म हम गृहण करेगे, अशोक बिहार के कहते है।
देख यहॉ का दृश्य मनोहर, मोहन यहाँ विचरते है।
कितनी रौनक हुई यहॉ पर, माहौल यहॉ का अच्छा है।
धर्मी यहॉ के नर नारी है, धर्मी बच्चा बच्चा है।
आहार-दान देने वालो की, भीड यहॉ लग जाती है।
सच्ची भक्ति का फल देखो, अतराय नहीं लाती है।
तुम जैसे गुरु परम तपस्वी, का आहार जहॉ होता।
खाने वाले कम पड जाते, नहीं भोज खत्म होता।
ऐसा अतिशय है तुममे गुरु, मैने ऑखो देखा है।
मूरख प्राणी को भी हमने, भजन सुनाते देखा है।
नाम है उसका मोहन बुद्धू, गुरु चरणो मे आया है।
अशोक बिहार वालो का जिसने, प्रेम बहुत ही पाया है।
अशोक बिहार वालो से गुरुवर, यदि कमी कभी कुछ रह जाएँ।
कर देना तुम माफ हमे, हम हाथ जोड माफी चाहे।
लिखने मे यदि हुई हो गलती, मोहन माफी चाहेगा।
जब तक प्राण रहेगे तन मे, तेरे ही गुण गाएगा।

(आचार्य शांतिसागर जी महाराज का नई मंडी मुजफ्फरनगर में चातुर्मास)

लेकर नाम वीर का मुनिवर, पत्र आपको लिखता हूँ।
सुखी रहे सब जीव जगत के, भाव हमेशा रखता हूँ।

दूर बहुत हो मुझसे मुनिवर, नही दूर तुम लगते हो।
नई मडी मे रहकर भी तुम, मुझे शाहदरा लगते हो।
मेरे हृदय मे मुनिवर जी तुम, सदा समाए रहते हो।
परमातम मे आतम अपनी, सदा रमाए रहते हो।
परम तपस्वी मुनिवर मेरे, तुम ही भाग्य विधाता हो।
पाऊँ प्रभु मे ज्ञान आपसे, तुम ही ज्ञान प्रदाता हो।
मुनिवर की अनत महिमा को, नही कलम से लिख सकता।
देव-गुरु की भक्ति करके, प्राणी भव से तिर सकता।
स्वर्ग बनी नई मडी नगरी, मुनिवर तुमरे आने से।
भाग्य जगे है इस नगरी के, दर्शन तुमरे पाने से।
तुम जैसे गुरु परम तपस्वी, जहॉ कही भी जाते है
आनद मगल होता जीवन, कष्ट नहीं रह जाते है।
मुझ पापी को पूज्य मुनिवर, तुमरा आशीर्वाद मिला।
बोध-प्रद कविता लिखने का, मुझको है सौभाग्य मिला।
तब चरणो मे श्रद्धा रखकर, कविता लिखता जाता हूँ।
पूज्य मुनि के चरण कमल मे, अपना शीश झुकाता हूँ।
करके चातुर्मास पूर्ण तुम, नगर हमारे आना।
देकर दर्शन गुरुवर अपने, ज्ञान की ज्योति जगाना।
कहते है मब नगर निवासी, पूज्य मुनि कब आऍगे।
मुनिवर जी आऍगे हम सब, दर्शन कर हर्षाऍगे।
अमृतमयी वाणी मुनिवर की, दु ख सारे हर लेती है।
अज्ञान तिमिर का करे नाश, अरु सद् किरणो को देती है।
रहकर दूर बहुत भी तुमसे, ज्ञानामृत नित पाता हूँ।
मुनिवर मै भी बनूँ आप-सा, भाव यही मन लाता हूँ।
लिखने मे यदि हुई हो गलती, मोहन माफी चाहेगा।
पूज्य मुनि के दर्शन करने, नई मडी मे आएगा।
नई मडी का जैन समाज तो, प्रेम धर्म से करता है।
साधु-सतो की ये सेवा, सच्चे मन से करते है।

नहिं भूलकर निंदा करना

नहीं भूलकर मुनि की निदा, जीवन मे अपने करना।
जितनी भक्ति हो सकती हो, ज्यादा से ज्यादा करना।
चलते फिरते तीर्थ मुनिवर, ये ही मेरे प्राण हैं।
ये ही मेरे मात पिता है, ये मेरे भगवान है।
सूर्य मत्र देकर पत्थर मे, भी भगवान बना देते।
मुझ जैसे बुद्धू प्राणी को, भजन बनाना सिखलाते।
निर्धन इनकी शरण मे आकर, क्षण भर मे राजा बनता।
बुद्धू जिसको कहती दुनिया, वो भी कविताएँ लिखता।
कार्य सभी पूरे हो जाते, बिगडी किसमत बनती है।
इनकी कृपा से तो भैया, नही कमी कुछ रहती है।
इनकी सेवा करी है मैने, सेवा का फल पाया है।
बिन माँगे पाया है सब कुछ, ये सब इनकी माया है।
एक व्यक्ति की सुनो कहानी, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
जिसने निदा की मुनियो की, उसकी कथा सुनाता हूँ।
एक व्यक्ति था एक गाँव मे, दूर धर्म से रहता था।
आते थे जब मुनि गाँव मे, निदा उनकी करता था।
एक बार वो व्यक्ति भैया, पत्थर लेकर आता है।
मारूँगा मै इसे मुनि को, ऐसे भाव बनाता है।
पत्थर नही फेकने पाया, क्या से क्या हो जाता है।
इनकी निदा करने से तो, सर्वनाश हो जाता है।
फालिस पड गया उस व्यक्ति को, कोढ रोग हो जाता है।
छाले पड गए तन मे उसके, खून खत्म हो जाता है।
बदबू आती तन से उसके, दुनिया गाली देती है।
और करो मुनियो की निदा, धिक् धिक् उसको कहती है।
एक्सीडेट हुआ लडके का, लडका भी मर जाता है।
धन वैभव घर बार सभी कुछ, उसका तो लुट जाता है।
बुरे काम का बुरा नतीजा, देखो कैसे होता है।

मुनि निंदा करने वाले का, वास नरक मे होता है।
भाव यही लिखने का मेरा, मुनियो का सम्मान करो।
ये ही सब कुछ है मेरे तो, इनका तुम गुणगान करो।
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
इनके आशीर्वाद से प्राणी, भव सागर तर जाता है।

(ऋषि-मुनियों के आशीर्वाद का फल)

सुनो कथा तुम ध्यान लगाकर, सच्ची कथा सुनाता हूँ।
अपने जीवन मे बीती जो, घटना वो तुम्हे सुनाता हूँ।
सुनकर खडे रोगटे होगे, ध्यान लगाकर सुन लेना।
सुनकर इस कविता को भैया, शिक्षा इससे गह लेना।
धर्म नही बिसराना भैया, धर्म सुखो का दाता है।
बच गई जान धर्म के कारण, वो ही तुम्हे सुनाता है।
चार नवम्बर सन् पिच्चासी, ता दिन सोमवार था।
पूजा करी प्रभु की मैने, मन मे हर्ष अपार था।
करके पूजन प्रभु की भैया, काम पै अपने पहुँच गया।
कार्य किया सारे दिन भैया, रात को वापिस चल दिया।
रात को चलते चलते भैया, बदमाश नजर दो आते है।
घेर लिया दोनो ने मुझको, छुरा चाकू दिखाते है।
छुरे घोप दिए कई मुझको, थैला लेकर भाग गए।
जान मुझे वो मरा वहॉ पर, इकला मुझको छोड गए।
हाहाकार मचाया मैने, खून की धारा जारी थी।
नही रोके से रुके खून था, पीडा मुझको भारी थी।
लहूलुहान हुआ था सारा, दृश्य बडा गभीर था।
जिस पर बीती वो ही जाने, रक्षक मेरा वीर था।
बचा लिया मुझको वीरा ने, याद उसी की आई थी।
ऋषि-मुनियो की शुभाशीष ही, काम समय पर आई थी।
दो लडको ने आकर मुझको, स्कूटर पर बिठा लिया।

लेकर मुझको राधू पहुँचे, पास मालिक के दिया बिठा।
देख के मालिक मेरी हालत, कार मे लेकर जाते हैं।
हास्पीटल मे ले जा मुझको, इलाज तुरत करवाते हैं।
सुनकर ऐसी वारदात को, मालिक, एस पी सब आए।
डी एस पी कमिश्नर पहुँचे, हाल देख सब घबराए।
करवाया आपरेशन झटपट, सेवा सबने बहुत करी।
करी तनिक भी नही देर थी, अर्ज प्रभु से यही करी।
जीवन दान दो मोहन को प्रभु, तुम ही एक सहारे हो।
भक्त तुम्हारा है ये स्वामी, इसके तुम रखवारे हो।
सुनी पुकार प्रभु ने उनकी, जीवन दान दिया इसको।
ठीक हुआ थोडे ही दिन मे, हरदम याद करे प्रभु को।
ऋषि-मुनियो की शुभ असीस यह, कभी न खाली जाती है।
प्रभु की कृपा के कारण ही, मृत्यु भी टल जाती है।
सुनकर इस कविता को भैया, याद प्रभु को करना तुम।
चाहे कितनी पड़े मुसीबत, ध्यान प्रभु का धरना तुम।
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
भूलो नही धर्म को भैया, धर्म ही सत् सुख दाता है।

किन कर्मो से लक्ष्मी स्वयं आती है।

लक्ष्मी खुद चलकर आएगी, नही वो वापिस जाएगी।
रहकर पास तुम्हारे वो तो, अपना भाग्य सराहेगी।
नही बुलाने से वो आती, बिना बुलाए आती है।
छोडो यदि तुम उसको भैया, नही वो वापिस जाती है।
बिना बुलाए कैसे आती, आज तुम्हे बतलाता हूँ।
ऋषि-मुनियो के चरणो मे, मै अपना शीश झुकाता हूँ।
देते जो आहार मुनि को, देकर खुशी मनाते है।
नवधा भक्ति से पडगाकर, महिमा उनकी गाते है।
करके औषध दान हमेशा, फूले नही समाते है।

जिन मंदिर बनवाकर भैया, गुणवीरा के गाते है
दीन दु:खी जीवो की रक्षा, करके खुशी मनाते है।
जिनवाणी को करा प्रकाशित, सभी जगह बटवाते है।
इच्छा नहीं करते बदले की, बिन इच्छा जो करते है।
देकर दान खुले दिल से जो, धर्म कार्य करते है।
धर्म सहाई है इस जग मे, धर्म ही पार लगाता है।
बिना धर्म के नर तन सूना, धर्म हीन दु ख पाता है।
करके न्हवन प्रभु का जो जन, अपना भाग्य सराहते है।
शुद्ध भाव से करके पूजा, अपना समय बिताते है।
ऐसे प्राणी धर्म ध्यान कर, भारी पुण्य कमाते है।
पुण्य कर्म से सब सुख मिलते, मुनि हमे बतलाते है।
पुण्य जहॉ पर होगा भैया, वहाँ पै लक्ष्मी आएगी।
घर मे आकर पुण्यवान के, अपना भाग्य सराहेगी।
चाहे जितना खर्च करे वो, उतनी बढती जाएगी।
पुण्य करो सब भैया जग मे, हमको सबक सिखाएगी।
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
शुद्ध भाव से दान करे हम, गुण मुनियो के गाता है।
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
एक धर्म है जो जीवो को, भव से पार लगाता है।

शील का महत्व

महिमा न्यारी शील की, मोपे लिखी न जाय।
लिखने का साहस करूँ, प्रभु को शीश नवाय।
शीलवान को देव भी, करते है प्रणाम।
जिसने पाला शील को, मिला मुक्ति का धाम।
शीलवान का आदर भैया, सारे जग मे होता है।
शील जहॉ पर भी पलता है, दु ख दारिद्र नही होता है।
शील विषय मे एक कहानी, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
कथा सुनाने से पहले मै, प्रभु को शीश झुकाता हूँ।

सेठ सेठानी एक गाँव मे, सुख से दोनो रहते थे।
शील धर्म का पालन करके, अपना समय बिताते थे।
एक दिवस वो सेठ साह जी, गाँव से बाहर जाते है।
व्यापार निमित से वो तो भैया, देश दूसरे जाते हैं।
सेठानी से बोले सेठजी, शील का पालन करना तुम।
चाहे कितनी पड़े मुसीबत, ध्यान प्रभु का धरना तुम।
सेठानी भी कहे सेठ से, शील नही बिसराना तुम।
पर नारी को बहन समझना, नही धर्म को तजना तुम।
सेठ सेठानी दोनो अब तो, शील का पालन करते है।
देखो अब क्या होता आगे, मोहन तुम्हे सुनाते है।
उस नगरी का राजा इक दिन, हाथी चढ़ नगर निकलता है।
देख उसी युवती को वह तो, मोहित उस पर होता है।
घर जाकर सोचा राजा ने, इससे प्रीति लगाऊँगा।
अपनाकर इस औरत को मै, हरदम मौज मनाऊँगा।
भेष भिखारी का धर राजा, घर पर उसके जाता है।
नही आम का था मौसम वो, आम भीख मे चाहता है।
नही आम देने को उसपे, नही मना वह करती है।
करके ध्यान प्रभु का वह तो, देखो अब क्या कहती है।
शीलवान हो पति मेरा तो, वृक्ष आम पर लग जावे।
कहते ही लग गया वृक्ष, पर आम नही उस पर आए।
शील यदि मेरा हो सच्चा, आम वृक्ष पर लग जावे।
कहते ही लग गए आम तो, देख चकित जनता होवे।
शीलवान हो नगर का राजा, आम सभी ये पक जावे।
नहीं पका है आम रे कोई, सुनकर राजा पछतावे।
देख दृश्य ये सारा राजा, मन ही मन पछताता है।
हाथ जोड सेठानी को, अपना शीश झुकाता है।
कहता है अब नही मै आगे, शील धर्म बिसराऊँगा।
शील धर्म का पालन करके, मै भी मुक्ति पाऊँगा।
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
शील धर्म को पालो भैया, शील सुखो का दाता है।

नहीं और कोई इच्छा है

नही मान की इच्छा मुझको, नहीं बॅगलो मे रहने की।
इच्छा स्वामी एक ही मेरी, तेरे जैसा बनने की।
तुमरे जैसे बने सभी हम, तुमरी महिमा गाऍ।
गाकर महिमा तुमरी स्वामी, अपना भाग्य सराहे।
तीन लोक के स्वामी हो तुम, तुमरी महिमा न्यारी है।
तुमरे चरणकमल मे प्रभुवर, सौ सौ नमन हमारी है।
रहे भटकते चौरासी मे, भूल तुम्हे हम जाने से।
पाप सभी कट जाते स्वामी, दर्शन तेरा पाने से।
कितनी विपदा सही है हमने, भूल आपको जाने से।
सच्चा सुख मिलता है स्वामी, पास तुम्हारे आने से।
कृपा कर दो मुझ पापी पर, मेरा तुम उद्धार करो।
लेकर शरण मे अपनी स्वामी, भव सागर से पार करो।
भील चडाल नेवला स्वामी, तूने भव से पार किए।
शरण मे लेकर उनको अपनी, भव सागर से तार दिए।
श्रद्धा रक्खी जिसने तुममे, उसका बेडा पार किया।
करुणा करके स्वामी तुमने, पतितो का उद्धार किया।
करुणा कर दो मुझ पापी पर, द्वार तुम्हारे आया हूँ।
तुमरे जैसा बनूॅ मै स्वामी, लेकर इच्छा आया हूॅ।
पद चक्री का पाया हमने, इद्रादिक पद पाए।
इच्छा नही हुई कम हमरी, काल अनत बिताए।
इच्छाओ का करे दमन हम, सयम भाव जगाए।
ऋषि-मुनियो की भक्ति करके, अपना भाग्य सराहे।
ऋषि-मुनि ही जग मे भैया, बीज धर्म का बोते है।
करते है जो सगति इनकी, इन जैसे बन जाते है।
देव शास्त्र गुरु पूज्य जगत मे, इनको नही भुलाना।
सच्ची श्रद्धा रखकर इनमे, मोक्ष महा फल पाना।
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
तुमरे जैसा बनूॅ मै स्वामी, भाव यही मन लाता है।

ऋषि-मुनियों के चातुर्मास का महत्व

सूर्य उदित जब होता भैया, स्वमेव कमल खिल जाता है।
पारस को छूने से लोहा, भी पारस बन जाता है।
वर्षा जब होती है भैया, घास हरी हो जाती है।
बौर आम जब आता कोयल, कुकू करने लगती है।
ऋषि-मुनियो के चातुर्मास का, तुमको महत्व बताता हूँ।
लिखकर महिमा ऋषि-मुनियो की, जीवन सफल बनाता हूँ।
ऋषि-मुनि ही जग मे भैया, सच्चा मार्ग बताते है।
करते है जो सेवा इनकी, मन वाँछित फल पाते है।
ऋषि-मुनियो की सेवा भक्ति, बिगडे काम बनाती है।
देकर सम्यक रूपी किरणे, भव से पार लगाती है।
ऋषि-मुनि जिस नगर मे होते, भूत प्रेत नही रहते है।
दर्श मात्र से ऋषि-मुनियो के, पाप सभी कट जाते है।
बुद्धू भी बन जाता पडित, श्रद्धा इनमे लाने से।
आनद मगल होता जीवन, चातुर्मास कराने से।
महा पुण्य के उदय से भैया, दर्शन इनके होते है।
ऋषि-मुनियो के दर्शन हम, बीज मोक्ष का बोते है।
चातुर्मास जिस नगर मे होते, अतिशय वहाँ पर होते है।
स्वर्ग लोक मे देखो देव भी, क्या क्या भाव बनाते है।
मनुष्य गति मिल जाए हमको, कब शुभ दिन वो आएँगे।
चातुर्मास करा मुनियो के, जीवन सफल बनाएँगे।
आहार दान दे ऋषि-मुनियो को, मुनियो के गुण गाएँगे।
पहन के सयम रूपी चोला, भव से हम तिर जाएँगे।
तेरे शुभ कर्मो के कारण, गुरुवर यहाँ पधारे है।
चातुर्मास किया गुरुवर ने, सोए भाग्य जगाए है।
श्रद्धा भक्ति कर गुरुवर की, बिगडा भाग्य बना ले।
लेकर नियम सुव्रत गुरुवर से, मुक्ति टिकट पाले।
ज्ञान गुरु ही देते भैया, गुरु महा उपकारी है।
पूज्य गुरुवर के चरणो मे, सौ सौ नमन हमारी है।

ज्ञान के चक्षु खोल अरे अब, ज्ञान सुखो का दाता है।
सम्यक ज्ञान को पाकर प्राणी, भव सागर तर जाता है।
सम्यक ज्ञान के न होने से, भारी कष्ट उठाते है।
चौरासी मे फिरे भटकते, गुरु हमे समझाते है।
अब भी समय समझ ले भैया, गया समय नही आएगा।
बात नहीं गुरुओ की मानी, भारी कष्ट उठाएगा।
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
ऋषि-मुनियो की वाणी सुनकर, जीवन सफल बनाता है।

माता-पिता का अनादर कभी नहीं करना चाहिए

मात पिता का कभी भूलकर, नहीं अनादर करना।
जितनी ज्यादा हो सकती हो, सेवा उनकी करना।
जो भी अपने मात पिता की, सेवा सच्ची करते है।
वो बच्चे ही मेरे भैया, जग मे यश पाते है।
नही मुसीबत आती कोई, सेवा उनकी करने से।
अच्छा बच्चा कहलाता है, कहा उन्हो का करने से।
रिश्ते नातो सभी जगह पर, आदर उसका होता है।
ऐसे बच्चो से मिलने को, मनुआ सबका करता है।
कहते है सब उसको अच्छा, नही बुरा कोई कहता।
अच्छे बच्चे हो सब घर मे, भाव यही मोहन रखता।
नही सफलता मिलती भैया, मात-पिता ठुकराने से।
भारी विपदा सहनी पडती, उन्हे अनादर करने से।
इक लडके की सुनो कहानी, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
ठुकराया था जिसने इनको, उसकी कथा सुनाता हूँ।
एक लडका था एक गॉव मे, नटखट वो कहलाता था।
गाली देकर मात पिता को, मन अपने हर्षाता था।
नही कभी सोचा लडके ने, पिता तुझे भी बनना है।
जैसा करता आज कर्म तू, उसका फल तुझे भरना है।
हुआ बडा जब लड़का भैया, शादी उसकी होती है।

कलहकारिणी मिली घरवाली, हरदम लड़ती रहती है।
साड़ी कभी मॅगाती उससे, कभी लिपिस्टक कहती है।
पैसा नहीं होने के कारण, कलह हमेशा बढती है।
बच्चे बारह हो गए घर मे, नही खाने को दाना है।
कोई फिरता नगा उनमे, कोई ऑख से काना है।
पडा खाट मे रोगी कोई, कोई पैसा मॉग रहा।
कोई फीस माँगता उससे, कोई लड्डू मॉग रहा।
घरवाली भी गाली देकर, बाते उससे करती है
पटक पटक कर सिर को अपने, मूरख उसको कहती है।
ऐसी हालत होती भैया, मात-पिता ठुकराने से।
रोटी नही समय पर मिलती, गाली मुॅह पर लाने से।
सुनकर कविता को भैया तुम, शिक्षा इससे ले लेना।
सेवा करके मात-पिता की, जीवन सफल बना लेना।
मात-पिता की सेवा भैया, घर को स्वर्ग बनाती है।
आदर मिलता सभी जगह पर, नहीं कमी कुछ रहती है।
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
मात-पिता की सेवा का फल, सुख से समय बिताता है।
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनावे है।
ऋषि-मुनियो की करके सेवा, अपना भाग्य सराहे।

आपस में नहीं लड़ो कभी तुम

आपस मे नहीं लडो कभी तुम, रहना सीखो प्रेम से।
प्रेम नाश कर देता दु:ख का, सुख मिलता है प्रेम से।
प्रेम का पथ निराला इससे, जीवन सुखमय होता है।
प्रेम धर्म को करने वाला, सुखी जगत मे रहता है।
प्रेमी का जग आदर करता, प्रेमी पार उतरता है।
प्रेम धर्म से करके प्राणी, शिव रमणी को वरता है।
रहो प्रेम से घर मे भैया, घर स्वर्ग बन जाएगा।
आपस मे यदि लडोगे भैया, पतन अवश्य हो जाएगा।

सुनो कथा तुम दो भाई की, तुमको आज सुनाता हूँ।
कैसे पतन हुआ था उनका, लिखकर तुम्हे बताता हूँ।
दो भाई थे एक गॉव मे, नित आपस मे लडते थे।
दोनो भाई धर्म ध्यान से, दूर हमेशा रहते थे।
नही प्रेम था उन दोनो मे, चोरी वो नित करते थे।
करके चोरी पीकर मदिरा, समय वो पूरा करते थे।
चोरी करने वाला भैया, नरक द्वार मे जाता है।
भारी विपदा पडती उस पर, दु खी सदा अकुलाता है।
एक दिवस वे दोनो भैया, चोरी करने जाते है।
चोरी करके चले ज्यो वापिस, आपस मे लड जाते है।
लडते-लडते आपस मे वे, पकड लिए फिर जाते है।
माल चोरी का पास था उनके, जेलो मे पड जाते है।
भारी मार पडी दोनो को, दम वो अपना तोड चले।
दोनो ही वो भैया अपने, बच्चे इकले छोड चले।
हुआ उजाडा घर का उनके, नित आपस मे लडने से।
भारी विपदा सही उन्होने, छोड धर्म को देने से।
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
आपस मे नही लडे कभी हम, धर्म सुखो का दाता है।

धर्मभूषण जी महाराज का अशोक विहार चातुर्मास

अशोक विहार मे रौनक आई, पूज्य गुरु के आने से।
आनद मगल होता जीवन, देव गुरु को ध्याने से।
दया गुरु को आई हम पर, बात हमारी मानी है।
हम लोगो के मन की बाते, श्री गुरुवर ने जानी है।
चातुर्मास किया गुरुवर ने, इस नगरी का भाग्य जगा।
महा पुण्य का उदय हमारे, जो तुमने चातुर्मास किया।
अशोक विहार की चर्चा अब तो, देव स्वर्ग मे करते है।
क्या चर्चा होती है वहॉ पर, उनका वर्णन करते है।
क्या कहते है देव स्वर्ग मे, ध्यान लगाकर सुन लेना।

लिखने मे यदि होवे गल्ती, क्षमा हमे तुम कर देना।
पर तपस्वी धर्मभूषण जी, शात स्वभाव तुम्हारा है।
तुमरे दर्शन करने से तो, मिटता सकट सारा है।
सुख के बादल छा जाते है, कष्ट नहीं कोई रहता।
शरण मे आने वाला तुमरी, हर कोई प्रसन्न रहता।
पापी पावन हो जाते है, दर्शन तुमरा पाने से।
निर्धन भी बन जाता राजा, आशीष तुम्हारी पाने से।
राग द्वेष नही करते गुरुवर, कठिन तपस्या करते है।
हित मित प्रिय वाणी मे ये, ज्ञान की वर्षा करते है।
निर्धन हो या राजा कोई, कृपा सभी इनकी पाते।
इनकी कृपा से तो निर्धन, भी है राजा बन जाते।
ऋद्धि सिद्धि तुम चरणो मे प्रभु, आकर खेला करती हे।
करे गुरु उपयोग हमारा, हरदम सोचा करती है।
नही जरूरत तुम्हे इन्हो की, तुम तो सच्चे साधु हो।
सब कुछ पाकर छोड़ दिया सब, परम वीतरागी हो।
कहॉ तक लिखे तुम्हारी महिमा, नही लिखी हमसे जाती।
तुमरी कृपा से गुरुवर जी, कविता स्वय ही बन जाती है।
गलती के पुतले हम मुनिवर, गलती हम नित करते है।
माफ करोगे हमरी गलती, अर्ज आपसे करते है।
ध्यान नही गल्तियो पर देना, बालक समझ क्षमा करना।
भक्त आपके हम सब गुरुवर, हम पर कृपा सदा रखना।
लिखने मे यदि हुई हो गलती, मोहन की आकाक्षा है।
गुरु कृपा बस बनी रहे फिर, और नही कुछ वाछा है।

आचार्य विद्यासागर जी महाराज का कुंडलपुर (दमोह) में चातुर्मास के समय लिखा पत्र

लेकर नाम वीर का मुनिवर, पत्र आपको लिखता हूँ।
सुखी रहे सब जीव जगत के, भाव हमेशा रखता हूँ।

दूर बहुत हो मुझसे मुनिवर, नही दूर तुम लगते हो।
कुडलपुर मे विराज रहे, फिर भी दिल्ली मे दिखते हो।
मेरे हृदय मे मुनिवर तुम, सदा समाए रहते हो।
परमातम मे आतम अपनी, सदा रमाए रहते हो।
तुमरे चरणों मे श्रद्धा रख, फूला नहीं समाता हूँ।
पाकर मुनिवर ज्ञान आपसे, अपना पुण्य जगाता हूँ।
पूज्य मुनिवर की महिमा को, नहीं कलम से लिख सकता।
देव गुरु की भक्ति करके, प्राणी भव से तिर सकता।
स्वर्ग बनी कुडलपुर नगरी, मुनिवर तुमरे आने से।
भाग्य जगे है इस नगरी के, दर्शन तुमरा पाने से।
तुम जैसे मुनि परम तपस्वी, जिस भी क्षेत्र मे जाते है।
आनद मगल होता जीवन, कष्ट नही रह जाते है
मुझ पापी को पूज्य मुनिवर, तुमरा आशीर्वाद मिला।
बोधप्रद काव्य लिखने का, मुझको है सौभाग्य मिला।
तुम चरणो में श्रद्धा रखकर, कविता लिखता जाता हूँ।
पूज्य मुनि के चरण कमल मे अपना शीश झुकाता हूँ।
करके चातुर्मास कुडलपुर, शहर हमारे आना।
दर्शन देकर मुनिवर अपने, ज्ञान की ज्योति जलाना।
कहते हैं सब नगर निवासी, पूज्य मुनि कब आएँगे।
पूज्य मुनिवर आऍगे जब, दर्शन कर हर्षाएँगे।
रहकर दूर बहुत भी तुमसे, ज्ञान की किरणे पाता हूँ।
मुनिवर मै भी बनूँ आपसा, भाव यही मन लाता हूँ।
कुडलपुर नगरी का वैभव, देव स्वर्ग मे गाते है।
विद्यासागर के दर्शन को, स्वर्गो से नित आते है।
जिधर भी जाते मुनि हमारे, रौनक वहॉ हो जाती है।
तुमरे दर्शन को मुनिवर जी, भीड वहॉ हो जाती है।
वैदवाडा मे आनद आया, गुप्तिसागर आए है।
शिष्य आपके है वो मुनिवर, मेरे गुरु कहाए है।

उनकी वाणी सुनने में तो, वैदवाडा मे जाता हूँ।
देख वहाँ पर ठाठ धर्म के, फूला नहीं समाता हूँ।
वैदवाड़ा की जैन समाज तो, प्रेम धर्म से करती है।
साधु सतो की ये सेवा, सच्चे मन से करती है।
बार-बार नमोस्तु तुमको शुद्ध हृदय से करता हूँ।
तुम जैसे बनने की इच्छा, मै मुनिवर जी रखता हूँ।
लिखने मे यदि हुई हो गलती, मोहन माफी चाहे है।
गुरु कृपा चाहत है ये तो, और नही कुछ चाहे है
कुडलपुर की जैन समाज को, जय जिनेद्र हमारी है।
विद्यासागर और सघ को, सौ सौ नमन हमारी है।

दुष्ट जनों से दूर रहें हम

दुष्ट जनो से रहे दूर हम, मुनि हमे समझाते है।
दया के धारी मुनि हमारे, उनके गुण चित्त लाते है ॥
शिक्षा अच्छी देते मुनिवर, धर्म का महत्व बताते है।
करके भक्ति ऋषि-मुनियो की, मोहन भजन बनाते है ॥
छूकर चरण महा मुनियो के, अपना भाग्य सराहूँ।
देव शास्त्र गुरु पूज्य हमारे, उनकी महिमा गाऊँ ॥
देव गुरु को भूलकर हमने, भारी कष्ट उठाए है।
भूल गए हम उन दु खो को, नरको मे जो पाए है ॥
मात-पिता का आदर करने मे, जो बच्चे शरमाते।
सच पूछो तो ऐसे जीवन मे, वे नही सफल हो पाते ॥
नही विद्या आती है उनको, नही तरक्की करते है।
ऐसे बच्चे बडे होकर, दर-दर दु खी भटकते है ॥
मात-पिता के चरणो मे, जो अपना भाग्य सराहे।
ऐसे बच्चे ही तो भैया, जीवन सफल बनाएँ ॥
दुष्ट जनो की सगति करने, से देखो क्या होता है।
धर्मी जन भी कुसगति से, दु ख का बोझा ढोता हैं ॥

एक लडका था एक गॉव मे, धर्मी वह कहलाता था।
अपनी कक्षा मे वह हर दम, पहले नबर आता था ॥
इज्जत करते थे सब उसकी, अच्छा उसको कहते थे।
कालिज मे सब अध्यापक भी, प्रेम बहुत ही करते थे ॥
एक दिवस वो लडका भैया, किसी शहर मे जाता है।
अशुभ कर्म के कारण वह, यों कुसगति मे जाता है ॥
मित्र मिले दो ऐसे उसको, जो चोरी नित करते थे।
मदिरा पीने मे वे दोनो, सुख का अनुभव करते थे ॥
उनके सग मे रहकर वह भी, चोरी करने जाता है।
चोरी करने के चक्कर मे, इक दिन पकडा जाता है ॥
उसके दोनो साथी भैया, नही पकड मे आते है।
इकला छोड गए वो उसको, भाग कही वो जाते है ॥
भारी कष्ट उठाए लडका, गलत मार्ग पर जाने से।
सुखी सदा रहता है मानव, मार्ग स्वच्छ अपनाने से ॥
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
दुष्ट जनो से रहे दूर हम, धर्म सुखो का दाता है ॥

किसी के बहकावे में आकर आपस में मत लड़ो

रहो प्रेम से मेरे भैया, नही किसी से लडना।
चुगली करना महापाप है, सदा प्रभु को भजना ॥
प्रेम की गगा जिस घर बहती, स्वर्ग वहॉ बन जाता है।
कलह नही रहती उस घर मे, आनद नित बरसाता है ॥
धर्म की गगा जिस घर बहती, देव वहॉ पे आते है।
धर्म के कारण ही तो प्राणी, सच्चे सुख को पाते हैं ॥
आपस मे नही लडे कभी हम, बहकावे मे आ करके।
नरक समान बना लेते घर, मन मे बैर बढा करके ॥

नाम नहीं सुख का रहता है, कलह हमेशा रहती है।
लडने से आपस मे भैया, इज्जत भी नहि रहती है ॥
होती सदा लडाई जिस घर, लक्ष्मी नही ठहरती है।
धर्म नहीं रहता जिस घर मे, बरकत भी नहीं रहती है ॥
सुनो ध्यान से मेरे भैया, तुमको कथा सुनाता हूँ।
एक जेठानी एक दुरानी की, मै बात बताता हूँ ॥
एक जेठानी एक दुरानी, एक गॉव मे रहती थी।
प्रेम बहुत था आपस मे वो, सुख से दोनो रहती थी ॥
नहीं कमी थी घर मे कोई, दान सदा वो करती थीं।
सास ससुर की दोनो बहुएँ, इज्जत मन से करती थी ॥
मंदिर मे नित जाती दोनो, ध्यान प्रभू का करती थी।
करते करते काम घरेलू, भाव धर्म मन धरती थी ॥
कितनी रौनक थी घर उनके, धर्म ध्यान मन लाने से।
सुख से रहती थी वो भैया, मन मे शाति रमाने से ॥
सुख से रहते रहते भैया, क्या से क्या हो जाता है।
आपस मे लडने से भैया, जीवन क्या बन जाता है ॥
देख उन्ही को सुख से रहते, तायस क्या मन लाती है।
क्यो रहती है प्रेम से दोनो, ढाह हृदय उफनाती है ॥
सिखा सिखाकर उल्टी सुल्टी, मन उनके फडवाती है।
प्रेम की रस्सी बॅधी हुई को, वो उनसे तुडवाती है ॥
बहकावे मे आ तायस के, दोनो लडने लग जाती है।
प्रेम नहीं रहने के कारण, अलग अलग हो जाती है ॥
अलग अलग हो गई है दोनो, बहकावे मे आने से।
मंदिर जाना छोड़ दिया है, घर मे इकली रहने से ॥
इकली इकली हो गई दोनों, प्रेम खत्म हो जाने से।
चौका भी नही लगा सकी वे, इकली घर मे होने से ॥

दु:ख सुख मे भी नहीं वो भैया, अब आपस मे जाती हैं।
प्रेम नहीं रहने के कारण, विपदा उन पर आती है ॥
एक दिवस जेठानी जी तो, पीहर अपने जाती है।
रह गई इकली दौरानी जी, इकली अब घबराती है ॥
देख के इकली दौरानी को, डाकू घर मे आते है।
दोनो घर का माल खजाना, लूट सभी ले जाते है ॥
कैसी हालत हो गई भैया, भूल धर्म को जाने से।
रोटी के पड जाते लाले, आपस बैर रचाने से ॥
नही लडे आपस मे भैया, नही सिखावे मे आवे।
रहे प्रेम से मिल करके सब, जिन मंदिर मे नित जावे ॥
रहो प्रेम से मेरे भैया, नही कभी तुम लडना।
चाहे कितनी पडे मुसीबत, नही धर्म को तजना ॥
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
रहे प्रेम से मिलकर हम सब, प्रेम सुखो का दाता है ॥

दृष्टांत—एक लड़के का

एक नगर मे इक लडका था। सुविधा घर मे सारी थी।
पढ लिखकर बन गया अफसर धर्म मे श्रद्धा गहरी थी ॥
अफसर बनने से पहले वो, जिन मन्दिर नित जाता था।
सन्तो की सेवा भी वो तो, सच्चे मन से करता था ॥
कहता था वो धर्म ही भैया, भव से पार लगाता है।
सन्तो की सेवा करने से प्राणी, सुख से रहता है ॥
सुनकर शिक्षा लेना इससे, ये शुभ भाव हमारा है।
सन्तो की सेवा करने से, जागा भाग्य हमारा है ॥
अफसर बनते ही लडके की, शादी भी हो जाती है।
सुन्दर औ माडर्न पत्नी भी, उसको तब मिल जाती है ॥

धर्म और सन्तों की सेवा, नही पत्नी ने जाना था।
खाने पीने मौज उडाने, मे सुख उसने माना था ॥
जिस घर मे से आई थी वो, धर्म नही वहाँ पलता था।
साधु सन्तो की सेवा बिन, जीवन उनका चलता था ॥
कहती पत्नी पति से अपने, जिन मन्दिर नहीं जाओ तुम,
क्या रखा साधु सन्तो मे, यहीं पर मौज उडाओ तुम ॥
कभी उसे होटल ले जाती, कभी सिनेमा ले जाती।
उसको दास बनाकर अपना, सारा काम करा लेती ॥
उस लडके ने अब तो भैया, मन्दिर जाना छोड दिया।
बहकावे आ पत्नी के, सन्तो से मुख मोड़ लिया ॥
इससे आगे सुनो कथा तुम, तुमको कथा सुनाता हूँ।
क्या होता है अब दोनो का, वो भी तुम्हे बताता हूँ ॥
एक दिना लडके की पत्नी, बहुत अधिक बिमार हुई।
कैन्सर रोग हुआ पत्नी को, उसकी दशा अपार हुई ॥
देख के उसकी हालत लडका, रो रो नीर बहाता है।
पत्नी के चक्कर मे उसको, हृदय रोग हो जाता है। ॥
बुरा हाल हुआ दोनो का, छोड धर्म को देने से।
ऐसी हालत हो जाती है, धर्म मार्ग तज देने से ॥
भाव यही लिखने का मेरा, धर्म मारग अपनाये हम।
साधु सन्तो की सेवा कर, जीवन सफल बनाये हम ॥

श्री 108 आचार्य धर्मभूषण जी महाराज का चातुर्मास कविनगर (गाजियाबाद) में

कवि नगर के चातुर्मास का, वर्णन हम यहॉ करते है।
वर्णन करने से पहले, प्रणाम गुरु को करते है ॥
कवि नगर वालो का भैया, भाग्य बडा बलवान है।
इनकी भक्ति की प्रशसा, करता हर इन्सान है ॥

आज विश्व के अन्दर भैया, कवि नगर का नाम है।
जैन गजट जैसे पत्रो मे, छपा इसी का नाम है ॥
धर्मभूषण महाराज ने अपना, यहाँ पर चातुर्मास किया।
धरा धन्य हो गई यहॉ की, जग मे इसका नाम हुआ ॥
स्वर्गो मे भी देव देवियॉ, गुरु की महिमा गाते है।
धन्य भाग्य है कवि नगर के, देख देव शर्माते है ॥
जहॉ जहाँ भी जाता हूॅ मै, यहाँ की चर्चा करता हूॅ।
यहॉ के लोगो की प्रशसा, सभी जगह मे करता हूॅ ॥
बाहर से आने वालो का, सम्मान यहाँ पर होता है।
कमी नही है कुछ भी यहॉ पर, आदर सबका होता है ॥
आलीसान यहॉ का मन्दिर, शोभा इसकी न्यारी है।
पारस प्रभुजी यहॉ विराजे, इनको नमन हमारी है ॥
बी डी जैन यहाँ के मन्त्री, सरल स्वभाव तुम्हारा है।
देख यहाँ की धर्मी जनता मन प्रसन्न हमारा है ॥
अध्यक्ष और सारे सदस्य गण, बहुत अधिक गुणवान है।
हाथ जोडकर इन सबका हम, करते यहॉ सम्मान है ॥
धर्मी जनता इस नगरी की, धर्मी सब नर नारी है।
प्यार धर्म से है इन सबको, इन्हे जय जिनेन्द्र हमारी है ॥
औषधालय भी अच्छा है यहॉ, देख के मन खुश होता है।
निस्वार्थ भाव से इसमे भैया, इलाज मरीज का होता है ॥
पूज्य गुरु के चातुर्मास से, रौनक यहॉ पै आई है।
दूर दूर से जनता गुरु के, दर्शन करने आई है ॥
पूज्य गुरु का चातुर्मास जिस नगरी मे भी होता।
कई बार उस. नगरी मे, जाने का अवसर मिलता ॥
पूज्य गरु के श्री चरणो से, मेरा गहरा नाता है।
इन चरणो के सिवा मुझे तो, और नहीं कुछ भाता है ॥

ज्यादा नही बढाकर इसको, पूर्ण यही पर करता हूँ।
जिये हजारो साल गुरुवर अर्ज प्रभु से करता हूँ ॥

कवि नगर वालो का मोहन, प्यारा बेटा कहलाये।
करके ये सम्मान सभी का, मन मे अपने हर्षाये ॥

लिखने मे यदि हुई हो गल्ती, मोहन माफी चाहता।
मिले सदा दर्शन गुरुवर के, और नहीं कुछ चाहता ॥

श्री 108 उपाध्याय ज्ञान सागर जी महाराज के मथुरा नगर्र में चातुर्मास के समय लिखा पत्र।

लेकर नाम वीर का मुनिवर, पत्र आपको लिखता हूँ।
सुखी रहे सब जीवन जगत के, भाव हमेशा रखता हूँ ॥

दूर बहुत हो मुझसे गुरुवर, नही दूर तुम लगते हो।
मथुरा नगरी मे रहकर भी, मुझे शाहदरा लगते हो ॥

मम हृदय मे गुरुवर तुम, सदा समाये रहते हो।
परमतम मे आतम अपनी, सदा रमाये रहते हो ॥

तुमरे चरणो मे श्रद्धा रख, फूला नही समाता हूँ।
पाकर गुरुवर ज्ञान आपसे, धन्य धन्य हो जाता हूँ ॥

स्वर्ग बनी है मथुरा नगरी, गुरुवर तुमरे आने से।
भाग्य जगे है इस नगरी के, दर्शन तुमरा पाने से ॥

तुम जैसे गुरु परम तपस्वी, जिस भी क्षेत्र मे जाते है।
आनद मगल होता जीवन, कष्ट नही वहाँ रहते है ॥

करके चातुर्मास पूर्ण तुम, नगर हमारे मे आना।
देकर दर्शन गुरुवर अपने, ज्ञान की ज्योति जला जाना ॥

कहते है सब नगर निवासी पूज्य गुरु कब आयेगे।
पूज्य गुरुवर आयेगे जब, दर्शन कर हर्षायेगे ॥

जब से गुरुवर गये यहाँ से, रौनक भी सब चली गई।
तुमरे चरणो की धूलि ही, मुझ माथे पर लगी रही ॥

जिधर भी जाते गुरु हमारे, रौनक वहाँ हो जाती है।
तुमने दर्शन को मुनिवर जी, भीड वहाँ लग जाती है ॥

बार बार नमोस्तु तुमको, शुद्ध हृदय से करता हूँ।
तुम जैसा बनने की इच्छा, मैं भी गुरुवर रखता हूँ ॥

वैराग्यसागर जी पूज्य गुरु को सौ सौ नमन हमारा है।
नही भूलेगे कभी तुम्हे हम, तुमरा हमे सहारा है ॥

लिखने मे यदि हुई हो गल्ती, मोहन माफी चाहे है।
आशीर्वाद गुरु का चाहता, और नहीं कुछ चाहे है ॥

मथुरा नगर की समाज को, जय जिनेन्द्र हमारी है।
ज्ञान और वैराग्यसागर को, सौ सौ नमन हमारी है ॥

उपाध्याय ज्ञान सागर जी महाराज, गुलाब वाटिका में

बहुत दिनो से भाव था मन मे, आज पूर्ण हो पाया है।
ज्ञानसागर के दर्शन करने, मोहन यहाँ पर आया है ॥

सुनी प्रशसा गुलाब वाटिका की, धर्म नगरी इसको कहते।
बडे भाग्य है इस नगरी के, मुनि यहाँ आते रहते ॥

मुनि जी यहाँ पधारे भैया, मुनि महा उपकारी है।
इनके चरणकमल मे भैया, सौ सौ नमन हमारी है ॥

परम तपस्वी है श्री मुनिवर, कठिन तपस्या करते है।
हित मित प्रिय वाणी में ये, ज्ञान की वर्षा करते है ॥

जन्म जन्म के शुभ कर्मो का, आज मेल हो पाया है।
इसीलिए तो पूज्य गुरु का, हमने दर्शन पाया है ॥

गुलाब वाटिका मे आ मैने, अपना भाग्य सराहा है।
देख यहाँ की धर्मी जनता, फूला नहीं समाया है ॥

नियम व्रत लेना मुनिवर से, तुमसे अर्ज हमारी है।
बिगडी किस्मत बन जायेगी, श्रद्धा यही हमारी है ॥

होगा पूर्ण विकास तुम्हारा, आबाद सभी हो जाओगे।
इनके आशीर्वाद से भैया, सुख से समय बिताओगे ॥

जब से नियम लिया मुनिवर से, निश भोजन नही पाऊँगा।
प्राण भले ही जाये अपने, नित मन्दिर मे जाऊँगा ॥

आजीवन आलू गोभी का, भैया त्याग हमारा है।
जब से त्याग किया चमडे का, जागा भाग्य हमारा है ॥

उसका ही फल मिला आज ये, सुख से समय बिताता हूँ।
जहॉ कही भी जाये मुनिवर, दर्शन करने आता हूँ ॥

सुख शान्ति रहती है घर मे, भाव धर्म के रहते है।
गुरु की कृपा से ही तो हम, ऐसे भजन बनाते है ॥

पाऊँ प्रेम तुम्हारा हरदम, दर्शन गुरु के पाऊँ मै।
लिखने मे यदि हुई हो गल्ती, क्षमा सभी से चाहूँ मै ॥

सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
साधु सन्तो की सेवा कर, अपना भाग्य सराहता है।

जो जवानी में धर्म मार्ग से दूर रहते हैं, उनकी बुढ़ापे में क्या दशा होती है।

दूर धर्म से रहने वालो, सुन लो मेरी बात।
जग के झझट छोड के भैया, कर लो प्रभु को याद ॥

भरी जवानी मे जो भैया, दूर धर्म से रहते है।
सेवा नही सन्तो की करते, उनका हाल सुनाते है ॥

क्यो करता अभिमान अरे तू, इस भरपूर जवानी का।
नही भरोसा है इक पल का, क्या होगा जिन्दगानी का ॥

जिसको मान रहा तू अपना, वो सब तो बेगाना है।
बीवी बच्चो मे फसकर तू, हो गया आज दीवाना है ॥

उम्र तेरी ढल रही है दिन दिन और बुढापा आयेगा।
सेवा नही करी सन्तो की, सिर धुनधुन पछतायेगा ॥

लठिया हाथ मे होगी तेरे, आँखो पर चश्मा होगा।
बूढ़ा बूढा कहेगी दुनिया, कानो से बहरा होगा ॥

महल मकान सभी तो तेरे, बच्चे नाम करा लेगे।
टूटी-सी एक खटिया तेरी, घर के बाहर बिछा देगे ॥

खाना भी नही पूरा देगे, भूखा तू रह जायेगा।
अपनी करनी पर तू पगले, रो रो नीर बहायेगा ॥

पास नही आयेगा कोई, नजर नही कुछ आयेगा।
भूल धर्म को जानेवाले, नरको मे तू जायेगा ॥

गुरु हमे समझाते है, हम फिर भी नही समझते है।
सेवा नही करते सन्तो की, पाप रात दिन करते है ॥

साथ नही जायेगा कुछ भी, साथ धर्म ही जायेगा।
धर्म मार्ग पर चलनेवाला, भव-सागर तर जायेगा ॥

भाव यही लिखने का मेरा, धर्म मार्ग अपनाये हम।
सन्तो की सेवा करके ये, जीवन सफल बनाये हम ॥

सुननेवालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
एक धर्म है जो जीवो को, भव से पार लगाता है ॥

अशोक विहार में कल्पद्रुम महामण्डल विधन के अवसर पर

कल्पद्रुम के पाठ मे भैया, आनद यहॉ पर आया है।
इस आनद को लेने ही तो, मोहन यहॉ पर आया है ॥

कल्पद्रुम के पाठ की महिमा, ग्रन्थो मे भी गाई है।
इसी पाठ को करने से ही, रौनक यहॉ पर आई है ॥

कल्पद्रुम के पाठ से भैय, पापो का क्षय हो जाता।
इसको करने से निर्धन भी, धनी बहुत ही हो जाता ॥

बैठे है जो पाठ मे भैया, ये सब किस्मत वाले है।
महा पुण्य का उदय सभी का, पाठ के ठाठ निराले है ॥

कल्पद्रुम पाठ की महिमा, मूरख को लिखना आया।
इसी पाठ को करने से ही, जीवन मे आनद आया ॥
प्रेम सभी का पाया मैने, आज यहॉ पर आने से।
सुखमय जीवन होता भैया, प्रभु जी के गुण गाने से ॥
पंडित जी जो आये यहॉ पर, बहुत अधिक विद्वान है।
इनके आशीर्वाद से भैया, मिला हमे ये ज्ञान है ॥
जिओ हजारो साल सभी तुम, अर्ज प्रभु से करते है।
प्रभु की भक्ति करने वाले, भव से पार उतरते है ॥
अशोक विहार वालो का मोहन, प्यारा बेटा कहलाये।
करके ये सम्मान सभी का, मन मे अपने हर्षाये ॥
लिखने मे यदि हुई हो गल्ती मोहन माफी माँगे है।
कल्पद्रुम के पाठ की महिमा, लिखकर हर्ष मनाये है ॥

जिनेन्द्र देव की भक्ति करने वाला जीव हमेशा सुखी रहता है

भक्ति करो सदा श्री जिन की, भक्ति से सुख मिलता है।
आने वाला कष्ट स्वय ही, भक्ति से टल जाता है ॥
पाप नाश हो जाते भैया, श्री जिन भक्ति करने से।
सुखी हमेशा रहता प्राणी, देव गुरु को भजने से ॥
श्री जिनवर की भक्ति भैया, भव से पार लगाती है।
जन्म-मरण का रोग मिटाकर, मोक्ष द्वार पहुँचाती है ॥
बुद्धि निर्मल रहती भैया, हरा भरा जीवन रहता।
प्रभु भक्ति करने से भैया, हर दम जीव सुखी रहता ॥
बिगड़ी किस्मत बन जाती है, देव गुरु को भजने से।
लक्ष्मी स्वय चलकर आती है, श्री जिन पूजा करने से ॥
प्रभु नाम जिस घर मे होता, वह आबाद सदा रहता।
नहीं कमी कुछ रहती उसके, वैभव भी बढ़ता रहता ॥

प्रभु भक्ति से सब सुख मिलते, प्रभु भक्ति सुखदाई है।
जिसने छोडी प्रभु की भक्ति, नरको की विपदा पाई है ॥
प्रभु की भक्ति का फल मुझको, कविता लिखना आया है।
करके भक्ति श्री जिनवर की, अपना भाग्य सराहा है।
भाव यही लिखने का मेरा भक्ति करो भगवान की।
जिन भक्ति से सब सुख मिलता, जय बोलो दयानिधान की ॥
सुनने वालो सुनलो सबको, 'मोहन' यही सुनाता है।
प्रभु भक्ति करने से प्राणी, भव पार उतर जाता है ॥

दृष्टान्त—दूसरों का बुरा करने वाले का

बदी छोडकर धर्म कमाओ, धर्म महा उपकारी है।
धर्मी जन का आदर भैया, करती दुनिया सारी है ॥
करने वाले बदी हमेशा, नकर द्वार मे जाते है।
भारी विपदा पडती उन पर, जीवम मे दुख पाते है ॥
बदी करी जिसने जीवन मे, नरको का मेहमान हुआ।
नरक मे जाने से पहले भी, देखो कैसा हाल हुआ ॥
एक व्यक्ति की सुनो कथा मै, लिखकर तुम्हे सुनाता हूँ।
जिसने पाप किये जीवन भर, उसकी कथा सुनाता हूँ ॥
एक व्यक्ति था एक नगर मे, सर्विस वो तो करता था।
फैक्ट्ररी मे सर्विस करके, घमड बहुत वो करता था ॥
धर्म नही सीखा था उसने, निन्दा करनी सीखी थी।
अच्छे लोगो की तो उसने चुगली करनी सीखी थी ॥
कभी नहीं सोचा था उसने, पापों का फल मिलता है।
पाप कर्म के कारण प्राणी, चौरासी मे रुलता है ॥
भारी पाप कमाये उसने, भूल धर्म को जाने से।
कैसी विपदा आई उस पर, मर्म समझ न पाने से ॥

एक दिना उसका लड़का तो, दूर देश में जाता है।
नदी पड़ी रस्ते मे भैया, डूब नदी मे जाता है ॥
कैन्सर रोग हुआ पत्नी को, ठीक नही वो हो पाई।
बेचारी पत्नी की भैया, मौत एक दिन है आई ॥
भारी विपदाओ मे उसको, भैया अब आँ घेरा है।
कर्णदार वो हुआ बहुत अब, रोगो ने आ घेरा है ॥
रात दिना रोता है अब वो, सिर धुन धुन पछताता है।
कर्जे के कारण उसका तो, घर भी अब बिक जाता है ॥
धर्म मार्ग को तजने से ही ऐसा उसका हाल हुआ।
बुरा करे औरो का जो भी, समझो खुद कगाल हुआ ॥
भाव यही लिखने का मेरा, दया धर्म को गृहण करो।
पाप मार्ग को तजकर भैया, श्रीजिन का गुणगान करो ॥
भक्ति करो साधु-सतो की, पाओ उनसे ज्ञान।
देव गुरु की भक्ति से ही, होता है कल्याण ॥
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
धर्म एक सार है जग मे, सच्ची राह दिखता है ॥

(जैन कुल में जन्म लेकर भी जो देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति नहीं करते हैं उनका हाल)

बडी मुश्किल से मिला मनुज भव, आतम का कल्यान करो।
मिला जैन कुल तुमको उत्तम, धर्म मार्ग तुम गृहण करो ॥
जन्म-जनम के पुण्य इकट्ठे, भैया जब हो जाते है।
तब मिलता है नर तन चोला, ज्ञानी जन समझाते है ॥
विषयों मे यदि सुख होता तो, ऋषि मुनि क्यो तजते।
क्यो सहते वो परिषह भारी, वेष दिगम्बर धरते ॥

भेष दिगम्बर धरते मुनिवर, परमात्म पद पाने को।
मोक्ष मार्ग के बने पथिक वो, आत्म ध्यान लगाने को ॥
उन्ही तपस्वी योगी जन को, अपना शीष झुकाता हूँ।
करके श्रद्धा भक्ति उनकी, ज्ञानामृत पा जाता हूँ ॥
ऋषिमुनियो के दर्शन भैया, बडे पुण्य से मिलते है।
जिन्हे भटकना है भव वन मे, नहि जिनवाणी सुनते है ॥
धर्म मार्ग तज करके जो जन, पाप रात दिन करते है।
देव गुरु को भूल गये अरू, जिनदर्शन नहि करते है ॥
दो भाई थे एक गॉव मे, दोनो हिल-मिल रहते थे।
भावो मे था अन्तर उनके, वैसे सग विचरते थे ॥
धर्म कार्य मे छोटा भैया, सबसे आगे रहता था।
बडा भाई तो कभी नही, जिन मन्दिर राह विहरता था ॥
छोटे भाई ने तो भैया, महत्व धर्म का जाना था।
ऋषि मुनियो की सेवा भक्ति, मे सुख उसने माना था ॥
एक धर्म है जो जीवो को, भव से पार लगाता है।
धर्म मार्ग पर चलनेवाला, स्वर्ग मोक्ष सुख पाता है ॥
ऋषि मुनियो का चातुर्मास, जिस नगरी मे होता था।
छोटा भाई वहॉ पे जाके, भक्ति उनकी करता था ॥
देते था आहार उन्हो को, देकर खुशी मनाता था।
धर्म कार्य मे धन देकर वह भारी पुण्य कमाता था ॥
एक दिना छोटा भाई तो, मुनि दीक्षा ले लेता है।
हो साधक वह मोक्ष-मार्ग पर, पग अपने धर देता है ॥
बडे भाई का सुनो हाल तुम, वो भी तुम्हे सुनाता हूँ।
जिसने तजा धर्म को भैया, उसका हाल सुनाता हूँ ॥
धममार्ग को छोड़ बड़ा तो, मन मे खुशी मनाता था।
जिन दर्शन नहीं करता था वो, होटल मे नित जाता था ॥

जुआ खेलना, पाप कमाना, ही तो बडे ने जाना था।
क्या होता है फल पापो का, नहीं बडे ने माना था ॥

एक दिना की सुनो बात तुम, वो वेश्यालय जाता है।
आयु पूर्ण हुई वहाँ उसकी श्वास बन्द हो जाता है।
उठा लाश दी फेक सडक पर कूडे मे डाल दिया जाता ॥

कोई खबर नहि, पाता उसकी, रखता कोई नही नाता।
सारे घर का हुआ उजाडा, धर्म मार्ग बिसराने से।
अब भी समय समझ ले भैया, फिर क्या हो पछताने से ॥

सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
एक धर्म है जो जीवो को, भव से पार लगाता है ॥

(शरीर हमेशा निरोग व बलवान कैसे बना रहता है)

सुन्दर शरीर निर्मल बुद्धि, नर कौन पुण्य से पाता है।
सुनो ध्यान से मेरे भैया, मोहन तुम्हे सुनाता है ॥

भक्ति करो सदा सन्तो की, भक्ति पार लगाती है।
देव शास्त्र गुरुओ की भक्ति, सिद्ध द्वार पहुँचाती है ॥

भक्ति ही भगवान बनाती, भक्ति दुख हर लेती है।
सच्ची भक्ति श्री जिनवर की, अज्ञान दूर कर देती है ॥

अजन से बन गये निरजन, सच्ची भक्ति करने से।
मन वाछित फल मिलता भैया, देव गुरु को भजने से ॥

देव गुरु को भजो रात दिन, महिमा इनकी न्यारी है।
इनके चरणकमल मे भैया, शत शत नमन हमारी है ॥

एक लडका था एक गाँव मे, जिन मन्दिर नित जाता था।
करके दर्शन श्री जिनवर के, मन मे खुशी मनाता था ॥

धर्म कार्य मे वो लडका नित, सबसे आगे रहता था।
सुबह सवेरे उठकर नित दिन, देव गुरु को ध्याता था ॥

बुद्धि निर्मल थी लडके की, निरोग सदा वो रहता था।
कामदेव सा सुन्दर तन था, सुखी सदा वो रहता था ॥
आदर करते थे सब उसका, धर्मी उसको कहते थे।
धन्य भाग्य है इस लडके के, ऐसा सब ही कहते थे ॥
एक दिना उस गॉव मे भैया, मुनिराज इक जाते है।
धर्म कर्म की सच्ची बाते, जीवो को सिखलाते है ॥
वो लडका भी मुनिराज के, दर्शन करने जाता है।
करके दर्शन पूज्य मुनि के, अपना भाग्य सराहता है ॥
हाथ जोड बोला मुनिवर से, एक बात बतला दीजै।
दया के धारी पर उपकारी, शका मेरी मिटा दीजै ॥
किन कर्मो से मैने मुनिवर, बुद्धि निर्मल पाई है।
मिला शरीर मुझे क्यो सुन्दर, इज्जत दौलत पाई है ॥
सोच ज्ञान मे मुनिराज जी, उत्तर उसको देते है।
किन कर्मो से हुआ सभी ये, उसको ही कह देते है ॥
पूर्व जन्म मे ऋषि मुनियो की, भक्ति कर हर्षाता था।
होते थे जो वृद्ध मुनिवर, सेवा कर इठलाता था ॥
वृद्ध तपस्वी की सेवा का, फल ये तूने पाया है।
सुन्दर शरीर व निर्मल बुद्धि, धन वैभव सब पाया है ॥
सुनकर कविता को भैया तुम, सेवा मुनियो की करना।
देव शास्त्र गुरु पूज्य जगत मे, ध्यान इन्हीं का धर लेना ॥
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
करने से भक्ति मुनियो की, सुखमय जीवन पाता है ॥

(णमोकार मन्त्र की महिमा)

जीवन सफल तुम्हारा होगा, काम सभी बन जायेगे।
नहीं दुःख पाओ जीवन में, आदर ही तुम पाओगे ॥

नही कमी होगी लक्ष्मी की, धन वैभव सब पाओगे।
जो भी बात विचारोगे तुम, उसको पूरा पाओगे ॥
आतम बन जाये परमातम, आतम सच्चा सुख पाये।
कौन मन्त्र है ऐसा जग मे, जिसकी महिमा सब गाये ॥
नाम मन्त्र का णमोकार है, मन्त्र ये सुख का दाता है।
श्रद्धा रखने वाला इस पर, भव सागर तर जाता है ॥
णमोकार की महिमा लिखकर, सुन्दर भाव बनाता हूँ।
इसी मन्त्र पर श्रद्धा रखकर, कविता लिखता जाता हूँ॥
णमोकार को जपकर भैया, अजन भव से पार हुआ।
इसी मन्त्र को जपने से ही, सर्पराज था हार हुआ ॥
निर्धन धनी क्षणिक मे बनता, णमोकार को जपने से।
पाप सभी कट जाते उसके, श्रद्धा इसमे रखने से ॥
मूरख बन जाता है पडित, रोगी बने निरोगी।
कार्य सभी पूरे तब होगे, श्रद्धा इस पर होगी ॥
श्रद्धा रक्खो णमोकार पर, श्रद्धा उर मे धारो।
जो भी काम करो भैया तुम, पहले इसे उचारो ॥
महिमा इसकी लिखूँ कहाँ तक, नही लिखी मुझसे जाती।
इसको जपने से ही भैया, बुद्धि निर्मल हो जाती ॥
होगा जीवन सुखमय भैया, णमोकार को जपने से।
भूत प्रेत नहि रहते घर मे, श्रद्धा इसमे रखने से ॥
पच परमेष्ठी पूज्य जगत मे, भक्ति इनकी किया करो।
करके भक्ति इनकी भैया, धर्मामृत तुम पिया करो ॥
श्रद्धा रखकर णमोकार पर, कविता लिखता जाता हूँ।
सुखी रहे सब जीव जगत के, यही भाव मन पाता हूँ ॥
सुनने वालो सुनलो सबको, मोहन यही सुनाता है।
णमोकार को जपकर प्राणी, भव सागर तर जाता है ॥

जिनवाणी मां की महिमा

जिनवाणी मा, अतस्तल मे, मेरे तुम बस जाओ।
विनय करेंगे माता तेरी, मिथ्या तिमिर भगाओ ॥

तुझ पर गहरी श्रद्धा माता, तुझको शीश झुकाते है।
ऋषि मुनि भी तेरी महिमा, शुद्ध भावो से गाते है ॥

विनय करी तेरी गौतम ने, गणधर का पद पाया।
हम सब ने तेरे चरणो मे, अपना शीश झुकाया ॥

माता कुछ नही लेती हमसे, ज्ञान हमे तुम देती हो।
सच्चा सुख मिलता है कैसे, तुम्ही हमे बताती हो ॥

नरक गति मे कितने दुख है, तूने हमे बताये।
रोटी का नही नाम वहाँ पर, बिन पानी दुख पाये ॥

सयम का नही नाम वहाँ पर, जीव महा दुख पाता।
बुरे कर्म करे जो भैया, वही नरक मे जाता ॥

जिनवाणी की विनय करेगे, तुझको नही भुलायेगे।
जो उपकार किये है हम पर, नही भुला हम पायेगे ॥

माता, तेरी सेवा हम तो, सच्चे मन से करते है।
श्रद्धा रखकर तेरे पर हम, कष्टो से बच जाते है ॥

छान के पानी पीना माता, तूने हमे बताया।
निश मे भोजन नही करे हम, ऐसा पाठ पढाया ॥

ऋषिमुनि भी तेरी महिमा, शुद्ध भावो से गाते है।
करके भक्ति जिनवाणी की, सिद्ध सिला को जाते है ॥

कितने दुख है पशु गति मे, तू ही हमे बताती।
इससे बचके रहना भैया, ऐसा ज्ञान कराती ॥

डण्डे पड़ते ऊपर भैया, बोझा लादा जाता।
भूखा प्यासा रहकर प्राणी, समझ नही कुछ पाता ॥

कभी-कभी तो बिना घास के, भी भूखा ये रहता।
बिजली के हन्टर पडते है, जीव महा दु:ख पाता ॥

बड़ी मुश्किल से मिला मनुज भव, इसको नहि गॅवाना।
लेके सयम महामुनि बन, शिव रमणी को पाना ॥

निश मे भोजन नहि करना है, तूने हमे सिखाया।
भारी हिसा है गोभी मे, हमको ज्ञान कराया ॥

बहु उपकार किये है हम पर, कैसे इन्हे भुलायेगे।
इन उपकारो के बदले मे, नहि कुछ हम दे पायेगे ॥

दृढ हो कहता 'मोहन' तुझसे, तुझे नहीं बिसरायेगे।
जिनवाणी की रक्षा करके, जीवन सफल बनायेगे ॥
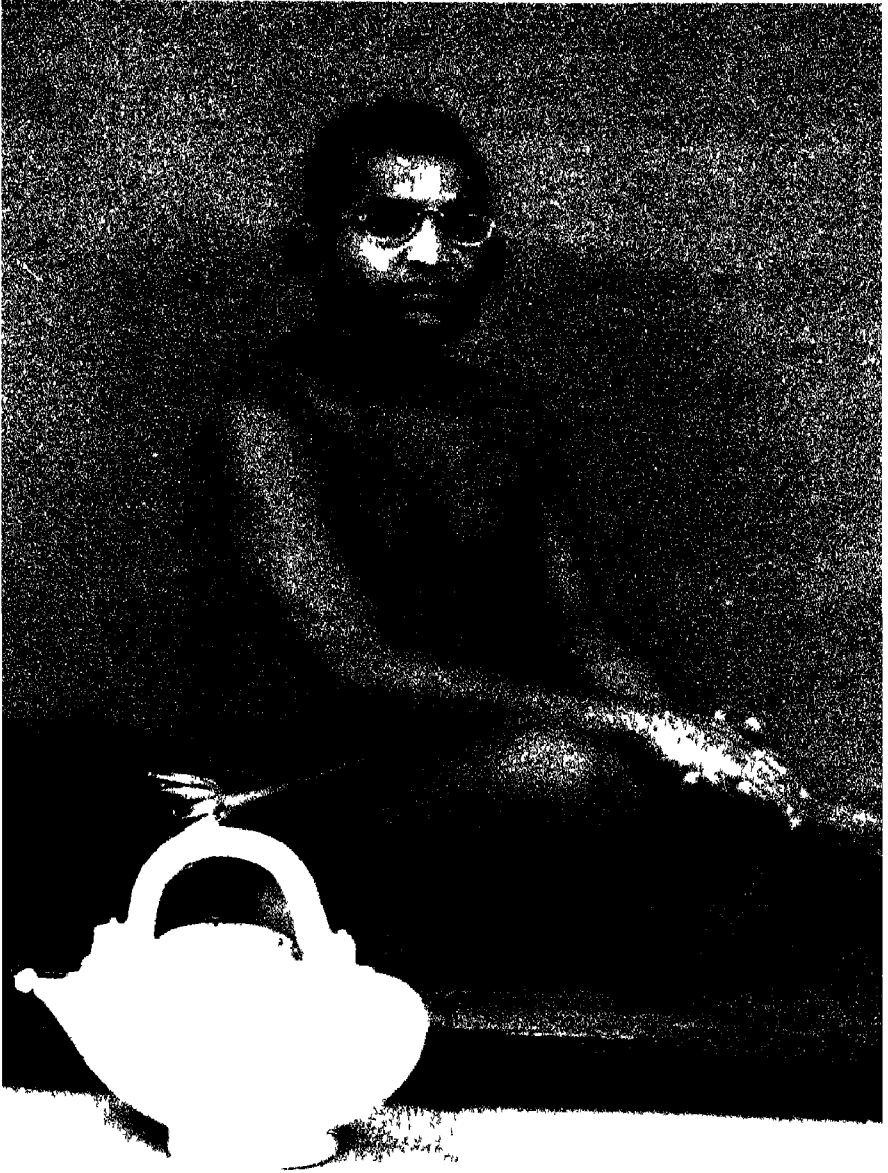
परम पूज्य तपोनिधि निग्रन्थ दि मुनि श्री 108 उपाध्याय गुप्तिसागर जी महाराज।
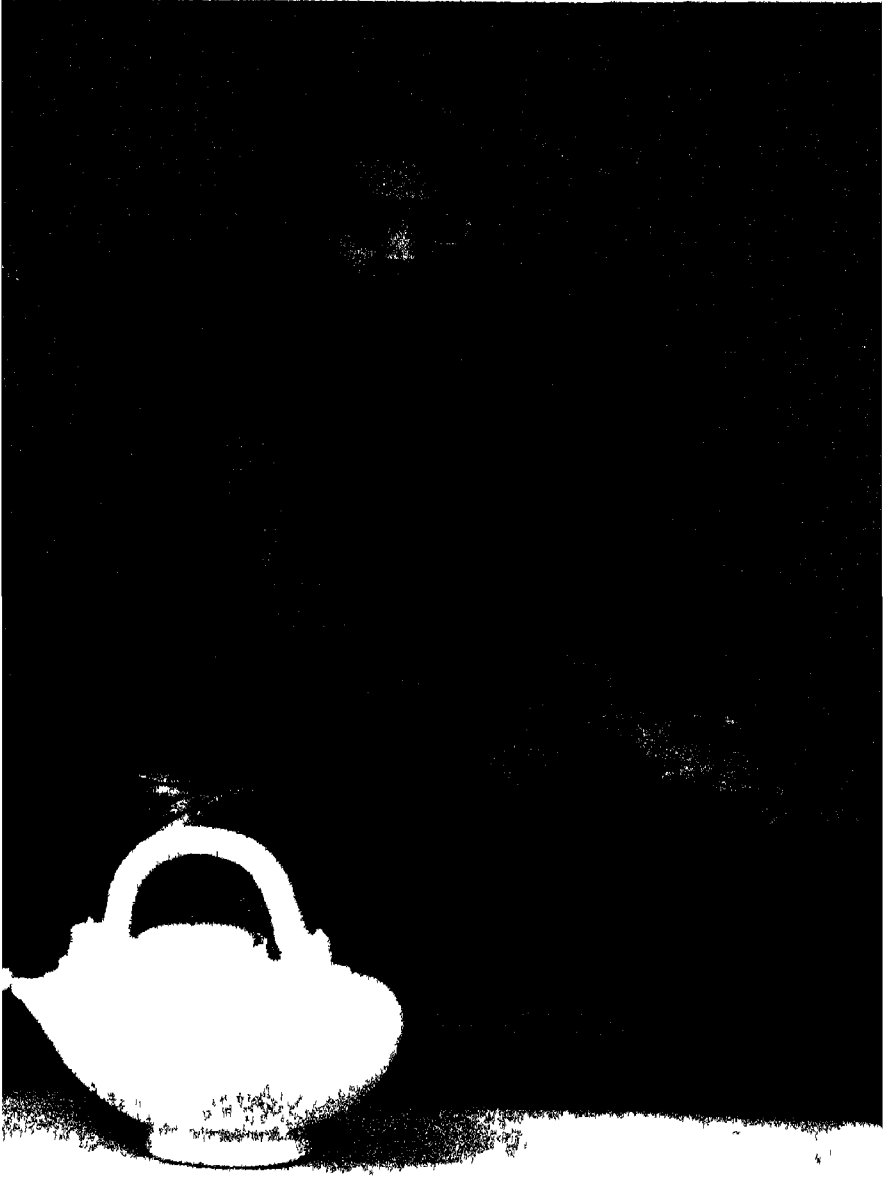
परम पूज्य तपोनिधि निग्रर्न्थ दि मुनि श्री 108 उपाध्याय गुप्तिसागर जी महाराज।

जितने क्षुल्लक हैं मुनि सघ मे, सबको नमन हमारा है।
सदा-सदा हो दर्शन तेरे, ऐसा भाव हमारा है ॥
भूल चूक यदि होवे हमसे, 'मोहन' क्षमा चाहते है ॥4॥

भजन

(भगवान के दर्शन करने से महान पुण्य का बंध होता है)

दर्शन नही कर लेता जब तक, चैन नहीं मुझको आती।
तेरे दर्शन से ही प्रभुवर, सम्यक् किरणे मिल जातीं ॥टेक॥

शुद्ध भावो से जो भी तेरे, प्रभुवर दर्शन करता है।
जन्म मरण का नाम मिटाकर, शिव रमणी को वरता है ॥
करके तेरे दर्शन प्रभुवर, आत्म सच्चा सुख पाती ॥1॥

जिसके घर मे तेरा प्रभुवर, पावन नाम लिया जाता।
रोग शोक नही रहता घर मे, भूत प्रेत सब भग जाता ॥
लक्ष्मी भी आकर उस घर मे, वापस कभी नही जाती ॥2॥

भाव सदा रहते है प्रभुवर, दर्शन तेरा नित पाऊँ।
करके दर्शन प्रभुवर, तेरा, सिद्ध शिला को मै जाऊँ ॥
सिद्ध शिला को जाकर 'मोहन' आत्मा वापिस नही आती ॥3॥

भजन

करके भक्ति महा मुनियो की, मुनियो का पद पायेगा।
मुनियो का पद पाकर ही तू, सिद्ध शिला को जायेगा ॥टेक॥

दर्शन करने से मुनियो के, पाप नाश हो जाते है।
श्रद्धा भक्ति से मुनियो की, कष्ट दूर हो जाते है ॥
करले इनकी सेवा भक्ति, सच्चे सुख को पायेगा ॥1॥

दे आहार महामुनियो को, जो मन मे खुशी मनायेगा।
नवधा भक्ति से पड़ गाकर, अपना भाग्य सराहेगा ॥
ऐसा प्राणी जग मे भैया, भारी पुन्य कमायेगा ॥2॥

सच्चा सुख मिलता है मुनिवर, पास तुम्हारे आने से।
निर्मल बुद्धि होती भैया, मुनियो के गुण गाने से ॥
मुनियो के गुण गाकर मोहन, जीवन सफल बनायेगा ॥3॥

भजन

भजन करो वीरा का भैया, वीरा पार लगायेगे।
दर्शन करके वीर प्रभु के, जीवन सफल बनायेगे ॥टेक॥
पाप सभी कट जाते प्रभुवर, तेरा ध्यान लगाने से।
कष्ट नहीं रहते है प्रभुवर, तेरे ही गुण गाने से ॥
करके पूजन वीर प्रभु की, भारी पुन्य कमायेगे ॥1॥
शुद्ध भावो से जो वीरा का, सच्चा ध्यान लगाते है।
लेकर पावन नाम तुम्हारा, अपना भाग्य सराहते है ॥
सच्चे सुख को पाकर वो तो, शिव रमणी को पायेगे ॥2॥
श्रद्धा रख चरणो मे तेरे, तेरा गुण हम गायेगे।
चाहे कितनी पडे मुसीबत, धर्म नही बिसरायेगे ॥
वीरा, तेरी करके भक्ति 'मोहन' मुक्ति पायेगे ॥3॥

भजन

हुआ आज मुनियो का दर्शन जो पाना।
पुन्य उदय आया भैया, समय है सुहाना ॥टेक॥
परम शात मुद्रा है, जग से निराली।
ऐसी न सूरत, कही देखी न भाली ॥
मुनिवर के चरणो मे, चित है लगाना ॥1॥
भरी नव-जवानी मे, दीक्षा है धारी।
करते तपस्या ये, मुनिराज भारी ॥
नही तन पे लगोटी, नग्न इनका बाना ॥2॥

विषयो की आशा, नहीं लेश इनके।
अविकार है ये बालक जैसे ॥
वाणी पै इनकी, है शैदा जमाना ॥3॥

आज मुनिराज का, दर्शन ये पाकर।
मित्र अरी कचन, काच है बराबर ॥
परम वीतरागी ये, मोहन ने जाना ॥4॥

भजन

चादनपुर के वीरा, तुझे मेरा नमस्कार हो।
तुम्ही सुखकार हो, तुम्ही हितकार हो ॥टेक॥

जोधराज ने तुमको ध्याया, उसका कष्ट मिटाया है।
ठडा हुआ तोप का गोला, उसको आन बचाया है ॥
तीन वार खाली गये, भूप लाचार हो ॥1॥

जोधराज मन्त्री को, राजा ने बुलाया है।
पूछा बताओ तुम्हे, किसने बचाया है ॥
जोधराज बोले सुनो, मेरी सरकार हो ॥2॥

टीला एक जगल मे, चादन के तीर है।
महावीरजी की वहाँ, एक तस्वीर है ॥
राजा उस टीले पर, नित जयकार हो ॥3॥

मन्दिर बनाया राजा, ग्वाला रुसाया है।
ग्वाले का मान प्रभु, तुमने बढाया है ॥
वीरा तुम्हे मोहन की, नमन सौ सौ बार हो ॥4॥

भजन

चाहे कितनी पडे मुसीबत, भूल धर्म को मत जाना।
धर्म सहाई है इस जग मे, श्रद्धा ऐसी मन लाना ॥टेक॥

छोड धर्म को प्राणी जग मे, भारी कष्ट उठाते है।
इसको तजने से ही भैया, नरक गति में जाते है ॥
धर्म ही साथ चलेगा अन्त मे, इसको नही भुलाना ॥1॥

मैना अजना धर्म के कारण, जग मे नाम कमाती है।
इसी धर्म के कारण सीता, अग्नि से बच जाती है ॥
सच्चा मित्र धर्म ही भैया, इसको तू अपनाना ॥2॥
धर्म परीक्षा लेगा तेरी, फेल नही उसमे होना।
डट जाना तुम धर्म पे अपने, विचलित नहीं कभी होना ॥
पास परीक्षा मे होकर ही, 'मोहन' मुक्ति पद पाना ॥3॥

भजन

प्राण भले ही जाये अपने, धर्म नही जा सकता है।
धर्म ध्यान करके ये प्राणी, मुक्ति पद पा सकता है ॥टेक॥
धर्म छोडकर इस प्राणी ने, भारी कष्ट उठाये है।
चौरासी के चक्कर खाकर, काल अनत बिताये है ॥
धर्म ध्यान अपनाकर ही तू, सच्चा सुख पा सकता है ॥1॥
समय नही मन्दिर जाने का, विषयो मे चित लाता है।
कुत्ता हाड चबाके भैया, हड्डी मे सुख पाता है ॥
विषय छोड तू धर्म कमाले, सच्चा सुख पा सकता है ॥2॥
धन दौलत के चक्कर मे तू, सारा समय बिताता है।
भूल गया तू निज को भैया, इसीलिए दुख पाता है ॥
निज पर का तू भेद समझ कर, 'मोहन' सिद्ध बन सकता है ॥3॥

भजन

विषयो मे नही सुख है भैया, धर्म से प्रीति लगा ले।
महामुनियो की सेवा करके, जीवन सफल बना ले ॥टेक॥
महामुनियो की सेवा करके, पद मुनियो का पायेगा।
मुनि मुद्रा को धारण करके, सिद्ध शिला को जायेगा ॥
सिद्ध शिला को जाने वाले, श्रद्धा भाव जगा ले ॥1॥

धन वैभव नही साथ चलेगा, साथ धर्म ही जायेगा।
जैसे कर्म करेगा प्राणी, वैसा ही फल पायेगा ॥
दे आहार महा मुनियो को, भारी पुण्य कमा ले ॥2॥

विषय भोग मे फँसकर मूरख, सारा समय बिताता है।
समय नहीं मन्दिर जाने का, भोगो मे चित लाता है ॥
विषय भोग तजकर तू 'मोहन', शिव रमणी को पा ले ॥3॥

भजन

भोगो मे क्यो समय बिताता, भोग महा दु खदाई है।
विषय भोग के चक्कर मे पड, सारी उम्र बिताई है ॥

विषयो मे गर सुख होता तो, तीर्थकर क्यो त्यागे।
ऋषि मुनि जगल मे जाकर, परिषह को क्यो सहते ॥
विषय छोड तू प्रभु को भज ले, प्रभुनाम सुखदाई है ॥1॥

धन वैभव तू पाकर भैया, विषयो मे चित लाता है।
चिन्तामणी रतन पाकर भी, यू ही व्यर्थ लुटाता है ॥
छूट गया यदि रतन हाथ से, हाथ नहीं फिर आई है ॥2॥

सुन्दर यौवन पाकर मूरख, भूल धर्म को बैठा है।
जिनवाणी को ठुकराकर तू, मन मे अपने ऐठा है ॥
ऐठ छोडकर धर्म कमा ले, 'मोहन' धर्म सहाई है ॥3॥

भजन

वीरा नाम लिया नहीं मुख से, हीरा जन्म गॅवाया।
विषय भोग के चक्कर मे पड, भारी कष्ट उठाया ॥टेक॥

जिनको तू अपना कहता है, वो तुझको ठुकरायेगे।
दुर्दिन मे ओ भोले प्राणी, हर इक आँख दिखायेगे ॥
मोह माया के चक्कर मे तू, धर्म नही कर पाया ॥1॥

बडे पुण्य से मिला ये नर भव, दया नही मन लाता है।
चिन्तामणी रतन पाकर भी, यू ही व्यर्थ लुटाता है ॥
निज को भूल गया तू भैया, इसीलिए दुख पाया ॥2॥
कहता 'मोहन' आत्म से तू, सच्ची लगन लगा ले।
श्रद्धा भक्ति कर वीरा की, मुक्ति पथ अपना ले ॥
मुक्ति पाने वाला भैया, फिर दुनिया मे नही आया ॥3॥

भजन

(दस लक्षण पर्व पर)

पर्व दस लक्षण है आया, चहुँ दिशि आनद है छाया ॥टेक॥
क्षमा धर्म को धारण कर लो, सम्यक् सुख को पाओगे।
कपट कषाय तजो रे भाई, सिद्ध शिला को जाओगे।
दस धर्मो का पहन के चोला, सच्चा सुख है पाया ॥1॥
सत्य धर्म का पालन करना, मुनि हमे सिखलाते है।
शौच भाव रखे नित मन मे, उत्तम त्याग कराते है।
सयम अब तो धारण कर लो, बिन सयम दुख पाया ॥2॥
किचित भी न परिग्रह रखना, आकिचन कहलाता है।
तप रूपी किरणो से भैया, कर्म नाश हो जाता है।
ब्रह्मचर्य व्रत धारो 'मोहन', मानुष भव है पाया ॥3॥

भजन

त्रिशलानदन वीर प्रभु जी, तुमको नमन हमारा है।
जिओ और जीने दो सबको, शुभ सन्देश तुम्हारा है ॥टेक॥
तुम ही पार लगाते नैया, तुम ही एक सहारे हो।
त्रिशला माँ के प्राण पियारे, भूमडल के उजियारे हो ॥
महिमा गायें तेरी हम सब, तेरा हमे सहारा है ॥1॥

भूल गए जो तुझको वीरा, भारी कष्ट उठाते हैं।
करके दर्शन प्रभुवर, तेरा, पाप सभी कट जाते है ॥
तेरी कृपा से ही प्रभुवर, मिटता सकट सारा है ॥2॥
चौरासी के चक्कर खाकर, द्वार तुम्हारे आया हूँ।
सच्चा सुख नहि मिला कही भी, इसीलिए इत आया हूँ ॥
श्रद्धा भक्ति करके 'मोहन', गाता गीत तुम्हारा है ॥3॥

भजन

वीर प्रभु की महिमा न्यारी।
दर्शन करते सब नर नारी ॥टेक॥
जो भी गुण गाते है तेरे।
मिटते जन्म मरण के फेरे ॥
इच्छा पूरी होती सारी ॥1॥
सुन्दर तेरा रूप निराला।
वीतराग छवि प्यारी ॥
गुण गाये दुनिया सारी ॥2॥
ऋषि मुनि सब तुमको ध्यावे।
'मोहन' तेरा ध्यान लगावे ॥
आया शरण तुम्हारी ॥3॥

भजन

(अतिशय क्षेत्र बाड़ा ग्राम के श्री पद्म प्रभु के चरणों में)

बाडे के श्री पद्म प्रभु को, हम सब शीश झुकाते है।
करके दर्शन प्रभु जी तेरे, अपना भाग्य सराहते है ॥टेक॥
शुद्ध भावो से जो भी तेरा, प्रभुवर, ध्यान लगाते है।
जन्म-जन्म के पाप छिनक मे, उनके सब कट जाते है ॥
जन्म मरण का नाम मिटाकर, मुक्ति का पद पाते है ॥1॥

भूत प्रेत भग जाते सारे, दर्शन तेरा पाने से।
हर्षित होते नर नारी सब, तेरी महिमा गाने से ॥
दर्शन पाये नित हम तेरे, ऐसी आस लगाते है ॥2॥

महिमा तेरी भारी प्रभुवर, तुम ही एक सहारे हो।
मात सुसीमा के नदन तुम, लाज बचावन हारे हो ॥
श्रद्धा भक्ति करके तेरी, 'मोहन' भजन बनाते है ॥3॥

भजन

मुनिराज, तुम्हारे दर्शन कर, हम फूले नही समाते है।
श्रद्धा रूपी रतन आपके, चरणो भेट चढाते है ॥टेक॥

ज्ञान ध्यान लवलीन निरन्तर, हित उपदेश सुनाते।
जैन अजैन सभी नर नारी, तेरा ही गुण गाते ॥
आदर्श मुनि है कलियुग मे, हम तुमको शीश झुकाते है ॥1॥

मुनि सघ का है प्रभाव, निशि भोजन हमने छोड दिया।
मद्य मास के त्यागी बहुजन, गोभी से भी मुख मोड लिया ॥
भारत मे विख्यात मुनिवर, दर्शन तेरा पाते है ॥2॥

निज कर से केशलोच करके तुम, कठिन तपस्या करते हो।
पच महाव्रत धर के मुनिवर, नाश कर्म का करते हो ॥
शरण मे तेरी रहकर 'मोहन', अपना भाग्य सराहे है ॥3॥

भजन

मानव भव का सार यही है, सदाचार को अपनाना।
राग द्वेष का नाम मिटाकर, वीतराग तू बन जाना ॥टेक॥

क्षमा धर्म को धारण करके, क्षमाशील तू कहलाये।
मोह महारिपु दूर भगाकर, आदर्श जगत मे बन जाये ॥1॥

सत्य धर्म का सूट पहनकर, शौच भाव मन मे लाना।
तप रूपी किरणों से भैया, सयम भाव जगाना ॥2॥

किंचित भी न परिग्रह रखना, अन्तर ध्यान लगाना।
ब्रह्मचर्य व्रत पालन करके, मोहन मुक्ति पद पाना ॥3॥

भजन (आचार्य महाराज के चरणों में)

आचार्य ज्ञान भूषण जी, मिले उपकारी।
है बालक सरीखे, नगन अविकारी ॥टेक॥

धन बैभव को छोड मुनिवर, हो गये सयम धारी।
बेले तेले चौले करते, करते है तप भारी ॥1॥

भाग्य उदय से मुनिराज का, हमने दर्शन पाया।
परम दिगम्बर छवि तुम्हारी, सारे जग मे न्यारी ॥2॥

भर यौवन मे घर को तजकर, दीक्षा ली सुखकारी।
हित उपदेश सुनाते सबको, महिमा तेरी न्यारी ॥3॥

राग द्वेष नहि नाम मात्र को, कठिन तपस्या करते।
हाथ जोडकर कहता मुनिवर से, मोहन नमन हमारी ॥4॥

भजन

सोते उठते शाम सबेरे, वीरा के गुण गावे।
वीर प्रभु की करके भक्ति, जीवन सफल बनावे ॥टेक॥

शूली का हो गया सिहासन, तेरी महिमा गाने से।
ठडा हुआ तोप का गोला, तेरा ध्यान लगाने से ॥
करके दर्शन वीर प्रभु के, भारी पुन्य कमावे ॥1॥

सुमरण करके सोम सती ने, नाग उठाया काला।
महा भयकर विषधर था वह, बना पुष्प की माला ॥
करके सुमरण वीर प्रभु का, अपना भाग्य सराहे ॥2॥

चन्दन बाला मैना सुन्दरी ने, तेरा ध्यान लगाया।
करके भक्ति तेरी वीरा, जीवन सफल बनाया ॥
करके भक्ति वीर प्रभु की, मोहन मुक्ति पावे ॥3॥

भजन

(णमोकार महामन्त्र की महिमा)

श्रद्धा रक्खो महामन्त्र पर, मन्त्र ही पार लगाएगा।
श्रद्धा इस पर रखने वाला, सिद्ध शिला को जायेगा ॥टेक॥

सच्चे मनसे जो भी प्राणी, महामन्त्र को जपते है।
पाप सभी कट जाते उनके, स्वर्ग सुखो का रचते है ॥
महामन्त्र को जप ले मनुआ, कष्ट नही तू पायेगा ॥1॥

महामन्त्र के कारण देखो, नाग हार बन जाता है।
अजन चोर इसी को जपकर, मुक्ति पद को पाता है ॥
इस पर श्रद्धा रखो गहरी, भव से पार लगायेगा ॥2॥

महामन्त्र को सुनकर भैया, बैल स्वर्ग मे जाता है।
इस पर श्रद्धा रखकर मोहन, भजन बनाकर लाता है ॥
इसको नही बिसराना प्यारे, बिगडे काम बनायेगा ॥3॥

भजन

बडे भाग्य से मुनिराज के, हमने दर्शन पाये।
करके तेरी सेवा भक्ति, जीवन सफल बनाये ॥टेक॥

निशि का भोजन त्याग कराके, पूजन नियम दिलाते है।
सच्चा सुख मिलता है कैसे, मुनिवर हमे बताते है ॥
बालकवत् निर्भय अविकारी, वेश दिगम्बर पाये ॥1॥

शहर शहर और गॉव-गॉव मे, धर्म प्रचार फैलाते।
जैन अजैन सभी नर-नारी, तेरा ही गुण गाते ॥
सदा-सदा हो दर्शन तेरे, ऐसी आस लगाये ॥2॥

क्रोध मान मद लोभ भगाया, पच महाव्रत धारी।
पचाचार करे नित पालन, सहे परिषह भारी ॥
पाकर शुभ आशीष तुम्हारी, मोहन भजन बनाये ॥3॥

भजन

त्रिशलानदन वीर प्रभु जी, भूमडल के उजियारे थे।
सिद्धार्थ घर जन्म लिया था, त्रिशला के प्राण पियारे थे ॥टेक॥

पाप बढे थे इस धरती पर, भारी हिसा होती थी।
बेचारे पशुओ की टोली, यज्ञो मे होमी जाती थी ॥
हिसा पाप मिटाने को बस, ये ही एक सहारे थे ॥1॥

सत्य अहिसा का कर पालन, मिथ्या तिमिर भगाया था।
जिओ और जीने दो सबको, शुभ सन्देश सुनाया था ॥
राग द्वेष का नाम मिटाकर, सबके कष्ट निवारे थे ॥2॥

जिन्दा औरत को मुर्दे के, सग मे डाला जाता था।
जलाके दोनो को एक सग मे, धर्म को माना जाता था ॥
लेकर जन्म वीर ने 'मोहन', मेटे सकट सारे थे ॥3॥

भजन

दर्शन तेरे करते ही सब, पाप कर्म कट जाते है।
करके भक्ति प्रभु तुम्हारी, अपना भाग्य मनाते है ॥टेक॥

श्रद्धा जो रखता है तुझ पर, तुझ जैसा बन जाता है।
सम्यक् रूपी किरणे पाकर, जीवन ज्योति जगाता है ॥
भक्तो की नैया को प्रभुवर, भव से पार लगाते है ॥1॥

कष्ट नही होने देते तुम, रक्षा सबकी करते हो।
भक्तो की तुम लाज बचाकर, दुख उनका हर लेते हो ॥
श्रद्धा से जो करते दर्शन, शिव रमणी को पाते है ॥2॥

श्रद्धा रख चरणो मे तेरे, तेरा गुण हम गाते है।
अष्ट द्रव्य से प्रभुवर तेरी, पूजा पाठ रचाते है ॥
करके पूजा तेरी मोहन, भजन बनाकर लाते है ॥3॥

भजन

(आचार्य ज्ञानभूषण जी संघ के चरणों में)

करके दर्शन मुनि सघ के, फूले नहीं समाते है।
श्रद्धा रूपी रत्न आपके, चरणो भेट चढ़ाते है ॥टेक॥
ज्ञानाभूषण दया के धारी, ज्ञान बहुत बरसाते है।
सम्यक् ही सुख का कारण है, ऐसा पाठ पढ़ाते है ॥
पाकर ज्ञान आपसे हम तो, मिथ्या तिमिर भगाते है ॥1॥
सच्चा श्रावक कैसे बनता, सुविवेक मती बतलाती है।
श्रद्धा विवेक और क्रिया की, मेल जहाँ हो जाती है ॥
सच्चे श्रावक बने सभी हम, गुण मुनियो के गाते है ॥2॥
वीरसागर की महिमा को हम, मुख से नहीं कह सकते है।
बना समन्दर पूरी स्याही, फिर भी नही लिख सकते है ॥
वीरसागर से बने वीर हम, ऐसी आस लगाते है ॥3॥
असम्भव को सम्भव करके, आप हमे दिखलाते हो।
सम्भवसागर है नाम तुम्हारा, सुन्दर भजन सुनाते हो ॥
भजन आपके सुनकर हम तो, आनन्द बहुत मनाते है ॥4॥
सम्यक् रूपी देकर किरणे, मिथ्या तिमिर नसाते हो।
सूर्य सागर नाम तुम्हारा, क्षुल्लक तुम कहलाते हो ॥
जिन भक्ति से सब सुख मिलता, ऐसा हमे बताते है ॥5॥
चातुर्मास सदा इस सघ का, इस नगरी मे होवे।
मुनियो के दर्शन कर मोहन, बीज मोक्ष का बोवे ॥
भूल चूक यदि होवे हमसे, क्षमा सघ की पाते है ॥6॥

भजन

सयम अब तो धारण कर लो, कष्ट बहुत है पाये।
बिन सयम को धारे प्राणी, लाखो कष्ट उठाये ॥टेक॥

नरक गति मे जाकर मैने, कोड़ो की थी मार सही।
पानी नहीं मिला पीने को, रक्त राध की धार बही ॥
दाना नहीं मिलता खाने को, जीव महा दुख पाये ॥1॥

पाप कर्म ने पशु गति मे, ले जा करके पटका।
ऊपर धार चले थी पैनी, सास बीच मे अटका ॥
अशुभ भाव से मरा जीव ये, रो-रो रुदन मचाये ॥2॥

देव गति मे भी ये प्राणी, बहुत बार हो आया।
सयम नही मिला इसको तो, चला वहाँ से आया ॥
वहाँ से आके मनुष्य गति मे, नरतन चोला पाये ॥3॥

बडे पुन्य से मनुष्य गति मे, मुनि दर्शन को पाया।
सम्यक् रूपी किरणे पाकर, फूला नहीं समाया ॥
अब भी सयम धार ले 'मोहन', अन्त एक दिन आये ॥4॥

भजन

खाली हाथो पडेगा जाना, मुनि हमे बतलाते है।
धर्म मार्ग पर चलनेवाले, भव सागर तर जाते है ॥

नहीं धरा है कुछ दुनिया मे, खुद का पता लगा ले।
खुद का पता लगाकर आतम, सच्चे सुख को पा ले।
सच्चे सुख को पानेवाले, मोक्ष महल मे जाते है।

यदि दुनिया मे सुख होता तो, तीर्थकर क्यो तजते।
राज पाठ सब छोड़ के भैया, निज आतम क्यो भजते।
निज आतम को भजकर भैया, सुख अनत को पाते है।

चला सिकदर जब दुनिया से, पास न कोई पैसा था।
किया कर्म था जैसा जग मे, फल उसके सग वैसा था।
पाप रात दिन करनेवाले, नरको के दु:ख पाते है।

भजन

सच्चा सुख है तेरे अदर, बाहर कहा तू जाता है।
विषय भोग मे फसकर मूरख, हीरा जन्म गवाता है। टेक।

भाई बहन भतीजे, नारी, सब मतलब के नाते है।
दुर्दिन मे ओ भोले प्राणी, काम नही ये आते है।
इनके चक्कर मे पडकर तू, भूल स्वय को जाता है ॥1॥

मोह माया मे फसकर प्राणी, सारा समय बिताता है।
समय नही मंदिर जाने का, निश मे भोजन खाता है।
चितामणि रतन पाकर भी, दर दर हाथ फैलाता है ॥2॥

अब भी समय समझ ले भैया, गया समय नही आता है।
एक धर्म है जो जीवो को, भव से पार लगाता है।
धर्म नही बिसराना 'मोहन' धर्म साथ मे जाता है ॥3॥

भजन

पार लगा दो वीर प्रभु जी, शरण तुम्हारी आया हूँ।
चौरासी मे चक्कर खाकर, द्वार तुम्हारे आया हूँ ॥टेक॥

सच्चा सुख मिलता है भगवन, पास तुम्हारे आने से।
पाप सभी कट जाते प्रभुवर, दर्शन तेरा पाने से।
दर्शन दे दो मुझको वीरा, आस लगा के आया हूँ ॥1॥

छोड के तुझको वीरा मैने, भारी कष्ट उठाया है।
बडे पुण्य से वीर प्रभु जी, दर्शन तेरा पाया है।
दर्शन तेरा करके मै तो, फूला नही समाया हूँ ॥2॥

जब तक प्राण रहे इस तन मे, गुण तेरे मै गाऊँगा।
करके तेरी श्रद्धा भक्ति, तुझसा मै बन जाऊँगा।
शीश झुकाता तुमको 'मोहन' सम्यक पाने आया हूँ ॥3॥

भजन

पल की खबर नहीं है भैया, जोड-जोड धन रखता है।
करके पाप कमाई भैया, धन तू सग्रह करता है ॥टेक॥

धन वैभव नहीं साथ चलेगा, साथ धर्म ही जाएगा।
जैसे कर्म करेगा प्राणी, वैसा ही फल पाएगा ॥
पाप छोड तू धर्म कमा ले, धर्म ही दु ख को हरता है ॥1॥

आशाओ के महल बनाकर, मन मे खुशी मनाता है।
निज आत्म को भूल के भैया, विषयो मे चित लाता है ॥
विषय छोड तू प्रभु को भज ले, प्रभु नाम सुखदाता है ॥2॥

घडी-घडी पल-पल छिन-छिन तेरी, उम्र बीतती जाए।
पता नही कब काल का डका, सिर पर आ मडराए ॥
धर्म ध्यान तू कर ले 'मोहन', धर्म ही पार लगाता है ॥3॥

भजन

धर्म रूपी घुट्टी पीने से ही जीवन सुखी रहता है

घुट्टी धर्म की पीले भैया, धर्म ही सच्चा साथी है।
बाकी साथी है सब झूठे, धर्म ही सच्चा नाती है ॥टेक॥

नही कदर करते हम इसकी, छोड इसे हम बैठे है।
मोह माया के चक्कर मे पड, भूल धर्म को बैठे है ॥
छोड इसे देने से आत्म, नरको के दु ख पाती है ॥1॥

नर तन चोला मिला हमे ये, धर्म मार्ग अपनाने को।
जिनवाणी का मनन करे हम, सयम धारण करने को ॥
सयम नहीं लेने से आत्म, पशु गति के दु ख पाती है ॥2॥

अब भी समय समझ ले भैया, मुनि हमे समझाते है।
सयम धारण करके मुनिवर, सिद्ध शिला को जाते है ॥
सयम धारण करके मोहन, ही आत्म सुख पाती है ॥3॥

भजन

एक दिन तुझे दुनिया से अवश्य जाना पड़ेगा

पता नहीं तुझे भोले प्राणी, इक दिन तुझको जाना है।
दिख रहे जो ठाठ तुझे ये, छोड सभी को जाना है ॥टेक॥

छोड सभी को जाएगा तू, इकला ही तू जाएगा।
नेकी और बदी ही भैया, साथ मे तू ले जाएगा ॥
नेकी और बदी का फल ही, तुझे वहाँ मिल जाना है ॥1॥

नेकी करनेवाले भैया, सच्चे सुख को पाते है।
करते है जो बदी यहाँ पर, वो नरको मे जाते है ॥
भारी मार पडे नरको मे, जिनवाणी का कहना है ॥2॥

बदी छोड तू धर्म कमाले, जग मे धर्म महान है।
धर्म मार्ग पर चलने से ही, हो जाता कल्याण है ॥
धर्म मार्ग पर चलकर 'मोहन', मोक्ष महल मिल जाता है ॥3॥

भजन

सच्चे देव शास्त्र गुरुओं की भक्ति करने से ही जीव का कल्याण होता है।

जिनकी श्रद्धा देव गुरु मे, नहीं कष्ट वो पाएगे।
भक्ति करके देव गुरु की, भव से वो तिर जाएगे ॥टेक॥

भक्ति करने से मुनियो की, पाप नाश हो जाता है।
मनवांछित फल मिलता भैया, जीवन सुखमय होता है ॥
करके भक्ति देव गुरु की, अपना भाग्य सराहेगे ॥1॥

भक्ति मे शक्ति है भैया, भक्ति सुख की सागर है।
सच्ची भक्ति ही प्राणी को, देती मुक्ति गागर है ॥
सच्ची भक्ति करके भैया, सच्चे सुख को पाएगे ॥2॥

सच्ची श्रद्धा देव गुरु मे, बिगडे काम बनाती है।
शुभ आशीष ऋषि-मुनियो की, सोया भाग्य जगाती है ॥
पा आशीष ऋषि-मुनियों की, मोहन मुनि बन जाएगे ॥3॥

भजन

काल अनते बीते तुझको, चौरासी मे रुलते।
चहु गति मे हम फिरे भटकते, जन्म मरण दु ख भरते ॥टेक॥
जन्म मरण के दु ख सहकर भी, समझ नही हम पाते है।
मुनि हमे समझाते है हम, फिर भी नही समझते है ॥
नही मानते बात गुरु की, इसीलिए दु ख पाते ॥1॥
कितने कष्ट सहे है हमने, कहे नही मुख से जाते।
करुणा करके गुरु हमारे, बार-बार है समझाते ॥
कर लो आत्म का हित भैया, पूज्य गुरुवर कहते ॥2॥
नर तन चोला पाकर भी यदि, नही आत्म हित कीना।
नरको मे फिर पडेगा जाना जिनवाणी का कहना ॥
नरक दु खो से डरकर मोहन, धर्म मार्ग पर चलते ॥3॥

भजन

करले आत्म का कल्याण, कुछ समझ अरे नादान ॥टेक॥
श्रद्धा भक्ति कर मुनियो की, सोया भाग्य जगा ले।
करके दर्शन वीर प्रभु के, भारी पुण्य कमा ले ॥
जिनवाणी की विनय से भैया, मिलता सच्चा ज्ञान ॥1॥
बचपन खेलकूद मे खोकर, सारा समय बिताया।
नरक पशु के दु ख सहकर भी, समझ नही कुछ पाया ॥
बडी मुश्किल से मिला मनुष्य भव, कर आत्म कल्याण ॥2॥
धन वैभव के चक्कर मे पड, हीरा जन्म गवाया।
नाम सुमरले वीर प्रभु का, काहे तू भरमाया ॥
भव सागर से तिरेगा 'मोहन', धर वीरा का ध्यान ॥3॥

भजन

निज आत्म को भूल गया रे, आत्म सुख का भडार है।
पर मे नही सुख मेरे भैया, पर दुखो का द्वार है ॥टेक॥

निज आत्म को भूल के हमने, भारी कष्ट उठाए है।
कितनी विपदा सही नरक की मुख से कही न जाए है॥
भारी मार पडी नरकन मे, नरक दुखो का द्वार है ॥1॥

पशु गति के दुख भी भैया, अनतो बार उठाए है।
भूखे-प्यासे रहे वहॉ पर, कोडे हटर खाए है ॥
कोडे हटर खाकर भी हम, करे भोगो से प्यार है ॥2॥

पर से प्रीति हटाकर भैया, निज से प्रीति लगा ले।
निज आत्म मे रमकर भैया, ज्ञान की ज्योति जगा ले ॥
निज मे रमने से ही 'मोहन', होता बेडा पार है ॥3॥

भजन

देव शास्त्र गुरुओ से भैया, अब तो लग्न लगा ले।
करके सेवा भक्ति इनकी, जीवन सफल बना ले ॥टेक॥

चौरासी के चक्कर खाकर, नर तन चोला पाया है।
शुभ कर्मो के कारण तूने, उत्तम कुल को पाया है ॥
देव गुरु के करके दर्शन, सोया भाग्य जगाले ॥1॥

देव शास्त्र गुरुओ की भक्ति, सच्चे सुख को देती है।
पाप कर्म का करके नाश ये, बीज मोक्ष का बोती है ॥
इनकी श्रद्धा भक्ति करके, मुक्ति टिकट पाले ॥2॥

बडे पुण्य से इन तीनो का, तूने दर्शन पाया।
सम्यक रूपी किरणे पाकर, फूला नही समाया ॥
धर्म मार्ग पर चलकर मोहन, मुक्ति पद को पाले ॥3॥

भजन

श्री 108 आचार्य धर्म भूषण जी महाराज के चरणों में।

पूज्य गुरु के श्री चरणो मे, अपना शीश झुकाता हूँ।
करके दर्शन गुरुवर तुमरे, फूला नही समाता हूँ ॥टेक॥

तुम्ही मेरे भाग्य विधाता, तुम्ही सयम दाता हो।
सूरज से ज्यादा तेजस्वी, शशधर से ज्यादा शीतल हो ॥
लेकर नियम धर्म मे तुमसे, पालन कर हर्षाता हूँ ॥1॥

रात्रि भाजन त्याग कराकर, उत्तम मुझको शिक्षा दी।
आलू गोभी छुडवा करके, महामत्र की जाप भी दी ॥
सप्त व्यसन का करके त्याग मैं, गीत तुम्हारे गाता हूँ ॥2॥

आजीवन चमडे का त्यागी, तुमने मुझे बनाया।
भटके हुए पथिक को तुमने, सही मार्ग दिखलाया ॥
पा आशीष तुम्हारी गुरुवर, भजन बनाकर लाता हूँ ॥3॥

सच्चे गुरुवर तुम लोहे को, स्वर्ण बनानेवाले हो।
हे कलाकार' इस मिट्टी को तुम, घड़ा बनानेवाले हो ॥
गाकर गीत तुम्हारे गुरुवर, जीवन सफल बनाता हूँ ॥4॥

भजन

फूल खिला जो आज चमन मे, कल वो तो मुर्झाएगा।
आया है जो जग मे भैया, एक दिना वो तो जाएगा ॥टेक॥

आत्म हित करले तू भैया, समय बीतता जाता है।
धर्म मार्ग पर चलकर प्राणी, भव सागर तर जाता है ॥
धर्म मार्ग पर चलकर ही तू, सच्चे सुख को पाएगा ॥1॥

धन यौवन का नहीं भरोसा, सदा साथ नहीं रहते है।
ज्ञानी जन तो ज्ञान के द्वारा, आत्म हित कर लेते है ॥
ज्ञान के चक्षु खोल के भैया, ज्ञानवान कहलाएगा ॥2॥

ज्ञानी जन का आदर भैया, सभी जगह पर होता है।
ज्ञान रतन बरसाकर ज्ञानी, बीज धर्म का बोता है ॥
ज्ञानी की सगति कर मोहन, ज्ञानी तू बन जाएगा ॥3॥

भजन

(धर्म मार्ग पर चलने से ही जीव का कल्याण होता है)

धर्म मार्ग अपनाओ भैया, मार्ग धर्म का सुखदाई।
जिसने पकडा मार्ग धर्म का, उसने ही मुक्ति पाई ॥टेक॥

अजन से बन गए निरजन, धर्म मार्ग अपनाने से।
श्री पाल भी गए मोक्ष मे, वीरा के गुण गाने से ॥
महिमा न्यारी धर्म की भैया, है ग्रथो मे गाई ॥1॥

धर्म मार्ग पर चलकर ऋषि मुनि, जग मे पूजे जाते है।
धर्म ध्यान के कारण प्राणी, पदवी ऊँची पाते है।
ग्रहण करो तुम धर्म को भैया, धर्म जगत मे सुखदाई ॥2॥

सुनकर भजन हमारा भैया, मोह ममता का त्याग करो।
आत्म का हित होवे जिससे, उस मार्ग को ग्रहण करो ॥
धर्म मार्ग पर चलकर 'मोहन', ने निर्मल बुद्धि पाई ॥3॥

भजन

त्याग तपस्या मे शक्ति है, त्यागी जन सुख पाते है।
करते है जो त्याग परिग्रह, वो शिवपुर को जाते है ॥टेक॥

त्यागी जन का आदर भैया, सभी जगह पर होता है।
जिस नगरी मे जाते त्यागी, आनद मगल छाता है ॥
त्यागी जन की करना सगति, शास्त्र हमे बतलाते है ॥1॥

त्यागे विषय कषाये अपनी, त्याग करे मोह ममता का।
कुमार्ग का त्याग करे हम, ग्रहण करे पथ सयम का ॥
सयम धारण करके प्राणी, भव सागर तर जाते है ॥2॥

ऋषि-मुनियो की सेवा करके, रात्रि भोजन त्याग किया।
पाकर शुभ आशीष उन्हों की, चमडे का भी त्याग किया॥
करके भक्ति ऋषि-मुनियो की, मोहन भजन बनाते हैं ॥3॥

भजन

(विषयों के चक्कर में पड़कर जीव स्वयं को भूल जाता है)

कोठी बगलो को पाकर तू, भूल गया निज आत्म को।
विषयो के चक्कर मे पडकर, भूल गया परमात्म को ॥टेक॥
आत्म ही परमात्म बनता, नहीं समझ तू पाता है।
बडी मुश्किल से मिला मनुष्य भव, इसको व्यर्थ गवाता है ॥
मिला मनुष्य भव तुझको भैया, आत्म का हित करने को ॥1॥
विषयो मे नही सुख है भैया, सुख तो तेरे अदर है।
जिसने सुध ली निज आत्म की, पाया ज्ञान समदर है ॥
उत्तम कुल ये मिला जो तुझको, ज्ञान समदर पाने को ॥2॥
पर से प्रीति हटाकर भैया, निज से प्रीति लगाया कर।
देव शास्त्र गुरु पूज्य जगत मे, उनका ध्यान लगाया कर ॥
निर्मल बुद्धि मिली है 'मोहन', भजन प्रभु के लिखने को ॥3॥

भजन

करो भावना ऊँची अपनी, पदवी ऊँची पाओगे।
भाव बनाओ मुनि बनने के, एक दिना बन जाओगे ॥टेक॥
भावो से बनते तीर्थंकर, भावो से भगवान है।
शुद्ध भावना से प्राणी का, हो जाए कल्याण है ॥
हरदम भाव बनाओ अच्छे, कष्टो से बच जाओगे ॥1॥
मेडक भी शुद्ध भाव बनाकर, पहुच स्वर्ग में जाता है।
जीव शेर का भावो से ही, महावीर बन जाता है ॥
पाप तजो और धर्म कमाओ, स्वर्ग मोक्ष सुख पाओगे ॥2॥

चाहे कितनी पडे मुसीबत, उत्तम भाव बनाना तुम।
ऋषि-मुनियो की सगति करके, अपना भाग्य सराहना तुम ॥
ऋषि-मुनियो की भक्ति करके, मोहन मुनि बन जाओगे ॥3॥

भजन

(बा. ब्र बहन सत्यवती जी के चरणों में)

ज्ञान गुणो की खान है बहना, पावन नाम तुम्हारा है।
सत्यवती है नाम तुम्हारा, तुमको नमन हमारा है ॥टेक॥

आनद मगल होता जीवन, पास तुम्हारे आने से।
ज्ञान की किरणे मिलती हमको, बहना के गुण गाने से ॥
श्रद्धा तुम चरणो मे हमरी, तुमरा हमे सहारा है ॥1॥

तुम हो परम दयालु बहना, सद उपदेश सुनाती हो।
रात्रि भोजन त्याग कराकर, धर्म का महत्त्व बताती हो ॥
तुम चरणो की महिमा न्यारी, तुम्हे प्रणाम हमारा है ॥2॥

अमृतमयी वाणी है तुमरी, तुमरे गुण हम गाते है।
करके दर्शन पूज्य बहन के, अपना भाग्य सराहते है ॥
बालपने मे बहना तुमने, ब्रह्मचर्य व्रत धारा है ॥3॥

नदी फिरोजपुर श्रेष्ठ ग्राम मे, पूज्य बहन ने जन्म लिया।
देश-विदेशो और गॉवो मे, जैन धर्म प्रचार किया ॥
भक्ति करने से बहना की, मिटता सकट सारा है ॥4॥

धन्य भाग्य है हमरे बहना, जो दर्शन तुमरा पाया है।
तुमरे दर्शन करके हमने, अतस अलख जगाया है ॥
भजन बनाने सीखा मोहन, पा आशीष तुम्हारा है ॥5॥

भजन

(नर तन चोला पाकर हम आत्मा का कल्याण करें)

आत्म हित की करे बात हम, पाकर नर तन चोले को।
तीर्थो की हम करे वदना, जन्म-मरण दु ख मेटन को ॥टेक॥

जन्म-मरण करता ये प्राणी, चौरासी मे फिरता है।
भारी कष्टो को सहकर भी, मूर्ख नही समझता है ॥
सोच समझ ले मेरे भैया, मुनि मिले समझाने को ॥1॥

नरक पशु के दु ख सहकर भी, नही समझ हम पाते है।
देव गुरु को भूल गए हम, विषयो मे चित लाते है ॥
विषय छोड तू धर्म कमा ले, शिव रमणी के पाने को ॥2॥

धर्म मार्ग पर चलकर प्राणी, कष्टो से बच जाता है।
सच्चा सुख मिलता आत्म को, घर-घर आदर पाता है ॥
धर्म मार्ग पर चलना मोहन, वीर प्रभु सा बनने को ॥3॥

भजन

(ऋषि-मुनियों की भक्ति करने से आत्मा का कल्याण होता है)

ऋषि-मुनियो की सेवा करके, ऋषि मुनि बन जाएगा।
चौरासी से छूटकर, मुक्ति का पद पाएगा ॥टेक॥

ऋषि-मुनियो की भक्ति भैया, भव से पार लगाती है।
देकर सच्चा ज्ञान हमे वो, धर्म का मार्ग बताती है ॥
धर्म मार्ग पर चलकर ही तू, सच्चे सुख को पाएगा ॥1॥

जीवन तेरा बीता जाए, पल-पल छिन-छिन घड़ी-घडी।
करले आत्म का हित भैया, इक दिन आए काल बली ॥
प्रभु नाम तू जप ले भैया, बिगडे काम बनाएगा ॥2॥

चोरी करना छोड दे भैया, झूठ कभी मत बोलना।
न तकना तू नार पराई, हृदय के पट खोलना ॥
हृदय के पट खोल के मोहन, मोक्ष महल मे जाएगा ॥3॥

भजन

इस जीवन का नही भरोसा, कब ये पूरा हो जाए।
महल बना जो आसाओ का, पता नही कब ढह जाए ॥टेक॥

महल दुमहले बना के भैया, मन मे खुशी मनाता है।
इस महंगे जीवन को अपने, कोडी भाव बिकाता है ॥
पता नही यह सास तेरा कब, चलते बद हो जाए ॥1॥

नर तन चोला पाकर भी तू, कदर न इसकी जाना।
विषय भोग मे लीन होयकर, तूने सुख है माना ॥
सच्चा सुख नही विषयो मे है, विषय नरक ले जाए ॥2॥

धर्म मार्ग पर चलकर प्राणी, आत्म हित कर पाता है।
एक धर्म ही जीव का साथी, साथ हमेशा रहता है ॥
धर्म मार्ग पर चलकर मोहन, कष्टो से बच जाए ॥3॥

भजन

(आचार्य विमल सागर मुनि सघ के चरणों में)

ऋषि-मुनियो के दर्शन कर लो, मुनि हमारे आए है।
भाग्य उदय भये आज हमारे, दर्शन इनके पाए है ॥टेक॥

दर्शन करते ही मुनिवर के, मन मे आनद छाया है।
परम तपस्वी मुनि हमारे, धर्म का महत्व बताया है ॥
वीतराग है छवि तुम्हारी, वेश दिगबर पाए है ॥1॥

अमृतमयी वाणी है तुमरी, तुमरे गुण हम गाते है।
करके दर्शन श्री मुनिवर के, फूले नही समाते है ॥
ज्ञान रतन बरसाने गुरुवर, नगर हमारे आए है ॥2॥

ज्ञान गुणो की खान मुनिवर, सयम की फुलवारी है।
दस पौधे है फुलवारी मे, हर पौधा गुणकारी है ॥
कर लो श्रद्धा भक्ति इनकी, मोहन कर हर्षाए है ॥3॥

भजन

(इंसान दुःखी क्यों होता है)

सुख पाकर जो मेरे भैया, भूल प्रभु को जाते है।
वो ही प्राणी रोते इक दिन, नजर सभी को आते है ॥टेक॥

दुख मे करते याद प्रभु को, रो-रो रुदन मचाते है।
कैसा आया अशुभ समय यह, कह कहके पछताते है ॥
अच्छे बुरे कर्मो का फल, जीव स्वय ही पाते है ॥1॥

बुरे काम का बुरा नतीजा, बुरा किसी का मत करना।
अमृत नही पिला सकते तो, जहर पिलाते भी डरना ॥
अच्छे कर्म करे जो भैया, नही कभी दुख पाते है ॥2॥

सुख मे हो जो मग्न न फूले, और याद प्रभु को करते है।
सच्चे मन से ऋषि-मुनियो की, जो जन सेवा करते है ॥
ऐसे प्राणी ही तो भैया, स्वर्ग मोक्ष सुख पाते है ॥3॥

सुख से चाहता है गर रहना, देव गुरु को ध्याले।
पर से प्रीति हटाकर भैया, जीवन सफल बना ले ॥
देव गुरु को भजनेवाले, मोहन मुक्ति पाते है ॥4॥

भजन

क्यो भूला भगवान को बदे, क्यो भूला निज आत्म को।
निज मे रमण करो मेरे भैया, भजो सदा परमात्म को ॥टेक॥

निज सुखो की खान है भैया, निज मे आनद भरा हुआ।
जिसने सुध ली निज आत्म की, उसने शिव रमणी को वरा ॥
शिव रमणी को वरना है तो, ग्रहण करो तुम सयम को ॥1॥

जिसकी लग्न लगी है निज मे, वो ही सच्चा साधु है।
ध्यान नही है निज का जिसको, साधु नही असाधु है ॥
साधुन की करना सगति रे, ध्याना तुम निज आत्म को ॥2॥

परमात्म मे जिसकी श्रद्धा, वही परमात्म बनता है।
आत्म ही परमात्म बनकर, शिव रमणी को वरता है ॥
धर्म मार्ग पर चलकर 'मोहन', वरना शिव रमणी वर को ॥3॥

भजन

प्रभु नाम तू भज ले बदे, प्रभु नाम सुखकारी है।
प्रभु नाम है जग मे उत्तम, आत्म का हितकारी है ॥टेक॥

सच्चा सुख मिलता है भैया, प्रभु नाम को जपने से।
कष्ट नही रहते जीवन मे, श्री जिनवर को भजने से ॥
श्री जिनवर को भजो रात दिन, श्री जिनवर उपकारी है ॥1॥

श्रद्धा जिसकी श्री जिनवर मे, कष्ट नही वो पाता है।
भक्ति करने से श्री जिन की, मोक्ष द्वार मिल जाता है ॥
मोक्ष द्वार के बनना इच्छुक, मोक्ष सुखो की क्यारी है ॥2॥

सोते उठते सुबह सवेरे, श्री जिनवर का ध्यान करो।
सच्ची श्रद्धा लेकर मन मे, प्रभुवर का गुणगान करो ॥
गुण गाता है प्रभु के मोहन, प्रभु की महिमा न्यारी है ॥3॥

भजन

भोग भुजगम देह विनश्वर, यह ससार असार।
धन वैभव मे नही सुख भैया, करे आत्म उद्धार ॥टेक॥

निज मे छिपा खजाना सुख का, पर दुःख का भडार।
पर मे नही निशानी सुख की, करो धर्म से प्यार ॥
धर्म मार्ग पर चलने से ही, होता बेडा पार ॥1॥

जन्म-जन्म का साथी तन है, भव-भव मे दुख भोगे।
धर्म मार्ग पर नही चलने से, खाए भव दधि गोते ॥
चहु गति मे हम फिरे भटकते, पाए दुख अपार ॥2॥
ठाठ बाट सब पडे रहेगे, साथ न कोई जाए।
एक धर्म है जो जीवो को, भव से पार लगाए ॥
धर्म मार्ग पर चलना 'मोहन', धर्म मोक्ष का द्वार ॥3॥

भजन

(शील की महिमा न्यारी है)

धर्म धुरधर शीलवान का, जग मे आदर होता है।
धर्म धुरधर शीलवान ही, मुक्ति का पद पाता है ॥टेक॥
धर्म धुरधर शीलवान की, महिमा जग से न्यारी है।
शूली भी होती सिहासन, शील की महिमा भारी है ॥
शील धर्म के पालन से ही, आत्म का हित होता है ॥1॥
शीलवान को देव भी भैया, नमस्कार आ करते है।
नमस्कार वो करके अपना, भाग्य सराहा करते है ॥
सौलह स्वर्गो तक मे भैया, शील का आदर होता है ॥2॥
शील धर्म का पालन करके, आत्म का कल्याण करे।
धर्म मार्ग पर चलकर भैया, स्वर्ग मोक्ष सुख प्राप्त करे ॥
शीलवान की करके सगति, मोहन भजन बनाता है ॥3॥

भजन

(सच्चे देव शास्त्र गुरुओं की भक्ति किए बिना आत्मा का कल्याण नहीं हो सकता)

जैसा कर्म करेगा भैया, वैसा ही फल पाएगा।
बीज बबूलो के बोकर तू, आम कहा से खएगा ॥टेक॥

चाह आम की है यदि तुझको, आम तुझे बोना होगा।
सुख की चाह अगर है तुझको, सदा धर्म करना होगा ॥
धर्म मार्ग पर चलकर प्राणी, कष्टो से बच जाएगा ॥1॥

धर्म मार्ग पर चलनेवाला, सुखी जगत मे रहता है।
आदर पाता सभी जगह वो, कष्टो से बच जाता है ॥
धर्म मार्ग पर चलने से ही, स्वर्ग मोक्ष सुख पाएगा ॥2॥

निश का भोजन छोडो भैया, जिनवाणी का मनन करो।
देव गुरु की करके भक्ति, आत्म का कल्याण करो ॥
धर्म मार्ग पर चलकर मोहन, परमात्म बन जाएगा ॥3॥

भजन

(तीर्थ क्षेत्रो की वंदना करने से आत्मा का कल्याण होता है)

वदना करो सदा तीर्थो की, करो प्रभु का ध्यान।
प्रभु ध्यान से होता भैया, आत्म का कल्याण ॥टेक॥

दर्शन करो सदा प्रभु जी के, सुनो सदा जिनवाणी।
दो आहार ऋषि-मुनियो को, बनो श्रेयास से दानी ॥
आहार दान देने से भैया, होता पुण्य महान ॥1॥

जीओ और जीने दो सबको, करो ज्ञान की बात।
क्षमा धर्म को पालो भैया, करो मोह का त्याग ॥
क्षमा धर्म के पालन से ही, मिलता सिद्ध स्थान ॥2॥

नही सताना किसी जीव को, दया धर्म हितकारी।
त्याग तपस्या मे शक्ति है, तप की महिमा न्यारी ॥
निज मे रहने से ही 'मोहन', होता केवल ज्ञान ॥3॥

भजन

ऐसे मित्र से करो मित्रता, सुख मे आए बुलाने से।
बिना बुलाए दु ख में आए, जिसका मन जिनवाणी मे ॥टेक॥
जिसके मन मे प्रभु की वाणी, सदा समाई रहती है।
धर्म कार्य करने मे नित, जिसकी बुद्धि रहती है ॥
करता भक्ति ऋषि-मुनियों की, भाव हो पूजा करने के ॥1॥
नाती मित्रो को जो अपने, धर्म की राह दिखाता हो।
समय-समय पर तीर्थ क्षेत्रो की, वदना को जाता हो ॥
भाव सदा रहते हो जिसके, धर्म की रक्षा करने के ॥2॥
श्री जिन का जो भक्त हो भैया, करता भक्ति मुनियो की।
निश मे भोजन नहीं करता हो, करे सहायता दुखियो की ॥
आत्म हो जाता परमात्म, मोहन जिन गुण गाने से ॥3॥

भजन

(मन की तृष्णा घटने से ही आत्मा का कल्याण होता है)

घटाले मन की तृष्णा को, बढाले धर्म तू अपना।
हटाले रुचि विषयो से, बढाले ज्ञान तू अपना ॥टेक॥
घटाले पाप को अपने, बढाले धर्म दस को तू।
करो चितवन आत्म का, हरे दुखियो के दु ख को तू ॥
हटाले कर्म बधन को, बढाले त्याग तू अपना ॥1॥
घटाले मोह ममता को, बढाले निज मे समता को।
छोडकर मान की बाते, करो धारण संयम को ॥
हटाले भाव मिथ्या के, करो आदर गुणी जन का ॥2॥
त्याग कर बात विषयो की, करो सगति गुणी जन की।
हटालो प्रीति पर से तुम, करो रक्षा दु खी जन की ॥
भाव उत्तम बना 'मोहन', चाहे कल्याण तू अपना ॥3॥

भजन

(कर्मरूपी जाल को काटकर ही जीव सच्चे सुख को प्राप्त कर सकता है)

कर्मो के वश रहकर प्राणी, भारी कष्ट उठाए।
हाथी घोडे बने ऊँट हम, जन्म मरण दुख पाए ॥टेक॥
बार अनते जन्मे भैया, बार अनते मरण हुआ।
नरको के दुख भोगे हमने, स्वर्गो का सुख प्राप्त किया ॥
सुख-दुख पाकर ही प्राणी ने, काल अनत बिताए ॥1॥
कर्मो की लीला है न्यारी, कर्म बडे बलवान है।
नाश करे जो इन कर्मो का, वो ही पुरुष महान है ॥
नाश कर्म का होने से ही, जीव मोक्ष मे आए ॥2॥
कर्म रूपी मल मे दबकर ही, आत्म चमक न पाती है।
निज स्वरूप को नही समझकर, भारी कष्ट उठाती है ॥
नाश करो इन कर्म को 'मोहन', जिनवाणी बतलाए ॥3॥

भजन

(भेद विज्ञान के द्वारा ही मोक्ष सुख की प्राप्ति होती है)

ज्ञानी जन का आदर भैया, सभी जगह पर होता है।
ज्ञानी भेद ज्ञान के द्वारा, भव से पार हो जाता है ॥टेक॥
ज्ञानी ध्यानी, ऋषि मुनि ही, जग मे पूजे जाते है।
करते कठिन तपस्या मुनिवर, नग्न दिगबर रहते हैं ॥
करने से भक्ति मुनियो की, नाश कर्म का होता है ॥1॥
निज पर का जो भेद समझता, ज्ञानी जग मे कहलाता।
आत्म को वो बना परमात्मा, मोक्ष महल मे है जाता ॥
मोक्ष महल का इच्छुक भैया, भव्य जीव कहलाता है ॥2॥

भेद विज्ञान करो मेरे भैया, पर से प्रीति हटाओ।
जिस पथ को अपनाया प्रभु ने, उस पथ को अपनाओ ॥
धर्म ध्यान करने से 'मोहन', जीवन सुखमय होता है ॥3॥

भजन

(सच्चे देव शास्त्र गुरुओं की भक्ति ही संसार सागर से पार उतारने में समर्थ है)

धन-दौलत नही चाहता हूँ मै, दर्शन प्रभु के चाहता हूँ।
करके भक्ति देव गुरु की, जिनवाणी मन लाता हूँ ॥टेक॥
जिनवाणी मा सच्ची मा है, दु ख सारे हर लेती है।
ज्ञान की किरणे देकर हमको, अज्ञान दूर कर देती है ॥
चाहूँ मा मै तुमरी भक्ति, तुममे श्रद्धा रखता हूँ ॥1॥
जीव अनतो करके भक्ति, तेरी भव से पार हुए।
तेरी कृपा से है माता, मूरख भी विद्वान बने ॥
कर दो कृपा मा तुम हमपे, कृपा तेरी चाहता हूँ ॥2॥
हृदयरूपी सिहासन पर, माता तुम्हे बिठाते है।
करते मोहन विनय तुम्हारी, तुमको शीश झुकाते है ॥
जिनवाणी की महिमा लिखकर, अपना भाग्य सराहता हूँ ॥3॥

भजन

(संयम के पालन से ही आत्मा का कल्याण होता है)

तप सयम की महिमा अद्भुत, सयम को स्वीकार करो।
पर से प्रीति हटाकर भैया, आत्म का कल्याण करो ॥टेक॥
सयम बिन हम फिरे भटकते, लख चौरासी यौनि मे।
धर्म बिना ये नर तन सूना, गवा रहे हम विषयो मे ॥
विषय छोडकर धर्म कमाए, दया धर्म को ग्रहण करो ॥1॥

धन-वैभव मे सुख नही भैया, सुख तो निज मे भरा हुआ।
जिसने सुध ली निज आत्म की, उसने शिव रमणी को वरा ॥
निज मे आओ, ध्यान लगाओ, पाप कर्म से डरा करो ॥2॥

सुख की है भडार हमारी, आत्म रूपी खान।
जिसने सुध ली निज आत्म की, वो है पुरुष महान ॥
निज मे रमकर 'मोहन' भैया, दस धर्मो को ग्रहण करो ॥3॥

भजन

नर तन चोला मिला है हमको, सयम धारण करने को।
मोक्ष मार्ग के बने पथिक हम, शिव रमणी के वरने को ॥टेक॥

मिली जवानी हमको भैया, आत्म का कल्याण करे।
देवशास्त्र गुरु पूज्य जगत मे, इनका हम गुणगान करे ॥
इन तीनो के भक्त बने हम, इनमे श्रद्धा रखने को ॥1॥

मान महा विष रूप जगत मे, क्षमा धर्म को ग्रहण करे।
विषय कषाए तजकर अपनी, निजआत्म का ध्यान करे ॥
करे तपस्या भारी भैया, परमात्म पद पाने को ॥2॥

परिग्रह को कम करके भैया, सच्चे सुख को प्राप्त करे।
पर से प्रीति हटाकर भैया, आत्महिम की बात करे ॥
धर्म मार्ग पर लगा है 'मोहन', श्री जिनवर-सा बनने को ॥3॥

भजन

(देवगुरु के दर्शन करने से सच्चे सुख की प्राप्ति होती है)

जिसकी दृष्टि विषय भोग मे, नही सच्चा सुख पाएगा।
धर्म मार्ग को तजनेवाला, नरक द्वार मे जाएगा ॥टेक॥

विषय भोग मे सुख नहीं भैया, सुख तो तेरे अदर है।
निज मे रमने से ही भैया, मिलता ज्ञान समंदर है ॥
पर को तज दे, निज मे रमले, सच्चे सुख को पाएगा ॥1॥

नरक द्वार मे भारी दु ख है, कहे नहीं मुख से जाते।
करुणा करके मुनि हमारे, बार-बार है समझाते ॥
श्रद्धा भक्ति कर मुनियो की, पद मुनियों का पाएगा ॥2॥
बड़े पुण्य से ऋषि-मुनियों के, भैया दर्शन होते है।
देव गुरु के दर्शन भैया, बीज मोक्ष का बोते हैं ॥
छू ले चरण, महामुनियों के, मोहन मुक्ति पाएगा ॥3॥

भजन

(श्री 108 मुनि आदिसागर जी महाराज के चरणों में)

श्रद्धा तुम चरणो मे इतनी, जितना सागर मे पानी।
नाम तुम्हारा आदि सागर, मुनिवर तुम ज्ञानी ध्यानी ॥टेक॥
ज्ञान गुणो के हो सागर तुम, हो सागर तुम सयम के।
मोक्ष मार्ग के बने पथिक तुम, पाप कटे तुम दर्शन से ॥
मुनि चरणो की महिमा न्यारी, अमृतमय तुमरी वाणी ॥1॥
वीतराग है छवि तुम्हारी, वेष दिगबर धारा है।
दर्शन किए तुम्हारे जब से, जागा भाग्य हमारा है ॥
सुने तुम्हारी वाणी निशदिन, वाणी तुमरी कल्याणी ॥2॥
श्रद्धा रख तुम चरण मे मोहन, अपना भाग्य सराहता है।
शुभ आशीष तुम्हारी पाकर, भजन बनाकर लाता है ॥
बनू आपसा मै भी मुनिवर, बनने की मैने ठानी ॥3॥

भजन

मतलब के नाते दुनिया के, मतलब का ससार है।
बिन मतलब कोई बात न पूछे, झूठा जग का प्यार है ॥
सुख मे करते है जो बाते, करके खुशी मनाते है।
समय बुरा जब आता भैया, दूर बहुत हो जाते है ॥
छोड धर्म को प्राणी जग मे, पाते कष्ट अपार है ॥1॥

धन वैभव नही साथ चलेगा, साथ धर्म ही जाएगा।
श्रद्धा जिसकी धर्म मे भैया, कष्ट नही वो पाएगा ॥
श्रद्धा रख तू धर्म मे भैया, धर्म ही जग मे सार है ॥2॥
धन-दौलत के चक्कर मे पड, सारा समय बिताता है।
निज स्वरूप को भूल गया तू, इसीलिए दु ख पाता है ॥
धर्म नहि बिसराना मोहन, करे धर्म ही पार है ॥3॥

भजन

टूट गया जो फूल डाल से, नही दुबारा खिलता है।
कर्म बुरे जो करता भैया, नरक द्वार मे गिरता है ॥टेक॥
नरक द्वार मे भारी दु ख है, कहे नही मुख से जाते।
अच्छे कर्म करे जीवन मे, ऋषि मुनि है समझाते ॥
अच्छे कर्मो के करने से, नर तन चोला मिलता है ॥1॥
नरतन चोला पाकर हमने, कदर न इसकी जानी।
मोह माया के दास बने हम, माया आनी-जानी ॥
नर तन पा जो व्यर्थ गवाए, उसको पशु तन मिलता है ॥2॥
नर तन पाकर धर्म कमाए, धर्म महा उपकारी है।
धर्मी का जग आदर करता, धर्म सुखो की क्यारी है ॥
धर्म ध्यान करने से 'मोहन', स्वर्ग मोक्ष सुख पाता है ॥3॥

भजन

(ज्ञान की कीमत अनमोल होती है)

है अनमोल ज्ञान की किरणें, मोल नहीं इनका होता।
श्रद्धा भक्ति रत्न ही भैया, मोल ज्ञान का हैं होता ॥टेक॥

विनय भक्ति करने से भैया, ज्ञान की किरणे मिलती है।
सम्यक ज्ञान की किरणे भैया, मिथ्यात दूर कर देती है ॥
ज्ञानी जन का जग मे भैया, आदर सभी जगह होता ॥1॥

चाह ज्ञान की यदि है भैया, जिनवाणी की विनय करो।
करा प्रकाशित जिनवाणी को, ज्ञान का तुम भडार भरो ॥
विनय भक्ति से जिनवाणी की, ज्ञान स्वय ही होता ॥2॥

करना सदा विनय मुनियों की, करके हर्ष मनाना।
ऋषि-मुनियो के चरणो को छू, अपना भाग्य सराहना ॥
करके भक्ति ऋषि-मुनियो की, मोहन खुश है होता ॥3॥

भजन

(अहिंसा धर्म ही सबसे बड़ा धर्म है)

अहिसा धर्म बडा है जग मे, हिसा दु ख की द्वार है।
करते है जो दया जीवो पर, पाते सुख अपार है ॥टेक॥

नही सताना किसी जीव को, दया सभी पर करना रे।
अभय दान देकर जीवो को, भारी पुण्य कमाना रे ॥
दया धर्म पालो सब भैया, दया सुखो का द्वार है ॥1॥

दया धर्म है उत्तम जग मे, वीर प्रभु ने बतलाया।
जीओ और जीने दो सबको, महत्व धर्म का बतलाया ॥
धर्म मार्ग पर चलने से ही, होता बेडा पार है ॥2॥

जैसे प्राण हमे है प्यारे, वैसे सबको प्यारे हैं।
मत मारो तुम जीव किसी को, कहते वीर हमारे हैं ॥
भाव दया के रखो मोहन, मिले सुमुक्ति नार है ॥3॥

भजन

(श्रद्धारूपी रतन ही मुक्तिरूपी लक्ष्मी को प्राप्त कराने में सहायक हैं)

प्रभु चरणो मे श्रद्धा इतनी, जितना सागर मे पानी।
छान के जल को पीना भैया, बतलाती है जिनवाणी ॥टेक॥

रात्रि को नही खाना भोजन, नही मदिरा को पीना।
सुख से रहना चाहते हो तो, झूठ वचन को तजना ॥
सत्य मार्ग पर चलनेवाले, होते ज्ञानी ध्यानी ॥1॥

श्रद्धा जिसकी धर्म के अदर, आदर सभी जगह पाता।
श्रद्धा से ही इस प्राणी को, पद मुक्ति का मिल जाता ॥
अजन से हो गया निरजन, जब श्रद्धा उर ठानी ॥2॥

श्रद्धा रूपी रतन बडा है, श्रद्धा पार लगाती है।
श्रद्धा ही तो इस प्राणी को, मुक्ति द्वार पहुचाती है ॥
श्रद्धा रख श्री जिन मे 'मोहन', सुख की यही निशानी ॥3॥

भजन

(भगवान के भजन से ही आत्मा का कल्याण होता है)

करो ध्यान भगवान का भैया, भगवन पार लगाएगे।
सद्बुद्धि वो देकर हमको, अपने समान बनाएगे ॥टेक॥

जिसके हृदय प्रभु की भक्ति, सदा समाई रहतीहै।
सच्चा सुख मिलता है उनको, नही विपत्ति आती है ॥
करके भक्ति प्रभु की भैया, अपना भाग्य सराहेगे ॥1॥

करते है जो भक्ति प्रभु की, कष्ट नहीं वो पाते है।
लक्ष्मी घर रहती है उनके, सदा सुखी वो रहते है ॥
तीन लोक के नाथ हैं भगवन, उनके गुण हम गाएगे ॥2॥

जिसकी श्रद्धा प्रभु चरणो मे, प्रभु भक्त कहलाता है।
भक्ति करने से प्रभुवर की, स्वर्ग मोक्ष सुख मिलता है ॥
श्रद्धा रख प्रभु चरण मे 'मोहन', मुक्ति का पद पाएगे ॥3॥

भजन

(श्री 108 आचार्य धर्म भूषण महाराज के चरणों में)

धर्मभूषण जी गुरु हमारे, हम तुमको शीश झुकाते हैं।
करके दर्शन पूज्य गुरु के, अपना भाग्य सराहते है ॥टेक॥
वीतराग है छवि तुम्हारी, सबके मन को भाती है।
दर्शन करने से गुरुवर के, दूर विपत्ति भग जाती है ॥
सुनकर वाणी पूज्य गुरु की, धर्म मार्ग अपनाते हैं ॥1॥
करनावल से श्रेष्ठ ग्राम मे, पूज्य गुरु ने जन्म लिया।
बन आचार्य गुरुवर तुमने, जैन धर्म प्रचार किया ॥
बैठ तुम्हारे चरण कमल मे, सच्चा सुख हम पाते है ॥2॥
सरल स्वभाव तुम्हारा गुरुवर, करते तप तुम भारी।
नही परिग्रह पास तुम्हारे, तुमको नमन हमारी ॥
अमृतमयी वाणी है तुमरी, तुमरे गुण हम गाते है ॥3॥
शुभ आशीष तुम्हारी गुरुवर, बुद्धि निर्मल कर देती।
पूज्य गुरु की शुभ आशीषे, बिगडा भाग्य बना देती ॥
पाकर शुभ आशीष तुम्हारी, कष्टो से बच जाते है ॥4॥
कितना पावन नाम तुम्हारा, दु ख सारे हर लेता है।
जिस पथ को अपनाया तुमने, वो मोक्ष महल को जाता है ॥
मोक्ष महल की लेकर इच्छा, पास तुम्हारे आते है ॥5॥
धन्य भाग्य है हमरे गुरुवर, दर्शन तुमरा पाया है।
करके दर्शन तुमरे हमने, अतस अलख जगाया है ॥
तुमरी महिमा लिखकर मोहन, फूले नहीं समाते है ॥6॥

भजन

(श्री 108 गणधराचार्य कुंथ सागर जी महाराज के चरणों में गुलाब वाटिका पंच कल्याणक प्रतिष्ठा के अवसर पर)

बैठे हो जो घर मे भैया, आज यहॉ सब आ जाओ।
बरस रहे है ज्ञान रतन यहॉ, जितने चाहो ले जाओ ॥टेक॥

ज्ञान रतन बरसाने यहॉ पर, श्री मुनिवरजी आए है।
सम्यक् रूपी तीन दुकाने, साथ मे अपने लाए है।
श्री मुनिवर की भक्ति करके, पुण्य कमाने आ जाओ ॥1॥

गणधराचार्य कुथ सागर जी, ज्ञान गुणो की खान है।
इनकी शुभ आशीष से भैया, बनते जीव महान है।
श्री मुनिवर की वाणी सुनने, भाई बहनो आ जाओ ॥2॥

कितना आनद आया यहॉ पर, कितनी खुशियॉ छाई है।
धन्य भाग्य गुलाब वाटिका के, रौनक यहॉ पर आई है।
श्री मुनिवर के दर्शन करके, जीवन सफल बना जाओ ॥3॥

महिमा देखो श्री मुनिवर की, कितनी रौनक आई है।
दर्शन करने इनके जनता, दूर-दूर से आई है।
सुख-शांति धन जितना चाहो, मुनिवर से तुम ले जाओ ॥4॥

गुलाब वाटिका की धर्मी जनता, श्री मुनिवर को लाई है।
गुलाब वाटिका की स्वर्गो मे, देवो ने करी बड़ाई है।
मोहन भैया की कविता तुम, सुनने यहॉ पर आ जाओ ॥5॥

(श्री 108 आचार्य शांति सागर महाराज के चरणों में)

पता लगा जब हमको मुनिवर, यमुना विहार मे आए है।
दर्शन करने इनके हम तो, राम नगर से आए है ॥टेक॥

परम तपस्वी है श्री मुनिवर, कठिन तपस्या करते है।
सुनकर इनकी वाणी को हम, सुख का अनुभव करते है।
धर्म का महत्त्व बताने हमको, श्री मुनिवर जी आए हैं ॥1॥

पूज्य मुनि के दर्शन से ही, रोग शात सब हो जाते।
इनकी शुभ अशीष से भैया, बहरे सुनने लग जाते।
महापुण्य का उदय हमारे, जो श्री मुनिवर आए है ॥2॥

भक्ति करने से मुनिवर की, पापो का क्षय होता है।
दीन दरिद्री भूखा नगा भी, राजा हो जाता है।
मुझ जैसे बुद्धू प्राणी को, ज्ञान सिखाने आए है ॥3॥

जब से मैने श्री मुनिवर का, भैया दर्शन पाया है।
हुआ खुशहाल हमारा जीवन, लिखना मुझको आया है।
मोहन भैया श्री मुनिवर की, भक्ति कर हर्षाए है ॥4॥

(प्रभु नाम ही जग में सुखकारी है)

कर याद प्रभु को बदे, ये जीवन बीता जाए।
पता नही इस जीव की भैया, कब मृत्यु आ जाए ॥टेक॥

लाख किरोड़ी माया जोडी, महल मकाने बनाए।
मोटर गाडी कार खरीदी, टेलीफोन लगाए ॥
आएगा जब काल बुलावा, साथ नही ये जाए ॥1॥

सग मे जाएगा जो तेरे, भूल उसे तू बैठा है।
धन दौलत के चक्कर मे पड़, मन मे अपने ऐंठा है ॥
ऐठ छोड़ तू धर्म कमा ले, साथ धर्म ही जाए ॥2॥

माया आनी मानी पगले, धर्म ध्यान सुखदाई है।
जिसने छोडा धर्म को भैया, नरकों मे विपदा पाई है ॥
धर्म नहीं बिसराना मोहन, धर्म ही पार लगाए ॥3॥

(आचार्य विमल सागर मुनि संघ के चरणों में)

ऋषि-मुनियो के दर्शन कर लो, मुनि हमारे आए हैं।
भाग्य उदय भए आज हमारे, दर्शन इनके पाए हैं ॥टेक॥

दर्शन करते ही मुनिवर के, मन मे आनद छाया है।
परम तपस्वी मुनि हमारे, धर्म का महत्त्व बताया है ॥
वीतराग है छवि तुम्हारी, वेष दिगबर पाए है ॥1॥

अमृतमयी वाणी है तुमरी, तुमरे गुण हम गाते है।
करके दर्शन श्री मुनिवर के, फूले नही समाते है ॥
ज्ञान रतन बरसाने गुरुवर, नगर हमारे आए है ॥2॥

ज्ञान गुणो की खान मुनिवर, सयम की फुलवारी है।
दस पौधे है फुलवारी मे, हर पौधा गुणकारी है ॥
कर लो श्रद्धा भक्ति इनकी, मोहन कर हर्षाए है ॥3॥

भजन

(आचार्य श्री दर्शनसागर जी महाराज के चरणों में)

दर्शन सागर के दर्शन कर, अपना भाग्य सराहो।
परम दयालु मुनि हमारे, इनको शीश झुकाओ॥टेक॥

करके दर्शन मुनिवर के, यह मनुआ हर्षित होता है।
इनकी अमृतवाणी सुनकर, बीज पुण्य के बोता है।
सुनना वाणी पूज्य मुनि, की सुनकर ज्ञान उपाओ।
दर्शन सागर के दर्शन कर, अपना भाग्य सराहो ॥1॥

धर्म केशरी की पदवी पा, धर्म ध्वजा फहराई है।
भर यौवन में दीक्षा ले, मुक्ति की राह दिखाई है।
करके इनकी श्रद्धा भक्ति, इन जैसे बन जाओ।
दर्शन सागर के दर्शन कर, अपना भाग्य सराहो ॥2॥

वीतराग है छवि तुम्हारी, वेश दिगबर धारा है।
हो आचार्य हमारे मुनिवर, तुमरा हमे सहारा है।
दे करके आहार मुनि को, जीवन सफल बनाओ।
दर्शन सागर के दर्शन कर, अपना भाग्य सराहो ॥3॥

आशीर्वाद पूज्य मुनिवर का, दु ख सारे हर लेता है।
आनद मगल होता जीवन, कष्ट नही कोई रहता है।
लिखकर इनकी महिमा मोहन ज्ञान की किरणें पाओ।
दर्शन सागर के दर्शन कर, अपना भाग्य सराहो ॥4॥

भजन
(रात्रि भोजन त्याग)

निशि का भोजन करे त्याग हम, हिसा से बच जाएँगे।
दु ख नहि आएँगे जीवन मे, सच्चा सुख पाएँगे ॥टेक॥

धर्म मार्ग को तज करके जो, निशि मे भोजन करते है।
नही जिन मदिर मे जाते जो, पाप रात दिन करते है।
नरक द्वार मे जा करके वो, भारी कष्ट उठाएँगे।
निशि का भोजन करे त्याग हम हिसा से बच जाएँगे ॥1॥

नरक द्वार मे जाकर प्राणी, कितने कष्ट उठाता है।
प्यास वहाँ पर लगती ज्यादा, बूँद नही गह पाता है।
धर्म मार्ग पर चलने से ही, कष्टो से बच जाएँगे।
दु ख नहि आएँगे जीवन मे, सच्चा सुख पाएँगे ॥2॥

जिनवाणी को सुने ध्यान से, मुनियो का सम्मान करे।
आतम का हित चाहो गर तो, धर्म मार्ग को गृहण करे।
मुनियो की भक्ति से भैया, पाप सभी कट जाएँगे।
दु ख नहि आएँगे जीवन मे, सच्चा सुख पाएँगे ॥3॥

आत्म का हित चाहने वाले, निशि भोजन नही करते है।
भक्ति करते है मुनियो की, शास्त्र ध्यान से सुनते है।
निश का भोजन तजने वाले, 'मोहन' मुक्ति पाएँगे।
दु ख नहि आएँगे जीवन मे, सच्चा सुख पाएँगे ॥4॥

भजन

(सच्चे देव शास्त्र गुरुओं की भक्ति का महत्व)

देव शास्त्र गुरुओ की भक्ति, सर्व सुखो की दाता।
भक्ति करने वाला इनकी, भव से ही तिर जाता ॥टेक॥
ऋषि मुनि है पूज्य हमारे, सद उपदेश सुनाते है।
मिथ्या भ्रम को दूर हटाकर, सम्यक नीर पिलाते है।
मुनियो के दर्शन से भैया, जीवन सुखमय बन जाता ॥1॥
मोह जाल मे फॅसकर प्राणी, कष्ट अनेको पाता है।
निज आतम को भूल के ये तो, भोगो मे चित लाता है।
भोगो मे रमने वाला ही, नरक द्वार मे जाता ॥2॥
पाप कर्म करता ये प्राणी, भूल धर्म को जाने से।
आनद मगल होता जीवन, देवगुरु को ध्याने से।
धर्म मार्ग पर चलने वाला, ही सच्चा सुख पाता ॥3॥
सद्‌गुरु पार लगाएँ भैया, सद्‌गुरु सच्चे साथी है।
ऋषि मुनि है पूज्य हमारे, ज्ञान ज्योति की बाती है।
धर्म मार्ग पर चलकर 'मोहन' गुण प्रभू के गाता ॥4॥
भक्ति करने वाला ।

भजन

(क्षमापना दिवस)

नम्रभूत हो मॉग रहा हूँ, आज क्षमा का दान।
पर्व क्षमावणी आया भैया, क्षमा करो गुणवान ॥टेक॥
गत वर्षो मे हुई भूल जो, जाने या अनजाने से।
हाथ जोडकर मॉग रहा हूँ, क्षमा सभी गुणवानो से।
क्षमा करो तुम मुझ पापी को, क्षमा धर्म प्रधान।
पर्व क्षमावाणी ।1।

आज सभी को शुद्ध हृदय से, क्षमा प्रदान करेगे।
भाव क्षमा के लेकर मन मे, रिक्त स्थान भरेगे।
पिछली सारी कटुताओ को, करके अतर्धान।
पर्व क्षमावाणी ।2।

पर्व क्षमावाणी की बेला पर, मन मे आनद छाया है।
छाया था जो घोर धुँधलका, आज खत्म हो पाया है।
भाव क्षमा के रखो 'मोहन' क्षमा गुणो की खान।
पर्व क्षमावाणी ।3।

भजन

धर्म मार्ग अपनाएँ भैया, पाप मार्ग का त्याग करे।
जिससे आत्म का हित होवे, ऐसे उत्तम काम करे॥टेक॥

आतम का हित नही करता तू, भूल धर्म को जाने से।
नरक द्वार मे जाना पडता, भैया पाप कमाने से।
पाप छोडकर धर्म कमाएँ, दया धर्म हम गृहण करे॥1॥

पाप रात दिन करने वाला, नरको के दुख पाता है।
जहाँ भी जाता पापी प्राणी, वही निरादर पाता है।
सगति करके धर्मी जन की, अच्छी बाते ग्रहण करें॥2॥

धर्म मार्ग पर चलने वाला, सुखी हमेशा रहता है।
दुख नही आता धर्मी जन पर, पुण्य भाव गहता है।
करके भक्ति ऋषि-मुनियो की, मोहन समय व्यतीत करे॥3॥

भजन

आहार दान देकर मुनियो को, भारी पुण्य कमाया कर।
सबसे उत्तम दान ये भैया, देकर हर्ष मनाया कर॥टेक॥

आहार दान देने से भैया, लक्ष्मी घर मे रहती है।
नहीं कभी जाती वो घर से, स्थिर वह हो जाती है।
सच्चे सुख को पाना है तो, जिन मंदिर नित जाया कर॥1॥

देते जो आहार मुनि को, सदा सुखी वो रहते है।
नहीं गरीबी आती उनके, बन धनवान विचरते है।
ऋषि-मुनियो की भक्ति करके, अपना समय बिताया कर ॥2॥

आहार दान देकर मुनियो को, मोहन हर्ष मनाता है।
जिस भी क्षेत्र होते मुनिवर, दर्शन करने जाता है।
ऋषि-मुनियो की लो आशीषे, लेकर हर्ष मनाया कर ॥3॥

भजन

(श्री 108 धर्मभूषण जी महाराज के अशोक विहार चातुर्मास के समय)

धर्मभूषण की महिमा देखो, रौनक कितनी रहती है।
तुमरी अमृतवाणी सुनने, जनता दौडी आती है ॥टेक॥

तुमरी वाणी सुनकर मनुआ, हर्षित हो जाता है।
गृह कार्यो मे उलझा मन, शात यहॉ हो जाता है।
सुख शाति धन पाने जनता, तुम चरणो मे आती है ॥1॥

जो भी सुनता तुमरी वाणी, हर्षित वो हो जाता है।
पडा हुआ अज्ञान का पर्दा, आत्म से हट जाता है।
ज्ञान के मोती लेने तुमसे, जनता यहॉ पर आती है ॥2॥

अशोक विहार मे आनद छाया, पूज्य मुनि के आने से।
कष्ट नही रहते जीवन मे, देव गुरु को ध्याने से।
देव गुरु की भक्ति से ही, अशुभ घडी टल जाती है ॥3॥

तुमरी शुभ आशीष से मुनिवर, कविता हार बनाता हूॅ।
लेकर तुमसे ज्ञान के मोती, बीच पिरोता जाता हूॅ।
कविता हार तुम्हे अर्पण कर, आत्मा खुश हो जाती है ॥4॥

देव गुरु के दर्शन भैया, बडे पुण्य से मिलते है।
जिनको मिलते दर्शन इनके, पुष्प पुण्य के खिलते हैं।
करले इनकी भक्ति 'मोहन' गई घडी नही आती है ॥5॥

भजन

(परम पूज्य श्री 108 धर्मभूषण जी महाराज के चरणों में श्रद्धाभक्ति गीत)

आज हमारे रामनगर मे छाया हर्ष अपार।
धर्मभूषण जी आय विराजे बोलो जय जयकार ॥टेक॥

सब कुछ त्याग दिया है फिर भी, कहलाते हो दाता।
अपनी निधि को पाने सारा जगत है शीस नवाता।
छेड दिए है जन जन जन ने, मन वीणा के तार ॥1॥

लाख करोडो गुण है तुझमे, एक जबान है मेरी।
कैसे करे बखान गुरु जी सारी महिमा तेरी।
ज्ञानामृत पाने को भैया, यहॉ लगा दरबार ॥2॥

तेरे दर्शन करने मुनिवर, दूर दूर से आए।
पाने शुभ आशीष तुम्हारी, गुण शुभ तेरे गाए।
मोहन भावना भाए हर दम, गुरु जीएँ वर्ष हजार ॥3॥

भजन

(सोनीपत मण्डी में विराजमान धर्मभूषण जी महाराज के चरणों में)

स्वर्गो मे भी देव देवियॉ, गुरु की महिमा गाते है।
परम दयालु मुनि हमारे, तुमको शीश झुकाते है ॥टेक॥

बिगडी किस्मत बन जाती है, लक्ष्मी चलकर आती।
जहाँ भी जाते गुरु हमारे, रौनक अति छा जाती।
ऐसे गुरु धर्मभूषण की, हम महिमा गाते है ॥1॥

सोनीपत मडी में देखो, कितना आनंद आया है।
पाने प्रेम तुम्हारा मोहन, आज यहाँ पर आया है।
जिनकी कृपा से हम आए, प्रणाम उन्हे हम करते है ॥2॥

मेरे हृदय सिहासन पर, गुरु विराजे रहते है।
कठिन समस्या आती जब भी, नही वो आने देते है।
उनके नाम मात्र सुमरण से, कष्ट दूर हो जाते है ॥3॥

हरियाणा वालो ने गुरु का, प्रेम बहुत ही पाया है।
सोनीपत मडी का मंदिर, बहुत ही बडा कहाया है।
चमत्कार इस मदिर मे, निश दिन ही होते रहते है ॥4॥

दूर दूर से पूज्य मुनिवर, भक्त आपके आए है।
पाने शुभ आशीष तुम्हारी, आज सभी हम आए है।
जहॉ भी जाते मुनि हमारे, मोहन जाते रहते है ॥5।

भजन

भला यदि चाहते अपना, करो धर्म से प्यार।
धर्म ही भैया इस प्राणी का, करता बेडा पार॥टेक॥

धर्म मार्ग पर चलने वाले, कष्टो से बच जाते है।
मन वॉछित फल मिलता उनको, जग मे आदर पाते है।
जग मे आदर पाना है तो करो धर्म स्वीकार॥1॥

जिसने धर्म मार्ग अपनाया, उसने सच्चा सुख पाया।
मुक्ति का मेहमान बना वो, फिर दुनिया मे नहि आया।
मुक्ति यदि पानी है भैया, तजो कषाऍ चार॥2॥
धर्म मार्ग पर चलना मोहन, धर्म नही बिसराना।
सच्चा साथी धर्म जीव का, जिन दर्शन नित पाना।
जिन दर्शन करने से भैया, मिलता सुख अपार॥3॥

भजन

नही भरोसा काल बलि का, काल बलि कब आ जाए।
महल बना जो आशाओ का, पता नहीं कब ढह जाए॥टेक॥

सारा समय बिता देता जन, धन दौलत खूब कमाने मे।
मोह जाल मे फॅसा हुआ है, चेता नही जमाने मे।
धन दौलत सब धरी रहेगी, जब आयु पूरी हो जाए॥1॥

धर्म ध्यान करने से भैया, दौलत स्वय ही आती है।
धर्म नहि जहाँ होता है, वहाँ गरीबी मँडराती है।
भूल धर्म को जाने वाला, महा भयकर दु ख पाए॥2॥

प्रभु की भक्ति से जो प्राणी, दूर हमेशा रहते है।
वो प्राणी जिन्दा रहकर भी, मृतक समान ठहरते हैं।
सुखमय जीवन की चाहत हो, श्री जिनवर के गुण गाएँ॥3॥

ऋषि मुनियों के दर्शन करना, दर्शन उनके सुख दाई।
बदी छोड नेकी कर भैया, नेकी उत्तम कहलाई।
करके भक्ति प्रभु की 'मोहन' अपना भाग्य सराहे॥4॥

भजन

(उत्तम सत्य धर्म पर)

सत्य वचन नित बोलो भैया, सत्य सुखो का दाता है।
सत्य धर्म पर चलने वाला, जग मे आदर पाता है॥टेक॥

सत्य धर्म की महिमा न्यारी, मुनि हमे बतलाते है।
मिथ्या कर्कश वचन जीव को, नरक द्वार ले जाते है।
झूठ वचन नही कहे कभी हम, झूठ दु खों का दाता है॥1॥

जब भी बोले हित मित बोले, प्रथम वचन को तोले हम।
वचन घाव नही भरता भाई, सत्य धर्म को पाले हम।
सत्यवादी का आदर भैया, सभी जगह पर होता है॥2॥

झूठ वचन को तज करके हम, सत्य वचन ही बोलेगे।
सत्य धर्म का पालन करके, मुक्ति का पद पाएँगे।
सत्य धर्म का धारी मोहन, मोक्ष महल मे जाता है॥3॥

भजन

शौच धर्म को पालो भैया, शौच धर्म सुखदाई है।
अतर मैल हटाने से ही, आतम की शुचिताई है॥टेक॥

जब तक मन का मैल नहीं तू, मेरे भैया धोएगा।
निज आत्म की खबर नही तू, मेरे भैया लेवेगा।
नहीं सुख मिल सकता आत्म को, मुनियों ने बतलाई है॥1॥

अतर मैल हटाने से ही, आत्म का हित होता है।
लोभ बडा दुख दाई जग मे, नरक द्वार ले जाता है।
भारी दुख है नरक गति मे, जिनवाणी बतलाई है॥2॥

शौच धर्म का पालन करके, इच्छाओ का दमन करे।
अतर मैल हटाकर भैया, शिव रमणी को वरण करे।
लोभ छोड तू धर्म कमा ले, मोहन धर्म सहाई है॥3॥

भजन

(परम पूज्य श्री 108 धर्मभूषण जी महाराज के चरणों में अशोक विहार चातुर्मास के समय)

बैठे हो जो घर मे भैया, आज यहॉ सब आ जाओ।
बरस रहे हैं ज्ञान रतन तुम, जितने चाहो ले जाओ॥टेक॥

ज्ञान रतन बरसाने यहॉ पर, श्री मुनिवर जी आए है।
सम्यक रूपी तीन दुकाने, साथ मे अपने लाए है।
श्री मुनिवर की भक्ति करके, पुण्य कमाने आ जाओ॥1॥

धर्मभूषण जी पूज्य मुनिवर, ज्ञान गुणो की खान है।
इनके शुभ आशीष से भैया, बनते जीव महान है।
श्री मुनिवर की वाणी सुनने भाई बहनो आ जाओ॥2॥

देखो कैसा दृश्य मनोहर, आज देखने मे आया।
लगता है इस नगरी में ही मानो स्वर्ग उतर आया।
मोक्ष मार्ग के बनो बटोही, मुनि चरणो मे आ जाओ॥3॥

पूज्य मुनिवर की जब वाणी अमृत बन झरने लगती।
गलने लगता मोह जीव को, ज्ञानवृष्टि होने लगती।
लेने शुभ आशीष इन्हीं का, आज यहाँ सब आ जाओ॥4॥
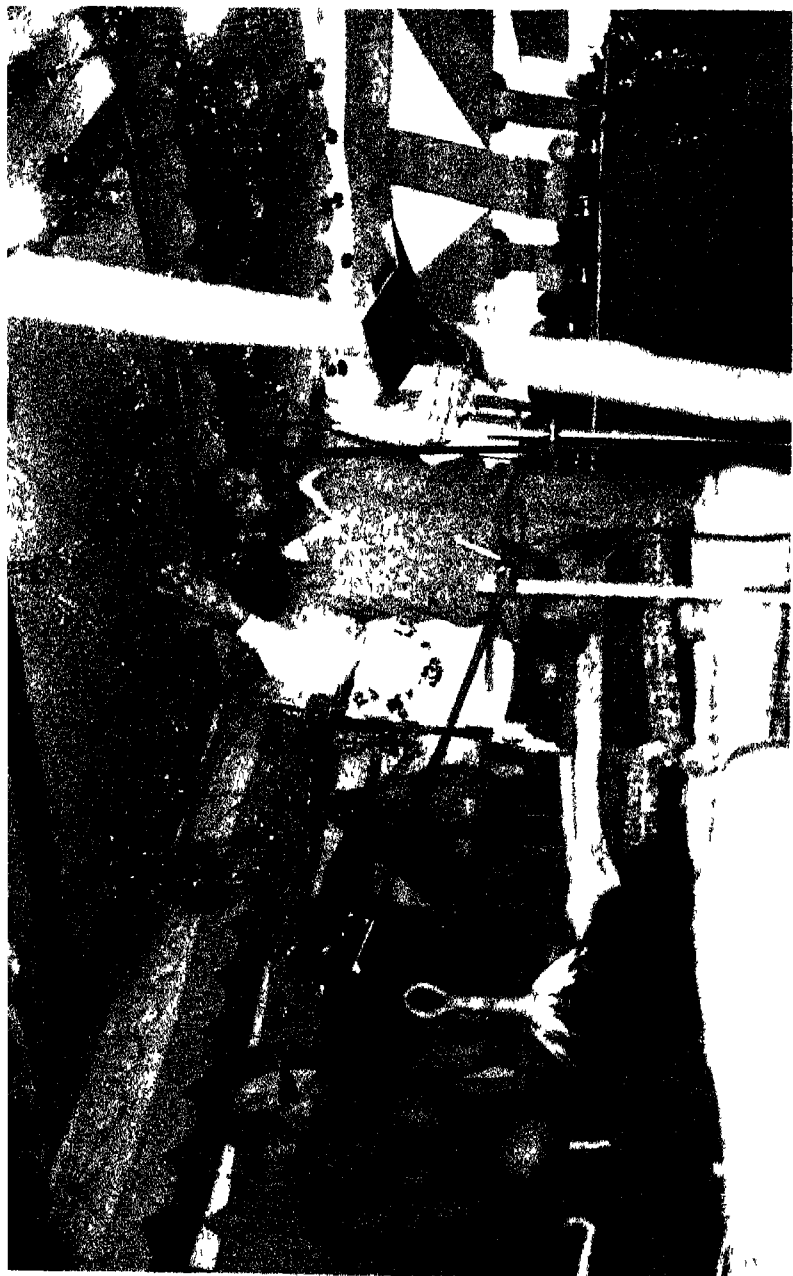
श्री दि जैन मन्दिर बिहारी कालोनी शाहदरा मे
श्री 108 उपाध्याय ज्ञान सागर जी महाराज के सान्निध्य में सिद्ध चक्र महामण्डल विधान
के अवसर पर कविता-पाठ करते हुए रचयिता मोहन।

कितना आनद छाय रहा है, कितनी रौनक आई है।
मुनि दर्शन करने को जनता, दूर दूर से आई है।
सुख शाँति धन जितना चाहो, मुनिवर से तुम ले जाओ॥5॥
अशोक विहार की धर्मी जनता, श्री मुनिवर को लाई है।
अशोक विहार की स्वर्गो मे भी, देवो ने करी बड़ाई है।
मोहन भैया की कविता तुम, सुनने यहॉ पर आ जाओ॥6॥

भजन

घर मे रहो चाहे बाहर रहो, सर्विस करो या दुकान करो।
वीतराग भगवान का भैया, हरदम तुम गुणगान करो॥टेक॥
सच्चे मन से जो भी प्रभु का, भैया ध्यान लगाएगा।
जीवन सुखमय हो जाएगा, नही कष्ट वो पाएगा।
भला यदि चाहते हो अपना, नेकी के नित काम करो॥1॥
निर्धनता हो या हो दौलत, रोगी या बलशाली हो।
जेब भरी हो नोटो से या, व बिलकुल ही खाली हो।
धर्म नही बिसराना किंचित, सदा धर्म के काम करो॥2॥
समय बुरा हो या अच्छा हो, बडा उमर मे या बच्चा हो।
कोई कितना बुरा या अच्छा, झूठा हो या इकदम सच्चा।
छोड बुराई को भैया तुम, सतो का सम्मान करो॥3॥
जब काम नही आएगा कोई, धर्म ही साथ निभाएगा।
एक धर्म है जो जीवो को, भव से पार लगाएगा।
'मोहन' समय बचा है थोडा, अब आतम का ख्याल करो॥4॥

भजन

(धर्मभूषण जी महाराज के चरणों में अशोक विहार चातुर्मास के समय)

जिनकी हमे जरूरत थी वे नगरी आज पधारे है।
धर्मभूषण प्रख्यात नाम है ये मेरे गुरु कहाए है॥टेक॥

वीतराग है छवि तुम्हारी सबके मन को भाती है।
तुमरे दर्शन करते ही सब पीडा हट जाती है।
दया के धारी पर उपकारी, श्री मुनिवर जी आए है॥1॥

तुमरी त्याग तपस्या की, चर्चा स्वर्गो मे होती है।
निकल गई जो बात जिव्हा से, इक दम सच्ची होती है।
लेने शुभ आशीष तुम्हारा, आज यहॉ हम आए है॥2॥

कठिन तपस्या करते मुनिवर, नही परिग्रह रखते है।
हितमित प्रिय वाणी मे ये, ज्ञान की वर्षा करते है।
इन जैसे सतो की भक्ति, करके हम हर्षाए है॥3॥

जहॉ भी जाते मुनि हमारे, फूल चमन मे खिल जाते।
इनकी भक्ति से प्राणी के, पाप सभी है कट जाते।
'मोहन' इनका दर्शन करने रामनगर से आए है॥4॥

भजन

(आचार्य श्री कुमुदनंदी जी महाराज के चरणो में पीतमपुरा चातुर्मास के समय)

परम पूज्य मुनिराज तुम्हारा, हम अभिनदन करते है।
चातुर्मास निर्विघ्न पूर्ण हो, अर्ज प्रभु से करते है॥टेक॥

ऋषि-मुनियो का जिस नगरी मे चातुर्मास हो जाता है।
धन्य भाग्य है उस नगरी के, आनद वहाँ छा जाता है।
परम तपस्वी ऋषि-मुनियो की, हम तो भक्ति करते है॥1॥

जन्म-जन्म के शुभ कर्मो का, जब तक होता मेल नही।
तब तक ऋषि-मुनियो का भैया, होता चातुर्मास नहीं।
शुभ कर्मो का उदय हमारे, जो जिन वाणी सुनते है॥2॥

चातुर्मास जिस नगर मे होता, देव वहाँ आते है।
आने वाले विघ्न वहाँ पर, दूर स्वय हो जाते है।
जिनका आशीर्वाद सभी कुछ, उन्हे नमन हम करते है॥3॥

आशीर्वाद तुम्हारा मुनिवर, जो ये भजन बनाता हूँ।
तुमरे चरण कमल को छूकर, भाग्य सराहे जाता हूँ।
तुम चरणो मे लगा रहे मन, सतत भावना करते है॥4॥

पीतमपुरा वालो से मुनिवर, भूल यदि कुछ हो जावे।
कर देना तुम क्षमा हमे, हम हाथ जोड माफी चाहे।
दास तुम्हारा है ये मोहन, विनय गुरु की करते है॥5॥

भजन

त्यागे विषय कषाएँ अपनी, त्याग धर्म सिखलाता है।
त्यागी आदर पाता जग मे, त्यागी मुक्ति पाता है॥टेक॥

त्याग किया बादल ने जल का, फिर भी ऊँचा कहलाया।
किया इकट्ठा सागर ने जल, फिर भी नीचा कहलाया।
धर्म कार्य मे देने से धन, सहस गुना बढ जाता है॥1॥

क्रोध मान का त्याग करे हम, क्रोधी जन दु ख पाता है।
धर्म मार्ग पर चलने वाला, सच्चे सुख को पाता है।
पाप छोडकर धर्म करे हम, धर्म साथ मे जाता है॥2॥

झूठ कपट छल चोरी तजकर, देव गुरु का ध्यान करे।
अपने बडे बुजुर्गो का हम, तन-मन से सम्मान करे।
शुभ आशीष प्राप्त कर इनसे, प्राणी सुख से रहता है॥3॥

त्यागो निशि का भोजन भैया, निशि भोजन दु खदाता है।
त्याग धर्म के पालन से ही, जीवन सफल बनाता है।
नित जिन दर्शन करने से ही, 'मोहन' मन इठलाता है॥4॥

भजन

(धर्मभूषण जी महाराज के चरणों में)

ज्ञान गुणों की खान मुनिवर, पावन नाम तुम्हारा है।
धर्मभूषण है नाम तुम्हारा, तुमको नमन तुम्हारा है॥टेक॥

आनद मगल होता जीवन, पास तुम्हारे आने से।
ज्ञान की किरणे मिलती हमको, मुनिवर के गुण गाने से।
श्रद्धा तुम चरणो मे हमरी, तुमरा हमे सहारा है॥1॥

तुम हो परम दयालु मुनिवर, सद्उपदेश सुनाते हो।
रात्रि भोजन त्याग कराकर, धर्म का महत्व बताते हो।
तुम चरणो की महिमा न्यारी, सौ-सौ नमन हमारा है॥2॥

अमृतमयी वाणी है तुमरी, तुमरे गुण हम गाते है।
करके दर्शन भी पूज्य गुरु के, जीवन सफल बनाते है।
गनौर नगर मे गुरुवर तुमने, मुनिवर का व्रत धारा है॥3॥

करनावल से श्रेष्ठ ग्राम मे, पूज्य मुनि ने जन्म लिया।
नगर नगर और गॉव-गॉव मे, जैन धर्म प्रचार किया।
भक्ति करने से मुनिवर की, मिटता सकट सारा है॥4॥

धन्य भाग्य है हमरे मुनिवर, जो दर्शन तुमरा पाया है।
तुमरे दर्शन करके हमने, अतस अलख जगाया है।
भजन बनाने सीखा 'मोहन' पा आशीष तुम्हारा है॥5॥

भजन

(आचार्य शांति सागर जी महाराज के चरणों में)

शांति सागर मुनिवर भैया, बहुत अधिक विद्वान है।
ज्ञान गुणो की खान है ये तो, सतों मे सत महान है॥टेक॥

परम दयालु हैं मुनिवर जी, परम तपस्वी कहलाते।
हित मित प्रिय वाणी मे ये, बात ज्ञान की समझाते।
इनकी भक्ति करने वाले, ही तो पुरुष महान है॥1॥

तुम चरणों मे दूर दूर से, श्रद्धालु जन आते है।
कोई हरियाणा, कोई बिहार से, कोई यू पी से आते है।
करते ही दर्शन मुनिवर के, सिद्ध होते सब काम हैं॥2॥

सब कुछ पाकर छोड दिया सब, आत्म ध्यान लगाते हो।
वीतराग है धर्म हमारा, धर्म का महत्व बताते हो।
वीतराग भगवान की भक्ति, देती मोक्ष महान है॥3॥

बचपन मे भी पूज्य मुनिवर, जिन पूजन नित करते थे।
ऋषि-मुनियो की सेवा भक्ति, सच्चे मन से करते थे।
ऋषि-मुनियो की सेवा से ही, बन गए सत महान है॥4॥

इनकी भक्ति कर मोहन ने बिन मॉगे सब कुछ पाया।
इनकी कृपा का फल 'बुद्धू' भजन बनाकर है लाया।
ये ही मेरे मात पिता है, ये ही मेरे प्राण है॥5॥

भजन

आचार्य सन्मति सागर जी महाराज के चरणों में, गांधी नगर चातुर्मास के समय

गाधी की गली गली से, आवाज हमे यह आती है।
सन्मति सागर के दर्शन लो, गई बेला नही आती है॥टेक॥

सन्मति सागर से मुनिवर तो, बिरले ही हमने देखे।
त्याग तपस्या बहुत इन्ही की, वचन सत्य होते देखे।
इनकी वाणी सुनकर जनता, अपना भाग्य सराहती है॥1॥

जिधर भी जाते पूज्य मुनिवर, स्वर्गो सा आनद छाता।
इनके भजन गीत लिखने मे, मुझको आनद है आता।
इनकी भक्ति करने से तो, आत्म खुश हो जाती है॥2॥

आशीर्वाद जिन्हे मुनिवर का, एक बार मिल जाता है।
सदा सदा के लिए जीव वह, पूर्ण सुखी हो जाता है।
मुनियो की कृपा से भैया, बुद्धि निर्मल रहती है॥3॥

जगल में हो जाता मगल, फूल चमन मे खिल जाते।
इनकी कृपा से पापी भी धर्म मार्ग पर लग जाते।
इनकी श्रद्धा भक्ति से नही विपद कभी आती है॥4॥

मुनिवर की कृपा का फल है, मोहन भजन बनाता है।
छूकर इनके चरण कमल को मन की मौज मनाता है।
इनकी वाणी सुनने से तो, ज्ञान की किरणे मिलती है॥5॥

भजन

धर्म की वर्षा करते गुरुवर, ज्ञान रतन बरसाते है।
धर्मभूषण है नाम तुम्हारा चरणो मे शीश झुकाते है॥टेक॥

जहॉ भी जाते मुनि हमारे, फूल चमन मे खिल जाते।
औषधालय जिन मदिर भैया, जगह जगह बनवाते।
ऐसे मुनिधर्म के भूषण की, हम महिमा गाते है॥1॥

जिधर भी जाते मुनि हमारे, जनता दौडी आती है।
दर्शन करने को मुनिवर के, भीड वहॉ लग जाती है।
पूज्य मुनि के दर्शन से ही, पाप सभी कट जाते है॥2॥

त्यागी भवन बहुत बनवाए, रथ सोने के बनवाए।
स्कूल गनौर नगर का देखो, बहुत ही अच्छा कहलाए।
जहॉ के बच्चे हरियाणा मे, प्रथम नबर आते है॥3॥

अतिशय क्षेत्र बनाया हासी, प्रतिमाएँ दिलवाई है।
त्यागी भवन कैराना की तो, सबने करी बडाई है।
स्वर्गो मे भी देव देवियॉ, गुरु की महिमा गाते है॥4॥

जैसा नाम गुरु ने पाया, वैसा कर दिखलाया है।
धर्म नही था जहॉ कही पर, डका धर्म बजाया है।
महिमा इनकी लिखने मे ही, 'मोहन' समय बिताते है॥5॥

भजन

धर्म बिना ये नर तन सूना, धर्म बिना क्या जीना॥टेक॥

धर्म ही पार लगाए भैया, धर्म सुखो का दाता है।
विसराता जो धर्म को भैया वही नरक मे जाता है।
शुभ कर्मो से मिली ये काया, धर्म मार्ग अपनाना॥1॥

रुधिर मैल की नश्वर काया, क्यो इसमे भरमाया है।
जन्मा था आतम हित करने, अब क्यों इसे भुलाया है।
आत्म हित यदि नहीं किया तो, पडे नरक दुख भरना॥2॥
स्वर्गो के सुख भोगे तूने, नरको के भी दुख सहे।
आत्म को नहीं जाना तूने, पशु गति के कष्ट सहे।
पाप मार्ग को तजकर मोहन धर्म मार्ग पर चलना॥3॥

भजन

करले भक्ति प्रभु की भैया, भव से तू तिर जाएगा।
निज आत्म को समझ लियातो, परमात्मा बन जाएगा॥टेक॥
आत्म ही परमात्मा बनता, जिनवाणी बतलाती है।
सिद्ध शिला पर जाकर आत्म, फिर वापस नही आती है।
सिद्ध शिला पर जाकर भैया, सच्चे सुख को पाएगा॥1॥
विषय भोग मे समय बिताकर क्यो जीवन बर्बाद करे।
करके पाप कमाई भैया, क्यो आत्म का घात करे।
ज्ञान ध्यान और तप कर ले तू, सिद्ध द्वार मे जाएगा॥2॥
धर्म मार्ग अपनाकर ही तू, पापो से बच जाएगा।
ऋषि-मुनियो की सगति करे, ज्ञानी तू बन जाएगा।
भक्ति कर भगवान की मोहन स्वर्ग मोक्ष सुख पाएगा॥3॥

भजन

जागो प्यारे चेतन जागो, क्यो मोह नीद मे सोता है।
नर तन चोला मिला है तुझको, व्यर्थ इसे क्यो खोता है॥टेक॥
स्वर्गो के सुख भोगे तूने, और नरको के दु.ख सहे।
पशु गति मे भूखा प्यासा रह, तूने कितने कष्ट सहे।
भूल धर्म को जाने से ही, कष्ट अनेको पाता है॥1॥

इकला ही तू आया जग मे, इकला ही तू जाएगा।
जैसा कर्म करेगा प्राणी, वैसा ही फल पाएगा।
निज स्वभाव मे रम ले चेतन, बीज पाप क्यो बोता है॥2॥

धन वैभव के चक्कर मे पड, धर्म ध्यान तू भूल चला।
आया था तू निज हित करने, निज को भैया भूल चला।
निज को भूल के प्राणी मोहन, नरको के दुख पाता है।

भजन

क्यो भूला रे भगवान, समझ नादान, अरे तू प्राणी।
तेरी दो दिन की जिन्दगानी॥टेक॥

प्रभु के दर्शन नही करता तू, विषयो मे सुख पाता है।
धन दौलत के चक्कर मे पड, सारा समय बिताता है।
धन दौलत नही साथ चलेगी, जाए इकला प्राणी॥1॥

निज हित की नहीं चिता किंचित, निज को भैया भूल चला।
बीवी बच्चो मे फँस करके, धर्म ध्यान तू भूल चला।
धर्म जीव के साथ है जाता, बतलाती जिनवाणी॥2॥

पाप कर्म को छोड के भैया धर्म मार्ग अपनाया कर।
निज स्वरूप मे रमकर प्यारे, प्रभु का ध्यान लगाया कर।
प्रभु नाम है सच्चा मोहन, कहते ज्ञानी ध्यान॥3॥

भजन

(जिनवाणी को सुन ले, श्री जिनवर को भज ले, निज आत्म में रम ले)

तेरा हो जाए कल्याण॥टेक॥

जिनवाणी को सुनकर प्राणी, आत्म हित कर पाता है।
श्रद्धा से जो सुनता इसको, शिव रमणी को पाता है।
श्रद्धा से सुन जिनवाणी को, है ये ज्ञान की खान॥1॥

श्री जिनवर को भज ले भैया, भव से तू तिर जाएगा।
भक्ति करके श्री जिनवर की, जिनवर सा बन जाएगा।
दर्शन करने से श्री जिन के, होता पुण्य महान॥2॥

निज आत्म मे रमकर प्राणी, सच्चे सुख को पाता है।
निज मे रमने वाला भैया, जग मे आदर पाता है।
निज मे रमने से ही मोहन, होता केवल ज्ञान॥3॥

भजन

एक बार भी ध्यान अरे तू, निज आत्म का कर लेता।
नहीं भटकना पडता तुझको, मुक्ति पद तू गह लेता॥टेक॥

निज आत्म को भूल के भैया, भारी कष्ट उठाता है।
जन्म मरण के दुःख सहे तू, जीवन व्यर्थ गॅवाता है।
निज आत्म की लेता सुध तो, सच्चे सुख को पा लेता॥1॥

पर मे सुख माना है तूने, निज आत्म की खबर नही।
कोठी बँगले सोना चाँदी, पाकर फिर भी सबर नहीं।
प्रीति हटा लेता यदि इनसे, दुःखो से तू बच जाता॥2॥

पर से प्रीति हटाकर भैया, निज से प्रीति लगाया कर।
जिनवाणी को सुनकर प्यारे, ज्ञान की ज्योति जलाया कर।
जिनवाणी को सुन लेता तो, मोहन भव से तिर जाता॥3॥

भजन

यह तन माटी का है भैया, माटी मे मिल जाएगा।
धर्म मार्ग अपना ले प्राणी, धर्म ही पार लगाएगा॥टेक॥

नर तन चोला मिला है हमको, धर्म मार्ग अपनाने को।
मुक्ति मार्ग के बने पथिक हम, सयम धारण करने को।
सयम धारण करके प्राणी, सिद्ध शिला को जाएगा॥1॥

जनम जनम के शुभ कर्मो से, नर तन चोला मिलता है।
करते है जो सयम धारण, उन्हे मोक्ष सुख मिलता है।
नर तन पाकर धर्म करे हम, साथ धर्म ही जाएगा॥2॥
करे भलाई नर तन पाकर, करे आत्म का हम कल्याण।
विषय कषाएँ तजकर अपनी, बने मुक्ति के हम मेहमान।
नर तन पाकर सयम पाले, मोहन मुक्ति पाएगा॥3॥

भजन

सुख के है सब साथी भैया, बिगडी का नही कोई।
दुःख मे आता काम जो भैया, सच्चा मित्र है वो ही॥टेक॥
सच्चा मित्र वही है भैया, जो धर्म की राह बताता।
सकट की घडियो मे भी जो, नही कभी घबराता।
सुख मे हो जो मग्न न फूले, सही इन्सान है वो ही॥1॥
सुख दुःख मे जो साथ निभाए, सुख मे आए बुलाने से।
बिना बुलाए दुःख मे आए, मन प्रभु के गुण गाने से।
धर्म की राह दिखाता है जो, धर्म मित्र है वो ही॥2॥
सच्चा मित्र धर्म है मोहन, धर्म ही रक्षा करता है।
कष्टो से ये बचा जीव को, स्वर्ग मोक्ष सुख वरता है।
धर्म मित्र से करो मित्रता, धर्म सहाई होई॥3॥

भजन

तेरा असली सुख वैभव तो, तेरे बीच समाया है।
असली सुख को छोड़ के तूने, नकली मे सुख पाया है॥टेक॥
सच्चा सुख आत्म का सुख है, उसकी तुझको खबर नही।
दास बना है तू विषयो का, पल की भैया खबर नहीं।
विषयो मे नहि सुख है भैया, मुनियो ने बतलाया है॥1॥

आत्म हित की बात नही तू, मेरे भैया करता है।
जिनवाणी को भूल गया तू, राग की बाते करता है।
नही राग मे सुख है भैया, ग्रन्थो मे यह गाया है॥2॥

कोठी बगले महल बनाकर, निज को भी तू भूल गया।
बीवी बच्चो मे फॅस करके, चौरासी मे झूल गया।
निज सुख का भडार छोड के, मोहन कष्ट उठाया है॥3॥

भजन

(धर्मभूषण जी महाराज को रामनगर शाहदरा आने का निमन्त्रण)

राम नगर शाहदरा आना, अर्ज आपसे करते है।
आकर मान बढाना हमरा, हम तुमको शीश झुकाते॥टेक॥

होगा नगर हमारा पावन, गुरुवर तुमरे आने से।
आनद मगल होगा जीवन, देव गुरु को ध्याने से।
गुरुवर है भडार ज्ञान के, नमन तुम्हे हम करते है॥1॥

तुम चरणो की धूलि गुरुवर, पाने को सब इच्छुक है।
तुम जैसे सतो के गुरुवर, दर्शन के सब भिक्षुक है।
जल्दी आना नगर हमारे, हाथ जोडकर कहते है॥2॥

जिस नगरी मे जाते साधु, नगर वो पावन हो जाता।
करते चर्चा देव वहॉ की, चहूँ दिशि आनद छा जाता।
पाकर ज्ञान गुरु से मोहन कविता नई बनाते है॥3॥

भजन

पास तुम्हारे जो है गुरुवर, वो ही हमको दे दीजे।
अपने जैसा हमे बनाकर, ज्ञान की किरणे दे दीजे॥टेक॥

ज्ञान रतन ही बडा रतन है, सब रतनो की खान।
जिनके पास ज्ञान गुण है, वो होता पुरुष महान।
ज्ञान रतन दे करके हमको, बीज धर्म का बो दीजे॥1॥

दस धर्मो से पौधे तुम पर, दया धर्म पिचकारी है।
हर पौधा है उत्तम गुरुवर, आत्म का हितकारी है।
आत्म का हित होवे गुरुवर, ऐसा मार्ग बता दीजे॥2॥

श्रद्धारूपी रतन ले हम तो, तुम चरणो मे आए है।
बने आपसे हम तो गुरुवर, भाव ये मन मे लाए है।
शीश झुकाता तुमको मोहन, शुभ आशीष हमे दीजे॥3॥

भजन

आतमराम को भूल गए हम, तन को सदा सजाया है।
तन को सदा सजाने में ही, अपना समय बिताया है॥टेक॥

अक्ल हमे अब आई भैया, श्री मुनिवर के आने से।
सच्चा सुख मिलता प्राणी को, आत्मध्यान लगाने से।
सच्चा सुख है तेरे अदर, मुनिवर ने बतलाया है॥1॥

तन-धन वैभव सब नश्वर है, एक दिन ये मिट जाना है।
आया है जो इस दुनिया मे, आखिर उसको जाना है।
आत्मध्यान किया नही हमने, इसीलिए दु ख पाया है॥2॥

ऐसे ज्ञानी मुनि यहॉ पर, पुण्य उदय से आए है।
मुझ जैसे बुद्धू प्राणी को, ज्ञान सिखाने आए है।
जल मे कमल की भॉति रहना, तुमने हमे सिखाया है॥3॥

पर से प्रीति हटा अब हम तो, आत्मध्यान लगाऍगे।
धर्मभूषण जी मुनिवर की हम, भक्ति कर हरषाऍगे।
आशीर्वाद गुरु का लेने, मोहन यहॉ पर आया है।
आत्मराम को भूल गए हम तन को सदा सजाया है॥4॥

भजन

लाख जन्म मे किया पुण्य ही, आज उदय में आया है।
इसीलिए तो धर्मभूषण का, हमने दर्शन पाया है।
ऐसे सत बिरले ही होते, ऐसे ज्ञानी कम मिलते।
सच पूछो तो ऐसे मुनिवर, बडे भाग्य से ही मिलते।
इन जैसे सतो की सेवा, से ही सब कुछ पाया है॥1॥
अब तक दु ख ही दु ख पाया है, भोगो मे सुख माना है।
सच्चा सुख है निज आतम मे, उसको नही पहिचाना है।
निज पर का तो भेद हमारी, आज समझ मे आया है॥2॥
तेरा मेरा करता फिरता, मेरा क्या है भान नहीं।
अच्छे और बुरे की तुझको, भैया कुछ पहचान नहीं।
सच्चे सुख की खान है तू ही, मुनिवर ने बतलाया है॥3॥
पुण्य कर्म के करने से यह, नर तन चोला मिलता है।
सतो की सेवा करके ही, पुष्प सदृश यह खिलता है।
नहि कीनी जिन-साधु चर्या, अत समय पछताया है॥4॥
छोड जगत के झूठे झगडे, आतम का कल्याण करे।
घर मे रहते हुए भी हम तो, निज स्वभाव का ध्यान करे।
सतो की सेवा का ही फल मोहन भजन बनाया है।
लाख जन्म मे किया पुण्य ही, आज उदय मे आया है॥5॥

भजन

चलते-फिरते तीरथ मुनिवर, इस नगरी मे आए है।
महा पुण्य का उदय हमारे, दर्शन इनके पाए है॥टेक॥
अनत काल से फिर भटकते, जन्म-मरण दु ख पाया है।
निज आतम को भूल के हमने, अब तक कष्ट उठाया है।
पर को त्यागो स्व मे आओ, गुरु समझाने आए है॥1॥

इन जैसे सतो के दर्शन, बडे भाग्य से पाते है।
जिन्हे भटकना है भव-वन मे, नहीं यहाँ पर आते है।
दया गुरु को आई हम पर, ज्ञान सिखाने आए है॥2॥
इनकी भक्ति करने से फिर कष्ट नही कोई रहता।
धन-दौलत की बात छोड दो, स्वर्ग मोक्ष सुख है मिलता।
मुक्ति टिकट देने ही हमको, गुरुवर यहॉ पधारे है॥3॥
नरको मे जाना है जिनको, निदा सतो की करते।
स्वर्ग मोक्ष सुख पाना जिनको, वे भक्ति इनकी करते।
इनकी चरण धूलि लेने को, हम सब दौडे आए है॥4॥
ले लो आशीर्वाद गुरु से, बिगडी सब बन जाएगी।
सतो की सेवा से भैया, घर मे रौनक आएगी।
कर ले इनकी भक्ति मोहन, अवसर नही गवाए है।
चलते-फिरते तीरथ मुनिवर, इस नगरी मे आए है॥5॥

भजन (दश धर्म पर)

हुए आज एकत्र सभी है, सब मिल खुशी मनायेगे।
दस धर्मो का पालन करके, मुक्ति पद को पायेगे ॥ टेक ॥
दस धर्मो का पहन के चोला, नित मदिर मे जाये।
वीर प्रभु की बडे ठाठ से, पूजन पाठ रचाये।
करके पूजन वीर प्रभु की भारी पुण्य कमायेगे ॥1॥
दस धर्मो का पालन करना, मुनि हमे सिखलाते है।
जिनव्रत पालन करके मुनिवर, सिद्ध शिला को जाते है।
दस धर्मो का पालन करके, सिद्ध शिला को जायेगे ॥2॥
क्षमा धर्म है उत्तम जग मे, मान कभी नहि करना।
कपट कषाय तजो रे भाई, सत्य वचन चित धरना।
शौच भाव रखो नित मन में, सम्यक भाव जगायेंगे ॥3॥

तप धर्म का पालन करना, मुनि हमे सिखलाते है।
किंचित भी न परिग्रह रखना, उत्तम त्याग दिखाते हैं।
करके ब्रह्मचर्य व्रत 'मोहन', पद मुनियो का पायेंगे ॥4॥

भजन

जिन्हे समझता है तू अपना, काम नहि वो आयेगा।
एक धर्म ही सच्चा साथी, साथ मे तेरे जायेगा। टेक।
धन दौलत की खातिर तू तो, पाप रात दिन करता है।
सप्त व्यसन का सेवन करके, मनमौजी बन जाता है।
सप्त व्यवसन के सेवन से तू, नरक द्वार मे जायेगा ॥1॥
भक्ष अभक्ष सभी खाता है, खाते नहि शरमाता है।
पापी तू इस पेट की खातिर, पाप कमाता जाता है।
पाप कर्म ही डाल नरक मे, कोडे बहुत लगायेगा ॥2॥
जिन्हे समझता है तू अपना, वो तुझको ठुकरायेगे।
सास निकलते ही वो सारे, तेरी चिता जलायेगे।
अब भी समय समझ ले 'मोहन', धर्म ही पार लगायेगा ॥3॥

भजन

थोडी तेरी उम्र है बाकी, अब भी लगन लगाले।
श्री जिन की पूजा करके तू, जीवन सफल बना ले। टेक।
श्री जिन की पूजा करके तू, सच्चे सुख को पायेगा।
अष्ट कर्म का करके नाश तू, सिद्ध शिला को जायेगा।
प्रभु पूजा है उत्तम जग मे, इसको तू अपना ले ॥1॥
मोह नींद मे पड़कर तू तो, सारा समय बिताता है।
प्रभु पूजा का फल क्या होता, नही समझ तू पाता है।
छोड के सारे काम काज तू, सम्यक सुख को पाले ॥2॥

निकाचित कर्म उदय मे आकर, अपने फल को देते है।
प्रभु पूजा को देख सभी वे, बिन फल के गल जाते है।
प्रभु पूजा तू करके 'मोहन' शिव रमणी को पाले ॥3॥

भजन

धर्मभूषण महाराज तुम्हारी, जग मे जयजयकार है।
हाथ जोडकर पूज्य गुरु का, स्वागत बारम्बार है ॥टेक ॥
जिधर भी जाते पूज्य गुरुवर, स्वर्गो-सा आनद छाता।
तुमरी कृपा से गुरुवर जी, बिगडा भाग्य बदल जाता ॥
इन जैसे सन्तो की सेवा, करती बेडा पार है ॥1॥
भर यौवन मे दीक्षा लेकर सयम पथ स्वीकार किया।
कर कठिन तपस्या गुरुवर ने, यह जैन धर्म प्रचार किया ॥
जैन-अजैन सभी की श्रद्धा, गुरु के प्रति अपार है ॥2॥
सूरज चॉद सितारो ने भी, तुमरी महिमा गाई है।
जय जय जय श्री धर्मभूषण की, कहकर खुशी मनाई है।
महापुण्य का उदय हमारे, मिला गुरु का प्यार है ॥3॥
तुमरी त्याग तपस्या की, चर्चा स्वर्गो मे होती है।
जो भी बात निकल गई मुख से, इकदम सच्ची होती है ॥
पूज्य गुरु के चरणकमल मे, 'मोहन' नमन हजार है ॥4॥

भजन

श्री 108 उपाध्याय ज्ञान सागर जी महाराज के चरणों में

गुरु हमारे ज्ञान सागर है, जग मे जिनका नाम है।
परम तपस्वी पूज्य गुरु को, लाख बार प्रणाम है ॥टेक॥
सरल स्वभाव तुम्हारा गुरुवर, तुम्हें नमन हम करते है।
सुनकर तुमरी अमृत वाणी, सुख का अनुभव करते है ॥
तुमरे दर्शन करने से ही, सिद्ध होते सब काम है ॥1॥

तुमरे आशीर्वाद से गुरुवर, लिखना मुझको आया है।
सन्तो की सेवा करना भी, तुमने मुझे सिखाया है ॥
सन्तो की सेवा से ही तो, मिलता मुक्ति धाम है ॥2॥

सूरज चाँद सितारे भी तो, तुमरी महिमा गाते है।
जय जय जय श्री ज्ञान सागर की, कहकर खुशी मनाते हैं ॥
ज्ञान गुणो की खान मुनिवर, जैन धर्म की शान है ॥3॥

जिधर भी जाते पूज्य गुरुवर, फूल चमन मे लिख जाते।
तुमरी कृपा से गुरुवर जी, बहरे सुनने लग जाते ॥
स्वर्गो मे भी देव तुम्हारा, करते नित गुणगान है ॥4॥

नहीं चाहता हूँ धन दौलत, ना हीरा मोती चाहूँ।
तुम चरणो मे लगा रहे मन, और नही कुछ मै चाहूँ ॥
कृपा रखना मोहन पर तुम, ये मूरख नादान है ॥5॥

भजन

श्री 108 उपाध्याय ज्ञान सागर जी महाराज के चरणों में

तुमरे आशीर्वाद से गुरुवर, जागा भाग्य हमारा है।
ज्ञान सागर महाराज आपको, सौ सौ नमन हमारा है ॥टेक ॥

नही चाहता धन अरू दौलत, ना हीरा मोती चाहूँ।
नही चाहता कोठी बॅगला, ना सोना चाँदी चाहूँ ॥
चाहूँ शुभ आशीष तुम्हारी, तुमरा हमे सहारा है ॥1॥

तुमरे आशीर्वाद से गुरुवर, बिन माँगे सब कुछ पाया।
जबसे दर्शन किये तुम्हारे, जीवन मे आनद आया ॥
तेरा दर्शन मिले हमेशा, ये शुभ भाव हमारा है ॥2॥

सन्तो की सेवा ही भैया, नैया पार लगाती है।
इनकी सेवा की प्राणी को, मोक्ष द्वार ले जाती है ॥
सेवा करूँ सदा मै तुमरी, सेवा का फल न्यारा है ॥3॥

तुम जैसे गुरु परम तपस्वी जहाँ कहीं भी जाते है।
आनद मगल छा जाता है, रोग ताप मिट जाते है॥
तुमरे चरणो की धूलि से, गुरुवर प्रेम हमारा है ॥4॥

आशीर्वाद दो मोहन को गुरु, तुम जैसा मै बन जाऊँ।
धर्म मार्ग मे लगा रहे मन, और नही कुछ मै चाहूँ ॥
तुम जैसे सन्तो की महिमा, गाता जग ये सारा है ॥5॥

भजन

त्याग किया चमडे का जबसे, जीवन मे आनद आया।
ऋषि मुनियो के आशीर्वाद से, बिन माँगे सब कुछ पाया ॥टेक ॥

बे-जुवान मूक पशुओ को, तडफा कर मारा जाता।
गरम गरम उबलता पानी, ऊपर से डाला जाता ॥
हाय हाय चिल्लाना उनका, नही पसन्द हमको आया ॥1॥

कैसे जूते चप्पल बनती, इसकी करुण कहानी है।
नही सताना किसी जीव को, बतलाती जिनवाणी है ॥
पर को दुख दे करके भैया, नही किसी ने सुख पाया ॥2॥

पैनी धार देख आरे की, पशु जोरो से चिल्लाता।
कोई मुझे बचाओ आकर, मुख से भी नहि कह पाता ॥
देख के उनकी करुण कहानी, भाव ये मन मे है आया ॥3॥

चमडे का है त्याग हमारा, नही इसका प्रयोग करूँ।
मूक पशू की हनन बन्द हो, ऐसा मै पुरुषार्थ करूँ ॥
सन्तो की कृपा से 'मोहन', ये सब सम्भव हो पाया ॥4॥

विदाई गीत

श्री 108 धर्मभूषण जी महाराज के शाहदरा से विहार के समय

चले छोड मुनिवर जी हमको, कैसे रौनक आएगी।
करके याद तुम्हे ये जनता, अपना भाग्य सराहेगी॥टेक॥

शहर शाहदरा आए थे तब, कितना आनद आया था।
जैन अजैन सभी ने मिलकर, भारी हर्ष मनाया था।
कैसे अब हर्षेगी जनता, याद तुम्हारी आएगी॥1॥

वीतराग है छवि तुम्हारी, सबके मन को भाती है।
दर्शन मात्र से तुमरे मुनिवर, दूर विपद हो जाती है।
बन जाएँ हम भी मुनिवर से, यही भावना आएगी॥2॥

सुबह शाम अमृतवाणी सुन, मनुआ हर्षित होता था।
छूकर चरण तुम्हारे मुनिवर, आनद मन मे होता था।
बन जाए तुम जैसा मोहन, बनकर मुक्ति पाएगी॥3॥

श्री 108 आचार्य शांतिसागर जी महाराज के शाहदरा से विहार के समय

चले मुनिवर छोड़ के हमको, नयनो में पानी आया।
कैसे विदा करूँ मै तुमको, नहीं सेवा कुछ कर पाया॥टेक॥

आकर के नगरी मे तुमने, सोए पथिक जगाए।
अमृतवाणी करके निशदिन, मिथ्या तिमिर भगाए।
मिथ्या तिमिर हटाकर तुमने, सम्यक भाव जगाया॥1॥

वीतराग है छवि तुम्हारी, कैसे इसे भुलाएँगे।
रौनक जो थी मंदिर मे वो रौनक नहीं हम पाएँगे।
कैसे रौनक आएगी अब, मनुआ अपना घबराया ॥2॥

बादल बनकर बरसे अब तक, दस धर्मो की वर्षा की।
राग द्वेष का नाम मिटाकर, उत्तम सबको शिक्षा दी।
लेकर शिक्षा तुमसे मुनिवर, श्रद्धा भाव जगा पाया ॥3॥

जाना ही है तुमको मुनिवर, जाने से इनकार नही।
वापस जल्दी आना मुनिवर, करना भूले माफ सभी।
सच्ची श्रद्धा रखकर तुझमे, मोहन पुस्तक लिख पाया ॥4॥

द्रव्य दाताओं की सूची

1 3101 श्रीमती पूर्णिमा जैन धर्मपत्नी श्री विरेन्द्र कुमार जैन (जैन साडी हाऊस) तेलीवाडा शाहदरा दिल्ली 32
2 3101 श्रीमती अनिता जैन धर्मपत्नी श्री चमनलाल जैन कैलाश नगर दिल्ली-31
3 3101 श्रीमती सतोष जैन धर्मपत्नी स्व लाला बिशम्बर दयाल जैन रोहिणी सैक्टर 8
4 2101 श्रीमती सुशीलादेवी धर्मपत्नी श्री अजित प्रसाद जैन सरस्वती विहार
5 2101 श्रीमती वैजयन्ती जैन धर्मपत्नी श्री प्रदुमन कुमार जैन सरस्वती बिहार
6 2101 श्रीमती कृष्णावन्ती जैन धर्मपत्नी स्व श्री बोध राज जैन अशोक विहार फेज I
7 2101 श्री श्यामलाल अरिदमन जैन बावली (बागपत)
8 2101 श्रीमती निर्मला जैन धर्मपत्नी श्री सुखवीर सिह जैन विश्वास नगर शाहदरा।
9 2101 श्रीमती राजबाला जैन धर्मपत्नी श्री सुरेश चन्द्र जैन योजना विहार दिल्ली 92
10 2101 श्रीमती केसर बाई धर्मपत्नी स्व श्री सुमेर चन्द्र जैन (रिवाडी वाले) रामनगर शाहदरा।
11 2101 श्रीमती कमलावती धर्मपत्नी श्री धनराज जैन अमीनगर सराय (बागपत)
12 2101 श्रीमती स्नेहलता जैन धर्मपत्नी श्री ललिता प्रसाद जैन अशोक विहार फेज II

13 2101 श्रीमती कुसुमलता जैन धर्मपत्नी श्री पवन कुमार जैन (गत्ते वाले) मानसरोवर पार्क शाहदरा दिल्ली 32

14 2101 श्रीमती स्नेहलता जैन धर्मपत्नी श्री मोहनलाल जैन रामनगर शाहदरा

15 2101 श्रीमती मिथलेश जैन धर्मपत्नी श्री सुभाषचन्द जैन शक्तिनगर दिल्ली

16 2101 श्रीमती मधु जैन धर्मपत्नी श्री हरीसचन्द जैन रामनगर शाहदरा दिल्ली 32

17 2101 श्रीमती ज्ञानमती देवी धर्मपत्नी श्री जय नारायण जैन बहादुगढ

18 2101 श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नी श्री जिनेश कुमार जैन खेकडा (बागपत)

19 1501 श्रीमती निर्मला जैन धर्मपत्नी श्री सुरेन्द्रपाल जैन शकरनगर दिल्ली 51

20 1501 श्रीमती मधु जैन धर्मपत्नी श्री सुमेरचन्द जैन (जैन टैक्सटाइल एण्ड क) 324 तेलीवाडा शाहदरा।

21 1501 श्रीमती पूनम जैन धर्मपत्नी श्री अनिल कुमार जैन भोलानाथ नगर शाहदरा।

22 1101 श्रीमती पुष्पा देवी धर्मपत्नी श्री कवरसैन जैन निकलसन रोड अम्बाला छावनी

23 1101 श्रीमहेशचन्द दिनेश कुमार जैन रामनगर शाहदरा

24 1101 श्री जुगल किशोर शान्ती प्रसाद जैन (बावली वाले) शाहदरा।

25 1101 श्रीमती किरणमाला जैन धर्मपत्नी श्री प्रेमचन्द जैन नत्थू कालोनी शाहदरा।

26 1101 श्रीमती शिक्षा जैन धर्मपत्नी श्री रमेशचन्द जैन मार्डन शाहदरा दिल्ली 32

27 1101 श्रीमती नीलम जैन धर्मपत्नी श्री पवन कुमार जैन मानसरोवर पार्क शाहदरा।

28 1101 श्रीमती अगूरी देवी धर्मपत्नी श्री हरिचन्द जैन जनक पुरी दिल्ली 58

29 1101 श्रीमती उर्मिला जैन धर्मपत्नी श्री मामचन्द जैन शास्त्री नगर दिल्ली

30 1101 कु पूजा व राधिका शर्मा सुपुत्री श्री उपेन्द्रनाथ शर्मा मौज पुर शाहदरा।

31 1101 श्रीमती पुष्पा जी धर्मपत्नी श्री विजेन्द्र कुमार अरोरा भोलानाथ नगर शाहदरा।

32 1101 श्रीमती किरण जैन धर्मपत्नी श्री लखमीचन्द जैन रामनगर शाहदरा।

33 1101 श्रीमती स्वर्णलता धर्मपत्नी श्री चन्द्रसैन जैन रोहिणी।

34 1101 श्रीमती शकुन्तला जैन धर्मपत्नी श्री नरेन्द्र कुमार जैन रघुवरपुरा गॉधीनगर

35 1101 श्रीमती श्यामलता जैन धर्मपत्नी श्री राज कुमार जैन कैलाश नगर दिल्ली

36 1101 श्रीमती सतोष जैन धर्मपत्नी श्री हेमचन्द जैन (कैमीकल वाले) कैलाश नगर दिल्ली

37 1101 श्रीमती उर्मिलाजैन धर्मपत्नी श्री अनतवीर जैन शास्त्री नगर दिल्ली

38 1101 श्रीमती धनेन्द्र कुमारी जैन धर्मपत्नी श्री मागेराम जैन अशोक विहार फेज I

39 1101 श्रीमती माया देवी धर्मपत्नी श्री पदम सैन जैन (सरुरपुर वाले) रामनगर शाहदरा।

40 1101 श्रीमती रतनमाला जैन धर्मपत्नी स्व श्री हेमचन्द जैन एडवोकेट रोहतक

41 1101 श्रीमती सुशीलादेवी धर्मपत्नी श्री सुरेशचन्द जैन रोहतक

42 1101 श्रीमती कान्ता जैन धर्मपत्नी श्री आनद प्रकाश जैन नवीन शाहदरा दिल्ली 32

43 501 गुप्त दान

44 501 श्री आदीश कुमार जैन (करनावल वाले) शालीमार बाग दिल्ली

45 501 श्रीमती प्रीति जैन धर्मपत्नी श्री रवि जैन सस्कृत नगर रोहिणी

46 501 गुप्त दान

47 501 श्री सलेकचन्द जैन (टीकरी वाले) धर्मपुरा गॉधी नगर

48 251 श्रीमती किरण जैन धर्मपत्नी श्री बगाली लाल जैन नवीन शाहदरा।

49 251 श्रीमती सुनीता जैन धर्मपत्नी श्री वेदप्रकाश जैन खेकडा (बागपत)

50 251 श्रीमती सुनीता जैन धर्मपत्नी श्री राम मेहर जैन रामनगर शाहदरा।

51 251 श्री सतपाल जैन सुपुत्र स्व श्री बाबूराम जैन बावली (बागपत)

52 251 श्रीमती शौभा जैन धर्मपत्नी श्री जयचन्द जैन रामनगर शाहदरा